CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित
साहित्यकार की कृति

छिन्नमस्ता

इन्दिरा गोस्वामी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित
साहित्यकार की कृति

छिन्नमस्ता

इन्दिरा गोस्वामी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

छिन्नमस्ता

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित असमिया की प्रतिष्ठित कथाकार इन्दिरा गोस्वामी के उपन्यास 'छिन्नमस्ता' को असमिया पाठक-समाज में 'एक असाधारण सृष्टि' कहा-माना गया है। यह उपन्यास शक्तिपीठ कामाख्या की पृष्ठभूमि में 1921 से 1932 की अवधि की घटनाओं पर आधारित है, लेकिन कहीं-कहीं इसकी कथावस्तु अपने अतीत को भी समेटती है। दरअसल कामरूप कामाख्या के इतिहास, वहाँ की परम्परा और लोक-गाथाओं का गम्भीर अध्ययन करके इन्दिरा जी ने इस उपन्यास में एक बड़े फलक पर छोटे-बड़े अनेक रंगारंग चित्रों को बड़ी कलात्मकता के साथ उकेरा है।

'छिन्नमस्ता' दो विरोधी विचारधाराओं—अहिंसा और हिंसा—के टकरावों के बीच ग़रीबी, निरक्षरता, अज्ञान और अन्धविश्वासों से घिरे कामरूप के जन-जीवन की सच्ची कहानी है। विषय की गहराई तथा अतीत और वर्तमान के अनुभवों की समग्रता से भरपूर 'छिन्नमस्ता' अपनी सर्जनात्मकता, समाज-चेतना और मानवीय मूल्यों की सहज अभिव्यक्ति के कारण निस्सन्देह एक सार्थक और महत्त्वपूर्ण उपन्यास है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञान गरिमा के
68 वर्ष

भारतीय
ज्ञानपीठ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

छिन्नमस्ता

(उपन्यास)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशक / लेखक की अनुमति के बिना इस पुस्तक को या इसके किसी अंश को संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना या फ़िल्म आदि बनाना कानूनी अपराध है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

छिन्नमस्ता

इन्दिरा गोस्वामी

रूपान्तर

पापोरी गोस्वामी

भारतीय ज्ञानपीठ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

राष्ट्रभारती / लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक 690

ग्रन्थमाला सम्पादक
रवीन्द्र कालिया
सह-सम्पादक
गुलाबचन्द्र जैन

पहला संस्करण : 2000
पाँचवाँ संस्करण : 2007
छठा संस्करण : 2010
सातवाँ संस्करण : 2013

ISBN 978-93-263-5147-8

प्रकाशक :
भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड
नयी दिल्ली-110 003

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर ऐंड प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

आवरण : अमिताभ राय

सातवाँ संस्करण : 2013
मूल्य : 180 रुपये

© भारतीय ज्ञानपीठ

CHHINNAMASTA
(Assamese Novel)
by Indira Goswami

Published by
Bharatiya Jnanpith
18, Institutional Area, Lodi Road
New Delhi-110 003
e-mail : jnanpith@satyam.net.in, sales@jnanpith.net
website : www.jnanpith.net

Seventh Edition : 2013
Price : Rs. 180

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रस्तुति

मठों और मन्दिरों से समृद्ध असम के देवीपीठ आदि स्थलों एवं सम्बद्ध चरित्रों पर लिखी गयीं सर्जनात्मक रचनाएँ बहुत कम हैं, यद्यपि रजनीकान्त बरदलै का 'ताम्रेश्वरी का मन्दिर' एक अनूठी रचना है। मन्दिरों से जुड़ा हुआ प्राचीन इतिहास, वहाँ की धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराएँ, प्राकृतिक परिवेश और इन सबसे सम्बन्धित लोगों के रोज़मर्रा के जीवन पर सार्थक साहित्य की सृष्टि हो सकती है। ऐसी रचनाओं के अध्ययन से हम प्राचीन इतिहास, शिल्पकला, चित्रकला, लोककला, लोकगाथा, लोकविश्वास और सामाजिक परम्पराओं के, उनके विभिन्न तथ्यों के बारे में ज्ञान-लाभ कर सकते हैं। ऐसे अध्ययन को साहित्य का रूप देने के लिए चाहिए खोजी मन और अधिक श्रम-साधना। अतीत की गहराई में प्रवेश कर सूक्ष्म रूप से उस समय के परिवेश और समाज को देखा जाय तो उससे उत्कृष्ट साहित्य की सृष्टि हो सकती है। उदाहरण के तौर पर, शिवसागर के विभिन्न मठ और मन्दिर, नेधेरिढिंग के शिव मन्दिर, ग्वालपाड़ा का सूर्य पहाड़, तेजपुर का महाभैरव मन्दिर और गुवाहाटी के कामारण्य, नवग्रह और उमानन्द जैसे मन्दिरों में लेखकों को निःसन्देह सार्थक साहित्य के लिए भरपूर सामग्री है। सैंकड़ों वर्षों से ये धार्मिक स्थान, पहाड़ और मठसमूह कितने ही घटनाचक्रों के मौन दर्शक बने हुए हैं। चाहें तो इन सबको आधार बनाकर लिखे गये साहित्य को 'मन्दिर-साहित्य' नाम दे सकते हैं।

यह सुखद बात है कि असमिया की प्रख्यात लेखिका इन्दिरा गोस्वामी (मामोनी रायसम गोस्वामी) ने अपने गम्भीर अध्ययन से देवीपीठ कामाख्या के इतिहास एवं लोकगाथाओं से सामग्री लेकर उपन्यास 'छिन्नमस्तार भानूदरो' (छिन्नमस्ता) की रचना की है। यह उपन्यास पहले धारावाहिक रूप में असमिया पत्रिका 'गरीयसी' में प्रकाशित हो चुका है। 'स्टूडेण्ट्स स्टोर', गुवाहाटी ने 2001 में इसे प्रकाशित किया है। इस पुस्तक को हम लोग सीधे तौर पर उपन्यास नहीं कहना चाहते यद्यपि आंचलिक (लोकल) उपन्यास के कई रूप इसमें समाहित हैं।

इस कृति को उपन्यास कहा जाए या नहीं, इस विषय पर बहस की काफ़ी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
गुंजाइश है। लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि यह कृति लेखिका की एक असाधारण सृष्टि है।

इस पुस्तक में कामाख्या मन्दिर का एक परिपूर्ण चित्र अंकित किया गया है। यहाँ की पूजा-अर्चना के विभिन्न रूप, आचार-नीति, लोक-विश्वास, लोकगाथा, देवीपीठ के साथ जुड़ी हुई किंवदन्तियाँ, देवीपीठ का इतिहास, यहाँ की धार्मिक परम्परा (मनसा-पूजा में यहाँ मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग भी बलि चढ़ाते थे), साथ ही इसके नकारात्मक पहलू आदि को कथानक का रूप दिया गया है। पुस्तक में कुछ भी छोड़ा नहीं गया है।

दरअसल यह पुस्तक एक विशाल चित्रपट पर संयोजित छोटे-बड़े और अनेक रंगों के चित्रों का 'कोलाज़' है, एक एन्टिटी है। इस पुस्तक में जिस उद्देश्य को साधा गया है, जिसे कथानक के अन्त में विस्तृत रूप में दर्शाया भी गया है, वह है समन्वय। अतः एक तरह से इस पुस्तक को 'कामाख्या परम्परा का समन्वय' (Kamakhya-lore) कहा जाना चाहिए।

असम के बाहरवाले इलाक़ों में एक लोक-विश्वास पहले प्रचलित था कि 'कामरूप' में जानेवाले लोग भेड़ बन जाते हैं। अनपढ़ लोगों के लिए यह विश्वास अलौकिक हो सकता है लेकिन विज्ञों के लिए यह प्राचीन कामरूप के सुन्दर हरे-भरे रूप को ही दर्शाता है। लोग इसी सुन्दरता में क़ैद हो जाते थे और यहाँ के आकर्षण उन्हें मोह लेते थे। कामरूप और कामाख्या अलग-अलग नहीं हैं। दरअसल कामरूप-कामाख्या का उच्चारण एकसाथ ही किया जाता है। किसी को भेड़ बनानेवाली या मन्त्रमुग्ध करनेवाली बात एक असामान्य गुण को ही दर्शाती है। इस उपन्यास में लेखिका ने इस गुण को अच्छी तरह से समझाया है। इसी कारण से यह बहुत ही सरस और रोचक बन गया है, इसे एक बार खोलने के बाद लगातार आख़िर तक पढ़ने को मन करता है।

इस पुस्तक में परम्परागत अर्थ में कोई लम्बी कहानी नहीं है। कहानी के नाम पर बस, एक लकीर है। वह भी बीच-बीच में मिट जाती है, आख़िर में थोड़ी देर के लिए स्पष्ट होती है। नायक या प्रधान चरित्र भी सही अर्थ में यहाँ नहीं है। लेकिन चर्चा की सुविधा के लिए कृति के दो-चार व्यक्तियों को हम चरित्र ही कहेंगे। कहानी घटनाओं से भरपूर है लेकिन कोई भी घटना एक ही केन्द्र-बिन्दु से नहीं निकलती, जैसे सारी घटनाएँ अपने-आप घट रही हैं। चरित्रों में जो संघर्ष और विरोध दिखाया गया है, उनकी शुरूआत भी बहुत देर से हुई है। यह विरोध और मतभेद देवी के लिए दी गयी पशुबलि के सम्बन्ध में दिखाई गयी है। पुस्तक के अधिकांश भाग में देवीपीठ की धार्मिक और इनके चित्रण में सांस्कृतिक परम्पराओं से जुड़े अनेक तथ्य भरे हुए हैं। इनके चित्रण में लेखिका ने सूक्ष्म दृष्टि, जिज्ञासा और खुले मन का परिचय दिया है। इसमें उन्होंने इस क्षेत्र के अतीत को गहराई तक खोजा है। और वह भी इस तरह कि

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाठक अपने-आप उसमें लीन हो जाते हैं—सिर्फ़ दर्शक बनकर चुपचाप नहीं रहते—वे भी उपन्यास के अंश बन जाते हैं। इसी में लेखिका की असामान्य पारदर्शिता झलकती है। उन्होंने सचेत होकर इस पुस्तक में उद्देश्य को व्याख्यापित किया है। कला-कौशल से पुस्तक को रंगीन नहीं बनाया यह बात पाठक बड़ी आसानी से समझ सकता है।

कथानक की शुरूआत की गयी है छिन्नमस्ता के मन्दिर के जटाधारी संन्यासी और डरथी ब्राउन नाम की एक अँग्रेज़ महिला के प्रसंग से। कॉटन कॉलेज के अध्यापक राबर्ट ब्राउन की पत्नी डरथी के बच्चे नहीं है। उसी के इलाज के लिए वह इंग्लैण्ड गयी थी। वापस आने पर उसे पता चला कि उसके पति के साथ एक 'खासी' जनजाति की महिला का नाज़ायज सम्बन्ध है। डरथी का स्वाभिमानी मन दुःखी हो उठा। मन की शान्ति के लिए वह छिन्नमस्ता के संन्यासी के आश्रय में चली गयी। इस आश्रय का स्वरूप क्या है यह उपन्यास में कहीं भी खुलकर नहीं लिखा गया है, लेकिन पाठक समझ सकते हैं कि यह एंक प्रकार का आध्यात्मिक या आत्मिक सम्बन्ध है।

कहानी के अन्त में डरथी छिन्नमस्ता के संन्यासी से कहती है, 'मैं रहूँगी। मैं हमेशा तुम्हारी छाया बनकर रहूँगी। हमारे सम्बन्ध का कोई नाम नहीं होगा। हमारा सम्बन्ध दुनिया में एक अनूठा सम्बन्ध है, विशेष सम्बन्ध है, एक श्रेष्ठ सम्बन्ध है।' उल्लेखनीय यह है कि डरथी को असमिया भाषा अच्छी तरह से आती थी। वह कामाख्या पीठ में ही रहती थी। पति के अनुरोध और विनती के बावजूद वह अपने घर लौटती नहीं। संन्यासी के साथ एक सुन्दर विदेशी युवती का सम्बन्ध आसपास के लोगों में कौतूहल पैदा करता है। उनके सम्बन्ध को लेकर लोगों के बीच कई तरह की रोचक चर्चा भी हुई है। इसी प्रसंग को तरसा-किनारे से आया एक अन्य संन्यासी बढ़-चढ़कर प्रसारित करता है और वहाँ के जनजीवन को भड़काता है। पुस्तक में इस संन्यासी को खलनायक का रूप दिया गया है। डरथी पर बुरी नज़र रखनेवाले इस संन्यासी ने बदमाशों द्वारा हमला करवाया। बदमाशों ने डरथी पर बलात्कार की कोशिश भी की। कथानक में कामाख्या में डरथी के प्रवास का जो विस्तृत विवरण दिया गया है वह पाठकों को बाँधे रखता है।

इस घटना के बाद कुछ दिनों के लिए छिन्नमस्ता का संन्यासी और डरथी ब्राउन कामाख्या से दूर चले जाते हैं। वे अपने गन्तव्य स्थल के बारे में किसी को कुछ नहीं बताते लेकिन लोगों को पता चल जाता है कि वे बलि रोकने के लिए जनमत जुटाने को गये हैं। जाने से पहले संन्यासी ने अपने प्रिय शिष्य बलिविरोधी रत्नधर को बताया था कि वे मालेगढ़ और चक्रशिला में कुछ दिन रहेंगे। उसके बाद वे लोग आगे बढ़ जाएँगे और देवध्वनि उत्सव के समय वापस आ जाएँगे।

कथानक में छिन्नमस्ता के जटाधारी का प्रसंग रहस्यमय है। उसी तरह डरथी के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
चरित्र में भी काव्यगंत वैशिष्ट्य है। उसके व्यक्तित्व में शान्ति और दृढ़ता का समावेश दिखाया गया है। ये दोनों चरित्र पाठकों को अन्त तक मुग्ध बनाए रखते हैं।

कथा के अन्य चरित्र भी पाठकों को बाँधकर रखते हैं। इनमें से एक है मनमोहन पण्डा का बेटा रत्नधर। वह एक निपुण चित्रकार है। डरथी उसे चित्र बनाने के लिए उत्साहित करती है। एक और किशोर चरित्र है—विधिबाला। यह लड़की भी बलि-विरोधी है। यह चरित्र भी पाठकों के मन में सहानुभूति भर देता है। इस चरित्र के चित्रण में लेखिका की सहज सर्जनात्मकता (इज़ी क्रिएटिविटी) स्पष्ट दिखती है। इस चरित्र को और विस्तृत बनाने का अवकाश था। विधिबाला को पाठक अपने मन से मिटा नहीं पाते।

असमिया पत्रिका 'गरीयसी' में प्रकाशित होते समय ही यह पुस्तक काफ़ी चर्चित हुई थी। इसका कारण था कि लेखिका ने इस पुस्तक में पशुबलि का विरोध किया है। अपने वक्तव्य के समर्थन में उन्होंने कालिकापुराण आदि शास्त्रों के अंशों को भी उद्घृत किया है। 'छिन्नमस्ता के संन्यासी' बलिप्रथा का विरोध करते हैं। वे हर समय ज़ोर देकर बोलते रहते हैं—"माँ छिन्नमस्ता, माँ, तुम रक्त वस्त्र उतार दो! माँ, माँ!" एक उदाहरण देखिए, छिन्नमस्ता के संन्यासी के लिए प्रतीक्षारत भक्तों ने एक साथ कहा, "रक्त को त्याग दो! फूलों से देवी की पूजा करो! फूलों में ज़्यादा शक्ति है। रक्त को त्याग दो! फूलों से जगज्जननी के पैर धुलाओ! फूलों की पंखुड़ियों में मनुष्य-हृदय छुपा रहता है। मनुष्य की अदृश्य आत्मा को फूल ही सुगन्धित बनाये रखते हैं। रक्त को त्याग दो, फूलों से देवी माता की पूजा करो!" कहानी के मध्यभाग से ही इस प्रसंग को मूलरूप दिया गया है और यह धीरे-धीरे तेज़ गति से आगे बढ़ने लगता है। इसका विरोध भी होता है। दो अलग-अलग विचारवाले लोग आपस में टकराते हैं। एक दल तर्कसम्मत, जीवप्रेमी और उदार है। दूसरा दल पुराने संस्कारों से घिरा, हिंस्र और पराश्रित है। दरअसल यही कथानक का मूल विषय है, लेकिन इसे सर्जनात्मक स्वरूप प्रदान किया गया है। कथानक में मूल विषय के साथ कई प्रक्षिप्त घटनाएँ हैं। इनमें से किशोरी विधिबाला का प्रसंग भी एक है। एक बूढ़े, शादीशुदा और पहली पत्नी से हुए बच्चों वाले आदमी के साथ विधिबाला की शादी करना चाहते हैं उसके पिता, जो पुराने संस्कारों को मानते हैं। विधिबाला के साथ की गयी इस ज़बरदस्ती की यहाँ पशुबलि से तुलना की गयी है। अलग-अलग चरित्र कथा के विस्तार में सहायक सिद्ध हुए हैं। इन चरित्रों में मुख्य हैं पुलु ढोलकिया, विधिबाला के पिता सिंहदत्त, नर्तकी वेश्याओं के दल और विभिन्न देवी-देवताओं के 'घोड़ा' (वे लोग जिनकी आत्मा देवी-देवता से प्रेरित हो जाती है)।

कामाख्या के जनजीवन की सच्ची कहानी—ग़रीबी, निरक्षरता, अज्ञान, कुसंस्कार और अन्धविश्वासों से घिरे लोगों की सच्ची कहानी, लेखिका ने इस पुस्तक में दी है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिर्फ़ कामाख्या ही नहीं, कामाख्या के आसपास वाले इलाक़ों, ब्रह्मपुत्र के उत्तर और दक्षिण किनारों का जनजीवन भी इस उपन्यास में स्पष्ट है। इस तरह से देखा जाय तो इस उपन्यास को एक 'सामाजिक दस्तावेज़' (ह्यूमन डॉकुमेण्ट) कहा जा सकता है। समाज के पिछड़े और शोषितवर्ग के प्रति इन्दिरा गोस्वामी की समवेदना इस कृति के हर प्रसंग में स्पष्ट झलकती है। उपन्यास में ब्रह्मपुत्र के उत्तर और दक्षिण किनारे की विभिन्न जगहों को ध्यान में रखकर ही लेखिका ने अनेक प्रसंगों में आंचलिक 'कामरूपी भाषा' का प्रयोग किया है। इसके फलस्वरूप कथानक का अधिकांश यथार्थ से जुड़ गया है।

बहुत दिनों से कामख्या से दूर चले गये छिन्नमस्ता के संन्यासी और डरथी ब्राउन वापस आ जाते हैं। किसी हत्यारे ने गोली मारकर डरथी की हत्या कर दी है। बाद में पता चलता है कि गोली मारनेवाला व्यक्ति डरथी का पति था।

यहाँ तक कहानी की सिर्फ़ 'आउट लाइन' दी गयी है। अलग-अलग उपादान इसे पूर्णता प्रदान करते हैं। उनमें हैं अनेक खण्डचित्र, लोकगाथाएँ, लोकविश्वास, प्रकृति-वर्णन, इतिहास, किंवदन्तियाँ, लोकाचार और वहाँ की राजनैतिक परिस्थितियाँ। कहानी कितनी सशक्त है यह इस उपन्यास में मुख्य बात नहीं है, मुख्य बात है इसकी परिपूर्णता, लेखिका की असाधारण प्रतिभा। हर प्रसंग में पाठक कहानी के साथ जुड़ जाता है, वह सिर्फ़ दर्शक नहीं बना रहता। पुस्तक की एक उल्लेखनीय विशेषता है—परम्परा से चली आ रही पशुबलि जैसी निर्मम प्रथा का विरोध। लेखक का उद्देश्य भी यही है। डरथी, विधिबाला और रत्नधर, सब मन से पशुबलि का विरोध करते हैं। साथ ही विद्यापीठ के वे छात्र भी हैं जो बलि-प्रथा बन्द करवाने के लिए लोगों से दस्तख़त कराते फिरते हैं।

असमिया साहित्य में समाज को जागरूक करनेवाली अनेक रचनाएँ हैं। 'छिन्नमस्ता' उसकी आख़िरी कड़ी है। लेकिन पशुबलि के विरोध में आवाज़ उठानेवाले असमिया साहित्यकारों में इन्दिरा गोस्वामी पहला नाम है। उनकी साहसपूर्ण कोशिश को यहाँ की जनता का समर्थन मिला है। पशुबलि-विरोध जैसे एक नाजुक, धार्मिक विषय को लेते समय लेखिका ने तर्क, चिन्तन और शास्त्रों के प्रमाणों का सहारा लिया है। फिर भी उनके विचारों में कहीं उग्ररूप नहीं दिखाई देता और किसी की भी भावनाओं को उन्होंने आघात नहीं पहुँचाया है, बल्कि रचनाधर्म और भावनाओं का आश्रय लिया है। लेखिका को विश्वास है कि भावनाएँ अधिक फलप्रद होती हैं। कुछ-एक उदाहरण इस प्रकार हैं—

"रत्नधर हाथ के नाख़ून से ज़मीन कुरेदने लगा। उसके मुँह से झाग निकलने लगा। वह गला फाड़कर चिल्लाने लगा, "पकड़ो, पकड़ो! बलि के लिए लाया गया है! ओफ्, ओफ्!! वह वधस्थल में जाना नहीं चाहता है, डर के मारे उसकी विष्ठा निकल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
गयी है। ओह्, ओह्! उसकी आँखें देखो! उस पर रहम खाओ! रहम खाओ उस पर! वह मरना नहीं चाहता है! उसे मुक्ति नहीं चाहिए। उसे घसीटकर इस तरह मुक्ति देने की ज़रूरत नहीं है। पकड़ो, पकड़ो! वह ज़िन्दा रहना चाहता है। देवी माँ की बनाई हुई इस हरी-भरी धरती पर वह ज़िन्दा रहना चाहता है। पकड़ो, पकड़ो!'' रत्नधर के सीने में जैसे भैंसा के खुर की खट् खट् आवाज़ गूँजने लगी। उसकी देह के रक्तप्रवाह के साथ यह शब्द मिलकर एक हो गया है!

* * *

नाव से एक हट्टा-कट्टा आदमी उतरा। उसकी गोद में तीन साल का एक बच्चा था। बायें हाथ से उसने बलि के लिए लाया गया एक बकरा पकड़ रखा था। बच्चा बकरे के साथ खेल रहा था। चितकबरा और मोटा-ताज़ा बकरा भी उस हट्टे-कट्टे आदमी की गोद में चढ़कर कान हिलाते हुए बच्चे के साथ खेल रहा था। बेचारे को क्या पता कि कुछ ही क्षणों में उसके ख़ून से बच्चे का माथा रँगा जाएगा।...

तर्सा-किनारे का संन्यासी पहाड़ से उतरकर उस हट्टे-कट्टे आदमी के सामने खड़ा हो गया। फिर एक ताम्रपत्र दिखाकर कहने लगा, 'ख़ून दोगे?'

बकरे ने बच्चे के सीने पर सिर छुपाकर अपना बदन झाड़ा। बकरे के मालिक ने एक बार उसे बायें हाथ से कसकर पकड़ लिया। फिर से एक बार संन्यासी ने चिल्लाकर उससे कहा, ''ले जाओ, यह ताम्रपत्र ले जाओ! मुझे ख़ून चाहिए!''

* * *

बीच सड़क पर काली का 'घोड़ा' बने आदमी से अपना भविष्य पूछने के लिए एक सुन्दर महिला आकर खड़ी हो गयी। उसके दायें हाथ में एक गोल-मटोल बच्ची थी। बीच-बीच में बच्ची माँ का ब्लाउज हटाकर दूध पीने की कोशिश कर रही थी। वह बायें हाथ से बकरे का एक छोटा-सा बच्चा पकड़े थी। भीड़ में दबने से उस बच्चे ने बीच सड़क पर ही उल्टी कर दी। उसकी सफ़ेद रंग की उल्टी देखकर आसपास से धक्का-मुक्की करते हुए भक्तों के दल कह उठे, ''ओह, बिलकुल माँ का दूध पीता हुआ बच्चा है! उल्टी के साथ दूध ही निकला है न!''

महिला ने बड़ी-बड़ी आँखों से बलि को लाये गये बकरी के बच्चे को देखा। आसपास खड़े भक्त बोले, ''ओह् ओह्! ये दोनों ही माँ का दूध-पीते बच्चे हैं। देउधा को ख़ून पिलाने के लिए क्यों ले आयी?''

छोटी-सी बच्ची ने एकबार माँ को और फिर बकरी के बच्चे को देखकर पूछा, ''इसकी माँ कहाँ है? इसकी माँ कहाँ है?''

इस तरह का एक अन्तर्भेदी विषादबोध पूरी कहानी में देखा जा सकता है। यह

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
विषादबोध उपन्यास की गम्भीरता और उसकी सम्पूर्णता व्यक्त करता है। जटाधारी ने डरथी से कहा था, ''देखो कोई सुखी नहीं है। इस जगत् में कोई सम्पूर्णरूप से सुखी नहीं है। शरीर के टूटे-बिखरे माँस में एक सुघड़ आकार की कल्पना करके लोग सिर्फ़ भागदौड़ करते रहते हैं।''

'छिन्नमस्ता' लिखते समय इसकी कथा के विभिन्न पक्षों को सोचा गया है। इसमें से दो-एक उदाहरण ही हमने दिये हैं। विचारशील पाठक ज़रूर इस कृति में और भी विशेषताएँ पाएँगे। किसी कृति के मूल्यांकन के समय उसका वस्तुनिष्ठ होना आवश्यक होता है। लेकिन ऐसी कई रचनाएँ हैं जिनके बारे में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण के साथ रोचकता का अतिरेक भी रहता है। 'छिन्नमस्ता' ऐसी ही एक सृष्टि है। विषय की गहराई, अतीत और वर्तमान के अनुभवों की समग्रता से भरपूर यह मनमोहक रचना है। रचना-शीलता, समाज-चेतना और उद्देश्य एक बनकर सुन्दर रूप धारण करनेवाला यह उपन्यास पाठकों को बहुत पसन्द आएगा और बहुत जल्दी यह उनके मन में जगह बना सकेगा, यह हम निःसन्देह रूप से कह सकते हैं।

— डॉ. प्रफुल्ल करकी
पूर्व विभागाध्यक्ष, अँग्रेज़ी विभाग
गुवाहाटी विश्वविद्यालय

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

यह उपन्यास भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य असम में स्थित सबसे बड़ी शक्तिपीठ कामाख्या की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। सन् 1921 से 1932 तक की घटनाओं के आधार पर इस उपन्यास की रचना की गयी है, लेकिन पिछली घटनाओं और ऐतिहासिक विवरणों के कारण कहीं-कहीं इसकी कथावस्तु अतीत की ओर भी चली गयी है। ऐसी मान्यता है कि इस शक्तिपीठ अर्थात् नीलाचल में देवी का योनिभाग गिरा था। शिव की पहली पत्नी दक्षराज की बेटी सती पिता के राजदरबार में अपने पति पर लगाये लांछन को सह न सकी और यक्ष के अग्निकुण्ड में कूदकर उसने आत्महत्या कर ली। शिव को जब यह ख़बर मिली तो वे अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे और सती का मृत शरीर कन्धे पर लादकर पूरे ब्रह्माण्ड में संहार-नृत्य करने लगे। सभी देवताओं ने भगवान विष्णु से इसे रोकने का अनुरोध किया। विष्णु ने अपने सुदर्शनचक्र से सती की देह को खण्ड-खण्ड कर दिया। जिन स्थानों पर सती के अंग गिरे वे सभी स्थान शक्तिपीठ बने। असम के कामाख्या में देवी का योनिभाग गिरने के कारण इसे विशिष्ट माना जाता है।

इस उपन्यास में उस समय के असम पर शासन करनेवाले अँग्रेज़ शासकों का भी कुछ वर्णन है। एक अँग्रेज़ महिला ने किस तरह शक्तिपीठ के तान्त्रिक के साथ सम्बन्ध बनाये थे—उसे मूल कहानी के रूप में लिया गया है। इस उपन्यास के प्रधान नायक छिन्नमस्ता के जटाधारी का परिचय अब भी रहस्य बना हुआ है। किसी को यह ठीक से नहीं मालूम कि वे कहाँ से आये थे। उपन्यास का मुख्य हिस्सा है—इस शक्तिपीठ में हर समय चलते रहनेवाले बलि-विधान की कहानी। कहते हैं कि पहले यहाँ नरबलि होती थी। अँग्रेज़ों के राज में इसे बन्द कर दिया गया। लेकिन अँग्रेज़ शासकों ने मन्दिर के अन्दरूनी नीति-नियमों में कभी दख़ल नहीं दिया। मन्दिर का सारा काम पुजारियों के हाथों में ही था, इसलिए आज भी इस मन्दिर में पक्षियों, बकरों आदि की बलि दी जाती है। इस शक्तिपीठ का आँगन हमेशा ख़ून से रँगा रहता है।

इस उपन्यास के नायक का एक ही मक़सद था कि किस तरह ख़ून की धाराओं

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
को रोका जा सके। इतिहास में यह तथ्य दर्ज है कि आहोम राजा रुद्रसिंह द्वारा हर दुर्गा-अष्टमी के दिन दस हज़ार भैंसे बलि चढ़ाये जाते थे।

इस उपन्यास की रचना अनेक तथ्यों को संग्रह करने और मन्दिर में दीर्घकाल तक रहकर अनुभव प्राप्त करने के बाद की गयी है।

– इन्दिरा गोस्वामी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

छिन्नमस्ता

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक

कोहरे के वक्षस्थल पर ब्रह्मपुत्र सो रहा था। जैसे विधवा माँ के सफ़ेद कपड़ों के बीच सिर छुपाकर पड़ा है धवल रोग से ग्रस्त एक असहाय पुरुष।

छिन्नमस्ता के जटाधारी भुवनेश्वरी से धीरे-धीरे नीचे उतर आये। धीरे-धीरे ब्रह्मपुत्र का रूप स्पष्ट होने लगा था। भोज के लिए कटे हुए मांस की गन्ध जैसी एक अजीब गन्ध खिले हुए हरसिंगार के साथ मिलकर विचित्र माहौल बना रही थी। ओऊ[1] पेड़ के घिला पिठा[2] जैसे पत्तों, अशोक के लम्बे पत्तों, विशालकाय खोकन पेड़ों और केन्दु की झाड़ियों से ओस टपकने की मृदु आवाज़ हो रही थी।

जटाधारी ने ब्रह्मपुत्र के पास जाकर मिट्टी-जल का स्पर्श किया। इस जगह पर इतना ज़्यादा कोहरा था कि वे नहाकर या पूजा करके लौटे हैं, यह समझना मुश्किल था। थोड़ी देर में कोहरे के बीच से चतुःषष्ठी योगिनी की वन्दना सुनाई दी—"ब्रह्माणी, चण्डिका, गौरी, रौद्री, इन्द्राणी, कौमारी, वैष्णवी, दुर्गा, नरसिंही, कालिका, चामुण्डा, शिवदूती, वाराही, कौशिकी, महेश्वरी, शंकरी, जयन्ती, सर्वमंगला, काली, कपालिनी, मेधा, शिवा, शाकम्भरी, भीमा, शान्ता, भ्रामरी, रुद्राणी, अम्बिका, क्षमा, धात्री, स्वाहा, स्वधा, सर्पणा, महोदरी, क्षेमंकरी, उग्रचण्डा, चण्डोग्रा, चण्डनायिका, चण्डा, चण्डावनी, चण्डी, मनोमोहा, प्रियंकरी, बलविकारिणी, बलप्रमार्थनी, मनोन्मथिनी, सर्वभूतदमिनी, उमा, तारा, महानिद्रा, विजया, जया, शैलपुत्री...।" इसी तरह चतुःषष्ठि योगिनियों के नाम संगीत के टुकड़े बनकर नीलाचल पर्वत के चारों तरफ़ गूँजने लगे।

जटाधारी की देह धीरे-धीरे कोहरे के बीच से प्रकट होने लगी। जैसे किसी जलाशय में कोई भूखण्ड स्पष्ट होने लगा था— काई, पानी, घास और लताओं से भरा भूखण्ड !

ज़मीन से खोदकर निकाले गये मृत व्यक्ति की अस्थियों की तरह उनके शरीर

---

1. एक तरह के खट्टे फल का पेड़।
2. चावल का बना हुआ मालपुआ।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का रंग था। धूप, हवा और बरसात को नज़रअन्दाज़ कर जंगलों और पहाड़ों में घूमने के कारण उनके शरीर का चमकता रंग पुरानी राख की तरह हो गया है। जंग लगी लोहे की तरह उनकी जटा का रंग थां। उनकी गड्ढों में धँसी हुई दोनों आँखें देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी ने तेज़ चाक़ू से खोदकर वे गड्ढे बनाये हों। लोग ज़्यादा समय तक उनकी तीखी नज़र सहन नहीं कर सकते। वे जिसकी तरफ़ भी देखते हैं, एक अजीब-सी सिहरन उसके शरीर के अन्दर तक छू जाती है। किसी अस्त्र से किये गये ज़ख़्म की तरह कष्ट से भरी होती है यह सिहरन।

यह कार्तिक का महीना है। भक्तों का जमघट लगा हुआ है। ज़्यादातर लोग 'एड़ी'[1] की चादर से शरीर ढँककर बैठे हैं। एक-दो भक्त कम्बल भी ओढ़े हुए हैं। पिछवाड़ेवाले दरवाज़े से कब आकर जटाधारी अन्दरवाली कोठरी में घुस गये, किसी को पता ही नहीं चला। दो-एक के ऊपर जटाधारी के शरीर से टपकता हुआ पानी गिरा।

अब तक उनके लिए पूजा की सामग्री रत्नधर ने तैयार करके रख दी थी। दूब, लाल रंग के जवाकुसुम के फूल और चन्दन उसने सलीके से सजाकर रखे थे। जटाधारी जल्दी से वेदी के सामने बैठ गये और ध्यान मुद्रा में लीन हो गये। दोनों हथेलियों को कछुए की तरह और योनि-सी मुद्रा बनाकर मुँह से फुसफुसाते हुए भैरव का नाम उच्चारण करने के बाद फिर से ह्रांग, ह्रींग, ह्रूंग, ह्रों, ह्रौं—मन्त्र पढ़कर उन्होंने किस भगवान की पूजा-अर्चना की, यह वहाँ बैठे किसी को समझ में नहीं आया। उसके बाद वे एक लोटा पानी गट्‌गट्‌ करके पी गये। फिर खड़े होकर रत्नधर को सीने के पास खींच लाये, उसके सिर में हाथ फिराकर आशीर्वाद दिया।

रत्नधर कामाख्या मन्दिर के प्रख्यात पण्डा मनमोहन शर्मा का पहला पुत्र है। वह चित्रकार था। भक्तों के बीच उसके चित्रों का आदर था। उसके हाथ-पैर सुडौल थे। सिर के बाल घने थे और उसका रंग भी गोरा था। बिलकुल राजपुत्र-सा चेहरा था उसका। एक साल पहले इस लड़के ने मानसिक सन्तुलन खो दिया था। ब्रह्मपुत्र के उत्तर और दक्षिण—दोनों किनारों के अनेक वैद्यों ने इस लड़के का इलाज किया था, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ था।

लेकिन ये जटाधारी ? अद्‌भुत शक्ति थी उनमें। उनके पास आने के बाद फिर से वह तस्वीर बनाने लगा था। बैठे हुए भक्तों के सामने से जटाधारी और रत्नधर जल्दी-जल्दी बाहर निकल गये। इस चित्रकार को कुछ दिनों से जटाधारी एक विशेष तस्वीर बनाने के लिए प्रेरित कर रहे थे।

सन् 1792 में कैप्टन वेल्स और देवीपीठ के दरवाज़े 'गोरिला चौकी' तक साथ

---

1. असम में तीन प्रकार के रेशम बनाये जाते हैं—पार, मुगा और एड़ी। एड़ी के धागे से गरम चादर बनती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
लाये हुए सैनिकों की तस्वीर थी वह। विशालकाय फ़ौज के साथ 'बरागी' राजा के क़ब्ज़े से गुवाहाटी को मुक्त कराने के लिए छः सैनिकों की टुकड़ियों के साथ आये हुए कैप्टन वेल्स की एक तस्वीर बनाने के लिए जटाधारी ने रत्नधर को उत्साहित किया था। देश के इतिहास और विभिन्न भाषाओं के बारे में जटाधारी का ज्ञान देखकर भक्तों के बीच उनके विषय में रहस्य बढ़ गया था। कोई कहता कि वे वाराणसी में शिक्षा प्राप्त किये हुए मेधावी छात्र हैं। किसी और का कहना है कि दक्षिण के तंजौर में उन्होंने शिक्षा-लाभ किया था और कुछ लोग कहते हैं कि वे त्रिहुत की तरफ़ के आदमी हैं। यह भी कहा जाता है कि वे पक्षियों की बोली भी समझ लेते थे।

जटाधारी के बारे में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। उनके दर्शन के लिए बैठा हुआ कोई भक्त बोल उठा, "कुछ दिन पहले ही फाँसी की सज़ा में मरे एक क़ैदी की लाश उसके घरवाले ब्रह्मपुत्र की रेत पर फेंक आये थे। जटाधारी उस लाश पर बैठकर दो रात तक साधना करते रहे। मैंने अपनी आँखों से यह दृश्य देखा है। मैंने सुना है कि जटाधारी के लिए ही वह लाश वहाँ लायी गयी थी।"

एक दूसरे भक्त ने फुसफुसाते हुए कहा, "लोग कहते हैं कि मरे हाथी के पेट से अँतड़ियाँ निकालने के बाद वे उसके पेट में घुसकर साधना करते हैं।"

—छिः छिः—चुप, चुप !

एक और भक्त ने ज़ोर से कहा, "यह सब सुनी हुई बातें हैं, अगर सच्चाई जानना चाहते हो तो पूर्णमासी के अगले दिन नदी के पानी में देखना।"

पूर्णमासी के अगले दिन ?

सब लोग कौतूहल के साथ उस भक्त की बात सुनने लगे। "तुम लोग 'रणचोवा'[1] पत्थर पर बैठकर पानी में देखना, वहाँ मिट्टी के रंग का एक नाग तैरता हुआ नज़र आएगा। वह नाग पानी से फन निकालता हुआ किनारे पर आएगा।"

एक दूसरे भक्त ने फुसफुसाकर कहा, "नहीं, नहीं—वह साँप नहीं है; वह जटाधारी की जटा है। पानी के नीचे भी जटाधारी साधना करते हैं। हाँ, हाँ—लोग कहते हैं, उस जटा के साथ साँप भी कुण्डली मारकर बैठा रहता है। ज़हरीले साँपों के साथ रहना जटाधारी के लिए कोई नयी बात नहीं है।"

—"बम ! बम ! बम !"

—"बम ! बम ! शिव शम्भू ! शिव शम्भू !!"

सारे भक्त चौंक उठे। घुटनों से सिर टिकाकर बैठे हुए भक्तों ने आँखें उठाकर

---

1. सन् 1667 में ब्रह्मपुत्र के बीच हुए शराईघाट के नौका-युद्ध को देखने के लिए नीलाचल के लोग इस पत्थर पर चढ़े थे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
देखा। हाथ में कमण्डल लिये दो संन्यासी वहाँ हाज़िर हुए। सभी भक्तों ने एक साथ उन दोनों को देखा। नीलाचल में शायद ये नये लोग आये हैं। उनके सिर पर जटा और गले में रुद्राक्ष की माला थी। शरीर में केसरी कपड़े शोभा बढ़ा रहे थे। उनमें से एक का कद लम्बा है और दूसरा नाटा-सा है। उनके सामने से कुछ लोग बलि के लिए एक भैंसा घसीटकर ले जा रहे थे। सभी ने उस भैंसे के खुर की आवाज़ सुनी।

ठीक उसी समय चित्रकार रत्नधर एक विकट चीख़ के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा। चारों तरफ़ हल्ला मच गया। रत्नधर नाख़ून से ज़मीन कुरेदने लगा। उसके मुँह से झाग निकलने लगा। वह गला फाड़कर चिल्लाने लगा, "पकड़ो ! पकड़ो ! बलि के लिए लाया गया है। मैदान में चरते भैंसे को घसीटकर बलि के लिए ले गये हैं वे। ओफ़्, ओफ़्—वह वधस्थल में जाना नहीं चाहता है। डर के मारे उसकी विष्ठा निकल गयी है। ओह्, ओह्, उसकी आँखों को देखो, उस पर रहम खाओ, रहम खाओ उस पर। वह मरना नहीं चाहता है। उसे मुक्ति नहीं चाहिए। उसे इस तरह घसीटकर मुक्ति देने की ज़रूरत नहीं है। पकड़ो ! पकड़ो ! वह ज़िन्दा रहना चाहता है। देवी माँ की बनायी हुई इस हरी-भरी धरती पर वह जिन्दा रहना चाहता है। पकड़ो, पकड़ो..."

भैंसे को खींचकर ले जाने की जद्दोजहद चलती रही। उसके खुर की खट्-खट् आवाज़ सुनकर ऐसा लगा जैसे कोई चीज़ टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गयी है।

खट् खट् खड़ात् !

खट् खट् खड़ात् !!

इस बीच चुपचाप बैठे हुए भक्त आपस में बातें करने लगे—"रत्नधर के सीने में भैंसे के खुर की आवाज़ समा गयी है। उसके शरीर के रक्त-प्रवाह के साथ वह आवाज़ एक हो गयी है। बलि के लिए ले जानेवाले भैंसे को देखकर पिछले साल भी वह इसी तरह गिर पड़ा था। आज भी वैसा ही हुआ। उसके मुँह से झाग निकल रहा है। नाख़ून से वह मिट्टी कुरेद रहा है, हाथ-पैर मारता हुआ चिल्ला रहा है।"

अब तक भक्तों की भीड़ बढ़ गयी थी। जटाधारी के चारों तरफ़ हल्ला होने लगा।

दमे के मरीज़, दिमाग़ी सन्तुलन खोनेवाले आदमी, फ़ौजदारी में परेशान लोग, पित्त के मरीज़, बेटी ब्याहनेवाले बाप, पितर के दोष से मुक्ति चाहनेवाले व्यक्ति और ग़रीबी से ग्रस्त लोगों की भीड़ को धक्का देकर जटाधारी भागते हुए रत्नधर के पास पहुँचे। उसे अंक में लेकर उन्होंने पास में बिछे हुए आसन पर लिटा दिया। फिर कुछ समय तक ध्यान की मुद्रा में वे पीढ़े पर बैठे रहे। उनके मुँह से 'आसन पूजा' का मन्त्र सुनाई देने लगा—"ओम ह्रींग ! ओम ह्रींग !" ताँबे की थाली में रखे हुए

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
पुष्प से उन्होंने अपने आसन की पूजा की। क्षौं ! क्षौं ! मन्त्र का उच्चारण करते हुए वे अपने दोनों हाथ सीने के पास ले गये, फिर ताँबे की थाली में रखे जवाकुसुम के फूल को अपने और रत्नधर के माथे पर रखा। मन्त्र का उच्चारण करते हुए उन्होंने इस रक्तवर्णवाले पुष्प से अपने हृदय-देवता की पूजा की। रत्नधर के सीने पर हाथ रखकर वे 'माँ छिन्नमस्ता ! माँ छिन्नमस्ता' कहकर चिल्लाने लगे।

कुछ देर तक वे मन्त्रों का उच्चारण करते रहे। फिर आँखें खोलकर उनसे मिलने आनेवाले लोगों को देखा। उनके पास साथ-साथ पहुँचने के लिए सब लोगों ने धक्का-मुक्की शुरू कर दी।

ठीक उसी समय पतली-सी गली से जूते की खट् खट् आवाज़ करते दो लोग आ पहुँचे। पूरे शरीर और चेहरे चादर से ढँके होने के कारण उन्हें बाक़ी बैठे लोग पहचान नहीं पाये। लेकिन सिर से कपड़ा हट जाने के बाद जटाधारी की कोठरी के सामने बैठे भक्तगण चौंक उठे। उनमें से फुसफुसाने की आवाज़ आने लगी–

"कहाँ के लोग हैं ?"

"कहाँ से आये हैं ?"

सब लोगों के सामने एक अलग तरह की नाटी मूर्ति प्रकट हो गयी। उसका चेहरा बिलकुल सफ़ेद था और कन्धों के नीचे तक ताम्रवर्ण के बाल लटक रहे थे। उसने घुटनों के नीचे तक ढँकी हुई 'मेखला'[1] जैसी स्कर्ट पहन रखी थी। साथ में एक ऊनी ब्लाउज़ भी पहना था जिससे उसके स्तनों का उभार साफ़ नज़र आ रहा था। वधस्थल तक ले जाते समय छटपटाते सफ़ेद कबूतर के दोनों पंख जैसे उसके स्तन थे। छोटे से एक दुपट्टे से वह बार-बार अपने बालों को ढँकने की कोशिश कर रही थी, लेकिन किसी भी कोशिश से उसका अँग्रेज़ होना छुप नहीं सका था।

"क्या मेम है ?"

"हाँ, हाँ–मेम ही है।" ऐसा नहीं हैं कि पहले कोई मेम देवीपीठ में नहीं आयी है। सात समन्दर पार की गोरी मेम पहले भी यहाँ आ चुकी है।

इसी समय जटाधारी फिर से चिल्ला उठा, "माँ, माँ छिन्नमस्ता !"

कुछ समय तक सब लोग मौन रहे। एक बार फिर वे उसी प्रकार से चिल्लाये–"माँ, माँ छिन्नमस्ता !"

इस बार उनके पास बैठे हुए भक्तों ने भी साथ में दोहराया–"माँ, माँ..."

उस गोरी औरत के साथ आया मुंशी अपने सिर से कपड़ा हटाकर भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ा और जटाधारी के पैरों पर गिर पड़ा। वह कहने लगा, "महाप्रभु, मैं मेमसाहब को ले आया हूँ। अगर मुझसे कोई दोष हुआ है तो क्षमा

---

1. असमिया पोशाक।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
कीजिएगा ! बहुत दुःखी हैं बेचारी।''

भीड़ में से किसी की आवाज़ आयी–''क्या मेमसाहब कभी मन्दिर के अन्दर घुसी हैं ? भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला-काली या तारादेवी के मन्दिर में ?''

मुंशी ने ज़ोर से सिर हिलाते हुए कहा, ''नहीं, नहीं, डरथी मेमसाहब तो यहाँ भी जूता उतारकर आयी हैं। इस महापीठ में पैर रखते समय उन्होंने पहले अपना सिर झुकाया है।''

अब जटाधारी ने आँखें खोलकर देखा। गूँजती हुई आवाज़ में उन्होंने कहा, ''कौन ? कहाँ से आयी है ?''

हाथ जोड़ते हुए मुंशी ने कहा, ''बहुत दुःखी हैं। इसलिए आपके पास आयी हैं।''

सब लोगों ने सिर उठाकर उस महिला को देखा। नीली आँखें–जाड़े के मौसम में नीले आसमान का प्रतिबिम्ब दिखाते ब्रह्मपुत्र के पानी जैसी चमकती आँखें। क्या ये आँखें बर्फ़ के दो जमे हुए टुकड़े हैं ? उसके शरीर का रंग छीली हुई लौकी की तरह बेरंग है। उसकी आँखों में दुःख और विनय के भाव इस तरह मिले हुए हैं कि कोई भी आदमी उसे सहारा देना चाहेगा। कोई भी व्यक्ति उसे दिल से पूछेगा–'क्या हुआ ? क्या हुआ है तुम्हें ?'

छिन्नमस्ता के जटाधारी ने उस औरत को सामने आने का इशारा किया। अब उसके सुडौल पैरों को सबने स्पष्ट रूप से देखा। जटाधारी ने आँखों से इशारा करके उससे बैठने के लिए कहा। भक्तों के बीच में से कोई हड़बड़ाकर उठा और उसके लिए अन्दर से एक दरी लाकर बिछा दी।

यह दृश्य बिलकुल यक़ीन करने लायक़ नहीं है। गुवाहाटी की सड़कों पर कितने ही गोरे साहब घूमते रहते हैं। किसी के बाल ताँबे के रंग के नहीं हैं। हाँ, बिलकुल बलि को काटनेवाले खड्ग की तरह है उसके बालों का रंग। आँखों में विनय और नम्रता का भाव फैला है। ओह्, इन आँखों की तुलना मन्दिर के अन्दर बने उस जलकुण्ड से की जा सकती है, जिसका पानी मिट्टी के अनेक दीपकों की रोशनी से झिलमिलाता रहता है।

जटाधारी दोनों आँखें मूँदकर कुछ समय के लिए ध्यान में लीन हो गये। उसके बाद वे चिल्ला उठे, ''माँ, माँ–अनंगकुसुमा ! माँ अनंगमदना ! माँ अनंगमेखला ! अनंगमालिनी ! माँ, माँ... ।''

अब जटाधारी ज़मीन पर लेट गये। देवी छिन्नमस्ता की तरफ़ मुँह करके वे करवट बदलने लगे। उनके दोनों जुड़े हुए हाथ निरन्तर माथे पर स्पर्श करते रहे। सामने बैठे हुए भक्तगण उनके पास से कुछ दूर हटकर बैठ गये।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

—"त्राहि, त्राहि मां शरणागतम् !"

अब वे कुछ होश में आये। नींद से जागे इनसान की तरह वे उठकर बैठ गये। आँखों के सामने डरथी ब्राउन को देखकर उन्होंने मुंशी से कहा, "क्या कहना चाहती है, सबके सामने कह सकती है। क्यों आयी है मेमसाहब ? काँटे का मुकुट पहने देवता उसके हृदय में बसे हैं। क्यों आयी है यहाँ ?"

डरथी ब्राउन के होठ काँप उठे। आँखें भर आयीं। मुंशी की तरफ़ उसने सिर उठाकर देखा।

फिर से चिल्ला उठे जटाधारी, "क्या नाम है मेमसाहब का ? क्या कहना चाहती है ?"

मुंशी ने गोरी औरत की तरफ़ देखा। उस औरत ने मुंशी को अपनी तरफ़ से बोलने की अनुमति दी।

"प्रभु, इनका नाम डरथी है। डरथी ब्राउन। कॉटन कॉलेज के अध्यापक हेनरी ब्राउन की पत्नी।"

जटाधारी के आसपास बैठे लोग बड़ी जिज्ञासा के साथ उस औरत को देखने लगे। गले में बँधे दुपट्टे से गोरी मेम अपने बालों को बाँधने की कोशिश करती रही। उसके माथे पर पसीने की बूँदें चमकने लगी थीं।

जटाधारी फिर से चिल्लाये, "क्या कहना चाहती है ? क्या कहना चाहती है यह औरत ?"

चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया। एक कौड़िल्ली चिड़िया फर्-फर् आवाज़ करती हुई सबके सिर के ऊपर से उड़ गयी। एक-एक करके और भी भक्त जमा होने लगे। सभी की दृष्टि में जिज्ञासा थी। जैसे सभी लोग सारी बातों को मदिरा की तरह पीना चाहते हैं। आँखें फाड़कर सब लोग सामने की तरफ़ देखते रहे।

"क्या करने आयी है वह ?"

मन में शान्ति नहीं है।

मन में शान्ति नहीं है ?

जटाधारी के मुँह से अपने-आप ये शब्द निकले—"मन में चैन नहीं है, मन में शान्ति नहीं है।" भीड़ की तरफ़ हाथ दिखाकर उन्होंने ज़ोर से कहा, "तुम लोगों के मन में शान्ति है क्या ? कहो, क्या तुम लोग सुखी हो ?"

किसी ने जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर पहले तक कोहराम मचानेवालों में से कोई कुछ नहीं कह सका।

जटाधारी मुस्कुराते हुए औरत को तसल्ली देने लगे, "देखो, कोई सुखी नहीं है। इस जगत् में कोई सम्पूर्ण रूप से सुखी नहीं होता। शरीर के टूटे-बिखरे मांस में एक सुघड़ आकार की कल्पना करके लोग सिर्फ़ भागदौड़ करते रहते हैं।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस औरत ने मुँह के अन्दर ही अस्पष्ट भाषा में कुछ कहना चाहा। किसी को उसकी बातें समझ में नहीं आयीं। लेकिन जटाधारी ने महसूस किया कि शायद वह यही कहना चाह रही है कि उसकी सारी कोशिशें नाकाम हो गयी हैं, उसकी कोशिशें मिट्टी में मिल गयी हैं।

लम्बे बाल और खुरपी जैसे दाँतवाले मुंशी ने जैसे उस औरत के मन की बात सबसे कहनी चाही–"डरथी मेमसाहब आपसे एकान्त में एक बार मिलना चाहती हैं। वह आपकी शिष्या बनना चाहती हैं।"

जटाधारी जैसे कुछ समय तक यह सोचते रहे कि उस औरत को अपनी कोठरी में आने की अनुमति देनी चाहिए या नहीं। फिर बिना कुछ कहे वे उठ खड़े हुए और भुवनेश्वरी के ऊपर तक फुर्ती से चढ़ने लगे। सख़्त पेशीवाले ज़बरदस्त शरीर का यह आदमी ऐसे ऊपर चढ़ गया जैसे कोई जंगली हाथी सब-कुछ तोड़ता हुआ आगे बढ़ जाता है। ताक-झाँक करनेवाले लोगों में से कुछ उनके पीछे-पीछे जाने लगे। डरथी और मुंशी किंकर्तव्यविमूढ़ होकर हर्रे के पेड़ के नीचे खड़े रह गये।

कुछ देर के बाद जटाधारी लौट आये। सभी भक्तगण उत्सुकता के साथ जटाधारी के फ़ैसले का इन्तज़ार करने लगे कि क्या वे उस अँग्रेज़ औरत को अपनी कोठरी में घुसने देंगे ? खड़ाऊँ की खट्-खट् आवाज़ सुनाई पड़ी। केसरी वस्त्र पहने और मुण्डन किये हुए एक संन्यासी को सब लोगों ने ध्यान से देखा। वह संन्यासी तर्सा के किनारे अर्थात् कोचबिहार से आया था। देह में जानवरों की अँतड़ियों जैसा यज्ञोपवीत लपेटे हुए था। 'अम्बूवाची'[1] के समय ही इस शक्तिपीठ में वह आया था और भैरवी मन्दिर के आँगन में अपना डेरा डाला था। वह मुँह से लगातार माता भैरवी के मन्त्र पढ़ रहा था।

उनके मुँड़े हुए सिर के गड्ढे स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। केसरी धोती और उसी रंग की चादर पहने संन्यासी भैरवी का मन्त्र पढ़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा था। उसके शरीर का रंग काला था और वह देखने में काफ़ी बदसूरत था। सात फ़ुट लम्बे शरीरवाला वह संन्यासी जटाधारी की तरफ़ इशारा करके चिल्ला उठा, "यह निषिद्ध है, म्लेच्छों को शिष्य बनाना यहाँ निषिद्ध है !"

"कौन-सा शिष्य ? कैसा म्लेच्छ ?" जटाधारी ने कहा।

जटाधारी की तरफ़ इशारा करते हुए तर्सा-किनारे के संन्यासी ने फिर से कहा, "वह औरत किसी के पास नहीं गयी है, सिर्फ़ तुम्हारे पास आयी है।"

---

1. कामाख्या पीठ का एक अनुष्ठान, जिसमें चार दिनों तक मन्दिर के कपाट बन्द रहते हैं और ऐसी मान्यता है कि देवी उन दिनों रजस्वला रहती है। यह अनुष्ठान जून महीने में होता है और उस समय वहाँ देश के विभिन्न प्रान्तों से भक्त आते हैं। चार दिन के बाद मन्दिर की शुद्धि की जाती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जटाधारी ने भी ज़ोर देकर कहा, "मेरा कोई शिष्य नहीं है। मैं किसी को दीक्षा नहीं देता। मैं किसी को पास नहीं बुलाता। मैं अकेले रहना चाहता हूँ।" इतनी बातें कहने के बाद उन्होंने एक लम्बी साँस छोड़ी और फिर कहने लगे, "निषिद्ध शिष्य के बारे में सारे नियम मुझे याद हैं।"

चारों तरफ़ से फिर कानाफूसी होने लगी। उन्होंने कहा–

" 'तन्त्रसार' में लिखा गया है : पापी, क्रूर, मन्त्रद्वेषी, गुरुभक्तिहीन और मैले हृदयवालों को शिष्य नहीं बनाना चाहिए।

" 'आगमसार' ग्रन्थ में इससे एक क़दम बढ़कर लिखा गया है : आलसी, गुस्सेवाले, अन्याय से पैसा कमानेवाले अर्थात् घूसख़ोर, और अपने ज्ञान के बारे में अहंकार करनेवाले व्यक्ति को भी दीक्षा नहीं देनी चाहिए। लेकिन कहीं भी स्त्री-पुरुष का भेद नहीं किया गया है।–मेरे पास जो भी आते हैं, वे कष्ट से पीड़ित स्त्री-पुरुष हैं।"

जटाधारी और तर्सा-किनारे का संन्यासी जब इस बहस में लगे थे तभी एक भैंसे के खुर की खट्-खट् आवाज़ सुनाई दी। वधस्थल में ले जानेवाला भैंसा ऊपर चढ़ना नहीं चाह रहा था। वह पगहा तोड़कर नीचे भाग जाना चाहता था लेकिन मृत्युदूत जैसे यजमान की पकड़ से वह कैसे बच सकता था ? मृत्युदूत उसे खींच-खींचकर ले जा रहा था–और इस खींचतान में पहाड़ी के रेत-पत्थर नीचे की ओर झड़ते जा रहे थे।

जद्दोजहद, चीख़ना-चिल्लाना और खींचतान !

जटाधारी ज़मीन में पड़े रत्नधर को अपने सीने से लगाकर चिल्ला उठे, "माँ, माँ छिन्नमस्ता ! माँ छिन्नमस्ता !! माँ, माँ !"

किसी ने एक लकड़ी का टुकड़ा उछालकर मारा। वह टुकड़ा जटाधारी को नहीं लगा। एक ही मुहूर्त के अन्दर किसी को समझ ही नहीं आया कि डरथी को यह क्या हुआ ! वह जैसे उठकर जटाधारी के पास पहुँची और उनके घुटनों को ज़ोर से पकड़कर बिलखने लगी।

मुंशी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। उसने कहा, "साहब का कॉलेज से लौटने का समय हो गया है–हाँ, हाँ–वे अभी लौटने ही वाले हैं। अब तक शायद उनका ताँगा आँगन तक पहुँच गया होगा।"

तर्सा-किनारेवाला संन्यासी जटाधारी की कोठरी के सामने भीड़ लगाये भक्तों को इशारा करके उत्तेजित स्वर में कहने लगा, "क्या कर रहे हो तुम लोग–वह गोरी चमड़ीवाली औरत अब जटाधारी की कोठरी में घुसने जा रही है–मैं जानता हूँ; सब जानता हूँ। यह जटाधारी संन्यासी वशीकरण की शक्ति देखने के लिए क्या करता है, मैं जानता हूँ। वह इस गोरी चमड़ीवाली 'भक्तिन' को नंगा करके परिणाम देखेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
अब तुम लोग उठो, और कुछ करो, कुछ करो !''

बैठे हुए लोगों के झुण्ड में एक दबी-सी उत्तेजना फैल गयी। लेकिन कोई भी खड़ा नहीं हुआ। फिर से कहा संन्यासी ने, ''मैं जानता हूँ, वशीकरण का मन्त्र सिखाते समय योनि-स्पर्श करना पड़ता है, और...और...''

अचानक भक्तों के बीच में से दो मज़बूत शरीरवाले लोग खड़े हो गये और उन्होंने तर्सा-किनारेवाले संन्यासी का हाथ ज़ोर से पकड़ लिया। संन्यासी अपना हाथ छुड़ाने की नाकाम कोशिश करने लगा। ठीक उसी समय एक भयानक आवाज़ सुनकर सभी ऊपर की तरफ़ देखने लगे, जैसे एक विशालकाय पत्थर नीचे ढह गया हो। बड़ी मुश्किल से बलि के लिए घसीटकर ले जाया गया भैंसा आदमी समेत नीचे लुढ़क गया था।

वह भैंसा भागता हुआ जटाधारी के भक्तों की भीड़ में घुस गया। चीख़-पुकार और हो-हल्ला के साथ सभी लोग तितर-बितर हो गये।

इस कोहराम के बीच हर्रे के पेड़ के नीचे हेनरी ब्राउन की पत्नी डरथी ब्राउन खड़ी रही। उसकी आँखों के सामने ही भैंसे ने सींग घोपकर एक भक्त की अँतड़ियाँ निकाल दीं और पहाड़ी के नीचे की तरफ़ भाग गया।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो

छप्-छप् आवाज़ करती हुई नाव किनारे से लग गयी। नौकरों के एक दल के साथ डरथी ब्राउन के विश्वसनीय कर्मचारी मुंशी ने फुर्ती से किनारे पर पैर रखा। डरथी के लिए रहने की जगह का निर्णय हो रहा था। सभी जानते थे कि नदी-किनारे बना यह घर द्वारभांगा-घर नाम से प्रचलित है। लेकिन सचमुच हर घर द्वारभांगा राजा ने या फिर किसी देवी-भक्त राजा ने बनवाया था, यह बात किसी को अच्छी तरह से मालूम नहीं है। ईंट से बने इस घर में चूने का लेप लगाया गया था। मज़बूत होने के कारण वर्षों तक यह घर टूटकर गिरा नहीं था।

मुंशी ने ब्रह्मपुत्र की तरफ़ देखा। थोड़ी ही दूरी पर ब्रह्मपुत्र ने बलि के खड्ग की तरह टेढ़ा-सा रूप लिया है। नदी के बीच बने उर्वशीवाले स्तम्भ के पास पानी के सूखने से रेत निकली हुई है। रेत का यह इलाक़ा धूप में सूखने रखी सफ़ेद बकरे की खाल जैसा दिख रहा है।

मुंशी के साथ आये हुए लोगों में एक बढ़ई भी था। वह अपने औज़ार साथ लाया था। सब मिलकर कपड़ा रखनेवाले बक्से, लकड़ियाँ, लोहा और कुछ अन्य सामान नाव से उतारकर ले आये। दो-तीन लोग सीमेण्ट और रेत की बोरियाँ उठाते हुए फुर्ती से ऊपर चढ़ गये।

टूटने के कगार पर खड़े इस घर में अब तक एक कमरा खाना बनाने के लिए तैयार कर दिया गया था। उस रसोई में कुछ बर्तन, स्टोव और चीनी मिट्टी के कुछ कप-प्लेट भी रखे गये थे। दूरदर्शी मुंशी ने ही यह व्यवस्था की थी। बाक़ी चीज़ों का मुआयना करने के लिए मुंशी ऊपर चढ़ गया और सामान घर में रखकर बाक़ी लोग बाहर निकल आये। बाहर के धँसे हुए बरामदे में खड़े होकर मरियल-से चेहरेवाले बढ़ई ने कहा, “ओह, बहुत सुनसान जगह है ! मैं पहले घर के दोनों तरफ़ लगी हर्रे की डालियाँ काट देता हूँ, मेमसाहब नदी की शोभा देख सकेंगी। देखो, यहीं से शुक्रेश्वर-घाट स्पष्ट दिखाई दे रहा है। ब्रह्मपुत्र के स्रोत में वह सब क्या बहता आ रहा है ? उफ् जैसे पूरा एक जंगल बह रहा है !”

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुंशी ने आदेश दिया, "जाओ, जाओ, सीमेण्ट और रेत की बोरियाँ खोलो, जल्दी से काम में लग जाओ। उधर देखो, दरवाज़े की चौखट टूटी है, जल्दी से मरम्मत कर डालो !"

सब लोगों ने दौड़धूप कर अपने-अपने औज़ार निकाल लिये। हो-हल्ला करते हुए वे सीमेण्ट और रेत में पानी मिलाकर ताज़ा मसाला तैयार करने लगे। फुर्तीला बढ़ई दरवाज़े की चौखट की मरम्मत करने से पहले हाथ में कत्ता लेकर हर्रे की डालियाँ काटने के लिए बाहर निकल गया।

शाम तक खँडहर जैसे उस मकान में एक स्नानघर और एक सोनेवाले कमरे को साफ़-सुथरा और मरम्मत करके रहने लायक़ बना दिया गया। मुंशी ने सोनेवाले कमरे में पर्दे भी लगवा दिये ताकि मटरगश्ती करते लड़कों के झुण्ड को अन्दर झाँकने का मौक़ा न मिले। हर्रे की डालियाँ काटने के बाद घर के सामने से ब्रह्मपुत्र का रूप स्पष्ट दिखाई देने लगा था। बादलों से ढँका आकाश ! और नीचे एक भोजपत्र की भाँति चित पड़ा है ब्रह्मपुत्र ! मुंशी के चेहरे पर हँसी खिल गयी।

हाँ, इसी स्थान पर खड़ी होकर मेमसाहब ब्रह्मपुत्र की शोभा देख सकेंगी। उनके कमरे तक किसी को ले जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। इसी बरामदे में बैठकर वे जटाधारी के साथ बातें कर सकेंगी। क्लब से या दूर कहीं से कोई फ़िरंगी साहब अगर उनसे कभी मिलने आएँ तो वे भी बरामदे में बैठ सकेंगे। मन्दिर के आँगन तक ये साहब वैसे भी नहीं जाते लेकिन नदी पार करके इस घर में आना उनके लिए क्या मुश्किल होगा ? क्या पता क्या होगा ! हेनरी साहब ने गुस्से के मारे उस दिन ताँगेवाले को ही चाबुक से पीट दिया—एक ज़रा-सी ग़लती के लिए ! क्या पता आगे और क्या होगा !

एक हफ़्ते के अन्दर ही देवी-भक्त राजा द्वारा कभी बनवाये इस खँडहर जैसे घर में से दो कमरे लोगों के रहने लायक़ बन गये। त्रिहुत, मधुपुर, उत्तरकाशी, नवद्वीप और यहाँ तक कि हिमालय से आये हुए संन्यासियों ने भादों-आश्विन महीने में मनायी जानेवाली मनसा-पूजा के समय इस घर में रहकर सारी चीज़ों को बिलकुल तहस-नहस कर दिया था। उनके इस्तेमाल किये हुए मिट्टी के बर्तनों, खड़ाऊँ, केसरिया वस्त्र के टुकड़ों, हुक़्क़े के टूटे हिस्से और कबाड़ से सारे कमरे भरे हुए थे। वहाँ पड़ी सूखे गोबर जैसी कुछ चीज़ें गाय की थीं या आदमी की, यह समझना मुश्किल था—वे सूखकर बिलकुल कड़क बन गयी थीं।

माघ महीने की पूर्णमासी के दिन सिर से पाँव तक कपड़े से ढँकी डरथी ब्राउन बूढ़े बिपिन मुंशी का हाथ पकड़े नाव से उतरी। माघ महीने की इस चाँदनी रात को देवीपीठ ने एक अद्भुत रूप धारण कर लिया था। बाहर के कोहरे और पेड़-पौधों पर बिखरी हुई चाँदनी मानो देवी को बलि का ख़ून अर्पण करनेवाले चाँदी के पात्र

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

का चूर्ण है और ब्रह्मपुत्र ?...वह जैसे एक खड्ग बनकर पड़ा हुआ है। सियारों का एक झुण्ड उनके सामने से गुज़र गया।

मुंशी के साथ तेज़ी से डरथी ब्राउन आगे बढ़ी। उसके पीछे पोशाक और खाने के सामान की पोटली लेकर एक नौकर हाँफता हुआ ऊपर चढ़ रहा था। कई बार आने-जाने के कारण मुंशी ने इस रास्ते को अच्छी तरह से पहचान लिया था। डरथी ब्राउन के दुःखों को सहानुभूति की नज़र से देखनेवाले मुंशी ने जैसे उसकी शान्ति वापस लाने का संकल्प ले लिया है। इसीलिए इस खँडहर जैसे घर में डरथी के रहने की बात को लेकर उसे अपने मालिकों के साथ काफ़ी बहस करनी पड़ी थी। इस खँडहर जैसे घर में सियार, कुत्ते, बिना मालिक की गाय, घोड़े और मन्दिरों में घूमते भ्रष्ट संन्यासियों का अड्डा बन गया है—इसे ठीक-ठाक करके अगर किसी अच्छे घराने की अँग्रेज़ महिला को रहने दिया जाय तो कौन-सा पाप हो जाएगा ?

बहुत शोरगुल और बहस होती रही। लेकिन बाद में मुंशी की ही जीत हुई। इसलिए आसपास के लोग मुंशी की हरकान्त सहरामीन के साथ तुलना करते हैं। आहोम राजा और गोरे साहब—दोनों के प्रिय थे हरकान्त सहरामीन।

मुंशी ने अपने हाथों से चिमनी साफ़ करके मिट्टी के तेलवाली लालटेन जलायी। डरथी ब्राउन का बिस्तर और मच्छरदानी तक लगा देने के बाद मुंशी ने उससे विदा लेते हुए कहा, "परशुराम चौकीदार को रात को यहाँ रहने के लिए ब्राउन साहब ने ही भेज दिया है। वह टूटे-फूटे कमरे में पड़ा रहेगा—आपके पासवाले कमरे में। मैं उसे बरामदे में सोने के लिए कह सकता था, लेकिन बाहर बहुत ठण्ड है, ब्रह्मपुत्र की ठण्डी हवा से बिलकुल अकड़ जाएगा। आपको कोई एतराज़ है ?"

कमरे में अपना सामान सलीके से रखने में व्यस्त डरथी ने मुंशी को आँख उठाकर देखा, "उसे क्यों आने दिया ? मैं अकेली ही रह सकती हूँ।"

मुंशी ने विनती करते हुए कहा, "साहब ने बहुत बोला...और फिर जानवरों का डर भी है। अभी थोड़ी ही देर पहले आपने सियारों का झुण्ड देखा था न! परशुराम चौकीदार बहुत भरोसेवाला आदमी है। उसे आज आपके पास रहना ही होगा।"

डरथी ब्राउन कुछ समय तक मुंशी का चेहरा देखती रही। फिर उसने कहा, "साहब के साथ अब मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। मेरी अच्छाई-बुराई और मान-अपमान का फ़ैसला अब मैं खुद ही करूँगी। आज उसे रहने दो लेकिन कल मैं उसे वापस भेज दूँगी। सुनो, एक और बात है, अपने साहब से कहना कि मेरा हाल पूछने उन्हें यहाँ आने की ज़रूरत नहीं है।"

वृद्ध मुंशी की दोनों आँखें नम हो गयीं। उसने कमीज़ की जेब से रूमाल निकालकर अपना मुँह पोंछ लिया। फिर कहने लगा, "सोचने-समझने के लिए बहुत समय है। एक ही रात आपको बहुत सारी बातें सिखा देगी। सागर के समान अनुभव

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
के लिए एक ही दिन काफ़ी है।"

डरथी से विदा लेकर नीचे उतरते समय काफ़ी रात हो चुकी थी। चारों तरफ़ निस्तब्धता छायी थी। चाँदनी रात की रोशनी में नदी तक जाता हुआ सँकरा-सा रास्ता साफ़ नज़र आ रहा था। ब्रह्मपुत्र में अब पूर्णतः ख़ामोशी थी।

मुंशी नाव पर चढ़ गया। ठण्ड में काँपते हुए दोनों माझी मुंशी का इन्तज़ार कर रहे थे। चप्पू की छप्-छप् आवाज़ के साथ नाव आगे बढ़ने लगी।

रात के आख़िरी पहर में डरथी की आँखें खुलीं। मच्छरदानी उठाकर उसने देखा कि ठीक से बन्द नहीं होनेवाली उसके सिरहाने की खिड़की बिलकुल खुली हुई है। वह हड़बड़ाकर खड़ी हो गयी। खिड़की के पास जाकर उसने बाहर की तरफ़ देखा—जैसे उसे विश्वास ही नहीं हुआ ! वहाँ सामने ब्रह्मपुत्र है...रोशनी और अँधेरे के साथ वो क्या बहता जा रहा है ? कहीं कोई प्राचीन मन्दिर का खँडहर तो नहीं बहता जा रहा है !

अचानक किसी के खड़ाऊँ की आवाज़ सुनकर डरथी का पूरा शरीर काँप उठा—"वहाँ कौन है ? कौन है ?"

डरथी ने चारों तरफ़ देखा। हर्रे के नीचे नज़र पड़ते ही उसके रोंगटे खड़े हो गये।

वहाँ—वहाँ एक आदमी खड़ा है, हर्रे के नीचे। अच्छी तरह से देखने के बाद डरथी उसे पहचान गयी—वह तर्सा किनारेवाला, सात फ़ुट लम्बा, सिरमुँडा संन्यासी है ! रात के उस आख़िरी पहर में उसे यहाँ क्या चाहिए ? डरथी ज़ोर से चिल्लायी—"परशु, परशु !"

खट्-खट् आवाज़ करता तर्सा-किनारेवाला संन्यासी हर्रे के नीचे से ग़ायब हो गया।

अगले ही दिन चारों तरफ़ इस बात का प्रचार हो गया कि डरथी ब्राउन देवीपीठ में रहने आयी है। मुंशी भी सुबह ही हाज़िर हो गया। हर समय अड्डेबाज़ी करनेवाले मवाली लड़कों का दल द्वारभांगा राजा द्वारा बनाये हुए खँडहर जैसे घर के सामने ताक-झाँक करता रहा। दो-एक लड़के पासवाले जामुन के पेड़ पर बैठकर सीटी बजाने लगे। "अब जटाधारी गोरी मेमसाहब का हाड़-मांस चबा जाएगा।"

"मनोकामना पूर्ण करने के लिए जटाधारी उसे महाशंखमाला धारण करने के लिए कहेगा।"

"क्या कहता है !"

"हाँ, हाँ—महाशंखमाला के लिए ही कहेगा।"

"उसके लिए ललाट की अस्थि कहाँ से आएगी ?"

"देख लेना, उस आदमी की जटा में ही ललाट की अस्थि मौजूद है, इस पीठ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
में यह सभी जानते हैं। अगर ललाट की अस्थि से बनी महाशंखमाला उनके पास मौजूद है, तब तो हमें अपनी तैयारी करने का समय हो गया है।''

छप्...छप्...छप्—ढपंग्...ढंग्...ढंग—

एक नाव किनारे पर लग गयी।

बन्दरों की तरह पेड़ की डालियों पर चढ़कर जटाधारी का निरीक्षण करनेवाले लड़के फुर्ती से नीचे उतर आये। अगर नाव किनारे पर लगी है तो वे गुवाहाटी जा सकते हैं। वे सभी खुशी से कोहराम मचाते हुए नीचे उतर आये।

जटाधारी डरथी मेमसाहब के सामने दरी बिछाकर बैठ गये। मुंशी ने बढ़ई का बनाया हुआ एक बड़ा-सा पीढ़ा बैठने के लिए ला दिया। वह बाहर के बरामदे में घुटने समेटकर बैठ गया। मुंशी के सिर के लम्बे बाल सफ़ेद हो गये थे। उसकी भौंहों के बाल भी सफ़ेद हो गये थे। पुराने असमिया लोगों की तरह वह कानों में सोने के दो छल्ले पहने था। उसकी आँखों और ठोड़ी के नीचे का मांस लटक गया था। लोग कहते हैं कि उत्तर गुवाहाटी का हरकान्त सहरामीन गोरे साहब के प्रति जिस तरह निष्ठावान था, गोरे साहब के साथ अच्छे सम्बन्ध रखनेवाला बिपिनचन्द्र मुंशी भी डरथी मेमसाहब के प्रति वैसा ही भाव रखता था।

एक-दो छिछोरे लड़के तब तक घर के आसपास ताक-झाँक करते रहे।

खम्भे से टिककर बैठा हुआ मुंशी घुटनों पर हाथ फेरते हुए जटाधारी को वह सारी बातें समझाने लगा जो डरथी नहीं समझा पा रही थी। एक बार चारों तरफ़ नज़र डालते हुए उसने जटाधारी को सब-कुछ खुलकर बता ही दिया—''ब्राउन साहब एक खासी जनजाति की महिला के साथ बहुत दिनों से सम्बन्ध बनाये हुए हैं, यह बात डरथी को पता ही नहीं थी। लन्दन से अचानक गुवाहाटी पहुँचने के बाद ही उन्हें चिट्ठियाँ, तस्वीरें और नक़्शा मिले।''

''चिट्ठियाँ, तस्वीरें और नक़्शा ?''

''डरथी मेमसाहब एक साल से यहाँ नहीं थीं। इलाज कराने के लिए वे लन्दन गयी थीं।''

''कैसा इलाज ?''

''हाँ प्रभु, इलाज कराने गयी थीं। बच्चे नहीं होते हैं।''

जटाधारी मौन बैठे रहे। उन्होंने डरथी की तरफ़ देखा। उसका पीला चेहरा जैसे गलने लगा। जैसे गले हुए सोने की धारा नीचे तक बह गयी हो। डरथी इशारे से कुछ कहना चाहती थी लेकिन अच्छी तरह से समझा नहीं सकी। कैसे बोलती वह ? उसकी सारी भावनाएँ जैसे बहकर जटाधारी के हृदय में बस गयीं। जटाधारी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। उनका पूजा का समय बीत रहा था। हड़बड़ाकर वे भागते हुए छिन्नमस्ता की तरफ़ गये। फिर अँधेरी कोठरी में छुपाकर रखे हुए एक बक्से

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को खोलकर रुद्राक्ष की मालाओं में लपेटी एक अन्य माला निकाल लाये। वे फिर नदी की तरफ़ मुँह करके बैठी हुई डरथी के पास आये और माला देते हुए कहने लगे, "यह महाशंखमाला है। नर के ललाट की अस्थि से यह माला बनी है। कान और आँखों के बीच की अस्थि ही महाशंख कहलाता है।"

डरथी को बिना स्पर्श किये उन्होंने माला उसके हाथ में दे दी। फिर ज़ोर से बोलने लगे—"माँ छिन्नमस्ता ! माँ, माँ !!"

डरथी ब्राउन का पूरा शरीर काँपने लगा। मुंशी उठकर उसके पास आया। मुंशी ने ध्यान से देखा कि एक तरह की रक्त की धारा उसकी नस-नस में प्रवाहित हो रही है।

ऐसा क्यों हुआ ?

यहाँ क्यों आयी वह ?

कुछ ही समय में जटाधारी सुबह का पूजा-पाठ छिन्नमस्ता के मन्दिर में समाप्त करके अपने डेरे की ओर चल पड़े। उन्होंने देखा कि दूसरे दिनों की तरह आज भी बहुत सारी औरतें उनसे मिलने आयी हैं। सबने सिर पर पल्ला डाल रखा है। लम्बी-नाटी, दुबली-मोटी—जटाधारी ने गिनकर देखा कि आठ औरतें आयी हैं। एक की गोद में छोटा-सा बच्चा है। बच्चा बार-बार माँ का दूध पीना चाहता था इसलिए उस औरत के सिर से हर बार पल्ला सरक जाता था। फिर से घूँघट खींच लेते समय उसकी नुकीली नाक और भरेपूरे होठ दिखने लगते थे। दो फाँक लेटेकू[1] की तरह थे उसके भरेपूरे होठ। उसी समय एक-एक करके मवाली लड़कों का झुण्ड वहाँ पहुँचा। लड़के पेड़ की डाली, कटे पेड़ों के ठूँठ और पत्थरों पर बैठ गये। जब भी जटाधारी के पास औरतों का झुण्ड आता है, ये लड़के इसी तरह उनके डेरे के पास बैठ जाते हैं।

एक-एक करके सभी औरतें जटाधारी के रहस्यपूर्ण डेरे में घुस जाती हैं। अन्धकार-भरे डेरे में कभी-कभी उन औरतों के हाथ-पैरों के चमकते अंश दीपशिखा की तरह दिखाई देते हैं। बहुत दूर से ऐसा दृश्य देखा जा सकता है, और ये लड़के अच्छी तरह से जानते हैं कि किस ख़ास पेड़ की डाली से या कन्दरा से वे उन दृश्यों को देख पाएँगे। इसलिए वैसी ख़ास जगहों पर क़ब्ज़ा करने के लिए वे रोज़ एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी बन जाते हैं। आज भी उन लोगों ने वैसा ही किया। एक-एक करके उस अन्धकूप जैसे डेरे से औरतें निकल आयीं। सभी के सिर घूँघटों से ढँके हुए थे।

1. एक बैर जैसा गोलाकार खट्टा फल, जिसकी फाँकें बैंगनी रंग की होती हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

चप्पू की छप्-छप् आवाज़ फिर से सुनाई दी। नाव से मेखला[1] समेटती हुई एक औरत उतरी। उसने अपना बड़ा-सा जूड़ा काँटे से अटका रखा था। वह मूँगा[2] की मेखला और सूती चादर पहने हुए थी। साथ में मार्किन कपड़े से सिला हुआ लोटे जैसी बाहोंवाला एक ब्लाउज़ भी पहन रखा था।

अपने दस साल के शैतान और चंचल बेटे को उस औरत ने हाथ पकड़कर नाव से नीचे उतारा। अगर लड़के की माँ हाथ नहीं पकड़ती तो वह नीचे कूद जाता और इस तरह से कूदने पर वह पानी में भी गिर सकता था। माँ ने बेटे का हाथ एक पल के लिए भी नहीं छोड़ा था।

औरत के बाद एक बूढ़ा आदमी नाव से उतरा। उसके लम्बे बाल बिलकुल सफ़ेद हो गये थे। उसने घुटनों के ऊपर तक ढँकी हुई धोती पहन रखी थी और ख़ाली बदन पर एक मोटी चादर लपेट रखी थी। वह मुँह से कोई शब्द नहीं बोल रहा था। उसने गले में गाय बाँधनेवाला एक पगहा लपेट रखा था। हाँ, वह गाय बाँधनेवाला पगहा ही था।

कुछ पूछने पर वह कोई जवाब नहीं देता था। सिर्फ़ गाय की तरह रँभाता था। शायद वह प्रायश्चित्त के लिए दान माँगने आया है। उसे देखने के बाद किसी को समझने में देर नहीं लगी थी कि उसने गो-हत्या की है। गाय का पगहा गले में बाँधकर वह वर्षों तक भीख माँगकर खाएगा और इसी तरह उसके पापों का प्रायश्चित्त होगा। लेकिन क्या गो-हत्या उसने जानबूझकर की है ? या फिर किसी दुर्घटना के कारण ऐसा हुआ ?

तीनों जाकर छिन्नमस्ता के जटाधारी के पास खड़े हो गये। उनके सामने की ख़ाली जगहों पर अब तक बाक़ी औरतों ने क़ब्ज़ा कर लिया था। जटाधारी के बिलकुल क़रीब से दर्शन करके अपनी-अपनी समस्या बताने के लिए सभी बेसब्री से इन्तज़ार कर रही थीं। उनका एक स्पर्श जैसे सबके लिए मुक्ति का दरवाज़ा खोल सकता है, सिर्फ़ एक स्पर्श—थोड़ी-सी चरणधूलि—थोड़ा-सा स्पर्श—

मार्किन कपड़े का ब्लाउज़ पहने अभी-अभी नाव से उतरकर आयी उस भरपूर चेहरेवाली सुन्दर औरत ने चीख़कर कहा, "मेरी बात सुनिए !"

सभी उसकी तरफ़ देखने लगे। वह खड़ी हो गयी और आसमान की तरफ़ हाथ उठाकर चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगी, "मेरी बात सुनिए ! प्रभु, आज सुबह ही यह दुर्घटना घटी है।"

भक्त लोग एक साथ चिल्लाये—"कौन-सी दुर्घटना ? सुबह सुबह कौन-सा अनर्थ हो गया ?"

---

1. असमीया पोशाक।
2. सुनहरे रंग के रेशमी कपड़े जो असम में बनते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिर से कहा औरत ने, "उस रेत के मैदान में, जहाँ साहब लोग बन्दूक़ चलाने का अभ्यास करते हैं, मेरा बेटा गेंद खेल रहा था।"

एक भक्त ने कहा, "लेकिन वह सुरक्षित जगह नहीं है। साहब लोग पेड़ पर गागल[1] लटकाकर बन्दूक़ से निशाना लगाना सीखते हैं। अगर कोई देखने आता है तो जूते से लात जमा देते हैं।"

"हाँ, हाँ, उसी गागल लटकानेवाले पेड़ के नीचे एक भयानक चीज़ से मेरे बेटे को ठोकर लगी थी।"

जटाधारी ने सवाल किया, "कौन-सी चीज़ ?"

औरत कुछ देर तक संकोच करती रही। फिर जटाधारी की आँखों में आँखें डालकर बोली, "किसी मरे हुए आदमी की खोपड़ी से उसका पैर टकराया था।"

"खोपड़ी ?" सभी लोग एक दबी-सी उत्तेजना में 'हाय हाय' कर उठे।

उस औरत ने संकोच के साथ कहा, "किसी का कटा हुआ सिर था शायद। बहुत बड़ा था और कुछ टेढ़ा-सा था।"

"टेढ़ा-सा ?"

"जी हाँ, टेढ़ा-सा।"

सब लोग आपस में बतियाने लगे, "ज़रूर देवी माँ को चढ़ाया हुआ सिर है।" किसी ने चिल्लाकर कहा भी, "हाँ, हाँ—वह ज़रूर देवी माँ के लिए चढ़ाया गया आदमी का सिर था।"

किसी ने फिर से कहा, "बहुत साल पहले की खोपड़ी कहीं ज़मीन में दबी पड़ी थी शायद ! देवी के लिए चढ़ाए हुए आदमी का सिर था वह ! देवी के लिए...!"

भीड़ में से कोई चिल्लाया, "माँ छिन्नमस्ता ! माँ, माँ छिन्नमस्ता !!"

वहाँ के सारे लोग एक साथ चिल्ला उठे, "माँ, माँ, माँ !!"

लोटे जैसा बाँहवाला ब्लाउज़ पहनी औरत की रोनी-सी सूरत बन गयी। बेटे पर अशुभ ग्रह का साया पड़ने के डर से वह काँपने लगी। सही तो है—देवी के लिए चढ़ाए गये नरमुण्ड को पैरों से ठोकर मारकर गेंद खेलने की हिम्मत की उसके बेटे ने। वैसे भी वह बहुत शैतान लड़का है !

जटाधारी ने खड़े होकर ब्रह्मपुत्र की ओर देखा। फिर उस औरत को तसल्ली देते हुए कहने लगे, "वह बच्चा है। माँ को गोद के बच्चे के लिए डरना नहीं चाहिए।"

"माँ, माँ छिन्नमस्ता !"

---

1. नींबू की प्रजाति का फल। इसका आकार फुटबॉल जैसा बड़ा होता है और अन्दर सन्तरे जैसी फाँकें होती हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
"माँ, माँ !!"

"बेटी, सिर्फ़ कुछ ही दिन पहले नरबलि का रक्त अर्पण करने के लिए इस्तेमाल किया हुआ एक ताँबे का और एक यज्ञवाली लकड़ी से बना कटोरा किसी भक्त ने मुझे दिया था। कालिका-पुराण के छिहत्तरवें अध्याय में सारे नियम स्पष्टरूप से लिखे हुए हैं।

"बलि के लिए अर्पण किये गये आदमी को अच्छी तरह से नहाना होगा। बलि के पहलेवाले दिन उसे बिना तेल-मसाले का भोजन करना पड़ेगा। मांस और मैथुन छोड़ना पड़ेगा। चन्दन के लेप और दूसरे गहनों से उसे सजाने के बाद उत्तर दिशा में अन्य देवताओं के साथ एक ही स्थान में बैठाकर पूजा करनी होगी।

ब्रह्मरन्ध्र में ब्रह्मा के लिए पूजा
नाक में पृथ्वी के लिए पूजा
जीभ में अग्नि के लिए पूजा
आँखों में ज्योति के लिए पूजा
कान में शक्ति और आकाश के लिए पूजा

सब-कुछ साफ़-साफ़ लिखा है कालिका-पुराण में। माँ भैरवी ने कई बार सुना है यह मन्त्र। छिहत्तरवाँ अध्याय पढ़ो—सब-कुछ साफ़-साफ़ लिखा है।

"मनुष्य का कटा हुआ सिर, जिस स्थान पर गिरता है वह स्थान दाता के सौभाग्य या दुर्भाग्य का पूर्वाभास देता है।"

भक्तों के बीच से कोई चिल्लाया, "छिन्नमस्ता के जटाधारी प्रभु, क्या आपने यह सब पहले कभी देखा है ?"

जटाधारी के मुँह से एक विकट चीख़ निकल गयी। 'माँ, माँ, माँ' कहकर वे चिल्ला उठे। फिर आँखें बन्द करके अपने हाथ भक्तों की तरफ़ उठाते हुए वे पहलीवाली बातें दोहराने लगे। उनकी नाक पर पसीने की बूँदें चमकने लगीं। कोई दक्ष शिल्पकार जिस तरह से भगवान विष्णु की नाक गढ़ता है, ठीक उसी प्रकार की सुन्दर नाक है जटाधारी की।

उन्होंने फिर कहा, "मैं स्थान की बात कह रहा था। कटे हुए मस्तक की भविष्यवाणी के बारे में बता रहा था।

"ईशान दिशा में मस्तक गिरते हैं तो राजा का ध्वंस होता है। किस स्थान पर मस्तक गिरने से धनलाभ और पुत्रलाभ होता है, यह सब-कुछ स्पष्टरूप से कालिका-पुराण में लिखा है। छिन्नमस्तक के दाँतों से अगर कट्-कट् आवाज़ निकलती है तो बलिदाता रोग से ग्रस्त होगा। और यह भी लिखा है कि कटा मस्तक अगर हँसता है तो बलिदाता को सौभाग्य की प्राप्ति होगी। यहाँ तक कि कालिका-पुराण में यह भी लिखा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri
है कि बलिवाला सिर आख़िर में जो भी कहता हुआ आँखें बन्द करता है, वह वाक्य पत्थर की लकीर बन जाता है अर्थात् वैसा ही होता है। कटा सिर अगर हुंकार भरता है तो राज्य ध्वंसप्राप्त होता है, सब-कुछ नाश हो जाता है।''

अब तक वह औरत खड़ी होकर जटाधारी की बातें सुन रही थी। वह लगभग असहाय होकर बोली, ''अब मैं क्या करूँ, महाप्रभु ?''

''बेटी, अब यह सब बातें अतीत बन गयी हैं। हवन में चढ़नेवाली बलि के अष्टांग के मांस की गन्ध अब ख़त्म हो गयी है। बलि दिये गये भैंसे के छिन्नमस्तक पर दीपक जलाकर अमरत्व पाने की कामना करनेवाले लोग, जिन्हें एक दिन और एक रात तक लगातार देवी के सामने खड़ा रहना पड़ता था—क्या आज के दिनों में ऐसे लोग मिलेंगे ? अब ये बातें अतीत के गर्भ में चली गयी हैं। अपने शरीर का रक्त दान करनेवाला पद्मपुष्पवाला बर्तन भी अब ग़ायब हो गया है। वह भयानक अतीत अब अन्धकार की खाई में गुम हो गया है। वह अतीत फिर लौटकर नहीं आएगा। हम फूलों से बनी समाधि में उस अतीत को दफ़नाकर रख देंगे।''

वह औरत किंकर्तव्यविमूढ़ होकर खड़ी रही। उसे जैसे कोई रास्ता नहीं मिल रहा था। वह खड़ी ही रही। उसकी आँखों से आँसू झड़ने लगे। बैठे हुए भक्तों में भी उसके लिए सहानुभूति जाग उठी।

लड़की की शादी करने में असमर्थ एक असहाय औरत भक्तों के बीच में बैठी थी। यह दुबली-पतली औरत माँ और बेटे को इशारा करती हुई बोली, ''जाओ, जाओ, जटाधारी के बिलकुल क़रीब जाकर इस काण्ड के लिए समाधान पूछो, जाओ...।''

मार्किन कपड़े से बना हुआ ब्लाउज़ पहने वह औरत भीड़ को ठेलती हुई बिलकुल जटाधारी के पैरों के पास जाकर खड़ी हो गयी। जटाधारी ने तीखी नज़र से औरत को देखा। उनकी नज़र छुरी जैसी तेज़ थी, जैसे शरीर के अदृश्य अंगों को भेदकर निकल जाएगी। औरत ने तुरन्त अपनी नज़र नीची कर ली और घुटने टेककर जटाधारी का चरणस्पर्श करने लगी। जटाधारी ने उसके सिर पर हाथ रखकर कहा, ''डरने की कोई बात नहीं है। वह नरमुण्ड देवी के लिए अर्पण किया गया था, इसका कोई प्रमाण नहीं है। निर्भय रहो, निर्भय रहो !''

वह औरत अपने शैतान बेटे को जटाधारी के चरणस्पर्श कराने के लिए खींचकर सामने ले आयी—लड़का जटाधारी के पास आना ही नहीं चाहता था।

ठीक उसी समय भक्तों को एक विकट चीख़ सुनाई दी। ज़ख़्मी शेर की तरह एक आदमी उसी तरफ़ भागता हुआ आ रहा था। भक्तों के सामने खड़ा होकर वह सामने बैठी एक औरत की तरफ़ भागा। वह औरत शराबी और लम्पट पति को सुधारने का तरीका संन्यासी से पूछने आयी थी। वह दूसरे भक्तों के बीच अपना चेहरा छुपाने की असफल कोशिश करने लगी। लेकिन शिकार को दबोचनेवाले शेर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
की तरह वह आदमी उसके बालों को पकड़कर चिल्लाने लगा, "ऐ साली कुतिया ! धान कूटना छोड़कर तू इस फ़िरंगी औरत-चोर संन्यासी के पास बैठी है—साली रण्डी, चल—घर चल!"

और वह बैठे हुए लोगों के ऊपर से ही उसे जबरन घसीटकर ले गया।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीन

काफ़ी देर तक बन्दूक़ की गोली की ढप्-ढप् आवाज़ आती रही। यह आवाज़ भुवनेश्वरी तक सुनाई दी। पहाड़ के नीचे कालीपुर में साहब लोग बन्दूक़ का निशाना लगाने का अभ्यास कर रहे थे। नाज़ुक लकड़ीवाले भातघिला[1] और चेलेंग[2] पेड़ों की डालियों में रस्सी से गागल लटकाकर गोली चलाने का अभ्यास करनेवाले साहबों का हो-हल्ला काफ़ी देर तक चलता रहता है।

पहले पौ फटने के समय लोग चेलेंग के बीज खाने आनेवाले जंगली कबूतर और मैना की चहचहाहट सुनते थे। लेकिन आजकल बन्दूक़ों की ढप्-ढप् और फ़िरंगियों के हँसने-खिलखिलाने की आवाज़ें सुनाई देने लगती हैं।

पहाड़ के नीचे नदी तक विस्तृत इस इलाक़े में कई प्रजातियों के पेड़-पौधे हैं। इमली, नीम, वटवृक्ष, अमलतास, हरसिंगार, मकुआँ[3], मज[4], चोंग[5] पौधों की झाड़ियों और नदी-किनारे बरसात के मौसम में खिलनेवाले नीले जंगली फूलों की झाड़ियों से भरा है यह इलाक़ा। तितासैपा[6], पमा[7], डूमर, उरियाम[8], खोकन और अन्य जंगली झाड़ियों से भरे कालीपुर के इस इलाक़े में दिन में ही शेर के दहाड़ने की आवाज़ सुनाई दे जाती है। पूर्वी बंगाल और असम के सरकारी अधिकारियों के 'पोनी टाईड' या घुड़दौड़ के प्रशिक्षण का तामझाम इसी जगह पर लगा रहता है। अब तो बहुत

---

1. इस पेड़ में डाली नहीं होती, इसमें हल्के पीले फूल खिलते हैं।
2. इस पेड़ के पत्ते लाल रंग के होते हैं। इसके पत्ते 'एड़ी' रेशमी कीड़े को खिलाये जाते हैं।
3. मक्वा की फली, जिसमें बीज भरे होते हैं।
4. नाज़ुक लकड़ीवाला लम्बा जंगली पेड़।
5. मूँगा रेशम के कीड़े पलनेवाला जंगल।
6. लम्बे और चौड़े पत्तेवाला बड़ा पेड़ जिसके पत्ते रेशम के कीड़े खाते हैं।
7. इस पेड़ की कई प्रजातियाँ हैं। इसकी लकड़ी लाल और सफ़ेद रंग की होती है। सफ़ेद लकड़ी से फ़र्नीचर बनाया जाता है। लाल लकड़ी और इस पेड़ के फूल से पीला रंग बनाया जाता है।
8. इस पेड़ की लकड़ी फ़र्नीचर बनाने के लिए इस्तेमाल की जाती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
से पेड़-पौधे कट गये। जब कैप्टन वेल्स की सेना इस रास्ते से गुज़री थी, तब भी इतने पेड़-पौधे नहीं कटे थे। आजकल जहाज़-कम्पनी के साहब लोग भी सुबह-सुबह साइकिल से यहाँ बन्दूक़ से निशाना साधने आते हैं। सुबह से लगातार यह आवाज़ आने लगती है। निशाने का अभ्यास करते समय कभी-कभी बया के घोंसले में गोली लग जाती है तो कभी कठफोड़वा के घोंसले में, और कभी-कभी तो उड़ते हुए धनेश पक्षी के शरीर में भी गोली लग जाती है। छिन्नमस्ता के जटाधारी के पास जमघट लगाकर बैठे भक्तों के बीच गोली खायी चिड़िया की देह धप् से गिरती है—चौंककर बिखर जाते हैं भक्तगण।

आज भी छिन्नमस्ता के संन्यासी के पास अनेक लोग आये हैं। कुछ लोग नाव से भी आये हैं और कुछ पैदल आये हैं। सब लोग किसी-न-किसी वजह से चिन्ता या समस्या से ग्रस्त हैं। कल जटाधारी को लोगों ने भरी दोपहरी में भस्माचल तक तैरकर जाते हुए देखा था। पण्डों की औरतों ने भुवनेश्वरी में पड़े हाथी के सिर के आकारवाले पत्थर पर खड़े होकर यह दृश्य देखा था। वैसे ये औरतें बाहर बहुत कम निकलती हैं। वे लाल किनारेवाली साड़ी पहनती हैं और माथे पर बड़ी-सी सिन्दूर की बिन्दी लगाती हैं। उन लोगों ने अपनी आँखों से जटाधारी को भस्माचल के पत्थरों पर खड़े होते हुए देखा था। हाँ, उन लोगों ने अपनी आँखों से ही यह दृश्य देखा था। पण्डा-परिवार की दो औरतें जटाधारी के लोगों के बीच खड़े होने से पहले ही फुर्ती से जाकर द्वारभांगा-घर के सामने खड़ी हो गयी थीं। फ़िरंगी मेमसाहब को देखने के लिए लोगों के मन में बहुत जिज्ञासा थी। द्वारभांगा-घर के आसपास ये लोग जमा हो गये थे। और फिर जटाधारी द्वारा डरथी को नरमुण्डों के ललाट से बनायी गयी महाशंखमाला देनेवाली बात चारों तरफ़ फैल गयी थी। आख़िर क्या है यह महाशंखमाला ?

लोगों में जिज्ञासा की सीमा नहीं है। और वह मेम हर समय दरवाज़ा-खिड़की बन्द करके अन्दर क्या करती रहती है ? सिर्फ़ पौ फटने के समय ही लोग उसे देख सकते हैं। उस समय वह ब्रह्मपुत्र के पानी के पास उतर आती है : जूता-मोज़ा, मोटा ओवरकोट और सिर पर ऊनी टोपी पहनकर ! कुछ समय टहलने के बाद फिर से अपनी 'गुफा' में घुस जाती है।

जूता-मोज़ा, सिर पर टोपी और मोटा ओवरकोट। हाँ, हाँ—इसी रूप में सुबह पूजा के लिए पानी लेने जानेवाले दो पण्डे, तिब्बत से आया हुआ एक साधु और हर समय पीछा करनेवाले तर्सा-किनारे के संन्यासी ने उसे देखा है। टहलने के बाद बड़ी फुर्ती से वह ऊपर चढ़ती है और अपने घर पहुँचती है। फिर बरामदे में बैठकर वह ब्रह्मपुत्र की जलधारा देखने में मग्न हो जाती है।

लोग कहने लगे हैं कि सुबह उसे नदी के पानी पर चलती हुई 'देवी माँ' दिखाई देती हैं। देवी की तीसरी आँख नदी की लहरें, भस्माचल के वृक्ष और दूर के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
पर्वत-शिखरों में जैसे आग लगा देती है।

देवी माँ नीलाचल से हवा जैसी तेज़ गति से उतरती हैं। उनके हाथ में त्रिशूल होता है और गले में जवाकुसुम की माला। उनके वस्त्रों में बलि के ख़ून के दाग़ दिखते हैं। यह जैसे त्रिपुरा-भैरवी का चमत्कार रूप हैं ! चतुर्भुजा, त्रिनयना, गजेन्द्रगामिनी ! नदी के पानी के साथ जैसे माँ चतुर्भुजा का कोई खेल शुरू हो जाता है !

जहाज़-कम्पनी के साहब राबर्ट स्मिथ ने कहा था—"मैंने छिन्नमस्ता के आदमी को देखा है। कोई भी उनकी आँखों से सीधे नज़र नहीं मिला सकता—एक प्रकार का ताप देखनेवाले के शरीर को जैसे झुलसा देता है।" स्मिथ ने और कहा था, "मैंने नाव से अमीन गाँव जाते समय उन्हें देखा है। वे पानी के अन्दर साधना कर रहे थे। उनकी जटा पानी में तैर रही थी। डरथी, क्या तुम यक़ीन करोगी, मैंने उनकी जटा के साथ लिपटा हुआ एक ज़हरीला साँप देखा है। मैंने अपनी आँखों से साँप के शरीर पर बनी पीली और काली धारियाँ देखी हैं। उनकी जटा के साथ वह विचित्र साँप बिलकुल मिला हुआ था!"

बड़े संकोच से रामबंशी और डम्बरू पण्डा की पत्नियाँ डरथी मेम के पास जाकर खड़ी हो गयीं। राम पण्डा की पत्नी ने पूछा, "कितने दिन रहोगी ?"

डरथी ने उसकी तरफ़ देखा लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।

"क्या तुमने ब्राउन साहब को बिलकुल छोड़ दिया है ?"

इस बार भी डरथी ने कोई जवाब नहीं दिया।

दोनों औरतें एक-दूसरे का चेहरा देखने लगीं और फुसफुसाकर आपस में बात करने लगीं—"छिन्नमस्ता के संन्यासी ने शक्तिपीठ के लोगों से बातें करने के लिए मना कर दिया होगा। या फिर, असमिया भाषा नहीं जानती होगी।"

बंशी पण्डा की पत्नी ने कहा, "अरे, जानती है। गुवाहाटी के सारे फ़िरंगियों ने असमिया भाषा सीख ली है। कर्ज़न हॉल में वे किताबें भी पढ़ने जाते हैं।"

डरथी ने अब दोनों औरतों को ध्यान से देखा। अचानक वह चौंक उठी, "तुम लोगों के हाथों में यह सब क्या हुआ ? किस चीज़ के दाग़ हैं ये ?"

दोनों अपने हाथों को लाल किनारेवाली साड़ियों में छुपाने की कोशिश करने लगीं।

"बताओ, किस चीज़ के दाग़ हैं ये ?"

साड़ी का घूँघट हटाती हुई एक औरत ने कहा, "हम लोग रसोई में चूल्हे के पास लगातार रहते हैं, उसी से ऐसा हुआ।"

"रसोई में चूल्हे के पास ?"

"जी हाँ, यजमानों के लिए अगर हम खाना नहीं पकाएँगे तो कैसे होगा ?"

"यजमानों के लिए खाना ?"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

"जी हाँ, साठ से अस्सी लोगों का खाना हमें ही पकाना पड़ता है।"

उन औरतों के हाथों में काली परत पड़ गयी है। आग के पास लगातार बैठने से बने इन दाग़ों ने उनकी चमड़ी को विचित्र बना दिया है। जैसे ये हाथ नहीं, साँप के केंचुल हैं—सूखे और खुरदरे।

डरथी ने पूछा, "क्या यजमान लोग मुसाफिरख़ाने में नहीं रहते हैं ?"

बड़े आश्चर्य से दोनों औरतें एक-दूसरे की शक्ल देखने लगीं। साथ-साथ इधर-उधर भी देखने लगीं। कहीं फ़िरंगी मेम के साथ बातें करते हुए किसी ने देखा तो नहीं ? कुछ ही दिन पहले एक के ससुर ने किसी यजमान के साथ आँगन में बैठकर हुक़्क़ा पीते समय अपनी बहुओं से कहा था, "तुम लोग सभी सुन लो ! फ़िरंगी लड़की बोरिया-बिस्तर लेकर आयी है। ख़बरदार, आसपास मत जाना। हमारे छिन्नमस्ता के संन्यासी के साथ उसका उठना-बैठना है। ख़बरदार, तुम लोग आसपास मत जाना !"

ससुरजी की चेतावनी की याद आते ही वह औरत दो क़दम पीछे हट गयी। डरथी अन्दर जाकर जल्दी से 'फ़र्स्ट एड' का बक्सा उठा लायी। बिपिन मुंशी से उसने अच्छी तरह से असमिया बोलना सीख लिया था। उसने कहा, "आओ आओ, मैं तुम लोगों के हाथों में मरहम-पट्टी किये देती हूँ। ब्रिटेन जाते समय 'मासोब्रा' जहाज़ से मैंने कुछ अच्छी दवाइयाँ ख़रीदी थीं। आओ, पास आओ !"

उनमें से एक डरथी मेम के पास बढ़ने ही लगी थी कि उसी समय बूढ़े पण्डे पंचानन शर्मा लाठी लेकर वहाँ हाज़िर हो गये। दोनों ब्राह्मण औरतों को वहाँ खड़ी देखकर वे चिल्ला पड़े, "छिः, छिः, क्या करती हो, क्या करती हो—फिर से नहाना पड़ेगा तुम लोगों को। सुबह-सुबह ये लड़कियाँ क्या काण्ड कर रही हैं, ज़रा देखो !"

झाड़ियों के बीच की सँकरी-सी गली से दोनों औरतें हड़बड़ाकर भाग गयीं।

'फ़र्स्ट एड' और मरहम का डब्बा पकड़े डरथी ब्राउन किंकर्तव्यविमूढ़ होकर वहाँ कुछ देर तक खड़ी रही। फिर दवाइयों का डब्बा बन्द करके अन्दर चली गयी और दरवाज़ा बन्द कर लिया।

तर्सा-किनारे का सिरमुँड़ा संन्यासी ब्रह्मपुत्र में नहाने के बाद कुछ देर तक द्वारभांगा-घर के आसपास टहलता रहा। हर्रे के नीचे खड़े होकर उसने झाँक-झाँककर देखा। नहीं, डरथी के बाहर निकलने का कोई लक्षण उसे दिखाई नहीं दिया।

उसने चारों तरफ़ देखा। पूरा इलाक़ा बिलकुल सुनसान था। हर्रे के नीचे खड़े होकर उसने कन्धे पर लटके झोले से कुमकुम, गोरोचन और चन्दन-चूर्ण निकालकर ताम्रपत्र में रखा और मन्त्र पढ़ने लगा :

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओम् नमः क्षीप्रंग कामिनींग मे वशमानय स्वाहा...
ओम् नमः क्षीप्रंग कामिनींग मे वशमानय स्वाहा...
ओम् नमः चामुण्डे जयस्तम्भय स्तम्भय,
मोहय मोहय, सर्वसत्वानि स्वाहांग–

वशीकरण के अलावा भी वह कुछ दूसरे मन्त्रों का उच्चारण करने लगा। ये किस विषय में थे, समझना मुश्किल था। स्नान करने के बाद पण्डित लोग नियमानुसार पूजा-पाठ करते हैं–इस संन्यासी ने इसलिए मन्त्र पढ़ा था या और किसी कारण से, यह भी समझना मुश्किल था। तब तक शक्तिपीठ दर्शन के लिए आये कुछ यात्री नाव से उतरने लगे।

चप्पू की छप्-छप् आवाज़ और लोगों का हो-हल्ला सुनाई दिया। नाव से एक हट्टा-कट्टा आदमी उतरा। उसकी गोद में लगभग तीन साल का एक बच्चा था। बायें हाथ से उसने बलि के लिए लाया गया एक बकरा पकड़ रखा था। बच्चा बकरे के साथ खेल रहा था। चितकबरा और मोटा-ताज़ा बकरा भी उस हट्टे-कट्टे आदमी की गोद में चढ़कर कान हिलाते हुए बच्चे के साथ जैसे खेल रहा था। बेचारे को क्या पता कि कुछ ही क्षणों में उसके ख़ून से बच्चे का माथा रँगा जाएगा ! वह कैसे जान सकता है ? उस आदमी के पीछे-पीछे सिर पर घूँघट डाले उसकी पत्नी भी नाव से उतरकर चलने लगी।

तर्सा-किनारे का संन्यासी पहाड़ से उतरकर उस हट्टे-कट्टे पुरुष के सामने खड़ा हो गया। फिर एक ताम्रपत्र दिखाकर कहने लगा, "ख़ून दोगे ?"

बकरे ने बच्चे के सीने में सिर छुपाकर अपना बदन झाड़ा। बकरे के मालिक ने बायें हाथ से उसे कसकर पकड़ लिया। फिर से एक बार संन्यासी ने चिल्लाकर कहा, "ले जाओ, यह ताम्रपत्र ले जाओ। मुझे ख़ून चाहिए।"

पुरुष के पीछे चल रही घूँघटवाली महिला ने बड़े संकोच के साथ संन्यासी के हाथ से ताम्रपत्र ले लिया और मन्दिर की तरफ़ बढ़ने लगी। तभी दूर से ही छिन्नमस्ता के जटाधारी की चीख़ सुनाई दी–"माँ, माँ, माँ !!"

"माँ छिन्नमस्ता माँ !!"

कामाख्या के दरवाज़े पर एक ताँगा आकर रुक गया। ताँगा खींचनेवाले दोनों घोड़े बहुत सुन्दर थे। काले और सफ़ेद निशानवाले ऐसे घोड़े गुवाहाटी शहर में पहले नहीं देखे गये थे। दोनों घोड़े पेशावर से गुवाहाटी तक–आधे रास्ते तक रेल से और आधे रास्ते पानी के जहाज़ से–बड़ी मुश्किल से मँगाये गये थे। पूरे गुवाहाटी शहर में ऐसे ताँगे सिर्फ़ तीन-चार ही थे। इनमें से एक ताँगा था बीस नम्बर ब्रिटिश इण्डिया स्ट्रीट कलकत्ते की ट्रेल एण्ड कम्पनी में काम करनेवाले फ़िरंगियों का। ग्रेट इण्डियन पेनिन्सिला रेलवे के साहब के पास भी ऐसा ताँगा था। वे चाय के बगीचेवाले साहबों

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
के पास बहुत ज़्यादा आते-जाते थे और पाण्डू के कप्तानसिंह ताँगेवाले के पास एक ऐसा 'फीटन' छोड़ जाते थे। ऐसा नियम कई साल पहले शिलांग के ईस्टर्न बंगाल एण्ड आसाम कम्पनी के पी. डब्ल्यू. डी. के कार्यकारी सचिव डब्ल्यू बैंक गाईथर बना गये थे। उन दिनों कप्तानसिंह के पिता हुकमसिंह 'फीटन' का व्यापार करते थे।

हृष्ट-पुष्ट हेनरी ब्राउन सावधानी से ताँगे से उतर गये। उनका सीना चालीस इंच का था और उनकी उम्र भी शायद चालीस से ज़्यादा नहीं थी। सिर में शहद निचोड़े छत्ते के रंगवाले घने बाल थे। उनके नाक-नक़्श यूनानी देवताओं की तरह तीखे थे और नीली गहरी आँखें उनकी तेज़ बुद्धि का परिचय देती थीं। वे ख़ाकी रंग के पैण्ट-शर्ट के साथ उसी रंग के 'फ़ैल्ट हैट' पहनते थे।

हेनरी ब्राउन साहब को देखकर ऐसा लगता था कि शायद उन्हें किसी फ़िल्म का नायक़ बनना चाहिए था। लोग उनके बारे में ऐसा ही सोचते हैं।

हेनरी ब्राउन जूते से खट्-खट् आवाज़ करते हुए ऊपर चढ़ गये। ताँगेवाले के साथ बैठा हुआ बूढ़ा मुंशी भी अपनी धोती समेटता उनके पीछे-पीछे ऊपर जाने लगा।

ताँगेवाले ने 'फीटन' को रास्ते के किनारे रोक दिया।

हेनरी साहब को पहाड़ चढ़ने की आदत थी। लेकिन इस समय उनका मन क्षोभ और क्रोध से भरा हुआ था। इसलिए वे हाँफते हुए ऊपर चढ़ रहे थे। बीच में एक-दो जगह पर उन्होंने तेज़ी से चलने की कोशिश की, लेकिन 'मेखला उजोआ'[1] रास्ते पर उन्हें पत्थर पर बैठकर लम्बी-लम्बी साँसें खींचनी पड़ीं। मुंशी अपने कोट की जेब से रूमाल निकालकर साहब को पंखा झलने की कोशिश करने लगा, लेकिन साहब ने हाथ के इशारे से मुंशी को दूर हटने के लिए कहा। सिर से 'फ़ैल्ट हैट' उतारकर वे उसी को हिला-हिलाकर हवा करने लगे। फिर उन्होंने अपनी ढीली खाकी पैण्ट के जेब में हाथ डालकर रूमाल निकाला और मुँह पोंछने लगे। उनकी गहरी आँखों में गुस्सा और अपमान की आग सुलग रही थी।

अचानक आवाज़ आयी—"हेईया हो, हेईया हो !"

आवाज़ उन्हीं की तरफ़ बढ़ रही थी—"हेईया हो, हेईया हो।"

सबने देखा कि कन्धे पर पालकी उठाकर कुछ कहार उसी तरफ़ आ रहे थे और उनके मुँह से ये आवाज़ें निकल रही थीं।

"हेईया हो, हेईया हो !"

हेनरी साहब और मुंशी ने देखा कि पालकी का पीछा करता हुआ लोगों का एक झुण्ड भी उधर ही आ रहा है। वह मरीज़ों को ढोनेवाली पालकी थी। हेनरी साहब ने देखा कि पालकी में एक ज़ख़्मी आदमी लेटा है। उसके कपड़ों में ख़ून के धब्बे हैं।

---

1. कोचबिहार के राजा नरनारायण द्वारा बनवायी पत्थरों की सड़क, जो मन्दिर की ओर जाती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुंशी ने थोड़ा आगे बढ़कर साहब को [illegible] से पूछा, "क्या हुआ है ?"

"भक्त है, कोचबिहार से आया था। बड़ा बेटा बीमार है और हाथ में रुपया-पैसा नहीं है। बकरा या भैंसा की बलि चढ़ाने की सामर्थ्य नहीं थी, इसलिए उसने अपना शरीर काटकर रक्तदान किया था।"

अपना शरीर काटकर रक्तदान ? हेनरी साहब सिहर उठे।

एक दूसरे भक्त ने कहा, "देवी के कालिका-पुराण में लिखा है कि एक कमल के फूल की पंखुड़ी में जितना रक्त रखा जा सकता है—भक्तों को उसका एक चौथाई से ज़्यादा ख़ून दान करना उचित नहीं है। अपने हृदय से एक तिल के समान मांस देवी को दान करता तो छह महीने के अन्दर उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जातीं। बीमार पड़ा हुआ लड़का—उठकर बैठ जाता, लेकिन—"

"लेकिन क्या ?"

कोचबिहार का यह भक्त तेज़ धारवाले चाक़ू से अपना शरीर काटकर रक्तदान करता हुआ मन्त्रों का उच्चारण कर रहा था—

"महामाये जगन्नाथे सर्वकाम-प्रदायिनी
ददामि देहरुधिरं प्रसीद वरदा भव—"

और उसी समय बेहोश होकर वह गिर पड़ा। हेनरी साहब की आँखों के सामने से 'हेईया हो, हेईया हो' करती हुई पालकी आगे बढ़ गयी। पालकी के अन्दर बेहोश पड़े भक्त की गड्ढे में घुसी बन्द आँखें हेनरी ब्राउन ने देखीं। 'हेईया हो' करता हुआ झुण्ड भी पालकी के साथ-साथ नीचे उतर गया।

साहब और मुंशी ने फिर क़दम बढ़ाये। बूढ़ा मुंशी खेद प्रकट करता हुआ कहने लगा, "हम लोगों को नाव से आकर पहाड़ के दूसरी तरफ़ से चढ़ना चाहिए था। उस रास्ते से सीधे द्वारभांगा-घर तक पहुँच सकते थे। साहब, आप बेकार ही इतने परेशान हो रहे हैं। मैं मेमसाहब के लिए बिलकुल सही व्यवस्था कर आया था।"

चूँकि हेनरी ब्राउन का मन गुस्से और क्षोभ से भरा था, इसलिए वे जितनी तेज़ी से हाँफते हुए ऊपर चढ़े, उतनी ही तेज़ी से निराशा ने उन्हें घेर लिया। थकान के साथ-साथ उनका क्रोध भी बढ़ने लगा।

जिस समय वे दोनों द्वारभांगा-घर के सामने पहुँचे, घर के सारे दरवाज़े-खिड़की बन्द थे। हेनरी ब्राउन चिल्लाने लगे—"डरथी, डरथी !!"

अन्दर से कोई भी आवाज़ नहीं आयी। फिर से चिल्लाये हेनरी—"डरथी, मैं तुम्हें वापस ले जाने के लिए आया हूँ। तुम इस तरह से यहाँ नहीं रह सकती।"

घर के चारों तरफ़ वे कुछ समय तक टहलते रहे। किंकर्तव्यविमूढ़ होकर बूढ़ा मुंशी वहाँ खड़ा रहा। वह सोचने लगा कि क्या दरवाज़े पर दस्तक देनी चाहिए ?

Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
लेकिन साहब के सामने ऐसा करना उसे उचित नहीं लगा।

फिर से चिल्लाये हेनरी ब्राउन, "डरथी, डरथी ! उफ् ये मच्छर और कीड़े ! पास में ही दो-तीन लोग काल-ज्वर से मरे हैं। निकल आओ, डरथी, निकल आओ ! मैं तुम्हें लेने आया हूँ। डरथी ! डरथी ! देखो, मैं खुद तुम्हें लेने आया हूँ।"

बरामदे में खड़े होकर हेनरी ने नीचे की तरफ़ देखा—वह है विशाल ब्रह्मपुत्र—पानी के साथ क्या चला जा रहा है ? तैरता हुआ क्या है वो ऐसा लगता है जैसे टूटे हुए प्राचीन मन्दिर के टुकड़े पानी में तैर रहे हैं। बिलकुल काले रंग का पानी—उफ् भयानक है, जैसे मृत्यु का फ़रमान तैरता जा रहा है !

"डरथी, डरथी !"

दरवाज़े के पास खड़े होकर विनय के स्वर में ब्राउन साहब ने कहा, "डरथी, यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है। कृपया निकल आओ। डरथी, यहाँ दूसरा नियम चलता है, समझने की कोशिश करो !" हेनरी साहब दरवाज़े पर खड़े होकर विनती करने लगे—"डरथी, अब स्थिति ख़राब हो रही है, क्रान्तिकारियों ने उस दिन स्मिथ को ताँगे से घसीटकर कैसे पीटा था, सुना नहीं तुमने ? सुना नहीं—तुम्हारे ही दोस्त स्मिथ को..."

बूढ़े मुंशी ने भी हेनरी साहब के पास खड़े होकर कहा, "मेमसाहब, साहब ठीक ही कह रहे हैं। आपके लिए यह स्थान सुरक्षित नहीं है। निकल आइए, मेमसाहब आप बाहर निकल आइए—इस इलाक़े में अब ज़्यादा गड़बड़ होनेवाली है। जनवरी की दो तारीख़ को साइमन कमीशन पाण्डू पहुँचेगा। हमें ख़बर मिली है कि कॉटन कॉलेज के कुछ छात्र लाठी-डण्डे लेकर तैयार बैठे हैं। पिछली रात को छात्रावास में बन्दूक़ें मिली हैं। किसी को भी अब डर नहीं है—दरवाज़ा खोलिए मेमसाहब !"

नहीं—डरथी ने दरवाज़र नहीं खोला।

हेनरी साहब क्रुद्ध हो उठे। वे इस क्रोध को ज़्यादा समय तक दबा नहीं पाये—"निकल आओ, मूर्ख औरत ! बाहर निकलो !"

वे दरवाज़े पर लातें जमाने लगे और सिर मारने लगे। बिलकुल पागल आदमी की तरह वे दरवाज़े पर अपना सिर पीटने लगे। खुरपी जैसे दाँतवाला बूढ़ा मुंशी घर के पिछवाड़े जाकर देखने लगा कि कहीं कोई खिड़की तो नहीं खुली है। वह घर के चारों तरफ़ टहलने लगा। आसपास के भक्त और संन्यासी वहाँ जमा होने लगे। सब लोग मज़ा लेने लगे।

ठीक उसी समय हर्रे के पेड़ की दिशा में एक खिड़की खुली। डरथी ब्राउन ने चिल्लाकर कहा, "तुम यहाँ आकर तमाशा क्यों कर रहे हो ? आख़िर क्यों ?"

साहब भी गला फाड़कर चिल्लाने लगे। कहने लगे कि डरथी ने यहाँ आकर सिर्फ़ उनके गाल पर ही नहीं, पूरी ब्रिटिश सभ्यता पर तमाचा मारा है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

“अब बाहर निकलो। मैं नीचे तांगा रोके खड़ा हूँ। निकलो, अब और समय बरबाद करने की ज़रूरत नहीं है।”

डरथी खिड़की फिर से बन्द करने ही वाली थी, उसी समय हेनरी ने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया और साथ-साथ चिल्लाने भी लगे—“निकलो, बाहर निकलो !”

डरथी दाँतों से काटकर हेनरी से अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश करने लगी। दोनों में खींचा-तानी शुरू हो गयी। डरथी हेनरी की सख़्त मुट्ठी से अपना हाथ छुड़ाकर ज़हरीले साँप की तरह फुँफकारती हुई बोलने लगी, “मैं वापस नहीं जाऊँगी। मैंने सब-कुछ सुना है। मैंने उस ख़ासी औरत के बारे में सुना है। उसके पेट में बच्चा है।”

हेनरी साहब चिल्ला उठे, “उसके पेट में बच्चा है ? इसका मतलब उस बदमाश ने तुम पर जादू-टोना कर दिया है ! बदतमीज़ औरत ! छिनाल कहीं की ! तुम क्यों यहाँ आयी थीं—नंगी लेटने के लिए ? मैं...मैं...”

मुंशी हेनरी साहब का हाथ पकड़कर पीछे खींचने लगा।

ठीक उसी समय हट-हट की आवाज़ के साथ नदी के पानी से छिन्नमस्ता के जटाधारी ऊपर चढ़ आये। वे लगभग नंगे थे। उनके शरीर और जटा से पानी का स्रोत बह रहा था। किसी गहरी साधना के बाद जैसे अर्धचेतना की स्थिति में वे पानी से बाहर निकले थे। लोगों के क़रीब पहुँचकर वे चीख़ उठे—“माँ छिन्नमस्ता ! माँ महादेवी ! माँ धूम्रावती ! माँ, माँ !”

पहली बार हेनरी साहब ने छिन्नमस्ता के इस आदमी को ध्यान से देखा। उनके साथ नज़र मिलते ही साहब की आत्मा जैसे काँप उठी। साहब को लगा जैसे उसके शरीर के कुछ ढँके हुए अंग अन्दर ही अन्दर टूट रहे हैं।

मुंशी का हाथ पकड़कर वे हड़बड़ाते हुए नीचे उतरने लगे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

चार

कोचबिहार में यजमानी करते समय दान में मिला हुआ चावल बेचने के लिए 'हनुमान-दरवाज़े' के पास दो ब्राह्मण बैठे थे। उनकी सहायता के लिए कई नौकर भी थे। पहाड़ी के ऊपर और निचले हिस्से में रहनेवाले लोग उनसे चावल ख़रीदने के लिए इकट्ठा हो गये थे। वहाँ छोटी-मोटी भीड़ लगी थी। इस तरह के सुगन्धवाले 'खरिकाजहा' चावल कामरूप (ज़िला) के बाज़ार में देखने को भी नहीं मिलते। इसके अलावा पहाड़ी के ऊपर और निचले हिस्से में रहनेवाले लोग और दूर से आये देवीभक्त लोगों के मन में चावल बेचनेवाले इन ब्राह्मणों के प्रति बहुत सहानुभूति भी थी, क्योंकि ख़ाली देह पर मोटे कपड़े की चादर ओढ़कर आनेवाले ये अधेड़ उम्र के ब्राह्मण 'कन्याशुल्क' देने में असमर्थ थे और इसलिए उन्हें पूरे जीवन रँडुआ बनकर जीना पड़ता है। वे कोचबिहार में यजमानी करके कुछ रुपये-पैसे इकट्ठा करना चाहते थे, लेकिन उम्र किसी के लिए रुकती नहीं है। इसी चक्कर में उन लोगों के बाल सफ़ेद हो गये। उनके लिए कोई लड़की नहीं जुट पायी।

शायद इसलिए उन लोगों का व्यवहार कर्कश और बातचीत में चिड़चिड़ापन था। रुपये-पैसे का अभाव और शादी न होने के कारण हर समय उन लोगों की आँखों में एक उदासी रहती है। कभी-कभी लोग जब सौदा तय करते समय नौकरों से बहस करते हैं तो वे ब्राह्मण ख़रीददार को दो-चार कड़वी बातें सुना देते हैं। उनके दुबले-पतले नौकर भी कभी-कभी चिल्ला उठते हैं। फिर बासमती चावल ख़रीदने के लिए नरपारा, हेमतला, बामुनपारा और बेजपारा के ग्राहक भी वहाँ जमघट लगाते हैं।

आज पहाड़ी पर अनेक लोग हैं। सभी सिर से पाँव तक कपड़ों से ढँके हुए हैं। भातघिला, होलोंग और पमा पेड़ों से अब भी ओस टपक रही है। पहाड़ों के बड़े-बड़े पत्थर ओस से भीग रहे हैं। पहाड़ी पर चढ़नेवाले भक्तों में से दो-चार ने बासमती चावल ख़रीदने का आग्रह किया। उन्होंने अपने मन से चावल ख़रीदे। वैसे आज इतने सारे भक्त किसी विशेष कारण से पहाड़ी पर आये हैं। इस कृष्णपक्ष

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

की द्वितीया तिथि में पुष्य नक्षत्र की सन्धिवेला में देवीपीठ में आने का कारण है कि आज कामेश्वर शिव और कामेश्वरी पार्वती के विवाह का उत्सव है। कल अधिवास[1] था। चाँदी की पालकी में कामेश्वर की मूर्ति विराजमान कर पूरी शक्तिपीठ की परिक्रमा करने के बाद मन्दिर में उस मूर्ति की स्थापना की गयी है। इस विवाह के उपलक्ष्य में जल से भरे कलश लेकर चलनेवाली औरतें मधुर गीत गा रही हैं, जिनसे चारों दिशाएँ मुखर हो उठी हैं। हवाओं के साथ जैसे संगीत की ध्वनि तैरने लगी है–

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुद्रानी पार्वती देवी महेश मोहिनी
पाषाणकन्या माता नितान्त पाषाणी।

अचानक धोती-कमीज़ पहने लगभग बीस युवा लड़के शोर मचाते हुए ऊपर चढ़नेवाले भक्तों को सावधान करने लगे–"छिन्नमस्ता के जटाधारी से सावधान रहो ! नारी समाज, सावधान रहो! डरथी फ़िरंगी, भाग जाओ, भाग जाओ !"

भक्तों को धक्का देते हुए ये उद्दण्ड लड़के कूदते-फाँदते नीचे उतर गये। दूर से आये भूलाईहार, कोचबिहार और उत्तर-शेखदारी के भक्तों को डरथी फ़िरंगी के बारे में कुछ भी पता नहीं था, इसलिए उन्हें लड़कों की बातें समझ में नहीं आयीं। वे सिर्फ़ माँ, माँ तारा, माँ भैरवी, माँ छिन्नमस्ता, माँ–माँ का उच्चारण करते हुए पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। सिर पर पगड़ी बाँधे और शान्तिपुरी धोती पहने दो ब्राह्मण मन्दिर जानेवाले रास्ते की सीढ़ियों पर खड़े थे। वे देवी-प्रणाम-मन्त्र गा रहे थे।

दोनों ब्राह्मण नदी के उत्तरी किनारेवाली बेहिसाब ज़मीन के मालिक थे। देवीपीठ में उनके आने का एक अन्य कारण था–दोनों ब्राह्मण–देवेश्वर शर्मा और हरकान्त शर्मा– के पुत्र कॉटन कॉलेज के छात्र हैं। जॉन साइमन के असम पहुँचने के पहले ही वे लड़के छात्रावास से ग़ायब हो गये थे। इधर सरकार द्वारा लड़कों के माँ-बाप के पास चिट्ठी भेजी गयी है। चिट्ठी में लिखा था कि साइमन के सामने विरोध प्रदर्शन करनेवाले छात्रों को कॉलेज से बर्ख़ास्त कर दिया जाएगा। दोनों ब्राह्मण छिन्नमस्ता के अड्डे में अपने लड़कों को ढूँढ़ने के लिए पहाड़ी पर आये हैं।

ऊपर चढ़नेवाले रास्ते पर उन्हें उत्तरी दिशा के 'विलायत'[2] से लाये गये बासमती चावल भी दिखे लेकिन उन्होंने उस तरफ़ ध्यान नहीं दिया। दोनों के हाथों में लाठियाँ थीं। उन्हीं के सहारे वे पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। उन्हें बहुत उम्मीद थी कि उनके बेटे शिवनाथ और रामगोपाल एक दिन पढ़-लिखकर वकील बनेंगे और अपने बाप का नाम रोशन करेंगे : सभी के लिए ज़मीन के अधिकार पर पाबन्दी लगाने की जो

1. शुभकार्य की पहली शाम को की गयी शुरूआती पूजा और अन्य कार्य।
2. कोचबिहार में यजमानी करने जानेवाले ब्राह्मणों को विलायत जाना कहते थे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बातें चल रही हैं, उसके लिए उन्हें परेशान नहीं होना पड़ेगा। बेटे के वकील बन जाने के बाद वे इस ज़मीन को आपस में ऐसे बाँट लेंगे कि किसी को उनकी चतुराई का पता ही नहीं चलेगा।

हाथ में लाठी लिये वे सावधानी से आगे बढ़ने लगे। ऊपर जानेवाले रास्ते का यह हिस्सा जंगली पौधों और लताओं से भरा हुआ है। बीच-बीच में उन्हें लाठी से इन लताओं को रास्ते से हटाना पड़ा।

गणेश की मूर्ति और त्रिशूल लेकर बैठे एक संन्यासी के सामने लम्बे होकर पड़े एक ढोलकिया से ब्राह्मणों की भेंट हुई। इन सज्जनों को देखते ही वह ढोलकिया हड़बड़ा गया। अपना सिर ज़मीन में टिकाये हुए ही उसने दोनों को प्रणाम किया और बिलखकर बोला, "प्रभु, मैं पुलु ढोलकिया हूँ !"

उसे देखकर हरकान्त शर्मा चौंक उठे–"अरे, तू तो बोरका या महखुलि का ढोलकिया है न ? क्या हुआ तुझे ? बीमार है क्या ? या फिर अफ़ीम का नतीजा है यह ?"

पुलु ढोलकिया फुर्ती से हरकान्त शर्मा के पैरों के पास खड़ा हो गया–"प्रभु, मेरी हालत बहुत बुरी है। लड़का बीमार है।" कहकर वह हरकान्त शर्मा के पैर पकड़कर बिलखने लगा।

दो क़दम पीछे हटकर शर्मा चिल्ला पड़े, "क्या करता है–क्या करता है..."

कन्धे पर लटके गन्दे-से गमछे से मुँह पोंछकर उसने शर्मा के कान में फुसफुसाते हुए कहा, "क्षयरोग हुआ है। आसपास वालों ने बिलकुल सम्बन्ध तोड़ दिये हैं।"

"किसको हुआ है क्षयरोग ?"

"मेरे बेटे गजेन को।"

शर्मा ने लम्बी साँस लेते हुए कहा, "हाय हाय, तेरे बेटे को यह महारोग कैसे लगा ?"

पास में बुत की तरह खड़े देवेश्वर शर्मा बोल उठे, "पिछले साल देवध्वनि उत्सव के समय मैंने उसे कैहाती, डिमऊ, बोरका और महखुलि के ढोलकिया के साथ इसी पहाड़ी पर देखा था। एक बार वह बगलादेवी का घोड़ा भी बना था न ?"

पुलु ढोलकिया गमछे को मुँह में ठूँसकर फिर बिलख-बिलखकर रोने लगा–"प्रभु, असम के ऊपर और नीचेवाले इलाक़े में प्रचलित कितने ही ढोल बजाने की शैलियाँ–टेलुटोपी वाद्य, बाटबोलनी वाद्य और सभाबाँधनि वाद्य सीखकर वह बिलकुल पारंगत हो गया था और–और, उफ्–सर्कस भी सीखा था उसने, कोचबिहार के एक उस्ताद से लगातार तीन बार कलाबाज़ी खाना सीखा था उसने–और अब वह खटिया से ही नहीं उठ सकता !"

"सुना है उसे ढोल बनाने की कला भी आती थी ?"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

"जी हाँ प्रभु, उसने धरल सत्र[1] से गीत भी सीखा था। आप लोगों ने ही सुनकर 'वाह वाह' की थी !"

"भेड़िये की तरह ढोल लेकर कूदना—साथ में ऊपरी असम के धरल सत्र में गाये जानेवाले गीत लगातार सुर लगाकर गाना—" पुलु ढोलकिया रुदन-भरे स्वर में गाने लगा, जिसका सारांश है—कत्थई, लाल, नीला और हरा—

यही चार रंग ढोलक में सर्वदा लगाये जाते हैं। लंका के रावण से ढोल बनानेवाली विधि मिली और बढ़ई ने सुन्दर ढंग से ढोल का निर्माण किया। धोबी के वीर्य से मोची का जन्म हुआ। तभी बढ़ई ने मोची की सहायता से ढोल, खोल और मृदंग का निर्माण किया। उन्होंने ढोल को सुन्दर रंग से अलंकृत किया। सत्य, द्वापर आदि चार युगों में मोची ने बढ़ई की सहायता की है। दक्षिण दिशा में गो-वध किया जाता है (अमावस्या में) और मोची दस खम्भे गाड़कर गाय की चमड़ी धूप में सुखाते हैं। उसके पाँच हिस्से बनाकर फिर ढोल का निर्माण किया जाता है।[2]

पुलु ढोलकिया सुर लगाकर गा रहा था या रो रहा था, यह समझना मुश्किल हो गया। हरकान्त शर्मा पुलु के पास जाकर उसे स्पर्श किये बिना ही तसल्ली देने लगे—"सर्वशक्तिमान महादेवी की कृपा से तेरा सारा दुःख दूर हो जाएगा। महादेवी छिन्नमस्ता ! हे माँ, हे माँ !"

तीनों एक साथ बोल उठे, "माँ, माँ—माँ देवी, माँ भैरवी, माँ सर्व-दुःख-नाशिनी ! माँ !"

लाठी के सहारे कुछ दूर तक आगे बढ़ने के बाद, अचानक देवेश्वर शर्मा ने हरकान्त शर्मा के कान के पास आकर कहा, "पुलु ढोलकिया ही शायद उन लड़कों के छिपने की जगह दिखा सकता है। क्या पता, भागते फिरनेवाले स्वयंसेवी लड़के शायद कोटिलिंग के पास बने ढोलकिया के अफ़ीम का नशा करनेवालों के अड्डे में छिपे हों !"

हरकान्त शर्मा ने हाँ में सिर हिलाया। दोनों लाठी के सहारे ऊपर चढ़ने लगे। दोनों का अनुकरण करते हुए पुलु ढोलकिया ने भी क़दम बढ़ाये।

"सुन पुलु, तू हमें दूसरे रास्ते से ले जा, हम ढोलकियों के अड्डे देखना चाहते हैं।"

अब पुलु दोनों से आगे हो लिया। लेकिन यह छोटा रास्ता अच्छा नहीं था। नगरबेरा, कटहाँ और दूसरी कँटीली झाड़ियों से पूरा रास्ता लगभग ढँका हुआ था। और फिर इस तरह से पहाड़ी पर पैदल चलने की दोनों सज्जनों की बिलकुल आदत नहीं थी। इसलिए कुछ दूर जाने के बाद ही दोनों एक बड़े-से पत्थर पर बैठ गये।

---

1. वैष्णव मठ।
2. यह तथ्य गोपीकान्त मेधी के ढोल-वाद्य ग्रन्थ से लिया गया है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
पुलु ढोलकिया की देह पर नज़र पड़ते ही हरकान्त और देवेश्वर शर्मा ने दूसरी तरफ़ मुँह घुमा लिया। ऐसा हाड़-कंकाल जैसा ज़िन्दा आदमी शायद उन लोगों ने पहले नहीं देखा था। संन्यासी के पास बैठते समय उसे उन लोगों ने ध्यान से नहीं देखा था।

"हाय, हाय—पुलु तेरे शरीर की हालत तो बहुत ख़राब है !"

"बहुत परेशान हूँ प्रभु ! ज़मीन और बेटे की चिन्ता मुझे खाये जा रही है।"

"कहाँ की ज़मीन है ?"

"बरहिर के तरफ़ की है प्रभु ! आधी ज़मीन नदी ले गयी और आधी बन्धक से निकालने के लिए मैं गया था तो वे कहते हैं..."

"क्या कहते हैं ?"

"मैंने कहा, पूरी नहीं तो थोड़ी-सी ही ज़मीन दी दे दीजिए !

"तो बोले, 'ए पुलु, ज़मीन क्या बलि का कटा हुआ बकरा है कि अलग-अलग हिस्सा बना दें ?' "

तीनों फिर से आगे बढ़ने लगे। अब कुछ दूर तक तीनों मौन रहे।

तब तक ऊपर मन्दिर के आसपास हल्लागुल्ला शुरू हो गया था। मन्दिर में शायद भक्तों की भीड़ बढ़ रही थी। इस समय शायद सूखी घास से बने आसन पर बैठकर विशालकाय पुजारी हर-गौरी को 'आदाजाल'[1] दे रहे हैं।

पुलु ढोलकिया के साथ दोनों ब्राह्मण घने जंगलों से घिरे सँकरे गुप्त रास्ते से आगे बढ़ने लगे। अपनी लाठियों से दोनों ब्राह्मण जंगली लताओं, झाड़ियों और साथ में पहाड़ी पर बनी छोटी-छोटी गुफाओं के मुँह भी खोंचकर देखते गये। इस सुनसान एवं डरावनी जगह में अगर कोई अस्त्र-शस्त्रों के भण्डार छुपाकर रख दे तो किसी को पता ही नहीं चलेगा। आख़िर देवेश्वर और हरकान्त बुरी तरह से थक गये। दोनों अब बूढ़े हो चले थे। इस तरह से श्रम करना उनके वश की बात नहीं रह गयी थी।

"हमें दो दिन यहीं रह जाना चाहिए। यहाँ का कोना-कोना छान मारना होगा।"—दोनों आपस में बोलने लगे।

पुलु ढोलकिया फिर घुटने टेककर विनती करने लगा, "प्रभु, प्रभु, मेरा क्या होगा ? मेरा क्या होगा ? मेरा बेटा अगर मर गया तो मैं कैसे जिऊँगा ? प्रभु, मैं क़सम खाकर कह रहा हूँ—मैं ज़िन्दा नहीं रहूँगा। कुछ रुपये-पैसे देकर मेरी सहायता कीजिए प्रभु ! ताकि मैं गुवाहाटी के अस्पताल में उसका इलाज करवा सकूँ !"

इस सुनसान जंगल के बीच पुलु ढोलकिया दोनों ब्राह्मणों के पैरों पर गिर पड़ा।

देवेश्वर शर्मा कुछ दूर पीछे हट गये। फिर कुछ सोचते हुए बोले, "पिछले हफ़्ते

1. पूजा का एक विधान।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारे पण्डा डम्बरुधर ने बरामदे में बैठकर बातचीत करने के दौरान कहा था कि कैसे वह फ़िरंगी लड़की संन्यासी के क़ब्ज़े में फँसी है। सुना है, वह फ़िरंगी लड़की पण्डों की औरतों को मरहम-पट्टी करने गयी थी। यजमानों के लिए खाना पकाते-पकाते उन औरतों के हाथ-पैर और मुँह की चमड़ी काली पड़ गयी थी—पूरे बदन खुरदरे हो गये थे।''

हरकान्त शर्मा ने हामी भरते हुए कहा, ''लेकिन तुम क्या क़हना चाहते हो, खुलकर कहो—तभी ढोलकिया को समझ में आएगा।'' पुलु ढोलकिया ने भी हामी भरी, ''जी हाँ, जी हाँ—प्रभु !''

''सुन पुलु, तू पौ फटते ही—जब वह फ़िरंगी औरत टोपी पहनकर नदी किनारे जाती है, उसी समय द्वारभांगा-घर के बरामदे में पड़े रहना। मैंने सुना है कि उनके पास रानी और राजा जॉर्ज की तस्वीरोंवाले ढेर सारे चाँदी के सिक्के हैं।''

पुलु ढोलकिया को समझा-बुझाकर दोनों ब्राह्मणों ने अब अपने-अपने पण्डों के पास पहुँचने के लिए तेज़ी से क़दम बढ़ाये।

माँ ! माँ ! माँ ! छिन्नमस्ता !

माँ ! माँ ! माँ !

डरथी ब्राउन हड़बड़ाकर उठ बैठी। यह चीख़ छिन्नमस्ता के आँगन से आ रही है। छिन्नमस्ता के जटाधारी ज़रूर इस समय साधना पर बैठे होंगे। ज़रूर नदी से साँप तैरता हुआ जटाधारी की जटा में घुस गया होगा और जटा के चारों तरफ़ कुण्डली बना रहा होगा।

आधी रात का समय है। छिन्नमस्ता के जटाधारी की चीख़ के साथ भैंसे के खुरों की आवाज़ एकाकार हो गयी है। खट्...खट्...खट्। ओह ! कौन-सा पक्षी बोल रहा है ? उल्लू है क्या ? बरामदे के पासवाले पेड़ पर बैठकर हुक्...हुक् ...हुक् आवाज़ कर रहा है ! ब्रह्मपुत्र से भयानक हु...हु आवाज़ आ रही है—मृत्यु के बिलकुल क़रीब पहुँचनेवाले व्यक्ति की आख़िरी साँस जैसी आवाज़। ओह ! इस आधी रात को कौन-सी पूजा के लिए भैंसा लाया जा रहा है ? इस आधी रात को भी बलि के लिए भैंसा ले जा रहे हैं लोग ! भैंसे के सामने घण्टा बजाया जा रहा है—टन्... टन्...टन् !!

खट्...खट्...खट्।

बलि के लिए आगे बढ़ते हुए भैंसा की स्थिर और बड़ी-बड़ी आँखें डरथी की नज़रों के सामने तैरने लगीं। इस अन्धकार में जैसे दो डरावनी आँखें उन्हें देख रही हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

डरथी ब्राउन अब उठकर बैठ गयी। हाँ–हाँ, इस आधी रात को बलि के लिए लाए गये भैंसे के खुर की आवाज़ उसकी धड़कनों के साथ मिलकर एक जैसी हो गयी है।

खट्...खट्...खट् !

इस अन्धकार में क्या भैंसे को पथरीला रास्ता दिख रहा होगा ? उसे घसीटकर ले जानेवालों के हृदय जैसे रूखे-कर्कश पत्थरों को देख पा रहा है वह ? एक ज़िन्दा प्राणी के हृदय की पीड़ा नहीं समझ पानेवाले लोग हैं ये !

खट्...खट्...खट् !

इस आधी रात को कौन-सी पूजा होगी ? ओह ! उसके गले में पानी डालने के लिए काफ़ी जद्दोजहद करनी होगी। रस्सी और पानीवाला घड़ा लेकर लोगों की भाग-दौड़ शुरू होगी। वह आगे नहीं बढ़ना चाह रहा है। लोहे की तरह सख़्त हो गया है उसका गुप्तांग ! उसके मुँह से झाग निकल रहा है ! वह विष्ठा निकाल रहा है। ये लोग जैसे यमदूत बन गये हैं–साक्षात् यमदूत !!

माँ, माँ, माँ, माँ कात्यायनी माँ !

यह कैसी मुक्ति है ? कैसी मुक्ति है यह ?

डर के मारे सिमटकर बैठ गयी डरथी। इस ठण्ड की रात में भी उसकी 'नाइट ड्रेस' पसीने से भीग गयी। मच्छरदानी उठाकर वह बिस्तर से नीचे उतरी और लालटेन की बत्ती बढ़ा दी। कुछ मच्छर उसके कान में भुन-भुन करने लगे। नहीं, नहीं, इस आधी रात को वह खिड़की खोलना नहीं चाहती। बाहर नग्न ब्रह्मपुत्र एक रहस्यपूर्ण रूप लेकर बह रही है।

वह मेज़ पर रखे पानी के बर्तन और चाँदी के ग्लास के पास गयी। ग्लास में पानी भरा और एक ही साँस में सारा पानी पी गयी। 'नाइट ड्रेस' उसके शरीर से चिपकी हुई थी।

उसके ताँबे जैसे रंगवाले बाल मन्दिर के शिखर में बने सोने के 'कलश' की तरह चमक रहे थे। वे कन्धे तक ऐसे बिखरे थे जैसे किसी सुनहरे घड़े से शहद बहकर फैल रहा हो।

माँ, माँ, माँ छिन्नमस्ता ! माँ छिन्नमस्ता !!

क्या संन्यासी के पास चली जाए ? डरथी ने सोचा। इस समय उसके मन में कोई डर, कोई दुविधा या कोई ग्लानि नहीं थी।

दरवाज़ा खोलकर उसने हाथ में लालटेन उठा ली। पहरा देनेवाला कोई आदमी आसपास नहीं था। धीरे-धीरे चलकर वह छिन्नमस्ता के नीचेवाली कोठरी के पास खड़ी हो गयी। आश्चर्य की बात यह थी कि कोठरी की सीढ़ियों पर उसके चढ़ते ही अन्दर से दरवाज़ा खुल गया। सीढ़ी के नीचेवाली वेदी पर उसने छिन्नमस्ता के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

जटाधारी को देखा। मिट्टी के दीये की रोशनी में सन्यासी का शरीर स्पष्ट दिख रहा था। ताम्रवर्ण की जटा उनकी पीठ पर काले नाग की तरह खुली पड़ी थी। बलि दिए गये भैंसे के छिन्नमस्तक में दीपक जलाकर लम्बे जीवन की साधना करनेवाले साधक की तरह उनके दोनों नेत्र दीप्तिमान थे। एक छोटे-से लाल वस्त्र के टुकड़े से उनका गुप्तांग ढँका था। उनके चारों तरफ़ फैले थे लाल जवाकुसुम के फूल—जैसे किसी भक्त ने अपनी गर्दन, ललाट, कान के ऊपर का भाग, बाँहें, स्तन और नाभि का रक्त देवी को उत्सर्ग किया हो और वही रक्त जवाकुसुम फूल बनकर पड़ा हो जटाधारी के सामने।

जटाधारी ने कहा, "मैं जानता था कि तुम आओगी।"

वह सीढ़ियाँ उतरकर जटाधारी के बिलकुल पास आ गयी।

"क्या मन अशान्त है ?"

डरथी ने कुछ नहीं कहा।

"किसी के पास शान्ति नहीं है।"

डरथी ने उनके चेहरे से अपनी नज़र हटा ली।

"फटे वस्त्र में पैबन्द टाँकने की तरह हम लोग अपनी देह और मन को बलि में कटे पशु की चमड़ी से सिलकर रखते हैं। हमारे मन में भी शान्ति नहीं है।"

जटाधारी उठे और मिट्टी के बर्तन में रखी मदिरा एक ही साँस में पी गये। हाथ के इशारे से उन्होंने डरथी को अपने पास बुलाया। बिलकुल नीचेवाली सीढ़ी पर डरथी बैठ गयी। जटाधारी के शरीर की गन्ध डरथी ने महसूस की। सड़ी हुई निर्माली की तरह थी वह गन्ध। कच्चे मांस की तरह थी वह गन्ध !

जटाधारी फिर से खड़े हो गये और मिट्टी के बर्तन में मदिरा उँड़ेलकर एक बार और पी गये। उसके बाद वे मिट्टी का बना पंचप्रदीप डरथी के चेहरे के पास ले आये। उसके ताम्रवर्ण बाल अब बलि काटनेवाले खड्ग की तरह चमक उठे।

धीरे-धीरे मिट्टी के दीये की रोशनी उसकी नुकीली नाक और ताज़े कटे हुए मांस के दो-टुकड़ों की तरह होठ तक उतरने लगी। गर्दन की नर्म चमड़ी से होकर पंचप्रदीप की रोशनी अब उसके भरपूर स्तनों के पास रुक गयी। जैसे गहरे पानी में दो लहरें हिलने लगी हों। इन लहरों पर रोशनी के चिपचिपे-से आवरण—

उसकी रात की पोशाक चीरकर जैसे मुक्त हो गये हों सफ़ेद मांस के दो टुकड़े !

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाँच

रत्नधर नाव से आये कुछ भक्तों की तस्वीरें बनाने की तैयारी में लगा था। ब्रह्मपुत्र अब बिलकुल शान्त था। उसकी देह पर जैसे हवनकुण्ड की सफ़ेद राख फैली हुई थी। इस समय भस्माचल में छाया है। काले पत्थर के एक टुकड़े की तरह स्थिर है पूरा भस्माचल।

एक विशालकाय नाव पर सवार यात्रियों को रत्नधर बड़े ध्यान से देख रहा था। इस नाव में आनेवाले भक्तगण कुरुवा की तरफ़ के थे। उनमें दो मरीज़ भी थे। दोनों मरीज़ों को लोगों ने सहारा देकर नाव से उतारा। दो जवान लड़कियाँ भी आयी हैं। वे सूती चादर और लोटे के की डिज़ाइनवाली बाँहों का ब्लाउज़ पहने हैं। साथ में आये दो लड़के बलि के लिए लाये दो बकरों को घसीट-घसीटकर घाट से ऊपर चढ़ा रहे हैं। रस्सी खींचने से लगी चोट से बकरे मिमिया रहे हैं।

रत्नधर ने जटाधारी का आदेश मानकर पिछले कुछ दिनों से कई तस्वीरें बनाने का संकल्प ले लिया है। रणचोवा पत्थर के पासवाले चपटे पत्थर पर उसने तस्वीरें बनाने का सामान रखा है। कभी-कभी हवा से उड़कर उसका काग़ज़ और अन्य सामान ब्रह्मपुत्र की रेत पर बिखर जाता था। शाम को जटाधारी द्वारा तय किये गये विशेष जुलूस के लिए लोगों को इकट्ठा करना भी रत्नधर का काम था। लोगों में जिज्ञासा की सीमा नहीं थी। बच्चे जटाधारी के शरीर में कुण्डली बनाते साँप को देखना चाहते थे।

लोगों को इकट्ठा करने का काम गुप्तरूप से होता था। कामाख्या के अलावा नीचेवाले इलाक़े में स्थित संस्कृत गुरुकुल के छात्रों को इकट्ठा करने का आदेश जटाधारी ने सिर्फ़ रत्नधर को दिया था। संस्कृत गुरुकुल ही नहीं, कॉटन कॉलेज के लोहे के दरवाज़े के पास भी वह खड़ा हुआ था। कर्ज़न हाल में पढ़ने जानेवाले छात्रों से मिलने वह हीघलीपुखरी (एक बड़ी झील) के किनारे अमलतास पेड़ के नीचे खड़ा रहता था। कर्ज़न हाल में आने-जानेवाले छात्रों से वह मिलता था और उन्हें धीमी आवाज़ में छिन्नमस्ता के जटाधारीवाले जुलूस के बारे में बताता था। कुछ छात्रों

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

को कामाख्या दर्शन के दौरान कभी मानसिक रूप से अस्वस्थ रह चुके रत्नधर के बारे में जानकारी मिली थी, इसलिए वे अब भी उससे पीछा छुड़ाना चाहते थे।

जटाधारी ने रत्नधर को कालीपुर आश्रम के पासवाले जंगल में तम्बू लगाकर रहनेवाले जहाज़ कम्पनी के साहबों के पास उसकी बनायी तस्वीरों को बेचने के लिए भेजा था। ये साहब लोग रोज़ सुबह बन्दूक़ चलाने का अभ्यास करते थे।

साहब लोग प्रशंसाभाव से उसकी तस्वीरों को देखते थे। जटाधारी के आदेश के अनुसार बनी ये तस्वीरें जिज्ञासा की प्रतीक थीं। एक तस्वीर में बादशाह औरंगज़ेब द्वारा विधि पाठक नामक भक्त को ब्रह्मपुत्र के 'जलमहल'[1] देने का बहुत सुन्दर दृश्य था। यहाँ के लोगों ने औरंगज़ेब के बारे में सुना था कि मथुरा में हिन्दू मन्दिरों को तोड़ने के बाद उनके टुकड़ों को उसने मांस तौलनेवाले बाँट के रूप में इस्तेमाल किया था। अब यहाँ के लोगों की आँखों में औरंगज़ेब का दिया 'जलमहल' का पानी झिलमिलाता रहता है। बादशाह की अँगूठी में चमकते हीरे की तरह है जलमहल के पानी का रंग। कुछ दूरी पर रेत में दबी एक नाव भी तस्वीर में बनायी गयी थी—ऐसा लगता था कि किसी मन्दिर की नर्तकी औंधे-मुँह रेत पर पड़ी है, या फिर वह नाव नहीं बल्कि किसी मत्स्यकन्या की पूँछ है !

दूसरी तस्वीर को भी साहबों ने बड़ी उत्सुकता से देखा। इसमें महाराजा कामेश्वर सिंह की मँझली रानी माधवी और उनकी प्रिय रखैल रूपती खाटनियर का पालकी में चढ़कर मन्दिर दर्शन के लिए आने का दृश्य अंकित किया गया था। चाँदी की नक़्क़ाशीवाली पालकी में रानी माधवी बैठी थी—उन्होंने उँगली में राजा की मोहरवाली अँगूठी पहनी हुई थी, कान में जांगफाई[2] से बनी बाली, गले में लता की शैली में पत्थर-जड़े हार और जूड़े में सोने का फूल पहने थी।

लोग कहते हैं कि मँझली रानी के पास तीस तोले सोने के गहने थे। ये गहने राजा अपनी निगरानी में रखते थे। राजा के देहान्त के बाद 'सारिंग' राजा ने गहनों पर क़ब्ज़ा कर लिया। रानी ने गुवाहाटी में प्रिन्सिपल एसिस्टेण्ट एजेण्ट कैप्टन हॉलरइड को पत्र लिखा था। हॉलरइड और कर्नल जॉनकिंस के बीच इन गहनों को लेकर झगड़ा हुआ था। रत्नधर ने इसकी भी एक तस्वीर बनायी थी।

कामेश्वर सिंह की रखैल और मँझली रानी की तस्वीरों को बन्दूक़ के निशाने का अभ्यास करनेवाले साहबों ने बड़े चाव से देखा। साहब लोग असम के राजाओं के बारे में देर तक बातचीत करते रहे। शिवसागर के सिविल सर्जन डब्ल्यू जॉनस्टन

---

1. जब असम में मुग़लों का अधिकार था, तब बादशाह औरंगज़ेब ने लोगों को ब्रह्मपुत्र का एक इलाक़ा मछली पकड़ने के लिए दे दिया था।
2. असम के मिसिमि पर्वत में पाये जानेवाले पेड़, जिनसे गोंद जैसी चिपचिपी चीज़ निकलती है। इसका रंग शहद जैसा है और इससे अलग-अलग तरह के गहने बनाये जाते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
लांग, प्रिन्सिपल एसिस्टेण्ट कैप्टन हॉलरइड और लेफ़्टिनेण्ट कर्नल एफ.एफ. जॉनकिंस के बारे में सुनायी गयी अनेक कहानियों से अमलतास और साल के जंगलों से भरा यह स्थान मुखर हो उठा। राजा पुरन्दर सिंह के बारे में भी चर्चा हुई। अँग्रेज़ों ने सालाना पचास हज़ार रुपये देकर राजा पुरन्दर से शासन-भार लेते समय उनसे अपराधियों के नाक-कान काटनेवाले दण्ड को बन्द करने का वचन लिया था। राजा पुरन्दर को 'बहिरजा'[1] बनाते समय मेजर अदीम व्हाइट की सेना ने उन्नीस तोपों से सलामी दी थी—यही सब चर्चा होती रही।

कर्नल मेकमरान को भी याद किया गया। गुवाहाटी पर क़ब्ज़ा करते समय मेकमरान साहब तम्बू के नीचे क्या करते थे, इसकी रोचक कहानी भी किसी ने सुनायी। बाद में हैजे से उनकी मौत हो गयी थी। मृत्यु से पहले उनके द्वारा कही गयी बातों को साहबों ने याद किया—"पानी हमेशा उबालकर पीना चाहिए। उस मन्दिर के पास जाना उचित नहीं है—वह काला जादू की गुफा है। किसी ने मुझ पर भी जादू-टोना कर दिया है। उस मन्दिर में बिलकुल मत जाओ !"

हाँ, यह सच है। वे कामाख्या की तरफ़ आँख उठाकर देखने से भी डरते थे। हर समय मन्दिर की घण्टियाँ उन्हें सुनाई देती थीं। रत्नधर इतनी दूर से गोरे साहबों को ध्यान से देख रहा था। गुरुकुल में उसने थोड़ी-बहुत संस्कृत भाषा सीखी थी। गुरुकुल के छात्रों के साथ नाव से पलाशबाड़ी और शुवालकुचि में घूमने भी गया था। लेकिन अँग्रेज़ी भाषा ?...गोरे बन्दर निशाना साधते हुए डरथी के बारे में कह रहे थे—

ठाँय ठाँय ठाँय—थ्री नॉट थ्री की कई गोलियाँ जैसे रत्नधर के शरीर को छलनी कर रही थीं।

हाँ, हाँ—डरथी ब्राउन के बारे में कुछ भी सुनने के बाद उसे ऐसा ही होता है। नाटे और गोल चेहरेवाला, हाफ़पैण्ट पहने एक साहब ने सुनहरे बालवाले दूसरे साहब से कहा था, "डरथी के बारे में ताज़ा ख़बर क्या है !"

ख़ाकी पोशाक पहने छह फुट लम्बे साहब ने जवाब दिया, "मैंने सुना है कि वह आजकल उस शैतान के साथ रह रही है।"

एक दूसरा साहब पेड़ में लटके हुए गागल को गोली से उड़ाकर चिल्ला उठा, "नहीं, नहीं—उसने किसी तुच्छ राजा की पुरानी टूटी-फूटी हवेली ढूँढ़ ली है।"

सब लोगों ने एक साथ कहा, "ओह बेचारी ! वह कितनी सुन्दर है ! लेकिन अपने-आप को बरबाद कर डाला है !"

रत्नधर ने अब ज़ोर देकर कहा, "मुझे तस्वीरों के दाम दीजिए।"

---

1. कार्य में नहीं, सिर्फ़ नियम के लिए बनाया गया राजा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साहब लोग एक जगह पर इकट्ठे हो गये। उनके पास रानी और राजा जॉर्ज की मोहरवाले रुपये की कमी नहीं थी। साहबों के लिए नाश्ते के डब्बे और पानी की बोतलें ढोनेवाले मुछन्दर मुंशियों ने जल्दी-जल्दी रत्नधर की बेची हुई तस्वीरों को ताँगे में रख दिया। साहबों के मुँह से डरथी के बारे में सुनकर रत्नधर का दिल धड़कने लगा था।

क्या वे कुछ करेंगे ? डरथी का कोई नुक़सान तो नहीं करेंगे वे ?—रत्नधर के मन में यह सवाल बार-बार उठ रहा था। शायद वह ठीक ही सोच रहा है। मन्दिर के 'स्वर्गद्वार' और 'हनुमानद्वार' के पास उसने कुछ दिनों से नये-नये चेहरे देखे हैं। घाट पर नाव बाँधकर कुछ भयानक चेहरेवाले लोगों को पहाड़ी पर चढ़ते हुए उसने अपनी आँखों से देखा है।

क्या वे डरथी का कुछ कर सकते हैं ? कोई नुक़सान पहुँचा सकते हैं ? क्या पता ! क्या भरोसा ! लेकिन अगर कोई विपत्ति आएगी तो वह जान देकर भी डरथी को बचाएगा। रत्नधर ने मन-ही-मन क़सम खायी। उफ् कैसी आँखें हैं वे ! जैसे बिना कोई शब्द कहे ही सब-कुछ समझा सकती हैं ! कैसी सूरत है उनकी ! नज़र पड़ते ही हृदय प्यार से भर जाता है।

नहीं, ज़्यादा सोचने का समय नहीं है। उसने तस्वीर बनानेवाला सामान समेटा। अब समय नहीं बचा है। आम्राजुलि घाट के विशालकाय पेड़ के नीचे बैठकर नये यात्रीवाली नावों का निरीक्षण करने की तीव्र इच्छा उसे होने लगी। आज वह नदी-किनारे बैठकर एक-एक नाव का हिसाब रखेगा। यजमान की बेटी विधिबाला भी तो आ सकती है ! पिछले छह महीने से घाट के हर्रे के पेड़ के नीचे बैठकर उसने यजमानों की नावों का हिसाब रखा है। उसने कहा था—उत्सव में आएगी ! कितने उत्सव बीत गये—दुर्गापूजा, नवान्न, मदन-चतुरालि, राजराजेश्वरी पूजा, साठे व्रत, देवध्वनि। नहीं, किसी भी उत्सव में विधिबाला नहीं आयी। पिछले एक साल में उसके बाल शायद और लम्बे हो गये हैं। नदी में नहाते समय अपने बाल नागिन की तरह लहराती होगी शायद ! छिन्नमस्ता की पूजा में जाते समय अब वह बाल खोलकर जा ही नहीं पाएगी !

रत्नधर ने घाट के पानी की तरफ़ क़दम बढ़ाया। वधस्थल के सामने बने नाटघर[1] में कुमारी पूजा के समय उसने विधिबाला को पहली बार देखा था। पूजा के लिए आसन पर बैठी थी वह। शम्भू पण्डा और अन्य यजमानों के बीच में बहस चल रही थी—"लड़की को देखकर ऐसा लगता है कि वह बारह साल पार कर चुकी है। उसके हाथ-पैर और भरे हुए शरीर को देखो !"

1. देवीपीठ के सामने बना हुआ मंच, जिसमें पूजा-सम्बन्धि नृत्य-गीतों का आयोजन किया जाता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
"हाथ-पैर और शरीर ? अरे उसके स्तनों में तो उभार आ गया है !"

"पुष्पिता तो नहीं है लड़की ?"

"साड़ी, रुपये, शीशा और सिन्दूर के लालच में बैठी होगी। यह तो महापाप है ! घोर महापाप !"

चारों तरफ़ कोहराम मच गया। लड़की का बाप डम्बरू शर्मा दरवाज़े के पास गिर पड़ा था। कह रहा था—"मेरी लड़की अगर पुष्पिता है तो देवी छिन्नमस्ता मेरी गर्दन को खड्ग से दो टुकड़े कर दे ! मुझे मार दे !"

हाँ, उम्र से बड़ी लगती थी वह। लाल किनारेवाली साड़ी पहनकर वह कुशासन पर बैठी थी। उसके खुले बालों ने नाटघर की ज़मीन का स्पर्श किया था। उसने पैरों में महावर और माथे पर बड़ी-सी लाल बिन्दी लगायी थी। उसी समय तारावारी या खोलाबन्धा के किसी शाण्डिल्य गोत्र के परिवार को मन्दिर के दर्शन करवाने के बाद अपने पिता के साथ रत्नधर भी नाटघर के सामने आकर खड़ा हुआ था। एक ही नहीं, कई कुमारियों की पूजा हुई थी। चारों तरफ़ का वातावरण आन्दोलित हो रहा था। दो शूद्र, एक वैश्य और दो शाण्डिल्य गोत्र की ब्राह्मण कुमारियों की पूजा हुई थी। पुजारी फूल-तुलसी रखी बाँस की बनी टोकरी हाथ में लेकर ज़ोर-ज़ोर से कह रहे थे—"इन महामाया की पूजा करने पर देवपूजा का फल प्राप्त होगा।—'एकाहि पूजिता बाला सर्वांगं हि पूजितं भवेत् !"

विधिबाला को देखने के बाद क्या हो गया था रत्नधर को ? उसके पिता ज़बरदस्ती उसे वहाँ से खींच ले गये थे—"ऐ रत्नधर ! भैंसे की बलि चढ़ाने कोई यजमान आया है। कहता है कि उसके सात पुरखों ने भैंसा की बलि चढ़ायी है। लोगों की भीड़ अब बढ़ेगी यहाँ पर। तू बलि नहीं देख सकता है न ! यहाँ से चल। चल मेरे साथ।"

हाँ, हाँ—सब-कुछ रत्नधर को अच्छी तरह से याद है। सब-कुछ याद है—

घाट पर खड़े होकर रत्नधर ने टकऊ[1] के पत्ते से बने टप्पर की एक नाव को आते देखा। टप्पर के सामने कपड़े का पर्दा भी लगा हुआ था। लेकिन नाव इस घाट पर नहीं लगी।

उसी समय रत्नधर ने देखा कि एक छोटी नाव आकर घाट से लग गयी। नाव में बैठे कई हट्टे-कट्टे लोग उछलते हुए नीचे उतरे। इन लोगों के चेहरे रत्नधर को पहचाने-से नहीं लगे। चेहरे पर चेचक के दाग़, भूरे रंग की आँखें और घुँघराले छोटे-छोटे बालवाले एक आदमी का अनुकरण करते हुए सारे लोग पहाड़ी पर स्थित जंगल की तरफ़ जाने लगे। वह आदमी कन्धे पर चादर से ढँककर कुछ लाया है। क्या लाया होगा वह ? कहीं बन्दूक़ तो नहीं है?

---
1. एक प्रजाति की सुपारी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

रत्नधर हाँफता हुआ [illegible] भांगा-घर की तरफ़ दौड़ने लगा। उसे लगा कि क्रान्तिकारी के भेस में ये गोरे साहब के आदमी हैं। क्या पता क्या होगा ? वह लगभग दौड़ता हुआ ऊपर चढ़ गया। हाँ, हाँ—आजकल कोई भी आदमी अपने को स्वयंसेवी कहकर मालीपारा और बेजपारा के लोगों के घर में घुसकर खाना खा आता है, पुलिस की सीटी सुनकर खटिया के नीचे छुप जाता है।

इस तरह हाँफते हुए ऊपर चढ़ते समय बार-बार डरथी ब्राउन का चेहरा उसकी आँखों में तैर गया। तभी दूर से आती छिन्नमस्ता के जटाधारी की चीख़ सुनाई दी—"माँ, माँ छिन्नमस्ता ! माँ, माँ !"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

छह

आधी रात को अचानक दरवाज़े पर दस्तक सुनाई दी। छिन्नमस्ता के जटाधारी ने अपने एक भक्त को डरथी ब्राउन के बरामदे में पहरा देने के लिए भेजा था। इस समय कहीं से कोई आवाज़ नहीं आ रही है। पहरा देनेवाला आदमी भी चुपचाप पड़ा होगा।

फिर दस्तक की आवाज़ सुनाई दी।

''कौन ? कौन है ?'' डरथी ने चिल्लाकर पूछा।

एक दबी हुई रोने की आवाज़ डरथी को सुनाई दी। कुछ देर तक वह सोचती रही कि उसे खिड़की खोलनी चाहिए या नहीं।

फिर से दस्तक की आवाज़ हुई।

दरवाज़े पर कान लगाकर डरथी ने सुनने की कोशिश की। उसे ब्रह्मपुत्र की हू-हू आवाज़ सुनाई दी। एक बार फिर डरथी ने पूछा, ''कौन है वहाँ ?'' लालटेन लेकर वह खिड़की के पास आयी और धीरे-से खिड़की खोल दी। लेकिन तुरन्त वह चौंकती हुई पीछे हट गयी।

खिड़की के पास एक अजीब चेहरे का आदमी खड़ा था। लालटेन की रोशनी में उस आदमी के खड़े बाल काँटों की तरह दिख रहे थे। उसकी आँखें भी भयानक थीं। डरथी को लगा कि वे आँखें नहीं दो गड्ढे हैं। आग की लपटों से भरे दो गड्ढे।

''कौन हो तुम ? क्या चाहिए ? क्या चाहिए तुम्हें ?''

''मैं पुलु ढोलकिया हूँ, आई ! बहुत विपत्ति आ पड़ी है मुझ पर। कुछ सहायता चाहिए।''

कुछ देर तक स्तब्ध हो गयी डरथी ब्राउन। फिर से एक बार डरते हुए लालटेन उठाकर उसने उस आदमी को देखा। ओफ़्, बारिश में बिलकुल भीगकर आया है वह ! रात को शायद ज़ोरों से बारिश हुई थी–पानी से भीगकर वह बिलकुल कंकाल-सा दिख रहा है। अब बारिश नहीं है। चाँद की निर्मल रोशनी में उसे देखकर लग रहा है जैसे वह तुरन्त नहाकर आया है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

डरथी ने उससे कहा, "अभी ठीक से सुबह भी नहीं हुई है। दिन में आओ तुम।"

वह विनती करने लगा, "सुबह लोग देख लेंगे, आई !"

"लोग देख लेंगे ?" लालटेन की बत्ती बढ़ाकर वह खिड़की के पास खड़ी हो गयी। पेड़ों के पत्तों के झरोखे से आ रही चाँदनी में उस आदमी का चेहरा बिलकुल स्पष्ट दिखने लगा। अद्भुत है ! बिलकुल अद्भुत ! बारिश के बाद की साफ़ और स्वच्छ चाँदनी जैसे पिघलकर कामाख्या की खण्डित मूर्तियों में बहने लगी है – कालापहाड़ की तलवार से खण्ड-खण्ड हुई नर्तकियों की मूर्तियों पर चाँदनी बिखरी पड़ी है।

डरथी ब्राउन ने अब दरवाज़ा खोला और बाहर निकल आयी। रात की पोशाक और खुले बालों के साथ उसका शरीर बिलकुल पुराने ज़माने की नर्तकी जैसा दिखने लगा।

"आओ, अन्दर आ जाओ।"

पुलु ढोलकिया के अन्दर आते ही छिन्नमस्ता के संन्यासी का भेजा पहरेदार हड़बड़ाकर उठ बैठा।

"ऐ, क्या करता है ? कहाँ जाता है ? कौन है ?"

डरथी हाथ से इशारा करती हुई बोली, "मैंने बुलाया है।"

बड़े संकोच के साथ पुलु ढोलकिया कमरे में दाख़िल हो गया और एक कोने में दुबककर बैठ गया। इसी के साथ एक अजीब-सी गन्ध चारों तरफ़ फैल गयी।

"क्या परेशानी है तुम्हें ?"

"एक ही बेटा है–क्षयरोग में पड़ा है, उसे गुवाहाटी के अस्पताल में दिखाना है। मेरे पास पैसा नहीं है। हम बाप-बेटा दोनों ढोल बजाने का काम करते हैं। ज़मीन भी बाढ़ में बह गयी ! कुछ भी नहीं बचा !"

"ढोल बजानेवाला ?"

"ढोल मतलब 'ड्रम' !" पुलु ढोलकिया ने दोनों हाथ ऊपर उठाकर दिखाया।

आदमी के हाथ ऐसे अद्भुत आकार के हो सकते हैं, यह डरथी सोच भी नहीं सकती थी। क्या ये ढोल बजानेवाले के हाथ हैं ? हाथ की नसें स्पष्ट दिख रही हैं–बिलकुल सूखकर काँटा हो गयी अँतड़ियों की तरह दिख रही हैं ये नसें।

बरामदे में खड़ा पहरेदार चिल्ला उठा, "अफ़ीम का नशा करने की वजह से इस ढोलकिया की यह हालत हुई है।"

"अफ़ीम ?"

पुलु ढोलकिया की सूरत रोने जैसी हो गयी। वह फिर विनती के स्वर में कहने लगा, "अरे, क्यों मेरे कलेजे में चोट लगाते हो ? आई, आज अगर उसे अस्पताल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri
में नहीं ले गया तो वह मर जाएगी। उसने ख़ून की उल्टी की है।'' वह फिर से रोने लगा।

लालटेन नीचे रखकर डरथी बिस्तर के नीचे से एक सूटकेस घसीट लायी। पुलु ढोलकिया खड़ा हो गया। लालटेन की रोशनी में उसने देखा कि डरथी ने कपड़े का बना एक बटुआ सूटकेस से निकाला। उसे जल्दी-जल्दी खोलने की कोशिश कर रही थी कि वह हाथ से छूटकर नीचे गिर गया। रानी के मोहरवाले कुछ सिक्के भी ज़मीन पर बिखर गये। लालटेन की बत्ती बढ़ाकर डरथी ब्राउन बोली, ''ले जाओ ! ज़मीन से बटोरकर सारे रुपये ले जाओ।''

पुलु ढोलकिया पहले घुटने टेककर, और फिर बिलकुल ज़मीन में सटकर, जल्दी-जल्दी सिक्के बटोरने लगा। फिर लगभग दौड़ता हुआ द्वारभांगा-घर से बाहर निकल आया।

कुछ ही देर में वह अँधेरे में अदृश्य हो गया। अब डरथी मेज़ के पास बैठ गयी और काग़ज़-क़लम लेकर अपने मित्र ज़हाज़-कम्पनी के छोटे साहब विलियम को चिट्ठी लिखने लगी। ''मेरे पास दो हुण्डियाँ हैं। उसे तोड़ने का बन्दोबस्त कर दो। गुवाहाटी में मेरे नाम से जो भी सम्पत्ति है, मैं उसकी वसीयत बनाना चाहती हूँ, मेरी सहायता करो।''

कुछ और बातें डरथी ब्राउन ने लिखीं। लिफ़ाफ़े में डालकर उसने चिट्ठी मेज़ पर रख दी। फिर लालटेन हाथ में लेकर बाहर निकली और छिन्नमस्ता के मन्दिर की तरफ़ जल्दी-जल्दी चलने लगी।

अब तक छिन्नमस्ता के संन्यासी की आवाज़ सुनाई देने लगी थी—''माँ, माँ छिन्नमस्ता ! — माँ, माँ, माँ !''

चलने की जल्दबाज़ी में उसकी रातवाली पोशाक के बटन बार-बार खुलने लगे। लालटेन की रोशनी में उसका गोरा बदन जाल में फँसी मछली की तरह दिख रहा था।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सात

ब्राह्मण समाज के बीच बैठे छिन्नमस्ता के जटाधारी सबको सम्बोधित करते हुए ज़ोर से बोले, "अगली पूर्णमासी के दिन हम लोग यहाँ के पण्डों को एक आवेदन-पत्र देंगे। क्या हमारे पास दो सौ लोग होंगे ?"

सामने बैठे छात्रों और भक्तों ने एक साथ कहा, "दो सौ से भी अधिक होंगे, महाप्रभु। सभी गुरुकुलों में ख़बर भेजी गयी है। पहाड़ी के नीचेवाले गुरुकुलों में भी ख़बर भेजी गयी थी। कॉटन कॉलेज का एक छात्र-दल भी जुलूस में हिस्सा लेगा। आप शुभ दिन और मुहूर्त देखकर हमें बताइए।"

जटाधारी आसमान की तरफ़ हाथ उठाकर चिल्ला उठे—"माँ, माँ, माँ !! तुम रक्तवस्त्र त्याग दो माँ ! तुम रक्तवस्त्र फाड़ डालो।" सारे भक्त एक साथ चिल्ला उठे, "माँ, माँ तुम रक्तवस्त्र त्यागकर फूल के वस्त्र पहनो—माँ, तुम रक्तवस्त्र छोड़कर..."

ठीक उसी समय जटाधारी के सामने धप् से बन्दूक़ की गोली से घायल एक बगुला आ गिरा।

दर्शनार्थियों के बीच कोहराम मच गया। एक छात्र चिल्लाया, "गोरे साहबों को सावधान करना पड़ेगा। निशानेबाज़ी सुधारने का 'डेरा' वहाँ से हटाना होगा।"

"सिर्फ़ आज ही नहीं, हमारे सामने गोली खाकर पक्षी के गिरने की यह तीसरी घटना है।"

जटाधारी ने चोंच खोलकर आख़िरी साँस लेते हुए बगुले को उठा लिया और उसे अपने सीने से लगाकर किसी मन्त्र का उच्चारण किया। थोड़ी ही देर में उस पक्षी की जान चली गयी। सामने बैठे दो-चार छात्र जटाधारी के हाथ से मृत बगुले को लेकर नदी की तरफ़ जाने लगे।

बातें करना छोड़कर अब जटाधारी ध्यान की मुद्रा में बैठ गये। कामाख्या में बलि रोकने के उद्देश्य से जुलूस में शामिल होने के लिए बहुत सारे लोग इस बैठक में आये थे। शुभ दिन और समय देखकर आज मन्दिर के पुजारी के पास अर्ज़ी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

देने की बात थी। लेकिन काम आगे नहीं बढ़ा। आज लोगों को आशा थी कि जटाधारी अच्छा समय और शुभ-मुहूर्त बताएँगे।

लेकिन वे तो ध्यान में बैठ गये ! समाज के लोगों के बीच पहली बार इस तरह से वे ध्यान में बैठे हैं। अचानक सबने एक अद्भुत दृश्य देखा। सूखे पत्तों के बीच से एक पीले और काले धब्बेवाला साँप जटाधारी के शरीर पर रेंगता हुआ उनके गले में कुण्डली बनाकर झूलने लगा।

रत्नधर और बाक़ी सब लोग चिल्लाने लगे, "साँप, साँप !" जटाधारी ने आँखें नहीं खोलीं। वे उसी तरह ध्यानमग्न रहे। भक्तगण उनके पास खड़े होकर चीख़ने-चिल्लाने लगे, "साँप, साँप !" वह साँप जटा के ऊपर से पीठ तक रेंगता हुआ कब और कैसे अदृश्य हो गया, किसी को पता ही नहीं चला। सूखे और पीले पत्तों के नीचे से इतनी तेज़ी से वह निकल गया कि लोग समझ ही नहीं पाये।

सब लोगों ने अपनी आँखों से यह चमत्कारी दृश्य देखा। तब तक जटाधारी ने आँखें खोलकर नहीं देखा था।

धीरे-धीरे भक्तों की भीड़ बढ़ने लगी। कॉटन कॉलेज का एक छात्र जटाधारी से कुछ बातें करने के लिए तैयार होकर आया था। लम्बा, दुबला-पतला यह लड़का जटाधारी के आँखें खोलने का बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा था।

लगभग एक घण्टे के बाद जटाधारी ने आँखें खोलीं। इसी के साथ वह दुबला-पतला, मरियल-सा छात्र बोल पड़ा, "महाप्रभु, उस अँग्रेज़ महिला के यहाँ रहने के कारण लोगों के मन में डर और शक बढ़ता जा रहा है। नये-नये शक्लवाले लोग आजकल नाव से इस पार आकर चारों तरफ़ घूम रहे हैं। पिछली रात हनुमान-द्वार के पास पिस्तौल हाथ में लेकर घूमते एक आदमी से मेरा आमना-सामना हुआ था। जंगलों में छुपे गाँधी के स्वयंसेवियों को यह बात अच्छी नहीं लगी है। हम लोगों का जुलूस शुरू होने से पहले ही उस अँग्रेज़ महिला को यहाँ से हटा दीजिए।"

एक दूसरा छात्र भी बोला, "बहुत जल्दी हटा दीजिए।"

छिन्नमस्ता के संन्यासी ने आँखें खोलकर आसमान की तरफ़ देखा। उनके दोनों हाथ ऊपर उठे, लेकिन सिर्फ़ एक क्षण के लिए। उनकी आँखें फिर बन्द हो गयीं। वे गहरे ध्यान में बैठ गये।

ठीक उसी समय 'जर्मन' पत्तों की झाड़ियों के पास बैठी हुई डरथी ब्राउन तेज़ी से उठकर जटाधारी के सामने आकर खड़ी हो गयी। साफ़ असमिया भाषा में उसने कहा, "मैं अपनी इच्छा से यहाँ आयी हूँ। मुझे यहाँ से धक्के देकर कोई भी बाहर नहीं निकाल सकता।"

बैठे हुए लोगों के बीच दबी उत्तेजना प्रकट होने लगी। इससे पहले किसी ने भी इस तरह से अँग्रेज़ औरत को बोलते हुए नहीं सुना था। स्वतन्त्रता-संग्राम में

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाग लेनेवाली एक-दो असमिया महिलाओं से [illegible] लोगों ने पहले सुने हैं। आश्चर्य से सभी के मुँह खुले रह गये। बहस करना तो दूर, इस समय किसी के मुँह से एक आवाज़ भी नहीं निकली।

अपनी बातें कहने के बाद डरथी ब्राउन उस जगह पर एक क्षण के लिए भी नहीं रुकी।

उसके वहाँ से चले जाने के बाद, पीछे बैठे कुछ छात्रों ने कहा, "वो इस तरह से बोल तो गयी लेकिन अगर गोरे साहब कहीं का गुस्सा कहीं और उतारने लगे, तब क्या होगा ?"

"कहीं का गुस्सा कहीं और ?"

एक छात्र-नेता ने दूसरे छात्र से फुसफुसाते हुए कहा, "नीचे के जंगलों में–यहाँ तक कि 'सती'-पत्थर के पास भी गोरे साहबों के आदमी चहलक़दमी कर रहे हैं। उन्होंने जंगलों से बलि चढ़ाये गये आदमी की खोपड़ी और सती होनेवाली किसी पण्डे की पत्नी के कंगन ढूँढ़ निकाले हैं।"

जुलूस में भाग लेने के लिए आये ऊपरी असम के एक छात्र ने कहा, "क्या कहते हो ! यहाँ सती ? ब्रह्मपुत्र-किनारे सतीप्रथा कभी नहीं थी। हाँ, वर्षों पहले राजा भास्कर वर्मा की ख़ूबसूरत और जवान रखैल के राजा के साथ जलकर मरने की कहानी ज़रूर सुनी थी। लेकिन राजा की कोई रानी सती नहीं हुई थी। पण्डे की पत्नी के सती होने की कहानी किंवदन्ती होगी।"

एक दूसरे छात्र ने कहा, "सुना है, सतीवाले पत्थर से ब्रह्मपुत्र का भयंकर रूप दिखता है। क्या तुम लोग जानते हो कि उस जगह पर कौन सती हुई थी ?"

ठीक उसी समय भातघिला पेड़ के नीचे बैठा तर्सा-किनारे का सिरमुँडा संन्यासी चिल्ला उठा, "तुम लोगों को देवी छिन्नमस्ता शाप से भस्म करेगी। तुम लोग जलकर राख हो जाओगे। तुम लोगों का उद्देश्य सफल नहीं होगा। तुम लोग बलि-विधान बन्द करने की जो कोशिश कर रहे हो, वही कोशिश खड्ग बनकर तुम लोगों की हत्या करेगी। तुम लोगों के ख़ून से वधस्थल डूब जाएगा।..."

वहाँ बैठे छात्रों ने कहा, "नरबलि बहुत पहले ही बन्द हो चुकी है–हम सुन्दर-सुगन्धित फूलों से देवी माँ की पूजा करेंगे। ज़रूरत पड़ी तो अपने शरीर का रक्त देवी के चरणों में अर्पण करेंगे।"

सब एक साथ बोल उठे, "हाँ, हाँ–ज़रूरत पड़ी तो हम लोग अपना रक्तदान करेंगे, लेकिन दूसरे प्राणियों की बलि नहीं होने देंगे।"

"हाँ, हाँ–अब प्राणियों की और बलि नहीं होनी चाहिए।"

भक्तों के बीच फिर से खुसुर-फुसुर होने लगी। उसी समय सँकरी-सी गली से एक भैंसे को कई लोग ज़बरदस्ती घसीटकर ले जाने लगे। भैंसे के खुर की खट्-खट्

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
आवाज़ सुनाई दी। भैंस की रस्सी पकड़े लोगों का कोहराम भी सुनाई पड़ा।

खट् खट् खट् !

खट् खट् खट् !! तर्सा-किनारेवाले सिरमुँड़े संन्यासी के पास लाल वस्त्र पहने और दो तान्त्रिक आकर खड़े हो गये।

एक ने ज़ोर देकर कहा, "नरबलि बन्द होने के कारण ही आज देश के लोगों की यह हालत हुई है। अँग्रेज़ों ने देश पर क़ब्ज़ा कर लिया है। जो नरबलि के लिए तैयार रहता है वह पापमुक्त हो जाता है। ऐसे नर का रक्त देवी के लिए अमृत के समान हो जाता है। ऐसे नर मनुष्य की देह त्यागने के तुरन्त बाद अधिपुरुष बन जाते हैं :

तस्य निष्कलुषस्याशु पीयूषं शोणितं भवेत्।
प्रीणाति च महादेवी जगन्माता जगन्मयी ॥
सोऽपि कायां परित्यज्य मानुषीं नचिरान्मतः।
भवेद्गणानामधिपो मायया बहुसत्कृतः ॥

संस्कृत भाषा का विचित्र उच्चारण करते हुए नाटे कद का लाल धोतीवाला तान्त्रिक पेड़ के नीचे खड़े होकर जैसे कोई अदृश्य घोषणा-पत्र पढ़ने लगा।

लम्बे और काले नरकंकाल जैसे शरीर और गड्ढों में घुसी आँखोंवाला एक तान्त्रिक तर्सा-किनारेवाले सिरमुँड़े संन्यासी से बिलकुल सटकर खड़ा था। अब यह तान्त्रिक चिल्लाया, "हे नर ! देवी पूजा में ग़लती होने के कारण आज म्लेच्छ-अँग्रेज़ों ने हमारे भू-स्वर्ग पर अधिकार कर लिया है। हे नर ! बहुत पहले मैंने एक नरबलि का दृश्य देखा था और वैसा दृश्य एक बार फिर देखने की बहुत इच्छा है मेरे मन में।"

"वह नर कैसा दीप्तिमान था ! उसने शुद्ध भोजन किया था। मांस-मैथुन छोड़ दिया था। क़नेर, जवाकुसुम और गेंदे की माला से उसकी देह सजी हुई थी। उसके पूरे शरीर में चन्दन का लेप लगाया गया था, जिससे उसकी चमड़ी बलि में उत्सर्ग किये गये सफ़ेद बकरे की सूखी खाल के रंग की हो गयी थी। उसे ज़ंजीरों से बाँधकर रखा गया था।"

बड़े कौतूहल से बातें सुननेवाले लोगों की तरफ़ अपना हाथ फैलाते हुए तान्त्रिक बोला, "देवीस्थान में जानेवाला वह नर उसी क्षण देवता बन गया था। उसे उत्तर की दिशा में खड़ा किया गया। कालिका-पुराण की विधि के अनुसार उसके ब्रह्मरन्ध्र में ब्रह्मपूजा सम्पन्न हुई, नाक में पृथ्वी की पूजा, कान में शक्ति और आकाश की पूजा, जीभ में अग्नि की पूजा और आँखों में ज्योति की पूजा की गयी। उसकी स्वस्थ, सुन्दर देह में विष्णु की, माथे पर स्वयं जगज्जननी की, गाल की दक्षिण दिशा में इन्द्र की, भौंहों के मध्यभाग में वरुण देवता की, हृदय में नागदेवता की और कन्धे

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

में धनेश्वर की पूजा की गयी। हाँ, हाँ—कालिका-पुराण के अनुसार ही यह पूजा हुई थी। बलिदाता चीख़ता हुआ उस नर के चरणों में गिरकर विनती करने लगा था—मृत्यु एक सत्य है ! हे नर ! मृत्यु सभी के लिए अनिवार्य है। पुत्र और रिश्तेदारों के साथ मेरी रक्षा करो। लोग कठोर तपस्या, ज्ञान और यज्ञ से जो भी प्राप्त करते हैं, तुम मुझे उसी का दान दे दो। तुम मुझे ऐसा आशीर्वाद दो कि राक्षस, पिशाच, सरीसृप, राजा या अन्य कोई भी जंगली जानवर मेरा कोई नुक़सान न कर सके।''

ठीक उसी समय जटाधारी के भक्तों के बीच बैठे दो-चार लोग खड़े हो गये। वे एक साथ आसमान की तरफ़ हाथ उठाकर चीख़ पड़े, ''वही आख़िरी था। हम जानते हैं—हम सब जानते हैं, खड्ग ऊपर उठने से पहले ही वे लोग पहुँच गये थे।''

''कौन आये थे ?''

''सफ़ेद घोड़े पर चढ़कर गोरे साहब के सिपाही आये थे। गोरे साहबों ने पूजा की वेदी पर घोड़े चढ़ा दिये थे।''

''उन्होंने आसमान की तरफ़ कितनी सारी गोलियाँ चलायी थीं ! यजमान लोग चारों तरफ़ भागने लगे थे।''

''पूरे शरीर में चन्दन का लेप लगाये उस आदमी का क्या हुआ ?''

कूबड़ निकले बूढ़े तान्त्रिक के पास अब कोई जवाब नहीं बचा। लेकिन फिर भी वह गला फाड़कर चीख़ने लगा, ''देवी की बलि में हाथ लगानेवाले अँग्रेज़ों का अच्छा नहीं होगा। बहुत जल्दी उनका बुरा दिन आएगा।''

अब तीनों तान्त्रिक एक साथ चिल्ला उठे, ''देश का कौन-सा हित हुआ ? क्या अँग्रेज़ों की चाबुक की मार नहीं सहनी पड़ी है लोगों को ? अब कहाँ गये हमारे राजालोग ? दुर्गा-अष्टमी में हज़ारों भैंसे बलि चढ़ानेवाले महाराज रुद्रसिंह कहाँ गये ? ये राजा देवी के लिए ईंट और सोने से मन्दिर बनवा देते थे। चन्दन के लेपवाले उस आदमी को बाँधकर अँग्रेज़ों ने क्या किया जानते हो...?''

तभी भक्तों के बीच हुक़्क़ा पीकर बैठा देवीपीठ का एक बौना तीनों तान्त्रिकों की तरफ़ इशारा करता हुआ चिल्लाया, ''हुँह, ये लोग नरबलि वापस लाना चाहते हैं ! नरबलि शुरू करवाना चाहते है ! कुछ ही दिन पहले ब्रह्मपुत्र के उत्तरी किनारे के एक मौजादार[1] द्वारा तीन भैंसे बलि चढ़ा दिए गये थे। लेकिन उससे क्या फ़ायदा हुआ ? दो दिन बाद ही मौजादार मर गया।''

''मर गया ?''

बूढ़ा तान्त्रिक फिर से चिल्लाया—''ऐ, तुम लोग नरक में जाओगे।''

''ऐ लड़के, तुम लोगों ने मनसा-मूर्ति के पास सोने का साँप नहीं देखा है ? यजमान ने दस बकरों के साथ सोने का साँप चढ़ाया था।''

1. असम में ज़िले के एक हिस्से का अधिकारी, जिसका काम राजस्व इकट्ठा करना होता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

"सोने का साँप ?"

"हाँ, हाँ, सोने का साँप।"

"दखला का शुभब्रत सुनार भैंसे की बलि चढ़ाने के बाद कटे भैंसे के सिर पर दीपक जलाकर पूरे एक दिन और एक रात तक देवी के सामने खड़ा रहा था। कालिका-शास्त्र में लिखा है कि ऐसे लोगों को गणाधिपत्य-लाभ के साथ-साथ अमरत्व मिलता है। क्या ये सब तुम लोग नहीं जानते ?"

बौना भक्त फिर उँगली से इशारा करता हुआ चिल्लाया, "दखला का शुभब्रत सुनार अब कहाँ है ? अमरत्व प्राप्त करनेवाला सुनार कहाँ गया ?"

उस जगह पर भीड़ लगाये सभी भक्त एक साथ बोल उठे, "हाँ, हाँ—दखला का शुभब्रत सुनार अब कहाँ है ?"

अब तक बूढ़े तान्त्रिक के पास एक-दो लोग इकट्ठा हो गये थे, मालीपारा के उद्दण्ड लड़के और सौभाग्यकुण्ड के आसपास मटरगश्ती करते लड़के भी तीनों तान्त्रिकों को घेरकर खड़े हो गये। कूबड़ के कारण झुककर चलनेवाला बूढ़ा तान्त्रिक इस बार वज्र जैसी कठोर आवाज़ से चिल्ला उठा—ऐ—ऐ लड़के, तुम लोग सब नरक में सड़ोगे। तुम्हारा नाश होगा।

बलिभिः साध्यते मुक्तिः बलिभिः साध्यते दिवम्।
बलिदानेन सततं जयेच्छत्रनृपान् नृपः ॥

बड़े विचित्र ढंग से बूढ़ा तान्त्रिक कालिका-पुराण का श्लोक दोहराने लगा। उसके जोशीले स्वर नीलाचल के पेड़-पौधों के बीच प्रतिध्वनित होने लगे। ठीक उसी समय ध्यानमग्न जटाधारी की आँखें खुलीं।

वे माँ, माँ कहकर चीख़े। एक साथ सभी की नज़र उन पर पड़ी। जटाधारी खड़े हो गये। बूढ़े तान्त्रिक से भी तेज़ आवाज़ से वे चिल्लाये, "माँ, माँ छिन्नमस्ता ! माँ, माँ छिन्नमस्ता !"

बलि-विरोधी जुलूस में भाग लेनेवाले भक्त भी एक साथ बोल उठे, "माँ, माँ छिन्नमस्ता ! माँ, माँ छिन्नमस्ता !!"

छिन्नमस्ता के संन्यासी अब हाथ में त्रिशूल और जवाकुसुम फूल की माला लेकर तेज़ी से मन्दिर की तरफ़ जाने लगे। मन्त्रमुग्ध भक्त भी उनका अनुकरण करने लगे। मवाली लड़कों के हाथों में पत्थर और लकड़ी के टुकड़े वैसे ही रह गये। आसपास के कुत्ते और मुसलमान भक्तों द्वारा मनसा-पूजा के लिए मन्दिर में छोड़ा हुआ बकरों का झुण्ड भी बाक़ी लोगों के पीछे-पीछे मन्दिर की तरफ़ जाने लगा।

सुबह पौ फटने के साथ ही बूट, कोट और टोपी पहने हुए डरथी ब्राउन नदी के बिलकुल किनारे पहुँच गयी। किसी ने उससे कहा था—"इतनी सुबह नदी के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

पास मत जाओ। यहाँ बहुत जंगली जानवर हैं।''
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसने देखा कि एक बड़ा-सा कछुआ किनारे पर चढ़ आया है। लोगों के क़दमों की आवाज़ से वह ढप् से पानी में जा गिरा। 'नगरबेरा'[1] की झाड़ियों में डरथी ने एक अजीब खड़खड़ाहट सुनी। शायद कोई उसका पीछा कर रहा है। कुछ ही दूरी पर पत्थरों के किनारे से सियारों का झुण्ड जाते हुए डरथी ने देखा। अब डरथी ब्राउन ने घूमकर देखा। कोई नहीं है। सिर्फ़ ब्रह्मपुत्र की कल्-कल् ध्वनि के साथ मिलकर घोड़े की टापों की आवाज़ कहीं से आ रही है। शायद गमछे की लँगोटी बाँधकर ऊपर से पतलून पहने कोई 'नेटिव'[2] अधिकारी घोड़े पर चढ़ना सीख रहा है। सरकारी अधिकारियों का घोड़े पर चढ़ना अब अनिवार्य हो गया है। सुबह-सुबह वे अभ्यास के लिए निकलते हैं।

खट् खट् खट् !

खट् खट् खट् !!

डरथी पानी के बिलकुल पास खड़ी हो गयी। 'नगरबेरा' की झाड़ियों में फिर से खड़खड़ाहट होने लगी।

''कौन है ? कौन है ?''

नहीं, कोई आवाज़ नहीं। तुरन्त बलि चढ़ाए गये सफ़ेद बकरे की तरह थरथराता हुआ पड़ा है ब्रह्मपुत्र नद—वहाँ पूर्व दिशा में धीरे-धीरे रोशनी बढ़ने लगी है, जैसे बलिवाले बकरे की चमड़ी उधेड़ने के बाद ख़ून से लथपथ लाल मांस बाहर निकल आया हो। हाँ—आकश की चमड़ी किसी ने उधेड़ दी है। लाल ख़ून के धब्बे आसमान में बिखर गये हैं।

वह जल्दी-जल्दी ऊपर चढ़ने लगी। एक बार फिर उसे लगा कि कोई उसके पीछे-पीछे आ रहा है। कौन हो सकता है ? क्या ब्राउन साहब का आदमी है ? या फिर खादी पहननेवाला कोई स्वयंसेवी ? डरथी को पूरा विश्वास है कि गाँधी के शिष्य औरतों को हाथ नहीं लगाते।

वह सावधानी से ऊपर चढ़ गयी। पंख फड़फड़ाता एक बड़ा-सा पक्षी उसके सिर के ऊपर से उड़ गया। ओह्, यह कौन-सा पक्षी है ? कौन-सा पक्षी ?

पास की झाड़ियों में फिर से खड़्-खड़्-सी आवाज़ होने लगी। —''कौन है ? कौन है वहाँ ?''

हाँफती हुई डरथी छोटे रास्ते से लगभग दौड़कर द्वारभांगा-घर के बरामदे में चढ़ गयी। घूमकर उसने देखा कि विद्युत् गति से तर्सा-किनारे का संन्यासी नीचे उतर रहा है।

---

1. जंगली घास और पौधे।
2. अँग्रेज़ों के अधीन नौकरी करता हुआ देशी अधिकारी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ समय तक डरथी ब्राउन वहीं खड़ी रही। फिर लालटेन जलाकर उसने द्वारभांगा-घर के बाहर बने अस्थायी छप्पर के नीचे मुँह-हाथ धोकर मेज़ पर रखा मिट्टी के तेलवाला स्टोव जलाया। छिन्नमस्ता के संन्यासी का चौकीदार भी तब तक जाग गया था। वह मुँह-हाथ धोने नीचे चला गया।

डरथी ने दो कप कॉफी बनायी। एक कप कॉफी उसने चौकीदार के लिए प्लेट से ढककर रख दी।

थोड़ी देर बाद डरथी बरामदे में आकर खड़ी हो गयी। नदी की तरफ़ देखने पर उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। ढीली पतलून और फेल्ट हैट पहनकर विलियम नाव से उतर रहे थे। उनके साथ-साथ रास्ता दिखाता हुआ रत्नधर द्वारभांगा-घर की तरफ़ आ रहा है। रत्नधर ने धोती और कमीज़ पहन रखी थी। डरथी विलियम का स्वागत करने के लिए आगे बढ़ी।

वे डरथी को देखकर हर्षित हो उठे। रत्नधर अन्दर जाकर लकड़ी की कुर्सी और टूटे मोढ़े को, बैठने के लिए जो भी मिला, खींचकर निकाल लाया।

विलियम रसिक आदमी हैं। बोले, "अगर मैं सुबह-सुबह नहीं आता, तो बहुत मुश्किल में पड़ जाता। तुम्हारी चिट्ठी मिली थी—वाह् वाह् डरथी, यह बहुत ही रहस्यपूर्ण स्थान है न ?"

उन्होंने बरामदे से उतरकर एक बार चारों तरफ़ घूमकर देखा और फिर से बरामदे में आकर खड़े हो गये—"ओह्, कितनी आकर्षक जगह है यह ! क्या इस जगह पर रहना सचमुच सम्भव है ?"

"वैसे लोग कितने प्रकार की बातें कर रहे थे ! आज मैं उन्हें ज़रूर देखने जाऊँगा। मैं उनसे ज़रूर मिलूँगा !"

विलियिम बहुत चुस्त और खुशमिज़ाज आदमी हैं। उन्होंने रत्नधर की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "आज मैं अगर इस लड़के से नहीं मिलता तो इस रहस्यपूर्ण पहाड़ में मारे-मारे फिरना पड़ता।"

डरथी ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम नदी-किनारे इससे रोज़ मिल सकते हो। वह विधिबाला के लिए वहाँ इन्तज़ार करता है !"

"विधिबाला कौन ?"

"उसकी सखी है विधिबाला। वे लोग रत्नधर के परिवार के यजमान हैं। वह लड़की शुवालकुचि में रहती है। तुम शुवालकुचि में एक बार गये हो न ? वहाँ के सुनहरे धागों ने तुम्हें मोह लिया था ! तुमने कहा था कि वहाँ की जवान लड़कियों के शरीर का रंग सुनहरे धागों जैसा है ! शुवालकुचि से आनेवाली हर नाव के लिए यह इन्तज़ार करता है !"

साहब के सामने रत्नधर छुईमुई-सा बन गया।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

डरथी ने उत्साहित स्वर में कहा, ''यह बहुत बड़ा कलाकार है। एक हफ़्ते से रत्नधर महाराज रुद्रसिंह के अंसम आगमन की तस्वीर बना रहा है। विलियम, क्या तुम देखना चाहोगे ?''

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

डरथी ने उठकर दीवार से टिके कैनवास पर पड़े कपड़े के परदे को हटा दिया। विलियम तस्वीर के पास आकर ध्यान से देखने लगे। डरथी ने समझाया, ''छिन्नमस्ता के संन्यासी ने उसे असम के इतिहास में से कुछ घटनाओं की तस्वीरें बनाने के लिए कहा है। यह देखो, देवी की प्रार्थना करने के लिए हनुमान-दरवाज़े से बन्दूक़धारी सेना और हाथी-घोड़े की भव्य शोभायात्रा के साथ महाराज रुद्रसिंह नीलाचल पर चढ़ रहे हैं। यह देखो, इस तस्वीर में हनुमान-दरवाज़े के पास हाथी पर बैठे रुद्रसिंह गले में चादर डालकर सिर झुकाते हुए जैसे कह रहे हैं—'देवी माता के सम्मान में बन्दूक़ें दागी जाएँ।' देखो, इस लड़के की तूलिका से देवीभक्त राजा का व्यक्तित्व कैसे निखर उठा है ! यह तस्वीर इसने इसी घर में बनायी है, इसी बरामदे में बैठकर—जहाँ अब हम लोग बैठे हुए हैं। विलियम, क्या तुम जानते हो कि अपने अभियान को सफल बनाने और माँ कामाख्या का आशीर्वाद लेने यहाँ तक आने के लिए राजा रुद्रसिंह ने कितने सैनिकों का इन्तज़ाम किया था—चार लाख सैनिक। और सुनो, रुद्रसिंह जिस दिन कामाख्या दर्शन के लिए आये थे, उस दिन भैंसा-बलि के रक्त से वधस्थल डूब गया था।''

''डरथी, मैं सचमुच उस आदमी को जानना चाहता हूँ। लोग कहते हैं कि वे पढ़े-लिखे और ज्ञानी हैं। मैं उनसे इस रहस्यपूर्ण जगह के इतिहास के बारे में जानना चाहता हूँ। मैं उनकी ईश्वरीय शक्ति के बारे में भी पूछना चाहता हूँ।''

विलियम किसके बारे में बात कर रहे थे, डरथी को समझने में देर नहीं लगी। वह चुपचाप बैठी रही। नहीं, छिन्नमस्ता के संन्यासी के बारे में वह किसी से बात नहीं करना चाहती। विलियम सजग हो उठे।

कॉफी के घूँट पीते हुए विलियम ने कहा, ''डरथी, मैं तैयार होकर आया हूँ। मेरा मतलब, मैं कॉटन कॉलेज के छात्र उमाकान्त से हेनरी ब्राउन की बनायी वसीयत का नमूना लेकर आया हूँ। इसी से तुम एक अनुमान लगा सकोगी। उमाकान्त ने मुझसे निवेदन किया है कि मैं इस वसीयत की नक़ल और किसी को न दिखाऊँ।'' यह कहकर विलियम ने अपने छोटे बैग से कुछ काग़ज़ निकाले और डरथी को दे दिये।

बड़े ध्यान से डरथी एक ब्रिटिश की बनायी वसीयत देखने लगी। फिर विलियम उसे डरथी को पढ़कर सुनाने लगे—

''तुम शायद जानते हो कि अपनी खासी पत्नी के लिए किये गये प्रावधानों को लेकर मैं कितना चिन्तित हूँ। मेरे नीरस वर्षों में वो एकमात्र सुख रही है—उसके बिना शायद मैं इस अनजान, भीड़भाड़वाले गुवाहाटी शहर में अकेले पागल हो जाता।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

"मैंने उसके लिए लाबान में कुछ ज़मीन खरीदी है और उस पर एक बड़ा-सा तथा दो छोटे घर बनाये हैं। दोनों छोटे घरों को वह किराये पर दे देगी। वहाँ पर सब्ज़ियाँ उगाने के लिए भी मैदान है और ज़ाहिर है कि उसे गहने तथा कपड़े भी बहुत दिये गये हैं। उसे मेरा पूरा फ़र्नीचर भी मिलेगा। खासी रीति-रिवाजों के हिसाब से ज़मीन पूरी तरह से उसकी होगी, इसलिए तुम्हें उसके लिए चिन्तित नहीं रहना पड़ेगा।

"मैंने भारत सरकार के साढ़े तीन फ़ीसदी प्रामिसरी नोट (वचन-पत्र) भी ख़रीदे हैं जिनका प्रत्यक्ष मूल्य 15,400 रुपये है। वर्तमान में ये मेरे नाम से कलकत्ता के ग्रीनलैण्ड बैंक में जमा हैं। बैंक थोड़े से कमीशन के एवज़ में हर छह महीने में ब्याज प्राप्त करता है, ऐसा वो करता रहेगा। बहरहाल, ये नोट्स और कई सौ रुपये भी पहले साल मेरी पत्नी को उसके गुज़ारे-भत्ते के रूप में देने के लिए हैं (जब तक इन नोट्स पर ब्याज इकट्ठा होता रहे)। मैं नवम्बर में गुवाहटी में एक ट्रस्ट डीड (दस्तावेज़) के ज़रिए क़ानूनन इसे ट्रस्टियों को स्थानान्तरित कर दूँगा। ऐसा मैं अपनी खासी पत्नी को उसके जीवन के दौरान और उसकी मृत्यु के बाद मेरे और मेरी सम्पत्ति के फ़ायदे के लिए करूँगा। ट्रस्टियों में से एकमात्र रोलैण्ड थामस ही कार्यकारी होंगे। उनको बहुत ज़्यादा परेशानी नहीं होगी—वे बैंक धन इकट्ठा करेंगे और उसका चालीस फ़ीसदी रुपया हर महीने मेरी पत्नी को मनीऑर्डर द्वारा भेजेंगे, जिससे कि ख़र्चे के लिए उसके पास काफ़ी धन रहेगा। लेकिन आयकर विभाग से आयकर वापस लेने में थोड़ी दिक़्क़त होगी क्योंकि वो अधिकतम राशि पर स्रोत से ही टैक्स काट लेता है। ये समस्या आड़े नहीं आएगी यदि वो तकनीकी रूप से अपने पैतृक राज्य माईलीम की प्रजा न होकर ब्रिटिश भारत की प्रजा होती। लेकिन इसी वजह से शिलांग स्थित आयकर अधिकारियों ने आयकर में छूट का प्रमाण-पत्र दे दिया होता, पर जब तक वे उसे ब्रिटिश भारत की प्रजा नहीं मान सकते तब तक ऐसा करना उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं है।

"बहरहाल, आयकर सम्बन्धी सम्भावित परेशानी कार्यकारी ट्रस्टियों को पहली बार ही होगी, बाद के लिए तो ये महज़ रोज़मर्रे का काम होगा।

"मेरी पत्नी निश्चित रूप से खासी पति रखेगी (क्योंकि यह उनकी परम्परा है) लेकिन ट्रस्ट डीड में इस पर रोक नहीं होगी। अतः ट्रस्टियों को इसकी चिन्ता में सिर नहीं खपाना है। विचार यह है कि चालीस फ़ीसदी रुपया उसे अपने जीवन के लिए मिलता रहे, इसका वो चाहे जो करे या न करे।

"बहरहाल, हमारे ऊपर जो आयकर लगेगा वो मुख्य रूप से प्रोफ़ेसर रोलैण्ड थामस ही देखेंगे। यदि उनकी मृत्यु हो जाती है, या वे काम करने में असमर्थ हो जाते हैं तो ट्रस्टियों को एकमात्र कार्यकारी ट्रस्टी का चुनाव करना होगा। वास्तव

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में बाक़ी ट्रस्टियों को प्रोफ़ेसर रॉलैंड थामस की मृत्यु की सूरत में दूसरा कार्यकारी ट्रस्टी चुनने के अलावा कोई उद्‌देश्य नहीं होना चाहिए।

"ट्रस्टियों में खान बहादुर मौलवी, इकराम रसूल, सिलहर में आबकारी अधीक्षक मि. हेराल्ड, भारतीय सर्वेक्षण विभाग के हेनरी क्रीड (जिनका एक घर और खासी पत्नी शिलांग में है), असम में आयकर विभाग के वर्तमान सहायक आयुक्त मि. रेजिनाल्ड एश होंगे। मि. एश तथा मौलवी इकराम रसूल सलाह दे सकते हैं कि आयकर की समस्या से कैसे निपटा जाए (यदि है तो...)। मौलवी के पास साढ़े तीन फ़ीसदी सरकारी पत्र हैं और वे हर साल आयकर से धन वापस पाते हैं। आप देखेंगे कि मैंने ट्रस्टियों को, जितना सम्भव था, ताक़तवर बनाया है। लेकिन वे सभी काफ़ी बूढ़े हैं और जैसा कि मि. एश के मामले में है कि वे असम में स्थायी तौर पर नहीं रहेंगे। प्रिय उमाकान्त, अगर कृपा करके तुम अनुमति दो तो मैं तुम्हारा नाम भी इसमें जोड़ना चाहता हूँ...।"

ब्राउन की वसीयत की नक़ल विलियम अपने हाथ से लिखकर लाये थे। इसलिए डरथी के सामने पढ़ते समय उनको कोई दिक़्क़त नहीं हुई।

विलियम ने वसीयत पढ़ना ख़त्म करके डरथी की तरफ़ देखा। फिर कहने लगे, "गुवाहाटी के शुक्लेश्वर-घाट पर ब्राउन ने तुम्हारे लिए एक बँगला बनवाया था, वह शायद तुम्हारे नाम से ही है। और शायद कुछ नहीं है ?"

"यहाँ पर अचल सम्पत्ति और कुछ भी नहीं है। लेकिन कई हुण्डियाँ मेरे पास रखी हैं।"

"घर के चारों तरफ़ बहुत सारे क़ीमती पेड़-पौधे हैं। उनका मूल्य बहुत होगा डरथी ! लेकिन यह वसीयत किसके लिए है ?"

डरथी मौन रही।

विलियम ने चीख़ते हुए पूछा, "कहो, यह वसीयत किसके लिए है ?"

कुछ देर तक चुप रहने के बाद डरथी ने कहा, "कुछ दिन पहले तक मेरे पति रह चुके ब्राउन की खासी पत्नी से जिस सन्तान का जन्म होगा, उसके लिए है यह वसीयत।"

"क्या ?"

"मैंने जो भी कहा तुमने सुन लिया है।"

"क्या ?" विलियम बिलकुल भौंचक्के रह गये "लेकिन हेराल्ड हेनरी क्रीड या आर्थर ब्राउन की तरह इनकी अभी भी शादी नहीं हुई है ! उस खासी महिला से उसने अभी भी शादी नहीं की है !"

डरथी ने कठोर स्वर में कहा, "नाजायज़ होने पर भी मैं दस्तख़त करूँगी।"

विलियम चिल्ला उठे, "नाजायज़ ! हरामी !!"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

आठ

ठक् ठक् ठक् !!

आधी रात को डरथी ब्राउन की नींद खुली। उफ़्, शायद फिर से ढोलकिया आये हैं ! पुलु ढोलकिया के रुपये ले जाने के बाद और कई ढोलकिया यहाँ आ चुके हैं। वे महखुलि, बोरका और डिमौ के लोग हैं। लगता है, उनकी पसलियों की हड्डियाँ शरीर की झीनी चमड़ी फाड़कर बाहर निकल आएँगी। उन्हें पैसे चाहिए। पैसा चाहिए ! ग़रीब लोग फ़िरंगियों को लगान नहीं दे पा रहे हैं। अब फ़िरंगी सिपाहियों ने उनके रसोई के बर्तनों को भी नहीं छोड़ा है। डरथी ने सुना था कि स्वयंसेवियों की कमर तोड़ने के लिए फ़िरंगी 'आसाम राइफल्स्' के सिपाहियों को पाल रहे हैं और उसके लिए उन्हें ज़्यादा पैसा चाहिए !

"तोड़ डालो इन ढोलकिया लोगों की ढोलकें ! ले आओ, छीन लाओ लगान नहीं भरनेवालों के लोटा-बर्तन !!"

ठक् ! ठक् ! ठक् !!

डरथी बिस्तर पर ही उठकर बैठ गयी। क्या दरवाज़ा खोलें ? लेकिन कौन हो सकता है ? छिपी हुई शान्ति-सेना–काँग्रेस के स्वयंसेवी या फिर सेवक-सम्प्रदाय का कोई हो सकता है ?

धम् ! धम् ! धम् !!

दरवाज़े पर जैसे कोई पत्थर फेंकने लगा। जले हुए कपड़े की एक अजीब बदबू डरथी ने महसूस की। शायद पास ही कोई विदेशी वस्त्रों को जला रहा है।

डरथी का दिल धड़कने लगा। क्या दरवाज़ा खोल देना चाहिए ?

धम् ! धम् ! धम् !!

"खोलो, खोलो दरवाज़ा !"

स्वयंसेवी और सेवक-सम्प्रदाय के लोग शायद उसका नुक़सान नहीं करेंगे।

धम् ! धम् ! धम् !!

ओह्, क्या कोई षड्यन्त्र हो रहा है ? गोरखा सिपाही हैं क्या बाहर ? डरथी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

ब्राउन ने ज़ोर से पुकारा— "चौकीदार ! चौकीदार !"

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं, आज कोई नहीं है। छिन्नमस्ता के संन्यासी सुबह ही तैरते हुए भस्माचल चले गये थे। रात को वे लौटे नहीं थे। जैसे भूकम्प के झटके आने लगे। द्वारभांगा-घर का पुराना दरवाज़ा उस झटके से काँपने लगा और दीवारों की मिट्टी झड़ने लगी।

धम् धम् धम् धड़ाम !! प्रचण्ड आवाज़ करता हुआ घर का दरवाज़ा टूटकर डरथी के बिस्तर के पास जा गिरा और साथ ही, कुछ लोग तेज़ी से अन्दर घुस आये। उन्होंने अन्दर के सामान और मेज़-कुर्सी को अस्त-व्यस्त कर डाला। मेज़ पर रखे कपड़े, बिस्तर की चादर, लटकाकर रखा हुआ उसका गाउन—सब कुछ चारों तरफ़ बिखेर दिया उन लोगों ने।

एक ही पल में दो हट्टे-कट्टे आदमी डरथी के शरीर पर कूद पड़े। शरीर की चमड़ी उधेड़ने की तरह वे उसके कपड़े फाड़ने लगे। उसके स्तन उघर गये। यह क्या हो रहा है ? क्या हो रहा है ? उसके गुप्त अंग को निशाना बनाकर मांस का बना एक भाला नीचे उतर रहा है ! भाला—भाला ! एक प्रचण्ड चीख़ से काँप उठा पूरा द्वारभांगा-घर। डरथी को जैसे कोई दुर्दम ईश्वरीय शक्ति हासिल हो गयी थी कि एक ही झटके में उसने अपने ऊपर चढ़ने की कोशिश करनेवाले आदमियों को उछाल फेंका।

मुट्ठी में मांस के टुकड़े लिये डरथी अधनंगे रूप में पुलिस को मिली।

कहाँ से मिली उसे यह शक्ति ? कहाँ से मिली ? आश्चर्य से अभिभूत डरथी आँखें फाड़कर सिपाहियों को देखने लगी।

चैरिटी अस्पताल के आसपास बहुत से लोग जमा हो गये थे। कॉटन कॉलेज के छात्रों का दल है। कचहरी में आनेवाले लोग, मालीपारा के मन्दिर में काम करनेवाले 'आठपरिया'[1] परिवार के लोग, यहाँ तक कि विधि पाठक और 'होता'[2] परिवार के लोग भी अस्पताल के लोहेवाले गेट के पास खड़े हो गये। अस्पताल से डरथी ब्राउन सीधे थाने जाएगी अपराधियों की पहचान के लिए। यह बात चारों तरफ़ फैल गयी थी।

भीड़ में से किसी ने कहा, "यह काम नीलाचल की गुफा में छिपे स्वयंसेवी या सेवक-सम्प्रदाय के लोग हरगिज़ नहीं कर सकते।"

"नहीं, नहीं—कभी नहीं कर सकते।"

"क्या उस औरत का धर्म नष्ट हो गया ?"

---

1. मन्दिर में आठ पहर तक काम करनेवाले लोग।
2. यज्ञकर्ता।

Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

"नहीं, नहीं धर्म नष्ट नहीं हो सका। सुना है, उसके शरीर में माँ दुर्गा की शक्ति आ गयी थी। सभी आदमियों को खदेड़ दिया था उसने।"

"हाँ, हाँ, जानते हैं हम लोग। छिन्नमस्ता के आदमी ने उसे मन्त्र सिखाया था। उसे तो आग भी नहीं जला सकती और पानी भी नहीं डुबा सकता। सुना नहीं, आजकल वह आदमी हर समय चिल्लाता है—माँ तुम रक्तवस्त्र उतार दो—रक्तवस्त्र खोल डालो, माँ, माँ... ।"

मालीपारा के मन्दिर में काम करनेवाले बौने ने कहा, "द्वारभांगा-घर के आसपास घूमते जानवरों से बचने के लिए भी मिट्टी का टुकड़ा आठ अक्षरवाले मन्त्र से झाड़-फूँक दिया था।"

बौने के साथ आये दुबले-पतले, सींक-से लड़के ने कहा, "शेर पकड़नेवाला एक मन्त्र मैंने भी छिन्नमस्ता के जटाधारी से सीखा था। मिट्टी के टुकड़े में आठ बार मन्त्र डालकर फेंकना पड़ता है। बौने के पास जाकर उसने फुसफुसाकर मन्त्र पढ़कर सुनाया—"ओम् थ्रींग थ्रींग ह्रींग श्रींग ह्रोंग ह्रोंग हिंग !"

इस बार बौने ने कहा, "कॉटन कॉलेज का एक छात्र दखला के तरफ़ की एक लड़की को वश में करने के लिए मन्त्र सीखने छिन्नमस्ता के संन्यासी के पास आया था। जटाधारी ने कहा कि वे वैसा काम नहीं करते। फिर वह छात्र गौड़ की तरफ़ से आये दूसरे तान्त्रिक के पास गया था। छात्र ने तान्त्रिक को रानी की मोहरवाला रुपया भी दिया था—'काम रत्न-तन्त्र' पढ़कर तान्त्रिक ने उसे चामुण्डा का मन्त्र दिया था—

"ओम् भगवते रुद्राय चामुण्डाय नयनतारा मे वशमानय स्वाहा !"

दुबले-पतले लड़के ने पूछा, "नयनतारा कौन थी ?"

"वह दखला के तरफ़ की लड़की थी।"

"हाँ, हाँ, जानते हो, 'काऊरीठूटीया' लता और कई पौधों की जड़ें, अपना वीर्य और रक्त—सबको एक साथ पीसकर गोली बनानी पड़ती है। फिर एक-सौ-आठ बार चामुण्डा मन्त्र पढ़कर वह गोली किसी भी लड़की को खिलाने पर वह वश में हो जाती है। फिर वह लड़की वश में करनेवाले आदमी के मरने पर भी श्मशान में जा-जाकर रोएगी।"

"मरने के बाद भी—श्मशान में जाकर रोएगी ?"

वहाँ पर बैठे सभी जवान लड़के दाँत निकालकर हँसने लगे। बौने ने कहा, " 'कामरत्न-तन्त्र' से ही मन्त्र सिखाया था।"

सींक-से लड़के ने कहा, "डरथी फ़िरंगी भी शायद ऐसे ही किसी मन्त्र से फँस गयी है।"

इन सबके पास खड़े जटाधारी के एक शिष्य ने हुंकार भरते हुए कहा, "चुप

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

रहो, चुप रहो तुम लोग !" फिर वह चीख़ उठी, "माँ छिन्नमस्ता, माँ, तुम रक्तवस्त्र अब खोल दो माँ !"

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसके साथ सुर मिलाकर दूर खड़े कई शिष्य भी उसी बात को दोहराने लगे–माँ, माँ, तुम रक्तवस्त्र खोल दो !"

वहाँ खड़े कॉटन कॉलेज के कुछ छात्र आपस में बातचीत कर रहे थे–"वह औरत इतने दिनों से क्या खाती थी ? उसे मांस का भोग मिला था शायद !"

"हाँ, ज़रूर मिला होगा, मन्दिर में पूजा करनेवाले किसी पण्डे ने ज़रूर अपने हिस्से का भोग उसे पहुँचाया होगा। जो भी हो–मांस-मछली खानेवाली जात के लोग हैं–दुनिया जीतनेवाले लोग हैं–ऐसे देश के हैं जहाँ सूर्य कभी नहीं डूबता !!"

भीड़ में मज़ा लेनेवालों में से एक अधेड़ उम्र के कूबड़वाले आदमी ने लगभग चिल्लाकर कहा, "नहीं, नहीं, मैं मेमसाहब के लिए पानी लेकर ऊपर गया था। चौकीदार मेमसाहब के लिए खाना लगा रहा था। चौकीदार ने कहा कि मेमसाहब मांस-मछली नहीं खातीं। सिर्फ़ फल और कन्दमूल खाती हैं। चौकीदार पहाड़ी के नीचे रोज़ फल लेने आता है। असम के फलों का स्वाद अलग ही है–काला जामुन, सफ़ेद जामुन, अंजीर, डूमर, पके बकुल और पके कटहल भी मेमसाहब पसन्द करती हैं। मांस का प्रसाद कभी नहीं लेतीं। सुगन्धित 'खरिकाजहा' चावल और बकरे के मांस का भोजन उन्होंने वापस कर दिया था।"

खट्-खट् आवाज़ करता हुआ एक ताँगा वटवृक्ष के नीचे रुक गया। घोड़े के गले में लटकी हुई घण्टियाँ टन्-टन् करती बज उठीं। ताँगे से लगभग कूदकर हेनरी ब्राउन उतरे। उनके साथ छात्रों का एक झुण्ड भी उतरा। साहब ने ख़ाकी हाफ़पैण्ट और फेल्ट हैट पहना था। वे जूते से खट्-खट् आवाज़ करते हुए अस्पताल की तरफ़ जाने लगे।

पेड़ के नीचे खड़े दो-चार लोगों के बीच खुसुर-फुसुर होने लगी–"हाय, हाय, साहब ने अब भी इस औरत का मोह नहीं छोड़ा है।"

दूसरे ने कहा, "पता नहीं, पता नहीं कैसे माँ नरसिंही, माँ उग्रचण्डी, माँ सर्वभूतदमनी, माँ बलप्रमथिनी ने इस नाज़ुक औरत के शरीर में उस दिन पागल हाथी के समान शक्ति दी थी।" एक और आदमी ने उत्साहित होकर कहा, "मैंने सुना है, सुना है कि बलात्कार के लिए आगे बढ़नेवाले एक आदमी के गाल का थोड़ा-सा मांस उस औरत ने नोंच लिया था। अब पहचान में कोई परेशानी नहीं होगी। कोई मुश्किल नहीं होगी। माँ उग्रचण्डी ने उनकी सहायता की है।"

सब लोग एक साथ बोल उठे, "माँ उग्रचण्डी ! माँ छिन्नमस्ता, माँ !"

भीड़ में जगह बनाते हेनरी ब्राउन आगे बढ़े। सुबह से पेड़ के नीचे खड़े होकर इन्तज़ार करते जहाज़-कम्पनी के दो और साहब हेनरी के साथ हो लिये। सबने सिर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri
में फेल्ट हैट और हाफ़पैण्ट पहनी हुई थी।

लाठी थामे एक चौकीदार ने कोहराम मचा रहे लोगों को दूर हटने का आदेश दिया। पहचान के लिए डरथी का थाने में जाने का समय हो गया है। थाने के आसपास भी लोगों की भीड़ बढ़ गयी है। चारों तरफ़ सिपाही टहल रहे हैं।

डरथी ब्राउन बाहर निकल आयी। उसके बाल खुले हुए थे। वह एक छोटा स्कर्ट पहने हुई थी। उसके हाथ में पट्टी बँधी थी। उसके साथ दोस्त विलियम और दो-चार सज्जन भी बाहर निकल आये। बाहर रुके हुए ताँगों की तरफ़ वे तेज़ी से बढ़ने लगे। सभी ने देखा कि हेनरी डरथी का हाथ पकड़ना चाहते थे लेकिन डरथी ऐसा नहीं चाहती थी। एक हाथ से अपना स्कर्ट पकड़ती हुई वह ताँगे की तरफ़ बढ़ गयी।

चारों तरफ़ निस्तब्धता थी। डरथी को इस समय देखकर ऐसा नहीं लग रहा था कि वह एक भयानक आक्रमण का सामना करके आयी है। साहबों के पीछे-पीछे आये रत्नधर की तरफ़ डरथी ने घूमकर देखा। उसे हाथ से इशारा करके उसने पास बुलाया। रत्नधर ने अपनी धोती घुटनों तक सँभाली और तेज़ी से आकर डरथी के पास खड़ा हो गया। डरथी ने धीमी आवाज़ में रत्नधर से कहा, ''रत्नधर, तुम मेरे पास रहना। पहचान के समय मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत होगी।''

हेनरी साहब ने आँखें तरेरकर रत्नधर को देखा। डरथी ने और किसी से बात नहीं की।

दोस्त विलियम और रत्नधर के साथ डरथी ताँगे में चढ़ गयी। रत्नधर गाड़ीवान के साथ सामने बैठ गया। हेनरी ब्राऊन ने सोचा था कि डरथी उनके साथ ताँगे में चढ़ेगी। लेकिन वैसा नहीं हुआ। खट्-खट् आवाज़ के साथ ताँगे थाने की ओर बढ़ने लगे।

थाने के आसपास मज़ा लेने आनेवाले लोगों को तब तक वहाँ से खदेड़ दिया गया था। फिर भी थाने के आँगन में लगे आम और बरगद के पेड़ पर बन्दर की तरह एक झुण्ड आदमी लटकने लगे। इससे पहले कभी भी इस तरह गोरी मेमसाहब अपराधी की पहचान के लिए थाने में नहीं आयी थी। ताँगे थाने के सामने रुके। विलियम पहले उतर गया। गाड़ीवान के साथ बैठा हुआ रत्नधर भी कूदता हुआ नीचे उतरा। हेनरी साहब दौड़ते हुए आये और फिर से डरथी का हाथ पकड़ना चाहा। लेकिन डरथी पीछे हट गयी। वह अपने दोस्त विलियम के साथ आगे बढ़ी।

थाने के अन्दर एक लम्बा-चौड़ा कमरा था। कमरे के एक तरफ़ कपड़े का एक बड़ा-सा पंखा लटक रहा था और एक दुबला-पतला लड़का रस्सी से बँधे उस पंखे को खींच रहा था। वे इस कमरे के बीच में से दूसरे कमरे में जा रहे थे। रत्नधर ने पंखा खींचनेवाले उस लड़के को पहचान लिया। कुछ दिनों पहले वह मन्दिर में पण्डों के लिए पानी ढोने का काम करता था।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

अन्दरवाले कमरे की तरफ़ वे जाने लगे। तभी दरवाज़े पर खड़े सिपाही ने
CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
विलियम और रत्नधर को बाहर रुकने के लिए कहा। अन्दर से किसी साहब की आवाज़ आयी–"सिर्फ़ उनके पति साथ में अन्दर आ सकते हैं।"

बाहर से किसी ने आवाज़ दी, "वे अब पति के साथ नहीं रहतीं।"

दरवाज़े के पास खड़ा हेनरी ब्राउन गरज़ उठा, "यह सब बकवास है। हम लोग अलग नहीं हुए हैं।"

अब सभी को चौंकाती हुई डरथी ब्राउन बोली–"यह सच नहीं है। हम लोग सब साथ नहीं रहते। मेरे दोस्त विलियम और रत्नधर मेरे साथ अन्दर आएँगे।"

अन्दर से फिर आवाज़ आयी–"दोस्तों को साथ आने नहीं दिया जा सकता।"

डरथी ने कहा, "ठीक है, मैं अकेली ही आऊँगी। मैं खुद उन अपराधियों को पहचानूँगी। एक का मांस अभी तक मेरे नाख़ून में चिपका है ! वे कहाँ छुप सकते हैं ?"

थाने के अन्दरवाले कमरे में यूनिफ़ॉर्म पहने हुए कई अधिकारी बैठे थे। लगभग सभी अधिकारियों से डरथी पहले गिरजाघर में मिल चुकी थी। इधर-उधर दौड़-भाग करते एक व्यस्त अधिकारी के बारे में डरथी ने अनुमान लगाया कि वह ज़रूर पुलिस इन्स्पैक्टर होगा। उसकी मूँछें लम्बी थीं।

डरथी को देखकर सारे अधिकारी खड़े हो गये। सिर की टोपियाँ उतारकर उन्होंने बग़ल में दबा लीं। इन्स्पेक्टर ने लकड़ी की कुर्सी की ओर इशारा करके डरथी को बैठने के लिए कहा। यह कुर्सी दूसरे कमरे के दरवाज़े के बिलकुल पास डरथी के लिए ही रखी गयी थी। पहचान के लिए लाये गये अभियुक्तों को शायद इसी दरवाज़े से बाहर निकाला जाएगा।

डरथी आगे बढ़कर कुर्सी पर बैठ गयी। एक अधिकारी पानी के ग्लास की ट्रे लेकर सबके सामने से गुज़रा। कुछ ने पानी लिया, कुछ ने नहीं लिया।

गिरजाघर में अकसर मिलनेवाले लम्बे-चौड़े ब्रिटिश अधिकारी ने डरथी से पूछा, "मैडम, क्या आप अकेली सँभाल पाएँगी ? आप सहायता के लिए हेनरी को बुला लेंगी तो शायद बेहतर होगा।"

डरथी ने अपना चेहरा ऊपर उठाया और कहा, "इसकी ज़रूरत नहीं होगी। मैं अकेली ही सँभाल लूँगी।"

डरथी ब्राउन समझ गयी थी कि गुवाहाटी शहर में इस तरह पुलिस थाने में आनेवाली वही पहली ब्रिटिश महिला है। डरथी समझ गयी कि वह एक सभ्य और शक्तिशाली जाति के अहंकार को नज़रअन्दाज़ करनेवाली अकेली महिला भी है।

कपड़े का बड़ा-सा पंखा खींचनेवाला लड़का खाँसने लगा। थोड़ी ही देर में घण्टी बज उठी। पुलिस इन्स्पैक्टर फिर से डरथी के पास आकर कहने लगा, "अब एक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

के बाद एक अभियुक्त इस जगह पर खड़ा होकर आपकी तरफ़ देखेगा, फिर सामनेवाले दरवाज़े से बाहर निकल जाएगा। किसी को पहचानने पर आप 'यही अपराधी है' कहकर खड़ी हो जाएँगी।"

एक साथ अनेक लोगों के चेहरे डरथी को याद आये। सब धुँधले-से हैं। क्या वह पहचान पाएगी ? उस समय वे सिर्फ़ छायाओं की तरह दिख रहे थे। डरथी की आँखें भी ठीक तरह से खुली नहीं थीं। नहीं, कुछ भी याद नहीं है।

लेकिन वह आदमी ? जिसके गाल से ख़ून भरा मांस उसके नाख़ून में फँसकर रह गया था ? कैसे बचेगा वह ? हाँ, कैसे बच सकता है वह ?

कपड़े के पंखे से हवा आ रही थी लेकिन बीच-बीच में वह लड़का रस्सी खींचना छोड़कर गोरे साहबों के रंग-रूप देखने लगता था। सब लोग जब रुके हुए पंखे की तरफ़ देखते, तभी उसे होश आता और फिर से पंखा खींचने लगता।

फिर से घण्टी बजी। सिपाहियों के जूतों की आवाज़ सुनाई दी। सब लोग अपनी-अपनी कुर्सी पर सजग होकर बैठ गये। दरवाज़े के पास एक सिपाही आकर खड़ा हो गया। थोड़ी देर में दौड़ता हुआ एक किशोर अन्दर आया। उसके बाल लम्बे और आँखें लाल थीं। उसने घुटनों तक धोती और बदन में एक मैली बनियान पहन रखी थी। डरथी ने खड़े होकर लड़के को देखा—नहीं, उस रात गिरते समय ज़रूर उसके लम्बे बालों में डरथी का हाथ आ जाता।

डरथी नहीं पहचान पायी। थोड़ी देर खड़े रहने के बाद वह खुले दरवाज़े से बाहर निकल गया। उसके बाद एक लम्बा और हड्डियों का ढाँचा जैसा आदमी आया। उसके सिर में पतले बाल थे, आँखें छोटी-छोटी और तोते की चोंच जैसे होंठ थे। इस आदमी ने भी मैली धोती के साथ ढीली और फटी बनियान पहन रखी थी। डरथी की तरफ़ देखकर वह बिलख-बिलखकर रोने लगा, "आई, मैं ऐसा काण्ड क्यों करूँगा, गुरुकुल के छात्रों के लिए खाना बनाता हूँ, इसलिए सुबह जल्दी उठकर लकड़ियाँ ढूँढ़ने निकलता हूँ।" वह ज़ार-ज़ार रोने लगा। दो सिपाही उसे घसीटते हुए बाहर निकाल ले गये।

डरथी ब्राउन चीख पड़ी, "तुम लोग निर्दोष लोगों को यहाँ क्यों पकड़ लाये हो ? असली अपराधी कहाँ हैं ? मैं उन लोगों को पहचान लूँगी। मैंने उनमें से एक का मांस नोंचा था, मैं उसे अच्छी तरह से पहचान सकती हूँ।"

इसके बाद एक छोटे क़द का आदमी आया। वह अधेड़ उम्र का था। उसके बाल छोटे थे। चेहरा गोल था और भौंहें आपस में जुड़ी हुई थीं। डरथी ब्राउन की आँखों में आँखें डालकर वह बोल उठा, "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ! जननी जन्मभूमिश्च ! आई, हम लोग माता के समान देश के लिए काम करते हैं। हम पर आप जैसी 'आई' माता के शरीर को हाथ लगाने का इलज़ाम क्यों लगाया

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
गया है, क्यों हमें ऐसे इलज़ाम में पकड़ा गया है ?"

किसी की मदद के बिना ही वह दरवाज़े तक बढ़ गया। "आश्चर्य ! आश्चर्य !" डरथी चिल्ला पड़ी। इसके बाद लम्बी मूँछवाले पुलिस अधिकारी से कहने लगी, "ये किन लोगों को पकड़ लायें हो तुम लोग ? मैं इन्हें नहीं पहचानती। आश्चर्य है ! ये लोग कौन हैं ?"

पुलिस अधिकारी ने व्यस्त स्वर में हड़बड़ाते हुए कहा, "और हैं...और लोग हैं।"

इस बार जिस आदमी को डरथी के सामने लाया गया, उसे देखकर उनका चेहरा शर्म से झुक गया। वह था पुलु ढोलकिया। आँसू पोंछता हुआ वह डरथी की तरफ़ देखकर टूटी आवाज़ से बोलने लगा, "आई, मैं मदद माँगने के लिए आपके पास आया था। आपकी मदद से ही एक महीने से जिन्दा हूँ।"

डरथी ब्राउन गुस्से से खड़ी हो गयी। पुलिस अधिकारी की तरफ़ देखकर वह चीख़ उठी—"इसे घर जाने दो। इसका लड़का मर रहा है। यह सब क्या हो रहा है ? अद्‌भुत है ! मैंने जो सुना था वही सही है। यहाँ ग़रीब गाँववालों को भी अपना हिस्सा दरोगा को ख़ुश रखने के लिए देना पड़ता है !"

बैठे हुए सभी लोग बेचैन हो उठे। दरोगा व्यस्तता दिखाते हुए कहने लगा, "और लोग अभी बाक़ी हैं। और हैं।"

डरथी ने कहा, "मैं उसके गाल का मांस नोच लायी हूँ। लाओ, उसे मेरे सामने हाज़िर करो।"

कपड़े का पंखा लगातार खींचे जाने पर भी डरथी पसीने से बिलकुल भीग गयी। मधुमक्खी के छत्ते की तरह ताँबे के रंगवाले उसके बाल भीगकर गले में गोंद जैसे चिपक गये। बार-बार वह बैग से रूमाल निकालकर चेहरा पोंछने लगी।

कमरे के अन्दर हल्ला होने लगा। एक-एक करके बीस आदमी डरथी के सामने से निकल गये। आश्चर्यचकित डरथी खड़ी हो गयी। तेज़ी से बाहर निकलकर वह इन्तज़ार कर रहे रत्नधर और विलियम के पास पहुँच गयी। कोई उसे रोकने की हिम्मत नहीं कर पाया।

क्षोभ से डरथी का पूरा शरीर थर-थर काँपने लगा। उसके बाहर निकलते ही अलग-अलग मामलों के अधिकारी और उसके इन्तज़ार में खड़े दो-चार फुर्तीले गोरे साहबों ने उसे घेर लिया। जहाज़-कम्पनी में काम करनेवाला नाटा शरीर और मज़ाक़िया स्वभाव का हापकिंस साहब सिगार का कश लेता हुआ आगे बढ़ा और डरथी के सामने खड़े होकर कहने लगा, "तुम्हारे लिए हेनरी इन्तज़ार कर रहे हैं। उनके साथ अपने घर जाओ। क्या मैं उन्हें यहाँ बुला दूँ ?"

डरथी ने एक भयानक दृष्टि से हापकिंस की तरफ़ देखा। हापकिंस के चेहरे

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का कुकुरमुत्ते जैसा [illegible] स्वाहा हो गया। विलियम ने अपने सुनहरे बालों में हाथ फेरते हुए कहा, "फिर तुमने क्या फ़ैसला किया डरथी ! अब तुम कहाँ जाओगी ? डरथी, हम सब तुम्हारी मदद करने के लिए तैयार हैं।"

डरथी ने नीलाचल पहाड़ की तरफ़ देखकर कहा, "मैं अपने पुराने घर में लौट जाऊँगी।"

विलियम चीख़ उठे, "फिर से उसी गुफा में ? ओह् डरथी, तुम फिर से सोच लो। अभी तक उस घर की मरम्मत भी नहीं हुई है।"

डरथी तेज़ क़दमों से चलकर ताँगे के पास पहुँची। रत्नधर ताँगे में बैठा था। उसके हाथ का सहारा लेकर डरथी ब्राउन ताँगे में चढ़ गयी। विलियम भी उसके पास बैठ गये। वे बहुत उदास दिख रहे थे।

विलियम ने कहा, "मैं सब-कुछ ठीक कर दूँगा। तुम अपने पास बन्दूक़ रखना। मेरे पास 465 बोर एच ऐण्ड एच रॉयल दुनाली बन्दूक़ है। मेरे दोस्त स्मिथ ने कर्नल ग्रेगरी की 240 बोर एपेक्स बन्दूक़ अपने पास रखी है। ग्रेगरी को शिकार के रास्ते पर भैंसे ने मारा था और उनकी मृत्यु हो गयी थी। स्मिथ के घर में भी एक बन्दूक़ मैंने देखी है। अब से तुम्हारे पास भी अस्त्र रहेगा।"

डरथी ने विलियम की बातों पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया, बल्कि सबको आश्चर्य में डालती हुई कहने लगी, "इस बीभत्स कार्य को किसने करवाया, क्या तुम लोग जानते हो ?"

"किसने करवाया ?"

"हेनरी ने।"

विलियम चीख़ पड़ा, "तुम्हारे पति हेनरी ब्राउन ने ?"

"नहीं, नहीं, अब उन्हें मेरा पति मत कहना—मैंने अपना रास्ता ढूँढ़ लिया है !"

खट्-खट् आवाज़ करता ताँगा कामाख्या की तरफ़ बढ़ने लगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

नौ

कोहरे के बीच से आती हुई एक बड़ी-सी 'मारनाव'[1] धीरे-धीरे साफ़-साफ़ दिखने लगी। बाहर तब भी अच्छी तरह से सुबह नहीं हुई थी। नदी के घाट पर छिन्नमस्ता के जटाधारी, उनके कई शिष्य और डरथी ब्राउन नाव में चढ़ने के लिए इन्तज़ार कर रहे थे। इस समय डरथी का यहाँ रहना उचित नहीं होगा। उसके साथ बलात्कार करने की साज़िश हो चुकी थी। आजकल मन्दिर के आसपास ख़ूँख़ार लोग घूम रहे हैं। गुरुकुल के छात्रों ने बन्दूक़ छुपानेवाली जगहों की खोज की है। वे साँप की चमड़ी जैसी चमकती बन्दूक़ की बैरल देख चुके हैं। हाँ, कुछ दिनों के लिए डरथी का इस जगह पर न रहना ही उचित होगा। उसके साथ बलात्कार की साज़िश हो चुकी है। बलात्कार...

चप्पू की छप्-छप् आवाज़ के साथ नाव घाट से लग गयी और जटाधारी के शिष्य तुरन्त नाव में सामान चढ़ाने लगे। जटाधारी की पोटलियों में अनेक प्रकार का सामान था। शंख, घोंघे के खोल का चूर्ण, शहद, जयन्ती फूल, गोरोचना[2], अपराजिता फूल समेत अनेक पेड़-पौधों की जड़ें, भेह और भातघिला पेड़ों की डालियाँ, रुद्राक्ष, डूमर और अनेक अनजान पेड़ों की छालों से जटाधारी की पोटलियाँ भरी हुई थीं।

जटाधारी ने कल्-कल् आवाज़ के साथ बहती ब्रह्मपुत्र की तरफ़ और फिर पूरे नीलाचल के पेड़-पौधों पर नज़र घुमाकर देखा। बुलबुल का एक झुण्ड पासवाले आम के पेड़ पर बैठकर चहचहा रहा था। उनकी नाक के पास से एक चमगादड़ उड़ गया। सूर्योदय से पहले ही उन्हें चल देना होगा।

उन्होंने अपने गन्तव्यस्थल के बारे में अभी तक किसी को भी सूचित नहीं किया है, पर सब लोग जान गये हैं कि वे बलिविधान बन्द करने के उद्देश्य से जनमत जुटाने के लिए जा रहे हैं। थोड़ा-सा झुककर उन्होंने निरीक्षण किया कि डरथी ठीक

1. एक साथ बँधी हुई दो नावें।
2. एक सुगन्धित पदार्थ जिसकी उत्पत्ति गाय के पित्त से मानी जाती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
से बैठी है या नहीं। डरथी नाव के आख़िरी छोर पर सिकुड़कर बैठी थी। उसके हाथ में एक फूलदार छतरी थी। उसने छतरी खोली नहीं थी। नाव में टप्पर लगा हुआ था लेकिन वह टप्पर के नीचे नहीं बैठी थी। कुछ भक्त उसके सामान को क़ायदे से रखने में व्यस्त थे।

चहचहाती हुई चिड़ियों, हुक्-हुक् आवाज़ करते बन्दरों के झुण्डों और धीरे-धीरे रंगीन होनेवाले आकाश की तरफ़ नज़रें घुमाकर जटाधारी ने रत्नधर से कहा, "एक महान आत्मा की ज्योति ने सभी की चेतना को जगाया है। उसके छोटे-छोटे अंश हर प्राणी की देह में समाये हुए हैं। उसकी ज्योति चारों तरफ़ फैली है। माँ ! माँ ! माँ ! माँ ! स्पर्श करके देखो, सब एक जैसा है, सब एक जैसा !"

रत्नधर की शक्ल रुआँसा हो गयी। वह युवा था लेकिन उसका व्यवहार बिलकुल बच्चों जैसा था। जटाधारी और डरथी के साथ उसका आत्मीय सम्बन्ध हो गया था और इसलिए उनसे अलग होने की बात उसके लिए पीड़ाकारक बन गयी थी। जटाधारी बार-बार एक ही बात दोहरा रहे थे। रत्नधर को इसी बात की याद दिला रहे थे—"जीवन विच्छेदों की एक यात्रा है। यह विच्छेद बहुत ही निर्दयी है। मृत्यु के बारे में कभी मत भूलो। तभी इन्सान बनकर जीवन व्यतीत कर पाओगे।"

जटाधारी ने रत्नधर को अपने सीने से लगा लिया। कहने लगे, "सुनो रत्नधर, हम लोग मालेगढ़ और चक्रशिला में कुछ दिन रहेंगे। फिर आगे बढ़ जाएँगे। 'देवध्वनि' उत्सव के पहले वापस लौट आएँगे।"

अचानक नाव से उतरकर डरथी ने कहा, "रत्नधर, मैंने वसीयत की सारी ज़िम्मेदारी विलियम को दे दी है। काम की प्रगति के बारे में तुम उनसे पूछते रहना ताकि वापस आकर मैं उसमें दस्तख़त कर सकूँ। ज़रूरत होगी तो मैं पहाड़ी के नीचे भी चल सकती हूँ।"

जटाधारी ने रत्नधर के कान में बहुत ज़रूरी दो बातें कहीं, "श्मशान में गुरुकुल के छात्रों की बैठक होने की सम्भावना है, वहाँ वे अपना कार्यक्रम बनाएँगे। पश्चिमी दिशा के इस भैरव श्मशान में लोग इकट्ठा हों तो अच्छा रहेगा। श्मशान के दक्षिण में खुदाई करने पर देवी को चढ़ाये गये आदमी के सिर का अवशेष ज़रूर मिल जाएगा। श्मशान के पश्चिम में खोदने पर नरबलि के ख़ून का दाग़ तक मिल सकता है।

"तुम नदी के उत्तर और दक्षिण किनारे पर बसे उन चालीस यजमान-परिवारों से हर घर में ज़रूर मिलना। ये चालीस यजमान-परिवार हर साल बलि में भैंसा चढ़ाने कामाख्या आते हैं। तुम छत्राकारवाले गुरुकुल के छात्रों समेत जाकर उनसे मिल सकते हो। उनसे पूछना कि क्या बलि चढ़ाकर उनकी मनोकामनाएँ पूरी हुई हैं ? क्या अपने जीवन को सुरक्षित करने के लिए दूसरों का जीवन लेकर उनको शान्ति मिली है ?"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

रत्नधर ने कहा, "प्रभु, मुझे बहुत सारी बातें याद हैं। दो-दो बार वार करके भैंसे का गला काटनेवाला हलधर बधिक ? तीन साल पहले क्षयरोग से ग्रस्त शेखदारी के महाजन ने स्वस्थ होने के लिए पाँच भैंसे बलि चढ़ाये थे। लेकिन वह तो छह महीना भी ज़िन्दा नहीं रहा। और हलधर ?...उसे न जाने किसने मारा ! प्रभु, प्रभु मैं बहुत सारी बातें उन यजमानों के घर जाकर कहूँगा। कल मैंने सपना देखा था, देवी माता सपने में प्रकट हुई थीं। मैंने माँ के शरीर की खुशबू और फूलों की खुशबू महसूस की थी। मैंने रात की रानी, बकुल, गेंदा, गन्धराज और नीबू के फूलों की खुशबू महसूस की थी।"

जटाधारी बड़ी-बड़ी आँखों से कुछ देर तक रत्नधर को देखते रहे। फिर कहने लगे, "रत्नधर, तुम चित्र बनाना। तुम श्मशान के आसपास के इलाक़े पर नज़र रखना। सभी लोगों से कहना कि 'देवध्वनि' उत्सव से पहले ही हम लोग लौट आएँगे।"

रुपयों का एक थैला रत्नधर की तरफ़ बढ़ाकर बोले, "डरथी के घर का दरवाज़ा टूटा पड़ा है—याद है न ! गरैमारी का बढ़ई उसकी मरम्मत कर देगा। मैं उसे बताकर आया हूँ। रत्नधर, मन ख़राब मत करो, इस बार तुम द्वारभांगा-घर के बरामदे में बैठकर तस्वीरें बनाना। सुनो, तुम माँ के चित्र के अलावा दो चित्र और बनाना। 'मान'[1] के आक्रमण के समय माँ की मूर्ति को साथ लेकर आहोम राजा के साथ मन्दिर छोड़कर भागनेवाले पुजारी गंगाप्रसाद का चित्र बनाना। मान के आक्रमण के समय मन्दिर की स्थिति के बारे में भी चित्र बनाना। उस समय के बूढ़े पुरोहितगण की तस्वीरें बहुत सुन्दर होनी चाहिए। सुनो, याद रखना, मान-सैनिक देवी माँ के भक्त बनने लगे थे। और सुनो, चित्र बनाने से पहले एक बात याद कर लेना कि मान के सैनिकों के डर से पुजारी-कुल का गंगाप्रसाद देवी की मूर्ति को सीने में दबाकर भाग गया था लेकिन मान-सैनिकों ने मन्दिर तहस-नहस नहीं किया था। याद रखना और सभी बातें हृदयंगम करके ही चित्र बनाना। 'मान' के मन्त्री माहा ने तीन साल तक असम का राजपाट सँभाला था। उस समय आहोम राजाओं द्वारा निर्धारित मन्दिर की दुर्गा-पूजा की राशि मान राजा ने और बढ़ा दी थी। नीलाचल में मटरगश्ती करनेवाले मान-सैनिक मन्दिर में कभी नहीं घुसे थे। हाँ, एक चित्र और बनाना। महाराज रुद्रसिंह के मन्दिर में आगमन के समय किस तरह बलि के रक्त से वधस्थल डूब गया था—तुम अपने कैनवास में इस दृश्य का आकार अवश्य देना।"

बतख़ों का एक झुण्ड पानी में तैरता हुआ किनारे आया और रेत पर मँडराने लगा। वे कॉक्-कॉक् आवाज़ से कोहराम मचाने लगे।

---

1. ब्रह्मदेश से आये हुए लोग।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकाश की तरफ़ हाथ उठाकर जटाधारी देवी माँ को सम्बोधित करके पुकार उठे। सुबह के भुरभुरे अँधेरे-उजाले की रोशनी में जटाधारी के शरीर का रंग घिसकर चमकाये गये ताम्रपत्र की तरह लग रहा था। उनके शक्तिशाली और मज़बूत शरीर को रत्नधर मुग्ध होकर देखता रहा। उसने फिर से पूछा, ''आप कब लौटेंगे ? मैं तब तक रुद्रसिंह के कामाख्या-आगमन के समय लहूलुहान वधस्थल और मन्दिर की तस्वीर बनाकर रख लूँगा। आप लौटकर उसे देख सकेंगे।''

रत्नधर के पास जाकर जटाधारी ने उसके सिर पर हाथ रखा और आशीर्वाद दिया। फिर कहने लगे, ''मैं देवध्वनि उत्सव पर लौट आऊँगा।'' फिर वे नाव में चढ़ गये।

चप्पुओं की छप्-छप् आवाज़ धीमी होने तक रत्नधर उसी जगह पर खड़ा रहा। नाव के पिछले छोर पर खड़ी होकर डरथी ब्राउन किनारे पर खड़े लोगों को एकटक देखती रही।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दस

सुबह से ही बारिश हो रही थी। सिर्फ़ आज ही नहीं, पिछले एक हफ़्ते से लगातार बारिश हो रही है।

इस समय देवी रजस्वला अवस्था में है। मन्दिर के कपाट बन्द रखे गये हैं। तीन-चार दिनों के लिए रक्तवर्ण के वस्त्र से देवी का गुप्तांग ढँककर रखा गया है। वधस्थल का बलि का ख़ून बरसात में बह गया है।

होता, विधि पाठक और अन्य परिवारों में यजमानों के नाम-पतेवाले पुराने खाते खोले गये हैं। देवी के रक्त-वस्त्र के टुकड़े जिन यजमानों को भेजे जाने हैं उनकी सूचियाँ बनायी जा रही हैं। पूरी, नदिया, दिनाजपुर, श्रीरामपुर, नेपाल, वाराणसी और यहाँ तक कि उत्तर-काशी तक के यजमानों के नाम-पतेवाले अनेक खाते अब पीले पड़ गये हैं। पन्ने भी फटने लगे हैं।

रत्नधर के पिता मनमोहन पुजारी भी आजकल देवी के रक्त-वस्त्र के टुकड़े भेजने की तैयारी में लगे हैं। उन्होंने अपने यजमानों के नाम-पतेवाले खाते और दवात-क़लम मेज़ पर रखे। पिछले साल इन्हीं दिनों रत्नधर ने उनकी सहायता की थी। लेकिन कुछ दिनों से उसका चाल-चलन सन्दिग्ध हो रहा है। कुछ समय तक नाम-पते लिखने के बाद मनमोहन जी उठे और सौभाग्यकुण्ड की तरफ़ जाने लगे। कई पण्डे तालाब की सीढ़ियों पर बैठे थे। मनमोहन पुजारी भी जाकर उनके पास बैठ गये। उत्सव नाम के पण्डे ने लगभग आक्रमण के लहज़े में पूछा, "तुमने रत्नधर को पूरी तरह से जटाधारी के हवाले कर दिया है न !"

मनमोहन ने कुछ क्रोधित होकर कहा, "ओफ्फो, कितने दिन रहेंगे जटाधारी इस देवीपीठ में ? देखा नहीं, कैसे हमारे लोग ग़ुस्से में दाँत पीसकर बातें करते हैं आजकल ? वैसे रत्नधर को पागलपन के जो दौरे पड़ते थे वे उन्हीं के इलाज से ठीक हुए हैं। अब अगर उनसे मिलना-जुलना बिलकुल बन्द कर दूँ और उसे फिर से दौरे पड़ने लगें तो ? बलि देखकर पागल होनेवाले नलबाड़ी के चण्डी ढोलकिया के बेटे की हालत याद नहीं है क्या ? इलाज के लिए ब्रह्मपुत्र के उत्तर क़िनारे ले

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गये। किसी गृहस्थ परिवार ने उसे एक महीना रखा। सुना है इलाज के लिए गड्ढा खोदकर उसमें तीन-चार दिनों तक रखा था। पाँचवें दिन उस लड़के ने दम तोड़ दिया।''

''हे राम, बलि देखने जाते क्यों है ? अगर सहन नहीं कर सकते तो जाते क्यों हैं ?'' लाल धोती पहने एक पण्डे ने ज़ोर देकर कहा।

मनमोहन ने कहा, ''अब छिन्नमस्ता के संन्यासी के मन्त्र से रत्नधर ठीक हो गया है। आजकल वह चित्र बनाने में मशगूल है। मैं उनसे मिलने के लिए कैसे मना करूँ ?''

अब सब लोग चुप हो गये। थोड़ी देर बाद शम्भू पण्डे ने कहा, ''इतनी बड़ी घटना हुई। पर फिर भी फ़िरंगी लड़की वापस आ गयी। हम जानते थे किं उस संन्यासी ने पहले ही दिन लड़की को वश में कर लिया था। उसने ज़रूर 'चामुण्डा' और 'विश्वबशू' मन्त्रों का प्रयोग किया होगा।''

''चामुण्डा और विश्वबशू मन्त्र ?''

''हाँ, हाँ, सिर्फ़ चामुण्डा और-विश्वबशू मन्त्र की ही यह शक्ति है। अब बलिप्रथा बन्द करवाने के लिए नाव से जनमत-संग्रह का काम करने गये हैं। वह ज़रूर नरक में जाएगा। जगदम्बा महामाया की बलि बनकर उसे वधस्थल में सिर रखना पड़ेगा, ज़्यादा दिन नहीं हैं। वह दिन क़रीब आ रहा है।''

''क्या पता, क्या पता ! आजकल फ़िरंगियों का राज है। हमारा 'ब्रह्मा' वंश ख़त्म हो गया। आहोम राजाओं ने व्यवस्थापक का पद नहीं बनाया था क्या ? वह पद भी गोरे साहबों ने ख़त्म कर दिया था। सुना है इसके लिए उन्होंने लोग़ों से दस्तख़त संग्रह किये थे। इस बार भी दस्तख़त-संग्रह करना उनके लिए कौन-सी बड़ी बात है ?''

एक और पण्डा ने कहा, ''हम सब लोग जानते ही हैं कि आहोम राजाओं द्वारा बनाए गये व्यवस्थापक के पद के रहने से भण्डार के अन्दर और बाहर का काम कितने क़ायदे से चलता था। फ़िरंगियों द्वारा इसे ख़त्म कर देने के बाद किसका रौब बढ़ा है, यह भी सब जानते हैं। मनमोहन, तुम्हारे लड़के ने अच्छा काम नहीं किया। बलि का बकरा बाँधनेवाले छप्पर के आसपास लोगों ने उसे घूमते हुए देखा है। दो दिन पहले ही परमेश्वर पण्डा के ऊपरी असम से आये यजमान के भैंसे का पगहा किसी ने खोल दिया था।''

पास में बैठे पण्डे बोले, ''मिल गया था, जनार्दन मन्दिर के पास भैंसा मिल गया था।''

पानी ढोनेवाला एक लड़का पास ही खड़ा था। उसने कहा, ''लेकिन एक बार छूटे हुए भैंसे को यजमान ने देवी को चढ़ाना नहीं चाहा। अरे, बिलकुल माँ का दूध

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri
पीता हुआ बच्चा था। उन्होंने अच्छा ही किया, अच्छा ही हुआ।"

हलधर पण्डा हुंकार उठा, "ऐ बेशरम ! तू बिलकुल नरक में जाएगा। शास्त्र में लिखा है, हिरण के ख़ून से आठ महीने तक और कृष्णसार मृग और सुअर के ख़ून से बारह साल तक देवी तृप्त रहती है। कालिका-पुराण में स्पष्ट लिखा है–

कृष्णसारस्य रुधिरैः शूकरस्य च शोणितैः।
प्राप्नोति सततं देवी तृप्तिं द्वादश-वार्षिकीम् ॥"

और भैंसे के ख़ून से ? मनमोहन पुजारी खड़े हो गये। सब लोग रत्नधर को ही शक कर रहे हैं। सिर्फ़ होता, विधिपाठक वंश के लोग ही नहीं, बाक़ी लोग भी भड़के हुए हैं। हाँ, हाँ–बड़े पुरोहित के हिस्से के बकरे के दो भाग अब नहीं मिलने की आशंका में सब लोग छटपटा रहे हैं। अगर व्यवस्थापक का पद फ़िरंगी बन्द कर सकता है तो वे बलिप्रथा भी बन्द कर देंगे। हाँ, हाँ–यह उनके लिए मुश्किल बात नहीं होगी।

मनमोहन पुजारी तेज़ी से घर पहुँचे और सीधे रसोई में घुस गये। उनकी पत्नी विष्णुप्रिया और नदी के उत्तरी किनारे से आयी हुई लड़की देव सब्ज़ियाँ काट रही थीं। विष्णुप्रिया का पूरा जीवन यजमानों के लिए खाना बनाने में ही कट गया था। हर समय लकड़ीवाले चूल्हे के पास बैठने के कारण उनकी चमड़ी पर काली परत जम गयी थी।

मनमोहन पुजारी एक मोढ़ा खींचकर विष्णुप्रिया के पास बैठ गये। कहने लगे, "रत्नधर का क्या किया जाए अब ?"

"क्यों, अब तो वह बिगड़ता नहीं है ! जब उसे पागलपन का दौरा पड़ता था तब हम लोग उसके पास टिक ही नहीं सकते थे।"

मनमोहन ने कहा, "सभी कह रहे हैं कि बलि की रस्सी खोलनेवाला लड़का वही है।"

"हाय देवी दुर्गा ! माँ छिन्नमस्ता !! बलि की रस्सी खोलनेवाला लड़का रत्नधर है !" विष्णुप्रिया और उनकी नौकरानी ने मन्दिर की तरफ़ मुँह करके ज़मीन पर साष्टांग प्रणाम किया।

"अब क्या होगा ? प्राण-रक्षा होगी या नहीं ? जटाधारी फ़िरंगी लड़की के साथ जनमत तैयार करने के लिए गये हैं। देखा नहीं, इस साल अम्बूवासी मेले में कितने नये लोगों की शक्लें देवीपीठ में देखी गयी हैं ? वह सभी से दस्तख़त लेगा।"

"कैसे दस्तख़त ?" गोल-मटोल शरीरवाली विष्णुप्रिया का गोरा चेहरा तुरन्त पीला पड़ गया।

"बलि बन्द होनी चाहिए। बलि बन्द हो जानी चाहिए। इसी बात पर दस्तख़त

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
लेगा वह। व्यवस्थापक पद बन्द करनेवाली फ़िरंगी सरकार को बलि बन्द करने के लिए कितना वक़्त चाहिए ?''

''जब नरबलि बन्द कर दी है तो ये बलि भी बन्द कर देंगे। उनकी बन्दूक़-कमान के सामने इस दुनिया में कोई टिक सकता है भला ! उनके द्वारा लगाये गये लगान ने कितने ही लोगों की कमर तोड़ दी लेकिन किसी के मुँह से चूँ तक नहीं निकली। अब तो गाँधी महाराज भी दक्षिणेश्वर के मन्दिरों में खुद जाकर कह रहे हैं कि बलि बन्द हो जानी चाहिए।''

''हाय, हाय। मेरे बेटे को अब माँ छिन्नमस्ता शाप देकर भस्म कर देंगी।'' विष्णुप्रिया बिलख-बिलखकर रोने लगी। नौकरानी देव उनके पास जाना चाहती थी लेकिन वह पीछे हट गयी। उसकी मालकिन विधिपाठक ख़ानदान की बहू है। उन्हें वह स्पर्श नहीं कर सकती। अगर ग़लती से छू भी लिया तो उन्हें तुरन्त नहाकर आना पड़ेगा। मनमोहन पुजारी ने अपनी पत्नी के पास जाकर कहा, ''क्यों रोती हो ? क्यों रोती हो ? लड़के का पागलपन ठीक हो गया है, यही बहुत है।'' अचानक उन्हें एक बात याद आयी। कहने लगे, ''तुम लोगों का काम और बढ़ेगा। 'कोटिलिंग' के पास परशु पण्डा से मिला था। उसके बेटा पैदा हुआ है। इसलिए शुद्धि तक मन्दिर का काम नहीं कर पाएगा। अपना काम मुझसे लेने के लिए कहा है। शुवालकुचि से यजमान आनेवाले हैं। उन्होंने भैंसा बलि का संकल्प लिया है। उनके साथ दो औरतें भी आएँगी। पैसेवाले यजमान हैं !''

सभी के चेहरे खिल गये। नौकरानी देव ने कहा, ''इस बार मैं शुवालकुचि के यजमान से 'मूँगा' रेशम के कपड़े लूँगी। वह नहीं मिलेंगे तो लाल किनारेवाली साड़ी ही माँगूँगी।''

मनमोहन पुजारी ने देव से पूछा, ''कौन आएँगे, जानती हो ? परशु के घर में जच्चा को शुद्ध पानी देने जाते समय मैंने सुना कि विधिबाला लोग आएँगी।''

''विधिबाला ?''

''क्या तुम लोगों को याद नहीं—पिछले साल इसी विधिबाला ने कुमारी पूजा ली थी। लोगों का चीख़ना-चिल्लाना शुरू हो गया था, क्या याद नहीं ?''

विष्णुप्रिया ने पूछा, ''लोग क्यों चिल्लाये थे ?''

देव ने मनमोहन पुरोहित को देखा। फिर विष्णुप्रिया के पास आकर कान के पास फुसफुसाकर कहा, ''एक अफ़वाह उड़ी थी कि लड़की ऋतुमती हो चुकी है। उसके पिता ने वधस्थल में सिर रखकर क़सम खायी तभी सबने छोड़ा। वैसे लड़की को देखा नहीं है आपने। उसके स्तन चलने के साथ-साथ हिलने लगते हैं और उसके हाथ-पैरों का रंग बिलकुल हाँड़ी में रखे दही जैसा है। और उसके बाल ?''

''बाल ?''

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

“जूड़ा बनाने पर लोगों के ऊपर गाना गाते हैं। कहते हैं न—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जूड़ा छोटा जूड़ा बड़ा
जूड़े में मरुवा[1] फूल
जूड़े में खुद को भूले
हजारी बरुआ (व्यक्ति का नाम)”

“लेकिन अब लड़की क्यों आ रही है ?”

“मुझे ख़बर मिली है।” मनमोहन पुजारी ने कहा, “विधिबाला की शादी तय हो गयी है। उत्तर किनारे के लोग हैं। सुना है धान के चार-पाँच भरॉल[2] हैं। लेकिन उनकी पहले भी एक पत्नी है। उम्र काफ़ी है—चालीस से ऊपर ही होगा। और यह लड़की—हाय, हाय, बिलकुल राजकुमारी जैसी है !”

“किसी ने अफ़वाह फैलायी थी न कि लड़की बड़ी हो गयी है ! अब दूल्हा ढूँढ़कर वे परेशान हो गये। कोचबिहार से दो-एक ब्राह्मण आये थे। लेकिन ऐसी लड़की को उनके हाथ में सौंपना...”

इसी समय बाहर का शोर सुनाई दिया। बक्से और पोटलियाँ उठाये तीन नौकर मनमोहन पुजारी की सीढ़ियों के पास खड़े थे। उनके साथ दो जवान फुर्तीले लड़के भी थे। दोनों लम्बे और पतले चेहरे के थे। उनके सिर के बाल घने थे। बीच से माँग निकालकर कंघी की हुई थी। उनके रंग साफ़ थे और वे शान्तिपुरी धोती और हल्के रंग की कमीज़ पहने थे। दोनों एक बूढ़ी औरत को सहारा देकर सीढ़ियों से ऊपर चढ़ाने लगे। बुढ़िया ने छाती के ऊपर मेखला बाँधी हुई थी। उनका शरीर भूरी फूलवाली एक चादर से ढका था। उन दिनों असम के देहाती इलाक़े में रहनेवाली ब्राह्मण परिवार की औरतें ब्लाउज़ नहीं पहनती थीं। वे विधवा थीं इसलिए उन्होंने गले में हार, कान में बाली और हाथ में कंगन नहीं पहने थे। उन लोगों का अनुकरण करती हुई पाट की रेशमी मेखला चादर पहने विधिबाला सावधानी से सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। उसकी पीठ पर लटकती चोटी लगभग ज़मीन छू रही थी। रस्सी से बाँधकर एक नौकर बलि के लिए एक भैंसा खींचकर ला रहा था। वह दरवाज़े पर खड़ा हो गया।

मनमोहन पुरोहित सभी को कमरे में बैठाकर बाहर निकल आये। बाहर खड़े नौकर को आवाज़ दी, “जा, जा, उसे तालाब के किनारे बाँधकर आ। आज तालाब के किनारे और भी भैंसे बँधे हुए हैं। उसके सींग की पहचान रखना ही काफ़ी है।”

---

1. एक प्रकार का छोटा सफ़ेद रंग का फूल जो वसन्त ऋतु में खिलता है।
2. धान रखने के लिए बनाया गया लकड़ी का घर।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह भैंसे को एक छोटे रास्ते से खींचकर ले गया। बहुत देर तक उसके खुरों की खट्-खट् आवाज़ सुनाई देती रही।

कल अम्बूवासी की शुद्धि होगी। इस साल अम्बूवासी के मेले में साधु-सन्तों की भीड़ बहुत ज़्यादा है। दूर-दूर से लोग आ रहे हैं। ज़मीन पर सिर टिकाकर भक्त उच्चार रहे हैं–

"मनोहर-गुहायां रक्त-पाषाण-रूपिनी।
तस्या स्पर्शमात्रेण पुनर्जन्म न विद्यते ॥"

पूर्व दिशा के दरवाज़े से ही ज़्यादातर यात्री आ रहे हैं। भक्तों का विश्वास है कि पूर्व दिशा से आने पर धन-लाभ होता है। उत्तर दिशा अर्थात् मुक्ति और राज्य-लाभवाले रास्ते से भी लोग आ रहे हैं। सिर्फ़ दक्षिण दिशा से कोई भक्त नहीं आया है, क्योंकि युगों से चले आ रहे विश्वास के अनुसार यह मृत्यु का रास्ता है। वैसे दो-एक तान्त्रिकों ने इसीं मृत्युवाले रास्ते से सिर्फ़ आना-जाना ही नहीं, सुविधा अनुसार पत्थर और पौधों की झाड़ियों के नीचे बैठने की व्यवस्था भी बनाकर रखी हुई है। कामाख्या पीठ में अम्बूवासी की भीड़ का वर्णन करना बहुत मुश्किल है।

कहाँ से आये हैं ये भक्तों के दल ? कितने सारे भक्त आये हैं–बाकुरा, दिनाजपुर, राजसाही, नदिया, उत्तरकाशी, बनारस, गया और विन्ध्य तथा हिमालय के निचले इलाक़ों से। कुछ लोग नाव से भी आये हैं। कुछ पैदल आये हैं। कुछ भक्तों के चेहरे देखने में भयानक थे। उनके सिर पर मिट्टी के रंग की जटाएँ थीं। ये जटाएँ अजगर की तरह कुण्डली बनाकर सिर को घेरे हुई थीं। कुछ संन्यासियों ने कमर में छोटा-सा कपड़ा बाँध रखा था। कुछ लोग भस्म को शरीर में लपेटकर आये थे। हाथ में त्रिशूल पकड़े खुले बालवाले और अनेक वर्षों से लगातार अम्बूवासी के मेले में आनेवाले तीन वैष्णवियों ने उत्तर के दरवाज़े से आकर बिलकुल सौभाग्यकुण्ड के पास डेरा डाला हुआ था। अम्बूवासी के कारण मन्दिर के दरवाज़े बन्द रखे गये हैं। इसलिए लोगों की भीड़ ख़ासकर सौभाग्यकुण्ड के आसपास जमा थी। सौभाग्यकुण्ड का पानी बिलकुल मटमैला हो गया था। देवी-पूजा के लिए इस्तेमाल किये जानेवाले पानी का रंग भी ताम्रवर्ण का बन गया था। द्वारभांगा के राजा ने इस कुण्ड के एक तरफ़ का पानी देवी-पूजा के लिए अलग से बँधवा दिया था। मन्दिर के चारों तरफ़ सिर्फ़ भक्तों की ही भीड़ दिखाई देती है। बीच-बीच में भक्तों का कोलाहल सुनाई दे रहा है–"माँ, माँ ! माँ चण्डी, माँ चण्डावती, माँ चामुण्डा, माँ शिवदूति, माँ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

चण्डेश्वरी, माँ सर्वमंगला, माँ बलप्रमथिनी, माँ सर्वभूतदमनी। माँ, माँ !''

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

छिन्नमस्ता के आँगन में भी भक्तों की भीड़ हो रही थी। भक्त छिन्नमस्ता के जटाधारी को बहुत खोज रहे थे। एक पत्थर पर खड़े होकर गुरुकुल का एक छात्र कोलाहल करनेवाले भक्तों को चिल्ला-चिल्लाकर बता रहा था–''जटाधारी वापस आएँगे। उन्हें माँ छिन्नमस्ता ने आदेश दिया है। माँ अब और ख़ून से रँगे वस्त्र नहीं पहनेगी। माँ को फूलों से सजाया जाएगा। भक्तगण, आप लोग भी अब से माँ को फूलों से सजाइए। कटहल, चम्पा, कमल, कनक, कामिनी, कंचन और कनेर की मालाओं से माँ को सजाइए !''

''हे माँ छिन्नमस्ता, तुम ख़ून से रँगे वस्त्र उतारो।'' छिन्नमस्ता के जटाधारी के भक्तगण भी एक साथ चिल्लाने लगे, ''माँ, तुम ख़ून से रँगे वस्त्र उतारो ! तुम फूलों के हार पहनो !''

हाथ में त्रिशूल लिये संन्यासी अब मन्दिर के चारों तरफ़ घूम-घूमकर नृत्य करने लगे–''माँ, तुम रक्त-वस्त्र उतारो ! माँ, तुम रक्त-वस्त्र उतारो !!''

मृत आदमी की खोपड़ी में चावल खाते हुए एक तान्त्रिक-दल को आज सुबह ही पुलिस द्वारा पकड़कर थाने ले जानेवाली बात चारों तरफ़ फैल चुकी है। पुलिस को उनके झोलों में पाँच खोपड़ियाँ मिली हैं।

रत्नधर ने दस्तख़त संग्रह करनेवाला काम लगभग ख़त्म कर डाला था। उसके साथ गुरुकुल का एक छात्रदल भी था। वह समझ गया था कि आज उसके पिताजी गुस्सा करेंगे। ख़ासकर इस मेले के समय मन्दिर के दरवाज़े खुलने के साथ ही गौड़ और कोचबिहार आदि जगहों के यजमानों को देवी द्वारा अम्बूवासी के समय अर्थात् रजस्वला अवस्था में पहने हुए लाल वस्त्र के टुकड़े भेजने पड़ेंगे। इन वस्त्रों के टुकड़ों को वे अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करने के लिए तावीज़ में डालकर पहनेंगे। लिफ़ाफ़े में नाम-पता लिखते समय जब वह दवात-क़लम लेकर पिता के पास बैठता था तो पुरोहित मनमोहन के चेहरे पर मुस्कान खिल जाती थी। लेकिन अब ऐसा करने का समय नहीं बचा है। बलिविधान बन्द करने के समर्थन में भक्तों के दस्तख़त से एक कॉपी भर गयी है।

रत्नधर और गुरुकुल का छात्रदल अब कोटिलिंग की तरफ़ बढ़ने लगा। वे अब गोरे साहब के सिपाही के डर से कोटिलिंग के पासवाली गुफा में रह रहे संन्यासियों के पास आये। लोगों के सिरों की खोपड़ियों को बर्तनों के रूप में इस्तेमाल करनेवाले इन संन्यासियों की गुफा में रत्नधर ने झाँककर देखा। वे भंग पीकर बिलकुल मस्त थे। आगे बढ़कर उनसे दस्तख़त लेने की रत्नधर को इच्छा नहीं हुई। गुरुकुल के छात्रों ने कहा, ''ये संन्यासी तो सिर्फ़ अँगूठे की छाप दे सकते हैं। इनसे दस्तख़त लेने की ज़रूरत नहीं है।''

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ दूर आगे बढ़ने पर उन्होंने कोटिलिंग के टूटे हुए एक मन्दिर के अन्दर कुछ लोगों को देखा। ज़्यादातर गौड़ से आये हुए लोग थे। उनमें से कई भक्त ब्रह्मपुत्र में नहाने गये हैं। लाल किनारेवाली साड़ी और शंख की चूड़ियाँ पहने हुए दो औरतें चूल्हा जलाकर खाना बनाने में व्यस्त थीं। कुछ देर पहले ही शायद ये औरतें ब्रह्मपुत्र में नहाकर लौटी थीं। उनके बालों से टप्-टप् पानी टपक रहा था। थोड़ी ही दूर पर एक कम उम्रवाली लड़की बैठी थी। उसके लम्बे बाल ज़मीन छू रहे थे। वह माथे पर सिन्दूर की बिन्दी, पैरों में महावर और गले में कनेर के फूलों की एक माला पहने हुए थी। दरवाज़े के सामने खड़े होकर रत्नधर ने पूछा, ''आप लोग कहाँ से आये हैं ?''

खाना बनानेवाली औरतें एक-दूसरे की शक्लें देखने लगीं। लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।

संस्कृत गुरुकुल के छात्रों ने रत्नधर को पीछे की तरफ़ खींचकर कान के पास फुसफुसाकर कहा, ''रत्नधर, तुम अब भी इनके बारे में नहीं जानते क्या ? ये वेश्या हैं।''

''वेश्या ?''

''हाँ, ये वेश्या हैं। वहाँ बैठी कम उम्रवाली लड़की को ये कुमारी-पूजा के लिए लाये हैं। देवी का मोहक रूप है कुमारी त्रिपुरासुन्दरी। शास्त्र में लिखा है—वेश्या की लड़की को यह पूजा मिलेगी और पूजा करनेवाले को अच्छे फल मिलेंगे।''

जवाकुसुम तेल और गुलंच फूल की खुशबू रत्नधर और छात्रों ने महसूस की। अन्दर से एक अधेड़ उम्र की औरत बाहर निकल आयी और पूछने लगी, ''क्या चाहिए ?''

गुरुकुल के एक छात्र ने आगे बढ़कर कहा, ''हम लोग एक विशेष काम से आये हैं।''

''क्या काम है ?''

''माँ के आँगन में और रक्त प्रवाहित नहीं होगा। जो व्यक्ति चाहते हैं कि बलिप्रथा बन्द हो, वे हमारी इस कॉपी में दस्तख़त कर रहे हैं।''

वह औरत लगभग चीख़ उठी। बांग्ला और असमिया मिश्रित भाषा में उसने कहा, ''माँ की पूजा में हस्तक्षेप ! ओह् ओह् ! बलि का मतलब ही तो मुक्ति है !''

गुरुकुल के छात्र ने कहा, ''आई, जीव के बलि चढ़ाने के बदले दूसरे उपाय भी शास्त्र ने हमें दिये हैं, 'नानविधञ्च नैवेद्यं पात्रं पायसमेव च।' इसी तरह मधु, खीर और दही से भी पूजा हो सकती है। रक्तदान के बिना पूजा नहीं होगी, ऐसी कोई बात नहीं है, आई।''

उस औरत ने चिल्लाकर कहा, ''हे माँ दुर्गे ! हम लोग हज़ारों साल से चली

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
आ रही पूजा में हस्तक्षेप नहीं कर सकते। माँ की योनि रक्त से भरी रहनी चाहिए। हे माँ महादेवी ! हे माँ कामाख्या कामरूपिनी !!''

कोठरियों के अन्दर बैठी औरतों के बीच बातचीत होने लगी। कुमारी-पूजा के लिए लाल किनारेवाली साड़ी पहनकर तैयार बैठी सुन्दर-सी लड़की भी एक बार बाहर निकलकर देख गयी।

रत्नधर और छात्र अब नदी-किनारे की तरफ़ बढ़ने लगे। कुछ दूरी पर उन्होंने बलि देनेवाले शम्भुदेव सिकदार को देखा। वह एक अद्‌भुत काम कर रहा था। पत्थर पर इकट्‌ठे कुछ महानीबुओं में से एक-एक उठाकर वह नदी में फेंकता था और जब वह पानी के नीचे से ऊपर आकर तैरता था तो दौड़कर बड़े चाकू से काटकर दो टुकड़े कर देता था। सुबह से वह यही काम लगातार कर रहा था।

रत्नधर और गुरुकुल के छात्र अच्छी तरह से जानते थे कि शम्भु को अपने जीवन में दो भैंसे की तीन-तीन बार वार करके बलि देने की बात याद है। तभी से अपना निशाना ठीक करने के लिए कि एक ही वार में सिर कटे, वह रोज़ सुबह उठकर तैरते हुए महानीबू इसी तरह से काटता था। शम्भुदेव सिकदार का शरीर बहुत मज़बूत है। उसके शरीर का रंग ताँबे की तरह है। एक तरह का उत्साह उसके शरीर को हर समय फुर्तीला बनाये रखता है।

रत्नधर दवात और क़लम लेकर घूम रहा था। अपनी कमर से बँधे एक छोटे से झोले में वह दवात और क़लम रखता था। स्याही के निशानों से वह झोला बिलकुल चितकबरा बन गया था।

शम्भुदेव सिकदार के पास खड़े होकर ये छात्र अच्छी तरह से समझ गये कि उनके दस्तख़त लेने की बात सोचना भी ग़लत होगा। दुबले-पतले चेहरेवाले एक छात्र ने शम्भुदेव से पूछा, ''सुनिए, आप बलि देने के लिए इस तरह हाथ पक्का कर रहे हैं न ?''

शम्भुदेव ने कोई जवाब नहीं दिया।

''क्या आप अपने बेटे को भी यही काम करवाएँगे ?'' शम्भुदेव ने तीखी नज़रों से उन लोगों को देखा। फिर कहने लगे, ''वह पढ़ेगा। उसे वाराणसी की तरफ़ भेजूँगा।''

''महाशय, आपने अब तक कितने भैंसे काटे हैं ?''

शम्भुदेव सिकदार चुप रहा। रत्नधर ने ज़ोर से कहा, ''मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ। पिताजी ने कहा था कि आपने अब तक दो हज़ार भैंसे बलि चढ़ाये हैं।''

छात्रगण चीख़ पड़े—''दो हज़ार भैंसे ?''

शम्भुदेव ने कहा, ''दो हज़ार तीस।''

''ओह्, ओह् !'' छात्रों के सीने से एक-एक लम्बी साँस निकल गयी। छोटे

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

क़दवाले छात्र ने पूछा, "अगर बलिप्रथा बन्द हो जाएगी तो क्या आपको अच्छा लगेगा ?"

शम्भुदेव सिकदार ने एक और महानीबू पानी में फेंका और दौड़कर एक ही वार में उसके दो टुकड़े कर दिये। फिर छात्रों की तरफ़ देखकर उसने कहा, "बलिप्रथा बन्द होने पर मुझे बुरा नहीं लगेगा।"

एक क्षण के लिए सारे लड़के स्तब्ध रह गये। लेकिन कोई भी आगे बढ़कर उनसे दस्तख़त लेने की हिम्मत नहीं जुटा पाया।

अब वे पहाड़ी पर चढ़ने लगे। छिन्नमस्ता के क़रीब पहुँचकर थोड़ी देर के लिए रुक गये। जटाधारी की प्रतीक्षा में बहुत सारे लोग मन्दिर के दरवाज़े के बाहर बैठे हुए हैं। वैसे तो ये लोग अम्बूवासी के लिए ही आये थे लेकिन सभी ने छिन्नमस्ता के संन्यासी और डरथी ब्राउन के बारे में सुना था। क्या इन लोगों के दस्तख़त भी लेने चाहिए ? सारे लोग बिलकुल ग़रीब दिख रहे थे। फटे-पुराने कपड़े, नंगे पैर। उनके शरीर पसीने और बरसात के पानी से भीगकर चिपचिपे हो गये थे। अम्बूवासी के मेले में आये सभी लोगों के मुँह में एक किंवदन्ती जैसी कहानी का गुंजन था।

फ़िरंगी लड़की डरथी को माँ छिन्नमस्ता ने शक्ति दी थी। इसलिए उसे पागल हाथी जैसी शक्ति मिल गयी थी। बलात्कार करने आनेवाले आदमी के शरीर का मांस उसने नोंच लिया था। हाँ, हाँ, माँ छिन्नमस्ता ने ही उसे शक्ति दी थी।

मन्दिर की सीढ़ियों के आसपास और खुले मैदान में अनेक स्थान से आये लोग दुकान लगाकर बैठे थे। इनकी दुकानों में बहुत सारा सामान है–शंख, शंख की मालाएँ, धातुओं और शीशे के मणि, रुद्राक्ष की माला, पोवाल (एक बीज) मणि, पत्थर, चाँदी और ताँबे के बर्तन, बंगाली नर्तकी और फ़िरंगी साहब के चित्र और साथ में माँ दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की तस्वीरें, शान्तिपुरी धोती, मुर्शिदाबाद की साड़ियाँ, मार्बल पत्थरों से बनी भगवान विष्णु और अष्टधातु से बनी देवी की मूर्तियाँ–और भी बहुत तरह के सामान थे इन दुकानों में।

छोटे रास्ते से वे ऊपर चढ़ गये। खाना खाने के बाद वे फिर काम में जुट जाएँगे। वे लोग सावधानी से ऊपर चढ़ने लगे। पत्थर से बने रास्ते पर बारिश के पानी से फिसलन पैदा हो गयी थी। बड़े-बड़े भातघिला और डूमर के पेड़ से टपू-टपू पानी गिर रहा था। अपने घर के पास पहुँचकर रत्नधर ने साथ आये छात्रों से विदा ली।

सीढ़ियाँ चढ़कर वह यजमानवाले कमरे में घुस गया। कमरे में पहुँचते ही विधिबाला उसके सामने आ गयी। रत्नधर के हाथ से क़लम-दवात छूटकर ज़मीन पर जा गिरी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्यारह

मनमोहन पुरोहित के परिवार के लोग अँधेरा रहते ही जग गये। आज मन्दिर का दरवाज़ा खुलेगा। पिछली रात से ही लाइन में खड़े लोग धक्का-मुक्की पर उतर आये हैं। लोगों की क़तारें हनुमान की पूँछ की तरह लम्बी होती जा रही हैं। आठपरिया मन्दिर का दरवाज़ा अन्दर से बन्द करके सफ़ाई में लगे हैं। अभी तक वह बाहर नहीं निकला है।

किंवदन्ती है कि तीन दिन सोने के बाद देवी उठकर आती है। आठपरिया को मन्दिर धोने के लिए अलग से रोशनी की ज़रूरत नहीं पड़ती। माँ के शरीर से निकली ज्योति से मन्दिर जगमगाता रहता है। मन्दिर के अन्दर सफ़ाई करनेवाले आठपरिया ने इस अनुभव के बारे में आज तक किसी से कुछ भी नहीं कहा है। लोग कहते हैं कि ताँबे के बर्तन में पानी देने जानेवाले लड़के की आँखें भी वह दृश्य देखकर चौंधिया गयी थीं। लेकिन उसने भी आज तक इस बारे में किसी से कुछ नहीं कहा। लोगों के इशारों से ही ये बातें बाहर फैल गयी थीं।

इसलिए मन्दिर खुलनेवाले दिन पौ फटने से पहले ही दो-चार भक्त मन्दिर की दीवारों पर आँखें गड़ाकर उस ईश्वरीय रोशनी को देखने की कोशिश कर रहे थे। पानी ढोनेवाला लड़का इस छाया जैसे दल को देखकर चिल्लाया—"ऐ, केन्दूकलाई ब्राह्मण जैसी हालत होगी। पाषाण बनकर मन्दिर में ही टिके रहोगे।"

लगभग सभी भक्तों को मालूम है कि मन्त्र पढ़ते समय महामाया केन्दुकला ब्राह्मण के सामने नृत्य करती थी। कोच राजा नरनारायण को ब्राह्मण ने यह नृत्य दिखाया था इसलिए वह पाषाण बन गया। और राजा नरनारायण ? यही राजा था जिनके ऐश्वर्य से मन्दिर के चारों तरफ़ उजाला था। इसी राजा ने देवी के टूटे हुए मन्दिर का फिर से निर्माण कराया था—इसी राजा नरनारायण ने देवी का नग्न नृत्य देखना चाहा तो नीलाचल पहाड़ से ही नीचे गिर गया।

नये देवी-मन्दिर के उद्घाटन समारोह में महारानी भानुमती और अन्य रानियों के साथ देवी को प्रणाम करने आनेवाला राजा देवी की नग्न देह देखना चाहता है ?

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

लोग कहते हैं कि चारों तरफ़ से तिरस्कार के शब्द गूँज रहे थे—"ऐ राजा, मेरी इस रम्य भूमि पर नज़र उठाकर देखोगे तो तेरा वंश नहीं रहेगा। तू नरक में जाएगा।"

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दिर की दीवारों पर आँखें टिकाकर वही रहस्यपूर्ण रोशनी देखने की कोशिश करनेवाले लोगों को पानी ढोनेवाले लड़के ने कहा, "ऐ, केन्दूकलाई पुजारी जैसा हाल होगा। भागो, भागो यहाँ से—शाप से भस्म कर देंगी देवी माँ ! पत्थर बन जाओगे !"

पैरों पर चोट खाये बौने आदमी ने लँगड़ाते हुए कहा, "ऐ भेड़ियों के झुण्ड ! लड़कियों का शरीर देखकर जी नहीं भरा ? अब देवी की देह देखना चाहते हो ! शाप से भस्म हो जाओगे तुम लोग। नदी में डालने के लिए अस्थियाँ भी नहीं बचेंगी। भागो यहाँ से, भागो !"

अम्बूवासी मेले में आनेवाले लोग आधी रात से ही लाइन में खड़े थे। आठपरिया मन्दिर की साजसज्जा और धुलाई-सफ़ाई करने के बाद बाहर निकल आया।

ऊपरवाली सीढ़ियों से साफ़-सुथरे रक्तवर्ण की धोती-चादर पहने हुए पुजारी नीचे उतर आये। सौभाग्यकुण्ड के पानी के पास जाकर वे फिर वापस आ गये। मन्दिर के दरवाज़े के पास खड़े होकर उन्होंने चारों तरफ़ देखा। तब तक चार, पाँच और आठ हिस्सेवाले प्रसाद की थालियाँ लगनी शुरू हो गयी थीं। धूप, अगरबत्ती और फूलों की मिली-जुली एक सुगन्ध चारों तरफ़ फैल गयी। मन्दिर के बाहर थोड़ी दूरी पर ढोल और मृदंग की मंगलध्वनि होने लगी। औरतों की उलुध्वनि[1] से माहौल गूँज उठा—उलु...लु...उलु...लु...लु...।

चार हिस्सों में से तीन हिस्से की पूजा समाप्त होने के साथ ही फिर से ढोल और मृदंग बजने लगे। भक्तों में से कुछ लोग वधस्थल के पास आकर खड़े हो गये थे। मोटे-ताज़े असहाय काले रंग के बकरे का ख़ून देखने के लिए भक्तों में धक्का-मुक्की शुरू हो गयी। असहाय बकरे के मिमियाने की आवाज़ सुनी गयी। पिछले तीन दिनों की लगातार बारिश ने वधस्थल में लगे हुए ख़ून के दाग़ धो डाले थे।

वहाँ—वहाँ खड्ग के एक ज़ोरदार वार के साथ ही ताज़ा ख़ून चारों तरफ़ उछलकर गिरा। भक्तों के झुण्ड ने साष्टांग होकर प्रणाम किया और ताज़ा गरम ख़ून माथे पर लगा लिया। शरीर में भस्म लपेटे और बड़े-बड़े मणियोंवाली माला पहने एक विशालकाय जटाधारी तान्त्रिक औंधेमुँह बैठकर माथे पर बलि का ख़ून लिपटाने लगा। लोगों ने देखा कि वह तान्त्रिक कच्चे, ताज़े ख़ून को चाट-चाटकर स्वाद ले रहा है। एक कुत्ता भी कहीं से आकर तान्त्रिक के साथ ज़मीन में पड़ा ख़ून चाटने लगा।

---

1. किसी भी धार्मिक अनुष्ठान या शादी-व्याह के अवसर पर औरतों द्वारा मुँह से की गयी मंगलध्वनि।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

बकरे के छटपटाते हुए धड़ के पास लोगों का जमघट लग गया। वधस्थल के पास मिट्टी के ढेर पर खड़े होकर लालवस्त्र पहने लम्बे बालों और चेचक के दाग़ोंवाले एक तान्त्रिक ने उद्घोष किया—"भक्तगण, तीन दिनों के बाद यह बलि सम्पन्न हुई। प्यास से माँ का गला सूख गया था। आओ भक्तो ! आप सब लोग बलि का रक्त माथे पर लगा लो। सुनो, प्यासी माँ के मुँह से ख़ून छीननेवाले जटाधारी के गले में खड्ग से वार करना। बोलो, खड्ग से वार कर सकोगे ? बोलो !"

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ख़ून के टीके लगानेवाले भक्तों का दल एक साथ बोल उठा, "हाँ, हम ऐसा कर सकेंगे।"

बदसूरत तान्त्रिक की तेज़ आवाज़ फिर से सुनाई दी, "बलि से ही मुक्ति है और बलि द्वारा ही स्वर्ग-प्राप्ति हो सकती है। शास्त्रों में लिखा है—तीन नरबलि से देवी लाख बरस तक तृप्त रहती है। मृग के चढ़ाये गये ख़ून से देवी आठ महीने तक तृप्त रहती है। कृष्णसार मृग और सुअर के ख़ून से देवी बारह साल तक ख़ुश रहती है। और सुनो, भैंसे के ख़ून से देवी को सौ साल तक तृप्ति मिलती है। भक्तों द्वारा अपने शरीर से ख़ून देने से देवी एक हज़ार साल तक ख़ुश रहती है।"

भक्तों के बीच कानाफूसी शुरू हो गयी—"अपने शरीर का ख़ून देकर एक हज़ार वर्ष तक तृप्तिलाभ ?"

तान्त्रिक ने आगे बोलना जारी रखा, "आओ, आगे बढ़ो। अगर एक हज़ार साल तक देवी को ख़ुश रखना चाहते हो तो आगे आओ। आओ, आगे आओ !"

कोई आगे नहीं आया। तान्त्रिक ने फिर से ज़ोर देकर कहा, "आओ, आगे आओ।"

ठीक उसी समय भक्तों के बीच में से छोटे क़दवाली एक बुढ़िया वधस्थल के पास गिर पड़ी। उस समय बलि का सिर देवी को उत्सर्ग किया जा रहा था। बुढ़िया ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी—"कुछ ही देर पहले घास-पत्ते खा रहा था वह ! उस असहाय प्राणी को क्यों काटा ? वह ज़िन्दा जानवर था। देखो, देखो कैसे डर के मारे उसकी विष्ठा निकल गयी थी। ऐ ख़ून पीनेवाली देवी ! मेरा सिर भी ले ले ! काट डालो, काट डालो—मेरा सिर भी काट डालो।" बुढ़िया ने तेज़ी से जाकर वधस्थल पर सिर रख दिया। उसके कपड़े ख़ून से लथपथ हो गये।

लोगों में कोहराम मच गया।

"लाओ, लाओ—खींचकर लाओ उसे। खींचकर लाओ !"

दो-चार भक्त उस बुढ़िया को घसीटकर नीचे ले गये।

मिट्टी के ढेर पर खड़ा तान्त्रिक फिर से दाँत पीसते हुए चीख़ने-चिल्लाने लगा, "आओ, शास्त्र में लिखा है कि एक कमल की पंखुड़ी में सिर्फ़ दो बूँद ख़ून चाहिए। अपने शरीर का सिर्फ़ दो बूँद ख़ून ! आओ, आओ—जो व्यक्ति अपने वक्षस्थल से

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
एक तिल के समान मांस काटकर देवी को दान करता है उसकी मनोकामना छह महीने के अन्दर ही पूरी हो जाती है। आओ भक्तो ! आओ ! सिर्फ़ एक तिल के बराबर सीने का मांस !''

नहीं—कोई आगे नहीं आया। अचानक मन्दिर में रहनेवाला वह लावारिस बौना वहाँ आ पहुँचा। वह ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगा, ''ऐ, बड़े भक्त बने हैं ! आँखों में मिर्च डालकर जानवरों को खींचकर लाते हो और बलि देते हो ! अब अपना ख़ून देने की बात आयी तो भाग रहे हो !''

बकरे का कटा सिर वहाँ से ले जाने के बाद भक्तगण भी वधस्थल से हटने लगे। आज अम्बूवासी का चौथा दिन है और देवी की शुद्धि के लिए पूजा सम्पन्न हुई। अब देवी के रजस्वला के समय के रक्तवस्त्र के टुकड़े पाने के लिए भक्तों ने धक्का-मुक्की शुरू कर दी।

बलि के बाद पूजा ख़त्म होने में ज़्यादा समय नहीं लगा। पिछली रात से क़तारों में खड़े भक्तगण मन्दिर के खुले दरवाज़े से अन्दर जाने लगे।

मनमोहन पुजारी के साथ विधिबाला की दादी, बड़े भाई पूर्णकान्त और उनके साथ पढ़े मित्र डम्बरूधर ने फूलों की माला तथा घी का दीया लेकर मन्दिर में प्रवेश किया। विधिबाला नहीं गयी। भैंसा-बलि के दिन वह दर्शन करने जाएगी। वह मन में लगातार दुःखों का भार ढो रही है। दुःख क्यों नहीं होगा ? जिस दिन उस भयानक चेहरेवाले आदमी ने उसे देखा और मुँह पर ही बोल दिया—'तुम तो बिलकुल अप्सरा हो !' उसी दिन से विधिबाला का मन भारी है। उसके पिता ने कहा था, ''बंगरा के ज़मींदार हैं। पहले की एक औरत है। दो बेटियाँ भी हैं। बेटा नहीं है। इसी दुःख में फिर ब्याह रचा रहा है। पैसेवाला आदमी है, हमारी लड़की को सुख से रखेगा।''

माँ ने आपत्ति की थी—''ओह्, हमारी ऐसी सुन्दर और निपुण कन्या है ! उस आदमी के तो दाढ़ी-सिर के बाल पक गये हैं ! इससे तो कोचबिहार से आया ब्राह्मण ही अच्छा था !''

लेकिन पति की इस गर्जना से वह चुप हो गयी। ''चुप रह ! चुप रह ! उन भिखारी ब्राह्मणों की बातें न कर। वे 'कन्याशुल्क'[1] इकट्ठा करने के लिए कोचबिहार जाते हैं। वे क्या खिला पाएँगे हमारी लड़की को ! पैसा बटोरते-बटोरते उनकी उम्र भी क्या रुकी हुई है ?''

ये बातें विधिबाला के हृदय में शूल जैसी चुभती थीं। उसी दिन से उसने सिर उठाकर लोगों को देखना छोड़ दिया था। पके बालोंवाला एक बदसूरत चेहरा उसकी आँखों के सामने हर समय तैरता रहता था।

---

1. कन्या को वरपक्ष से दी जानेवाली राशि।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह मन्दिर में दर्शन करने मनमोहन पुजारी के साथ नहीं गयी। उनके द्वारा तय की गयी पूजा के लिए अब भी समय है। लगभग एक हफ़्ते तक उन लोगों को पुजारी के घर में रहना पड़ेगा।

विधिबाला लाल किनारेवाली साड़ी पहनकर रत्नधर की माँ को हँसिया से सब्ज़ियाँ काटकर दे रही थी। उसकी पीठ पर लम्बे बाल खुले पड़े थे। वैसे सभी जानते हैं कि वह अब तक पुष्पिता नहीं हुई है, लेकिन चेहरे से वह बिलकुल जवान लड़की दिखती है। उसकी शादी तय होने के कारण उसके पिता द्वारा देवी के नाम से लाया हुआ भैंसा और वह एक ही नाव से यहाँ आये थे और इस घटना ने विधिबाला के मन को और दुःखी कर दिया था। पहले कामाख्या दर्शन के लिए आते समय वह ख़ुशी से झूम उठती थी। ख़ासकर डरथी ब्राउन और संन्यासी की कहानी सुनकर उन्हें देखने की तीव्र इच्छा उसके मन में हुई थी। उसकी दो सहेलियाँ पहले ही आकर डरथी ब्राउन को देख गयी थीं। वे कहती थीं—"उनसे नज़र मिलाना बहुत कठिन है। कभी ऐसा लगता है जैसे वे आँखें नहीं, दीये की रोशनी में चमकते हुए कुण्ड हैं। कभी-कभी जलते अँगारे जैसी भी लगती हैं।"

लकड़ी के धुआँ से पूरी रसोई ढँक गयी। खाँसती हुई विधिबाला बाहर आ गयी। विष्णुप्रिया ने कहा, "विधि, दालान में बैठकर सब्ज़ियाँ काट लो।" वह खुद विधिबाला के लिए हँसिया, टोकरी और पीढ़ा ले आयी।

रत्नधर कमरे से बाहर नहीं निकला था। वह रक्तवस्त्र भेजनेवाले यजमानों के नाम-पते लिख रहा था। उसकी मेज़ नाम-पते लिखे लिफ़ाफ़ों से भर गयी थी। अब विधिबाला दालान में ऐसे बैठ गयी कि वह अपनी लकड़ी की कुर्सी से बैठे-बैठे ही विधिबाला को देख सकता था। वह विधिबाला से नज़र नहीं हटा सका।

सिर उठाकर विधिबाला ने एकटक अपनी तरफ़ निहारते रत्नधर को देखा। उसने अपना शरीर चादर से अच्छी तरह से ढँक लिया। तभी विष्णुप्रिया उठकर वहाँ आयी और विधिबाला के पास खड़ी होकर कहने लगी, "यह मेरा बेटा रत्नधर है। तुझे उसने पिछले साल कुमारी-पूजा के समय देखा था।"

विधिबाला ने कहा, "हाँ, हाँ मुझे याद है। मैंने इन्हें नाटघर में देखा था।"

विष्णुप्रिया अन्दर चली गयी। जाते समय कह गयी, "विधि, रत्नधर को तुम भैया कहना—तुझसे उम्र में वह छह-सात साल बड़ा है।"

विधिबाला के होठों पर एक मुस्कुराहट तैर गयी। रत्नधर भी मुस्कुराया। विष्णुप्रिया ने आवाज़ देकर अन्दर से ही रत्नधर से कहा, "नाम-पता लिखना ख़त्म होने पर तू एक बार विधिबाला को द्वारभांगा-घर दिखाकर लाना। कल रात एक पहर तक वह फ़िरंगी लड़की के बारे में पूछती रही।—वहाँ रहती है, देखने की बड़ी इच्छा है उसे। बाक़ी लोगों के दर्शन करके आने से पहले ही उसे वहाँ घुमा लाना।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सच बात तो यह है कि विष्णुप्रिया के मन में विधिबाला के प्रति स्नेह उमड़ आया था। उसे चालीस साल के बूढ़े के साथ ब्याह देनेवाली ब़ात उनके मन में चुभ रही थी। लेकिन अब कुछ नहीं किया जा सकता। शादी तय होने के बाद देवी के नाम से भैंसा तक लाया जा चुका है। हाँ, ऐसी बातें पहले भी हो चुकी हैं। चालीस साल के आदमी ने ग्यारह वर्ष की लड़की से ब्याह रचाया है।

चिट्ठियाँ समेटकर रत्नधर ने कपड़े उठाये और तेज़ी से स्नानघर की ओर जाने लगा। थोड़ी ही देर में वह नहा-धोकर और कपड़े बदलकर माँ के पास पहुँचा। उसके मन में चल रहे तूफ़ान के बारे में किसी को पता नहीं था। अपने अन्दर छटपटाते कुछ अदृश्य अंगों को उसने पहली बार महसूस किया था। माँ के पास खड़े होकर उसने कहा, "उसे तैयार होने के लिए कहो !"

माँ ने कहा, "सुन, तू विधिबाला को विधि नाम से ही बुला सकता है। साथ में देव को भी ले जा। ज़्यादा देर न करना।"

नौकरानी देव घर की धुलाई-सफ़ाई का काम पूरा कर चुकी थी। वह विधिबाला के साथ जल्दी ही तैयार होकर आ गयी। लाल किनारेवाली साड़ी को उसने थोड़ा-सा ऊँचा करके पहन लिया।

एक छोटी-सी सड़क से वे आगे बढ़े। 'विधिपाठकों' के मोहल्ले और जवान-बूढ़े पुजारियों के घर के सामने से विधि के गुज़रते समय लकड़ी से बने बरामदे में निकलकर लोग झाँक-झाँककर देखने लगे। विधिबाला और देव से तेज़ चलते हुए रत्नधर को दो-एक ने बुलाया भी—"कहाँ का यजमान है रत्नधर ?"

"नयी-सी दिखती है, कहाँ की लड़की है ?"

बिना सिर उठाये ही रत्नधर ने धीरे-से कहा, "शुवालकुचि की है।"

"किसके घर से है ?" एक दूसरे ने पूछा।

इस प्रश्न का उत्तर न देते हुए रत्नधर तेज़ी से क़दम बढ़ाने लगा। विधिबाला और देव को उसके साथ-साथ चलने के लिए लगभग दौड़कर जाना पड़ा।

वे द्वारभांगा-घर तक पहुँच गये। गरैमारी के बढ़ई वहाँ मरम्मत का काम कर रहे थे। डरथी ब्राउन के कमरे में उन्होंने 'उरियाम' लकड़ी से बने दरवाज़े लगाये थे। कुछ ही दूरी पर टूटे हुए दरवाज़े के टुकड़े पड़े हुए थे। डरथी ब्राउन के कपड़े और छोटा-मोटा सामान अन्दरवाले कमरे में बन्द करके रखा गया था। उसकी चाभी रत्नधर के पास थी। जेब से चाभी निकालकर उसने ताला खोला।

अब विधिबाला ने संकोच छोड़कर पहली बार मुँह खोला—"कब आएगी ? डरथी ब्राउन कब आएगी ?"

रत्नधर ने विधिबाला की ओर देखते हुए कहा, "आएगी, आएगी ! अनेक जगहों से जटाधारी के शिष्य आकर बलि के विरोध में दस्तख़त देंगे। जटाधारी के अनेक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
जगहों पर शिष्य हैं—पसरीया, हाजो, जापियां, धुहि, निजकाउबाहाट, दरंग ज़िले के रौता, बन्दरगुरि, बिसिमारी और धनशिरि नदी के किनारेवाले गाँवों में अनेक शिष्य भरे हुए हैं। बरपेटा के साफ़ाख़ामार और तराबारी में भी अनेक भक्त हैं।''

विधिबाला ने उत्साहित होकर कहा, ''जानती हूँ, जानती हूँ। शिवरात्रि के समय शुवालकुचि में नाव डूबने से पानी में गिर गये दो लड़कों को संन्यासी ने पानी से निकाला था। सुना है, बरसात में भी छिन्नमस्ता का संन्यासी ब्रह्मपुत्र पार कर सकता है। लेकिन फ़िरंगी लड़की के साथ...''

रत्नधर के होठों पर मुस्कुराहट खिल गयी। यह विधिबाला है, इस समय उसके पास द्वारभांगा-घर में खड़ी है। उसके बालों की सुगन्ध रत्नधर महसूस कर रहा है। उसकी साड़ी का आँचल रत्नधर को छू रहा है। क्या यह सच है ? सच है ? सामनेवाली नदी और उसका रूप एक-सा लग रहा है !

विधिबाला आकर बरामदे में खड़ी हो गयी। ब्रह्मपुत्र झाग और पानी से लबालब भरा है। उसमें काली-काली लकड़ियों के टुकड़े तैरते जा रहे हैं। जैसे ब्रह्मपुत्र के सीने में ये किसी के खरोंचने का काला-काला निशान हो। जैसे ये टूटे हुए मन्दिर के भव्य गुम्बज हों ! छिन्न-भिन्न दरारें !

अब और संकोच नहीं रहा। उसने रत्नधर से सवाल किया, ''डरथी ब्राउन के साथ क्या इसी कमरे में बलात्कार की कोशिश की गयी थी ? शुवालकुचि में भी लोग इसी विषय पर बातें कर रहे हैं।''

रत्नधर को आश्चर्य हुआ। विधिबाला इस तरह खुलकर बातें करेगी यह उसने सोचा भी नहीं था। उसने यह भी नहीं सोचा था कि विधिबाला सिर उठाकर भी बात कर पाएगी। उसकी मुट्ठी में ऐसा अमूल्य रत्न आया है—वह व्याकुल हो उठा।

''हाँ, हाँ, इसी कमरे में वह दुर्घटना हुई थी। देखो, यह नया दरवाज़ा है। 'उरियाम' लकड़ी का बना दरवाज़ा है। दो दिन पहले ही लगाया गया है। द्वारभांगा-राजा का बनवाया पहलेवाला दरवाज़ा टूटकर नष्ट हो गया था। वह देखो, मरी गाय के अस्थि-पंजर जैसा पड़ा हुआ है।''

उन्हें एक बहुत ही मादक गन्ध मिली। यह शायद डरथी ब्राउन के शरीर की गन्ध है। हाँ, हाँ, ब्रह्मपुत्र की गन्ध से मिलकर आयी काग़ज़ी नीबू जैसी खुशबू उन लोगों ने महसूस की।

रत्नधर का तस्वीर बनाने का सामान एक कोने में पड़ा है। दो-चार चित्र बड़ी-बड़ी चादरों से ढँके हुए हैं। विधिबाला कुछ समय तक कमरे के अन्दर घूमती रही। दीवारों को हाथों से छूकर देखा। उन्हें ऐसे छू रही थी जैसे डरथी ब्राउन की देह पर हाथ फेर रही हो ! खुली खिड़की से उसने फिर से ब्रह्मपुत्र को देखा। हाँ, अब ब्रह्मपुत्र लबालब भरा हुआ है। कुछ लकड़ियाँ और बाँस के टुकड़े भी पानी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

के साथ बहते आ रहे हैं। लकड़ियों और बाँस के टुकड़ों को एक साथ देखकर लगता है जैसे वह कोई अर्थी बह रही हो।

रत्नधर ने सोचा—क्या कह दे इस लड़की से कि पहले से शादीशुदा बूढ़े से ब्याह न करे। क्या कह दे कि उसके प्रति रत्नधर के मन में प्रेम है ? क्या यही अवसर है—क्या यही सही वक़्त है यह सब कहने का ? आसमान में धुएँ की तरह बादल जम रहे हैं। कहीं दूर से गरजने की आवाज़ सुनाई दे रही है।

विधिबाला ने तस्वीरों पर से कपड़ा हटाने के लिए रत्नधर से कहा। रत्नधर बोला, ''रंग अभी सूखा ही नहीं है—फिर भी देखना चाहती हो तो देख लो।''

बड़ी-सी चादर हटाने के साथ-साथ रक्तवस्त्र पहने लोगों का दल तस्वीर में स्पष्ट दिखने लगा। वे सौभाग्यकुण्ड के पास खड़े हैं। रत्नधर ने कहा, ''ये जवान और बूढ़े पुरोहित हैं, होता और विधिपाठक हैं। घुटनों पर बैठनेवाला यह आदमी बधिक है। वह लाल धोती और साथ में अन्दर और बाहर—दोनों तरफ़ जेबवाली बण्डी पहने है। थोड़ी दूरी पर वहाँ ख़ून से रँगा हुआ वधस्थल...।''

विधिबाला घुटनों के सहारे बैठकर तस्वीर को ध्यान से देखने लगी। ''इन होता विधिपाठकों के कपड़े, लाल धोती, पीली बण्डी और बीच से माँगवाले बाल देखो, और उनके पहने हुए गहने देखो।

''मैं समझ गया कि तुम जानना चाहती हो कि ऐसे चित्र बनाने की दीक्षा मुझे किसने दी। सुनो, छिन्नमस्ता के संन्यासी ने मुझे यह सब सिखाया है। मेरी कॉपी में उन्होंने इन सबके नक़्शे और रंगों के वर्णन लिखे हैं। तुम देखना चाहोगी तो मैं तुम्हें कभी दिखा दूँगा। और यह देखो, आधी बनी तस्वीर।'' रत्नधर उत्साह से खिल उठा। चित्र पर से चादर हटते ही विधिबाला आश्चर्यचकित होकर नौकरानी देव के पास उछलकर पहुँच गयी। यह थी मृत राजा रुद्रसिंह की तस्वीर ! माँ भैरवी, माँ कामाख्या के भक्त राजा रुद्रसिंह का मृत शरीर नाव में चढ़ाने का अद्‌भुत दृश्य रत्नधर ने बनाया था। देवीभक्त राजा रुद्रसिंह के पैताने पर अर्थात् नाव के आख़िरी छोर पर ख़ून से लथपथ कई नर्तकियाँ मरी पड़ी हैं। उनके हाथों में क़ीमती पत्थर जड़े डिब्बे थे। वे कमर में सोने की करधनी और कान में सोने के बूँदे पहने हुई थीं। उन्हें बाँस से दबाकर मारा गया था। हाय ! हाय ! ख़ून, ख़ून और ख़ून ! उसके पास में राजधानी की तरफ़ जाने के लिए तैयार खड़ी है मृत राजा रुद्रसिंह की नाव। कुछ दूरी पर पड़ा है देवी के लिए चढ़ाये गये भैंसे का कटा सिर। सिर्फ़ एक नहीं—कई कटे हुए सिर !

विधिबाला चीख़ पड़ी—''यह कैसा चित्र है !''

रत्नधर ने कहा, ''राजा की मृत्यु रुद्रेश्वर में हुई थी। उनका मृत शरीर गड़गाँव तक ले जाते समय यही दृश्य था। ये जो मरी हुई लड़कियाँ हैं, उनके बारे में लोग

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सोचते थे कि वे जासूस थीं। उन्होंने राजा को बिलकुल अपने वश में कर लिया था। मन्त्रियों ने उन लोगों को बाँस से दबाकर मारने के आदेश दे दिये थे। लोग कहते हैं कि ये लड़कियाँ देवी-भक्त थीं। ये देवीपीठ में भी नृत्य करती थीं।''

''ओह ! ओह ! ओह !!''

नौकरानी देव और विधिबाला ने चित्र को बार-बार ध्यान से देखा। चित्र के रंग अब भी सूखे नहीं थे। लड़कियों की पोशाक में लगे ख़ून के धब्बे देखने में भयानक लग रहे हैं। बर्बरता से मारी गयी लड़कियों के दर्द-भरे चेहरे के भाव रत्नधर की चित्रकला में बिलकुल जीवन्त हो उठे हैं। विधिबाला आँखें बन्द करके चिल्ला उठी, ''हाय, हाय, लड़कियों की कितनी निर्दयता से हत्या की गयी है। सभी बातें जाँचकर देखने के बाद भी ?''

अचानक रत्नधर के हृदय में एक बात प्रतिध्वनित हुई—बलि देने के लिए लाये गये पशु और औरतों के बीच फ़र्क़ ही क्या था ? विधिबाला, तुम वधस्थल में मत जाओ। कह दो कि तुम्हारी यह शादी नहीं हो सकती। यह शादी नहीं हो सकती।

आख़िरी चित्र की तरफ़ इशारा करके विधिबाला ने कहा, ''अब मुझे आख़िरी तस्वीर दिखाओ।''

''नहीं, नहीं, उस तस्वीर को तुम मत देखो। तुम उसे सहन नहीं कर सकोगी।'' रत्नधर बोला।

लेकिन विधिबाला भी छोटी लड़की की तरह ज़िद करने लगी, ''नहीं, मैं देखूँगी।''

''तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा।''

''मैं समझ गयी कि वह फ़िरंगी मेम की तस्वीर है। डरथी ब्राउन की तस्वीर है। मैं उसे छूकर देखूँगी।''

तभी नौकरानी देव भी बोली, ''क्या करती हो ? तुम्हारे भाई लोगों के मन्दिर दर्शन करके वापस आने का समय हो गया है। आओ, अब हम भी वापस चलें।''

विधिबाला दीवार से टिककर बैठ गयी।

रत्नधर इस स्थिति के लिए तैयार नहीं था। अभी कुछ ही दिनों के अन्दर कितनी बातें नीलाचल की गली-गली में फैल रही हैं ! फ़िरंगी महिला के साथ मिलकर छिन्नमस्ता का आदमी बलिप्रथा बन्द करवाएगा, ख़ून की होली बन्द हो जाएगी। ब्रह्मपुत्र की दिशा बदल जाएगी। ज़मीन की परतों में फँसा हुआ ख़ून सूखकर काला पड़ जाएगा और बलि देनेवाले खड्ग में जंग लग जाएगा। लोग कह रहे हैं कि खड्ग में कभी जंग नहीं लगता। लेकिन अब जंग लगा हुआ खड्ग ज़मीन की सात परतों के अन्दर घुसकर अदृश्य हो जाएगा।

नौकरानी फिर से चिल्लायी, ''उठो, उठो—मन्दिर की घण्टी की आवाज़ नहीं

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
सुन रही हो क्या ? उठो जल्दी !

जैसे बहुत दिनों से वह रत्नधर को पहचानती है ! उसकी ज़िद देखकर रत्नधर को आश्चर्य हुआ। यह तस्वीर किसी को दिखाने का मन नहीं था उसका। रत्नधर यह भी ठीक से नहीं जानता कि इस चित्र को क्यों उसने बनाया था। जैसे किसी रहस्यपूर्ण शक्ति से प्रेरित होकर उसने यह तस्वीर बनायी थी। इसे बनाते समय वह खाना-पीना भी भूल गया था। उसके पिता ने खाना खाने के लिए बुलाते समय खीझकर कहा भी था—"क्या फ़ायदा होगा इन चित्रों को बनाकर ? यजमानोंवाला काम शुरू कर दो। शुवालकुचि, जागारा और धुहि के यजमानों के घर जाओ। महादेवी का प्रसाद लेकर जाना और बदले में रुपये-पैसे और कपड़े लेते आना।"

माँ चिल्लायी थी—"उसे जो भी करने का मन है, वही करने दीजिए। बाक़ी लड़कों की तरह उस पर अब भी देवी नहीं चढ़ी[1] है। समय आने पर खुद समझ जाएगा।" रत्नधर से भी उन्होंने कहा था—"बेटा, तू ऐसा चित्र मत बना।"

सभी बातें रत्नधर को याद आने लगीं। इस तस्वीर को बनाते समय उसके आँसू निकल आये थे, हाथ के नाख़ून नुकीले अस्त्र जैसे बन गये थे।

अब वह क्या करे ? विधिबाला अपनी ज़िद पकड़कर बैठी है। अचानक वह फुर्ती से उठा और खींचकर उसने वह कपड़ा हटा दिया जिससे तस्वीर ढँकी हुई थी। सब लोग तस्वीर को आँखें बड़ी करके देखने लगे। वह एक भैंसा-बलि का दृश्य था। छह-सात लोग भैंसे को रस्सी से खींचकर पकड़े हुए हैं, गले में बँधी रस्सी टूटनेवाली है। तस्वीर में यह स्पष्ट दिख रहा था कि किस तरह वह पशु आदमियों के क़ब्ज़े से मुक्त होना चाहता है—उसकी पूँछ के नीचे से गिरी हुई विष्ठा, डरी हुई आँखें और उसके गले में घड़े से पानी डालने का दृश्य ! ओफ़्, जैसे ठण्ड और डर से उसका शरीर काँप रहा है।

विधिबाला चीख़ उठी। ओह्, ओह्, वह ज़िन्दा रहना चाहता है ! वह ज़िन्दा रहना चाहता है ! उफ् माँ...उसे जीने दो—उसे जीने दो !

सीढ़ियों के पास गश खाकर गिर पड़ी विधिबाला।

1. 'देवध्वनि' उत्सव में जवान लड़कों पर देवी का प्रभाव पड़ता है और उस समय वे भगवान का रूप बन जाते हैं—ऐसी मान्यता है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बारह

घर के सामने बँधे भैंसे की आवाज़ से विधिबाला की नींद खुल गयी। वर्षों पुराने एक पलंग में वह अपनी दादी के साथ सो रही थी। उसकी दादी खर्राटे ले रही थी। उसके खुले हुए सफ़ेद बालों से पूरा तकिया ढँका हुआ था। विधिबाला सोचने लगी कि वह कहाँ सोयी है। आँखें मलते हुए उसने चारों तरफ़ देखा। दीवार पर दशभुजा देवी माता की तस्वीर टँगी है। मिट्टी के दीये की धीमी रोशनी में ही उसने देवी दशभुजा का संहार रूप देखा। तस्वीर पर गेंदे की एक बड़ी-सी माला भी टँगी है। ज़रूर उसकी दादी ने कल यह माला देवी को पहनायी होगी।

सभी बातें उसे याद आ गयीं। बेहोश हो जाने के बाद शायद द्वारभांगा-घर से कोई उसे उठाकर यहाँ लाया और फिर इस बड़े पलंग पर सुला दिया था। उसने फिर से भैंसे की आवाज़ सुनी। तालाब के किनारे से कोई उसे ले आया है और घर के पिछवाड़े छप्पर के नीचे बाँध दिया है। शायद रात को बारिश हुई थी। विधिबाला का दिल धड़कने लगा। उसके पिता ने एक बड़ी दुधारू भैंस ख़रीदी थी, उसका बच्चा है यह। दरअसल, उसके पिता इसे बेचना चाहते थे। वह भैंस विधिबाला के छोटे भाई की बीमारी के समय ख़रीदी गयी थी। लेकिन छोटा भाई नहीं बच पाया। डॉक्टरों को भी पता नहीं चला कि उसे तपेदिक हो गया था।

भैंसा लगातार बै...बै... कर रहा है। हाय, हाय—वह अब तक अपनी माँ के पास ही था। अब उसकी शादी तय होने के कारण ही—सिर्फ़ इसी कारण...। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। वह मन-ही-मन माँ दशभुजा से प्रार्थना करने लगी कि देवी उसे ही मौत दे दे लेकिन भैंसे की बलि रुक जाए। ओह ! कैसे बार-बार बिबिया रहा है। वह पशु क्या सोच रहा होगा ? क्या उसे किसी की याद आ रही होगी ? क्या पास ज़ाकर एक बार उसे देख आये वह ? उस अधेड़ उम्र के आदमी का गुण्डा-सा चेहरा उसे एक क्षण के लिए याद आया। उसी आदमी के साथ उसका ब्याह होगा। पहले एक औरत के साथ एक ही बिस्तर में दस साल तक सोया है वह आदमी ! विधिबाला मुँह खोलकर किसी से कुछ नहीं कह सकी है। कितनी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सारी बातें वह कहना चाहती है। एक तरह का अपराधबोध उसे लगातार शूल की तरह चुभता रहता है। लेकिन वह गुण्डा-सा आदमी...विधिबाला को याद है कि उसके शरीर का जो भी हिस्सा वह देखता था—लगता था जैसे उस हिस्से का मांस वह निगल जाएगा।

विधिबाला बिस्तर से उठ गयी। किसी को पता नहीं चला। धीरे-धीरे आगे बढ़कर उसने दरवाज़े की कुण्डी खोली और पिछवाड़े के लकड़ी के रेलिंगवाले बरामदे में खड़ी हो गयी। चाँद की हल्की रोशनी में उसने छप्पर के नीचे बँधे भैंसे को देखा। दूर कहीं हुक्-हुक् आवाज़ से कोई बोल रहा है। शायद पासवाले जंगल में हिरण के बोलने की आवाज़ है। अम्बूवासी के लिए आये, हर जगह डेरा डालनेवाले भक्तों की खाँसी की आवाज़ और भंग पीकर मस्त रहनेवाले तान्त्रिकों की हुंकार भी बीच-बीच में सुनाई दे रही है लेकिन इतनी आवाज़ों के बावजूद चारों तरफ़ एक अजीब सूनापन है।

विधिबाला मिट्टी का दीया उठाकर बाहर निकल आयी। छप्पर के पास जाकर वह भैंसे के पास खड़ी हो गयी। अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से उस भैंसे ने विधिबाला को देखा—विधिबाला की आँखों के सामने ही वह बड़ा हुआ है। उसके सींग भी अच्छी तरह से नहीं निकले हैं। पिछले साल विधिबाला के पिता ने छोटे बेटे के ठीक होने के लिए चढ़ाया भैंसा उसके सींग देखकर ही ख़रीदा था। टूटे सींगोंवाला भैंसा देवी के लिए अयोग्य माना जाता है। एक अजीब संकल्प के साथ विधिबाला अपने भाई के स्वस्थ होने की कामना करती हुई भैंसे के कटे सिर पर दीया जलाकर पूरे दिन और एक रात देवी के सामने खड़ी रही थी। उसके देवी-भक्त पिता क्या नहीं कर सकते ? अपनी आँखों के सामने बड़े हुए इस भैंसे को बलि के लिए ले आये हैं। गाँव में एक बार रास्ता भटककर वह कैसे बै...बै...करता हुआ पूरा गाँव घूमा था और फिर घर पहुँचकर उसने पूरे घर की परिक्रमा की थी, यह भी विधिबाला को अच्छी तरह से याद है। ओह, फिर से उसने विधिबाला की तरफ़ सिर उठाकर देखा है—जैसे कह रहा है, विधिबाला के लिए ही उसकी बलि होगी, उसकी हत्या की जाएगी—सिर्फ़ विधिबाला के लिए ही...!

भैंसे के बिलकुल पास पहुँचकर विधिबाला ने उसकी पीठ पर हाथ रखा। उसकी पीठ पर बारिश का पानी गिरा था, इसलिए पीठ बिलकुल भीगी हुई थी। विधिबाला ने साड़ी के आँचल से उसकी पीठ पोंछ दी। उसका शरीर जैसे काँप-सा गया और वह पहले की तरह विधिबाला को देखता रहा।

अचानक कैसा उदास-सा होने लगा विधिबाला का मन ! उसकी आँखों से झर-झर पानी बहने लगा। हाथ का दीया नीचे रखकर वह बरामदे की नीचेवाली सीढ़ी पर आ बैठी। क्या वह भाग जाए ? डरथी ब्राउन जिस तरह गृहस्थी छोड़कर संन्यासी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
के आश्रय में रहने लगी है, उसी तरह वह भी कहीं चली जाए ?

घुटनों में सिर टिकाकर वह सिसक-सिसककर रोने लगी। क्या वह सचमुच कहीं चली जाए ? भैंसा चुपचाप बिना कोई आवाज़ किये खड़ा था जैसे किसी के स्नेह का स्पर्श उसे मिल रहा है, जैसे कोई माँ का हृदय उसे समझ रहा है। दूर से ब्रह्मपुत्र का गर्जन सुनाई दे रहा है। चाँद की फीकी रोशनी में इस जगह से ब्रह्मपुत्र रंग उतरे हुए कपड़े के टुकड़े जैसी दिख रही है। अचानक पासवाले आम के पेड़ से एक बड़ा-सा उल्लू उलु...लु...आवाज़ करता हुआ विधिबाला के सिर के ऊपर से उड़ गया। मिट्टी के दीये की रोशनी में विधिबाला के शरीर का एक अंश दिखाई दे रहा है। उसकी पीठ में खुले पड़े लम्बे बालों पर कहीं-कहीं दीये की रोशनी पड़ रही है। जिससे वे साँप की खाल की तरह चमक रहे थे।

ठीक उसी समय सामनेवाला दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनाई दी। सिर उठाकर उसने देखा कि सामने रत्नधर खड़ा है।

"हे राम, इस अँधेरे में क्यों बैठी हो ?"

विधिबाला चुप रही।

"क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है विधिबाला ?"

विधिबाला रत्नधर को देखती रही। बोली, "मेरा मन ठीक नहीं है।"

"मन ठीक नहीं है ? क्यों ?" रत्नधर विधिबाला के बिलकुल पास आकर खड़ा हो गया। वह हड़बड़ाकर खड़ी हो गयी। कहने लगी, "वहाँ चलो, सीढ़ियों के नीचे—मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ।"

"क्या बात है ?"

"हाँ, कुछ कहना है।"

दोनों सावधानी से नीचे उतर गये। डूमर के पेड़ के नीचे आकर दोनों रुक गये।

"सुनो, लोग कहते हैं कि तुम बलि के लिए लाये हुए पशुओं को चोरी से खोल देते हो और चुपचाप कहीं छोड़ आते हो ? मेरे नाम से लाये इस भैंसे को भी तुम इसी तरह कहीं छोड़ आओ। मैं उसे बलि देते हुए नहीं देखना चाहती। मैं सारी-सारी रात जगी रहती हूँ, मुझे नींद नहीं आती। वह मेरी आँखों के सामने ही बड़ा हुआ है। उसका राख जैसा रंग धीरे-धीरे काले होते हुए मैंने देखा है। मैं उसके लिए दाना-पानी लेकर उसे 'मैना' 'मैना' कहकर पुकारती हूँ तो वह तुरन्त मेरे पास आ पहुँचता है। यह बात मैं अभी तुम चाहो तो साबित करके दिखा सकती हूँ।"

रत्नधर ने कहा, "नहीं, नहीं, मैं तुम्हारी बातें मान रहा हूँ।"

"सुनो, मैं उसके पास से गुज़रती हूँ तो वह सिर उठाकर देखता है। उसकी दोनों आँखें तुमने देखी हैं ? हर समय एकटक मुझे देखता रहता है। देखो, देखो—" चेतना खोनेवाले लोगों की तरह विधिबाला ने रत्नधर का हाथ कसकर पकड़ लिया

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
और बाँधकर रखे भैंसे के पास खींचकर ले आयी। ''देखो, देखो...।''

भैंसा सचमुच एकटक विधिबाला को ही देख रहा था। उसकी नाक से आवाज़ निकल रही थी और पानी की बूँदें भी। विधिबाला अपने-आप में बिलकुल नहीं थी। उसने फुर्ती से झुककर रत्नधर के पैर पकड़ लिये।

रत्नधर पीछे हट गया। वह बिलकुल किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। फिर कहने लगा, ''तुम्हें थोड़ा-सा भी डर नहीं लग रहा है ?''

''नहीं, मुझे बिलकुल डर नहीं लग रहा है।''

''बिलकुल ? तुमने शास्त्र नहीं पढ़ा है क्या ? सुना था कि तुम संस्कृत पढ़ सकती हो ?''

''नहीं, मैंने शास्त्र नहीं पढ़ा है। जो शास्त्र ऐसे विधान देते हैं कि जानवरों की बलि हो—मुझे नहीं पढ़ना है। संस्कृत को देवभाषा कहा जाता है, इसके बावजूद मैं वैसा शास्त्र नहीं पढ़ूँगी।''

रत्नधर ने ज़ोर देकर कहा, ''विधिबाला, माँ छिन्नमस्ता के प्रति भक्ति रखना। शास्त्र पढ़ना, न पढ़ना अलग बात है। कालिका-पुराण में जिस तरह से लिखा है कि भैंसे या बकरे को तीन प्रकार से बाँधकर उनके उत्तम अंग को देवी के नाम से अर्पण करना चाहिए और शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को भैरव के नाम से भैंसे क़ा ख़ून उत्सर्ग करना चाहिए। ठीक उसी तरह देवी ने यह भी कहा है कि 'कूष्माण्डभिक्षुदण्डश्च मद्यमासमेव च। एते बलि समाः प्रोक्तास्तप्तौ छागसमाः सदा...' अर्थात् कम्हड़ा, गन्ना और मदिरा का उत्सर्ग भी देवी के लिए काले बकरे के बराबर है। स्वयं देवी ने यह कहा है कि 'तुम डरो नहीं !' जिस शास्त्र को आँखों के सामने रखकर सभी काम किये जाते हैं, उसी शास्त्र में लिखा है—'जीवहत्या के बदले अन्य नैवेद्य भी देवी ग्रहण करती है। रक्त के बिना पूजा नहीं होगी, यह बात देवी ने नहीं कही है। किसी जगह पर यह बात नहीं लिखी है।'

''क्या सचमुच ऐसा नहीं लिखा है ?''

''मैंने कहा न ! नहीं लिखा है। कालिका-पुराण के सड़सठवें अध्याय का पच्चीसवाँ श्लोक पढ़ना। कुम्हड़ा, गन्ना और मदिरा देवी बकरे के ख़ून की तरह ही ग्रहण करती है। जीवहत्या के लिए हल्ला मचानेवालों को इस तरह के विकल्प के बारे में कहा जा सकता है। याद रखो, कालिका-पुराण का पच्चीसवाँ श्लोक पढ़ना।

विधिबाला आश्चर्य से रत्नधर को देखती रह गयी। उसका माथा बार-बार ठनकने लगा। उसने अपने ही अन्दर सोयी किसी शक्ति का आविष्कार किया। रत्नधर की तरफ़ देखकर वह बोली, ''तुम लाख बार कहोगे तब भी मैं वैसा शास्त्र नहीं पढ़ूँगी। जिस शास्त्र से जीवों को दुःख-दर्द मिलता है, वह शास्त्र मैं कभी नहीं पढ़ूँगी।''

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

"विधिबाला !" रत्नधर चीख़ उठा।

"रत्नधर, मैं अपने सीने में जमा शब्दों से गीतों की रचना करूँगी और देवी को अर्पण करूँगी। मेरे सीने में जो पत्थर जमा हैं उन्हें चूर-चूर कर फूलों से मिलाऊँगी और देवी के चरणों में रख दूँगी।"

तभी अन्दर से दादी के खाँसने की आवाज़ सुनाई दी। विधिबाला पीछे हटकर सीढ़ी पर चढ़ गयी। वे दोनों जानते हैं कि इस तरह आधी रात को कोई भी उन्हें एक साथ देख लेगा तो बहुत बुरा होगा।

विधिबाला ने कहा, "सुनो रत्नधर, मैं कल भी यहाँ आऊँगी।"

श्मशान में से सियार की 'हुआ-हुआ' आवाज़, रात को घूमनेवाली चिड़ियों की चीं-चीं और अम्बूवासी के लिए यहाँ-वहाँ से आये तान्त्रिकों की विचित्र आवाज़ें सुनाई देने लगीं। अपने पूरे शरीर को लोहे की ज़ंजीरों से बाँधकर रखनेवाले दो तान्त्रिकों की ज़ंजीरों की झनझनाहट ने भी इस आधी रात की निर्जनता को तोड़ दिया।

रत्नधर के हाथ में मिट्टी के दीये की रोशनी हवा में काँप उठी।

क्या कहती है यह लड़की ? ख़ून का खेल खेलनेवाला शास्त्र नहीं पढ़ेगी ? क्या कहती है ? क्या कहती है ?...

एक बार खाँसने के बाद अब दादी के कमरे से और कोई आवाज़ नहीं आयी। विधिबाला सीढ़ियाँ उतरकर एक बार फिर से भैंसे के पास आयी। भैंसे ने उसे पहचान लिया। उसने कान खड़े किये और बड़ी-बड़ी आँखों से विधिबाला को देखने लगा। जब वह बच्चा था तो उसके पूँछ खींचने पर कैसे भाग खड़ा होता था ! दादी चिल्लाती थी—"ए लड़की ! भैंस के बच्चे के साथ क्या कर रही है तू ?"

विधिबाला ने कहा, "मैना-मैना नाम से पुकारने पर कैसे मेरी तरफ़ सिर उठाकर देखता है और पास आना चाहता है। देखो रत्नधर ! ओफ ! यह देखो—देखो रत्नधर, कैसे मुझे देख रहा है ! वह समझता है। सब-कुछ समझता है।"

दोनों ने दीये की रोशनी में भैंसे की ताँबे के रंग की आँखें देखीं। जैसे वह कुछ कहना चाहता है, कुछ कहना चाहता है !

"रत्नधर, ये जानवर सब समझते हैं। जैसे 'मोहन' नाम से बुलाने पर भैरवी के तालाबवाला कछुआ किनारे आ जाता है, वैसे ही माँ का दूध पीते समय भी अगर मैं 'मैना' पुकारती थी तो वह मुझे सिर उठाकर देखता था। ये सब समझते हैं, रत्नधर ! ओह !"

सीढ़ी में बैठकर वह सिसक-सिसककर रोने लगी। किंकर्तव्यविमूढ़ रत्नधर एक ही जगह पर बुत बनकर खड़ा रहा। क्या करे वह ? क्या करे ? उसने आसमान में देखा। एक टूटा तारा गिर रहा था।

रातवाली एक चिड़िया 'हुक् हुक्' आवाज़ करती हुई रत्नधर के सिर से लगभग

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टकराकर उड़ गयी। किसी भक्त की आवाज़ सुनाई दी—माँ माँ !'

क्या विधिबाला के सिर पर हाथ रखकर वह कुछ कहे ? जो बातें वह इतने दिनों से कहना चाहता था, क्या अभी कह दे ? इस तरह विधिबाला से फिर अकेले मिल सकेगा वह ? रत्नधर के साथ पहाड़ी के नीचे इन्तज़ार करेंगे और भैंसे को वह छोटे रास्ते से भगाकर ले जाएगा। क्या यही बात कह दे ? कहना चाहिए क्या ? और वह मन की बातें ?...

फिर से दादी के खाँसने की आवाज़ सुनते ही विधिबाला हड़बड़ाकर खड़ी हो गयी। कमरे में जाने से पहले वह फुसफुसाकर रत्नधर से कह गयी, "मैं कल भी इसी समय यहाँ आकर बैठूँगी। मुझे नींद नहीं आती। मुझे बिलकुल नींद नहीं आती।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेरह

ऊपरी और निचले असम के संस्कृत गुरुकुलों के छात्र और यहाँ तक कि दयाराम शास्त्री, वंशीराम शर्मा और वृन्दावन केउर नामक छात्र एकजुट होकर श्मशान में बलिप्रथा रोकने पर बातचीत कर रहे थे। सभा के अन्त में वे विशालकाय जामुन के पेड़ के नीचे आकर इस उम्मीद से खड़े हो गये कि शायद छिन्नमस्ता के जटाधारी की नाव आ जाय।

क्या डरथी ब्राउन ठीक-ठाक वापस आ पाएगी ? वहाँ से भी वह घायल होकर तो नहीं आएगी ? स्वयंसेवी के नाम से कितने ही लोग घूम रहे हैं। पानी और ज़मीन के रास्ते से वे आ-जा रहे हैं--कोई जासूस अगर वहाँ तक पहुँच जाए तो ? क्या पता ? क्या भरोसा ? कभी सूर्य न डूबनेवाले साम्राज्य की मुट्ठी में है आज यह देश। स्वर्गीय महारानी विक्टोरिया के नाम से कितनी ही कहानियाँ प्रचलित हैं ! किसी भक्त ने कहा था कि महारानी मर ही नहीं सकती। वे कहते थे कि महारानी का जन्म और मृत्यु रोज़ होती है। सुबह वे लड़की रहती हैं, दोपहर में जवान होती हैं और शाम को बूढ़ी होकर अँधेरे में समा जाती हैं। अगले दिन वे फिर से जन्म लेती हैं। क्या नहीं कर सकते दुनिया को जीतनेवाली इस जाति के लोग ! हाँ, क्या नहीं कर सकते। छिन्नमस्ता का संन्यासी जब फ़रियाद लेकर इतने सारे दस्तख़तों के साथ कामरूप ज़िले के कलेक्टर के पास हाज़िर होगा तब तो देवीपीठ में ख़ून बहना ज़रूर बन्द हो जाएगा।

सभा के अन्त में लोग हमेशा इस जामुन के पेड़ के नीचे खड़े होते थे। आज भी हुए हैं। पेड़ से गिरे हुए जामुन के रस से नीचे की ज़मीन बिलकुल भीगी रहती है। धूप निकलने पर जामुन के यही दाग़ सूखकर कर्कश बन जाते हैं और तब ये दाग़ वधस्थल के ख़ून के दाग़ जैसे लगते हैं। सभा में भाग लेनेवाला हर लड़का आँखें बड़ी-बड़ी करके ये दाग़ देखता है और जहाँ तक सम्भव हो, ज़मीन के उस हिस्से में पैर न रखने की कोशिश करता है। चप्पू की 'छप् छप्' आवाज़ सुनते ही उनके कान खड़े हो जाते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

छप् ! छप् ! छप् ! छप् !!

कितनी ही जगहों से व्यापारियों और यात्रियों की नावें आती रहती हैं। नदी के घाट पर हर समय शोरगुल होता रहता है। बलि के लिए लानेवाले जानवरों का चीख़ना-चिल्लाना और मन्दिरवाले घाट तक पहुँचते ही गौड़ की तरफ़ से आती हुई महिला-भक्तों की उलुध्वनि से पूरी जगह मुखर रहती है।

गुरुकुल अैर कॉलेजों के छात्रगण घाट पर खड़े होकर लम्बे समय तक प्रतीक्षा करते रहे। प्रचण्ड हुंकार के साथ ब्रह्मपुत्र बह रही है। पिछले दो दिनों से रात के आख़िरी पहर में मूसलाधार बारिश हो रही है। ब्रह्मपुत्र का यह संहार रूप देखकर और गर्जन सुनकर लगता है जैसे कोई राजमहल टूट रहा है, कोई साम्राज्य धँस गया है।

कुछ दूरी पर एक-दो नावें दिख रही हैं। ऐसा लग रहा है जैसे कुछ खम्भे नदी में तैर रहे हैं। कटे हुए ताज़े मांस की तरह एक कच्ची-सी गन्ध चारों तरफ़ फैली हुई है। यह ब्रह्मपुत्र की अपनी गन्ध है।

कॉटन कॉलेज के एक छात्र ने कहा, "शाम को एक नाव आएगी। शायद उसी से ख़बर भेजेंगे वे।"

तब तक नाव से उस पार जाने के लिए भक्तों का एक दल जामुन के पेड़ के नीचेवाले पत्थरों पर बैठ गया। उनके माथे पर सिन्दूर और रक्त का तिलक मिलकर एक-सा हो गया है। देवी के रक्तवस्त्र के टुकड़े उन्होंने बड़ी सावधानी से अन्दरवाली जेब में छुपाकर रखे हैं। उनके हाथों में लोटा, कपड़े की पोटलियाँ और फूलों के हार हैं।

ठीक उसी समय तेज़ क़दमों से आते विधिबाला के भाई का मित्र डम्बरू और रत्नधर नाव का इन्तज़ार करते लोगों के पास आकर रुक गये। डम्बरूधर शाण्डिल्य गोत्र का ब्राह्मण है। उसके पूर्वज वैष्णवी सन्त महापुरुष दामोदर देव के शिष्य थे। वे देवीभक्त थे लेकिन बलिविधान के घोर विरोधी थे। इसके बावजूद उनके रिश्तेदार आजकल साल में दो-तीन बार देवी के नाम से बलि चढ़ाते हैं।

किंवदन्ती है कि राजा परीक्षित के दूत को एक बार दामोदर देव ने प्रेरक वाणी सुनायी थी कि हर चीज़ में ईश्वर विराजमान है इसलिए उन जानवरों और चिड़ियों में भी वे विराजमान हैं, जिनकी बलि चढ़ाई जाती है। बलि काटने का मतलब ईश्वर को काटने जैसा होता है। उन्होंने फिर कहा था, 'मेरी गर्दन बलि की गर्दन से ऊपर है। अगर दम है तो पहले उसे काटो।'

डम्बरूधर और रत्नधर जामुन के नीचे बाक़ी भक्तों के साथ खड़े हो गये। दोनों ने मोटी सूती धोती और ढीली कमीज़ पहन रखी थी। रत्नधर के कन्धे पर लटके झोले में दस्तख़तवाले खाते थे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

रत्नधर हर व्यक्ति के पास आया और कहा, "आप लोग शायद समझ रहे हैं कि हम किसलिए दस्तख़त ले रहे हैं। आप लोग भी अपना क़ीमती दस्तख़त हमें दीजिए। दस्तख़त देखने के बाद गोरे साहब हमारी सहायता के लिए आगे आएँगे।" कन्धे पर लटके झोले से दवात और क़लम भी रत्नधर ने निकाल लिया।

घुटनों पर सिर टिकाकर बैठे हुए लोगों में से दो-एक झिझकने लगे। उनके माथे पर ख़ून और सिन्दूर के टीके मिलकर विचित्र से हो गये थे। वैसे दो-चार लोगों के झिझकने के बावजूद कुछ नवयुवक खड़े हो गये। रत्नधर दवात पकड़ता रहा। वे रत्नधर के हाथ से क़लम लेकर जल्दी-जल्दी दस्तख़त करने लगे। माथे पर सिन्दूर और रक्त के तिलक लगाये आदमियों की क्रुद्ध आँखों को नज़रअन्दाज़ करते हुए सभी नवयुवकों ने दस्तख़त कर दिये। वे फूँक-फूँककर कॉपी की स्याही सुखाने लगे। बैठे हुए यात्रियों ने अपने सीने पर हाथ रखे। देवी का रक्तवस्त्र ठीक जगह पर है या नहीं, जैसे वे उसका अन्दाज़ा लगा रहे थे। उनके कानों में अब तक पुजारियों की आवाज़ प्रतिध्वनित हो रही है—"सुनिए, देवी के रक्तवस्त्र धारण करने पर सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाएँगी। आप लोग घर की औरतों को अपनी बायीं बाँह पर यह वस्त्र बाँधने के लिए कहिएगा। पुरुषों को दाहिने हाथ में यह वस्त्र बाँधना होगा। सुनिए, अच्छी तरह से सुन और समझ लीजिए।"

अब तक एक नाव घाट में लग गयी थी। यात्रियों का एक दल जल्दी-जल्दी नाव में चढ़ गया। अब सब लोगों ने नये आये यात्रियों के दल को देखा। वे गाना गाते हुए ढोलकी बजाकर ऊपर से नीचे उतर रहे थे। इन यात्रियों में ज़्यादातर जवान लड़कियाँ थीं। उनके साथ मृदंग बजाते हुए लम्बे बालवाले और औरतों की तरह भाव-भंगिमावाले दो विचित्र चेहरों के आदमी थे। वे आँखों में काजल, गले में फूलों का हार और पैरों में पायल पहने थे। रत्नधर को समझने में देर नहीं लगी कि यह राजशाही या बाकुरा की वेश्याओं का दल है। ज़रूर अम्बूवासी के मेले में आये होंगे। बड़ी-बड़ी फूलोंवाली साड़ी पहने और माथे पर सिन्दूर तथा रक्त का तिलक लगाये दो लड़कियाँ कूदती हुई नाव पर चढ़ गयीं। उन्हें शायद कुमारी-पूजा के लिए लाया गया था।

डम्बरूधर नाव में चढ़नेवाली जवान लड़कियों को आँखें फाड़कर देखने लगा। वे लड़कियाँ एक-दूसरे को धक्का देती और जल्दी-जल्दी नाव में चढ़ने की कोशिश कर रही थीं। तभी उनमें से एक लड़की पानी में गिर पड़ी। कन्धे पर मृदंग लेकर आनेवाले दो आदमियों ने अपने मृदंग किनारे पर रख दिये और तेज़ी से पानी में उतरकर, डूबती हुई लड़की को निकालकर, किनारे पर खड़ा कर दिया। बाक़ी लड़कियाँ हल्ला-गुल्ला करती उसके गीले कपड़ों को निचोड़ने लगीं। अब सभी लोग शोर मचाते नाव में चढ़ गये।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस कोहराम के बीच भी जवाकुसुम तेल और वेश्याओं के शरीर की एक तेज़ गन्ध रत्नधर और डम्बरूधर ने महसूस की। नाव में चढ़ने से पहले मृदंग बजानेवाले दोनों आदमी सावधानी से राजहंस और कमल के फूल की कढ़ाईवाले अपने झोलों को झाड़ने लगे।

रत्नधर ने डम्बरू से कहा, "डम्बरू, इन विचित्र झोलों में वे क्या लाये थे, तुम जानते हो ?"

"क्या लाये थे ?"

सिर्फ़ डम्बरूधर ही नहीं, हँसती-खिलखिलाती और शोर-मचाती वेश्याओं को सारे यात्री बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे।

"कहो, कहो, वे क्यों फुलकारीवाले झोलों को इस तरह से झाड़ रहे थे ?"

"उन झोलों में पूजा के लिए ज़रूरी सामान पंचगव्य[1], बारिश का पानी, ओस की बूँदें, शंख का पानी, अष्टकलश का पानी, साँड़ के चलनेवाले रास्ते का पानी, सुवर्ण-शृंगार[2] का पानी और बहुत सारा सामान रखा जाता है। इसके अलावा वेश्याओं के आँगन की मिट्टी की भी ज़रूरत पड़ती है। वही मिट्टी थी झोले में।"

डम्बरूधर जैसे चीख़ पड़ा, "वेश्याओं के आँगन की मिट्टी ?"

रत्नधर ने कहा, "कुमारी-पूजा के समय वेश्याओं की लड़कियाँ भी जगन्माता का रूप धारण कर लेती हैं।"

---

1. गाय के दूध और उसी दूध से बना दही, घी, गाय का मूत्र और गोबर को एकसाथ पंचगव्य कहते हैं।
2. सोने का बना लोटा, जिसमें टोंटी लगी हो।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौदह

रत्नधर ने पुलु ढोलकिया को आसपास घूमकर देखा, पर नहीं दिखा। ये सारे लोग महखुलि और बोरका की तरफ़ के लोग हैं।

रत्नधर सिर झुकाकर तेज़ी से चलने लगा। उसने सुना था कि पुलु का बेटा मर गया है। तब से पुलु दिन-रात अफीम खाता और कहीं भी पड़ा रहता है। विधिबाला का चेहरा बार-बार उसके मन में उभरने लगा। विधिबाला के आँसुओं ने उसका हृदय भिगो दिया था।

बारिश के बाद रास्ते के दोनों किनारों पर नये-नये पौधे उगने लगे हैं। उरियाम और सतियाना पेड़ों के सहारे लटकी कुछ जंगली लताएँ डम्बरू और रत्नधर के ऊपर गिरने लगी थीं। वे धूमावती उर्फ कोटेश्वरी पीठ की तरफ़ जा रहे थे। डम्बरूधर कुछ विशेष मन्दिरों को देखना चाहता था। उन मन्दिरों के नाम वह एक छोटी-सी नोटबुक में लिखकर लाया था। उसके पिता ने उसे धूमावती पीठ के दर्शन करने के लिए कहा था। पिता की आज्ञा से वह कालापहाड़ द्वारा खण्डित की गयी और ज़मीन में दबी मूर्तियों को देखने आया था।–''लेकिन क्या सचमुच कालापहाड़ कामाख्या में आया था ?''

रत्नधर ने ज़ोर देकर कहा, ''आया था, आया था। ज़मीन के नीचे से निकाली गयी मूर्तियों के हाथ-पैर किसने तोड़े फिर ? आक्रमणकारी 'मान' मन्दिर के आसपास ज़रूर घूमते थे लेकिन मन्दिर का कोई नुक़सान नहीं किया था। बल्कि उन्होंने तो मन्दिर का शुल्क बढ़ाया था। और औरंगज़ेब ? देवी का सम्मान करके उसने विधि पाठकों के लिए ब्रह्मपुत्र का एक हिस्सा बिना शुल्क लिये छोड़ दिया था। कैप्टन वेल्स की विशाल सेना के दल ने भी मन्दिर को नहीं छुआ था। सुना है कि उन्होंने वहाँ के एक पेड़ को भी नहीं काटा था।''

डम्बरू ने पूछा, ''फिर देवी-मन्दिर में किसने हाथ लगाया ? कालापहाड़ आया था, इसका कोई ठोस सबूत है क्या ?''

रत्नधर ने कहा, ''हाँ सबूत है। गोरे साहब लिखकर गये हैं। पाँच सौ साल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहले की बात है। इस्लाम धर्म ग्रहण करनेवाला कालापहाड़ बंगाल के शासक सुलेमान का सेनापति था। राजा नरनारायण के मन्त्री चिलाराम को हराने के बाद कालापहाड़ उन्हें खदेड़कर कामाख्या पहुँचा था। सुना है कि सुलेमान का सेनापति पूरे असम को ध्वंस कर देना चाहता था। कितनी ही कहानियाँ हैं ! इतिहास की तुलना में किंवदन्तियों की शक्ति हमेशा ज़्यादा साबित हुई है।

''किंवदन्तियाँ लोगों को आकर्षित करती हैं।'' डम्बरू ने कहा, ''जानते हो रत्नधर, कल हम लोगों ने यात्रा[1] में कालापहाड़ की मुसलमान बेगमवाले पात्र का ज़बरदस्त अभिनय देखा था। इस बेगम के बारे में किसी इतिहासकार ने नहीं लिखा है। लेकिन उस समय ऐसा लगता था कि अभिनय करनेवाले लड़के ने उस चरित्र को अमर कर दिया।''

रत्नधर ने पूछा, ''वह लड़का कहाँ का रहनेवाला है ?''

''शायद गौड़ की तरफ़ का है।''

''गौड़ का ?''

''बांग्ला से मिलीजुली भाषा बोल रहा था। वैसे सभी समझ रहे थे। एक-दो बार वह फारसी में भी बोला था।''

दोनों आगे बढ़े। धूमावती मन्दिर चारों तरफ़ से जंगली झाड़ियों से भर गया है। बन्दरों का एक झुण्ड मन्दिर के पासवाले डूमर के पेड़ पर बैठकर कोहराम मचा रहा है। दोनों आगे बढ़कर मन्दिर के आँगन में खड़े हो गये। आसमान काले बादलों से भरा हुआ था। कभी भी बारिश आ सकती है।

रत्नधर ने सिर उठाकर आसमान को देखा। उसे लगा, जैसे वह आसमान नहीं, बलि में कटे किसी धुएँ जैसे रंग के भैंसे की खाल है—किसी ने सूखने के लिए खींचकर फैला रखी है !

''देखो डम्बरू, यहीं से बनी थीं द्वारभांगा राजा के चढ़ने-उतरने के लिए लकड़ी की सीढ़ियाँ !''

दोनों आगे बढ़े।

''सुनो डम्बरू, दलै[2] बनने के लिए कचहरी तक दौड़धूप करना सामान्य बात है। लेकिन लकड़ी से बनी इन सीढ़ियों के लिए सब-आर्डिनेट जज के पास दलै लोगों का गुहार करना भी कौतूहल पैदा करता था। बहुत सालों तक इन सीढ़ियों के लिए झगड़े होते रहे। इन्हीं सीढ़ियों पर चढ़कर राजा नीचे तक नज़र डालते थे।''

''नीचे किसको देखते थे ?''

रत्नधर बहुत गम्भीर व्यक्ति था। वह पागलपन का शिकार हुआ था लेकिन

---

1. एक तरह का स्थानीय नाटक जो रात-भर चलता है।
2. प्रधान पुरोहित या मन्दिर का मुख्य कर्मचारी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बातचीत में हमेशा अपनी उम्र से बड़े व्यक्ति की तरह व्यवहार करता था। उसने डम्बरूधर के पास जाकर कान में फुसफुसाते हुए बताया कि द्वारभांगा राजा क्यों लकड़ीवाली सीढ़ियों से इतना आते-जाते थे और किसे बार-बार देखते थे। रत्नधर की बातें सुनते हुए डम्बरू की आँखें पहले एक बार छोटी और फिर अचानक बड़ी हो गयीं। मानो उसने कोई अद्‌भुत बात सुनी हो।

डम्बरूधर पूरी जगह को ध्यान से देखने लगा। मन्दिर की किस जगह से हिरण की खाल की सफ़ेद बिन्दियों की तरह ब्रह्मपुत्र सफ़ेद नज़र आता है, किन जगहों पर विशालकाय पेड़ों से लटकती जंगली बेलों में भर-भरकर रंगीन फूल खिलते रहते हैं और जंगल के बीच से बहते झरने के किनारे कहाँ पर द्वारभांगा राजा पण्डे की उस सफ़ेद फूल जैसी गोरी जवान बेटी से मिले थे ! अपनी पत्नी न हो तो सिंहासन पर नहीं बैठा जा सकता। किसने सिंहासन पर एकाकी बैठनेवाले राजा के पास पत्नी बनाकर उस पूर्णयौवना स्त्री को बैठाया था ? ये किंवदन्तियाँ इतिहास के पन्नों पर ख़ून से लिपी हुई हैं। इन पन्नों को खुरचकर अन्दर की कहानी जानने की इच्छा डम्बरू में नहीं है। कोई भी नहीं जानना चाहता।

लकड़ी से बनी सीढ़ियों को लेकर पुरोहितों के बीच हुए झगड़े, अन्नपूर्णा देवी के मन्दिर में अपने हिस्से का काम और अधिकार-प्राप्ति के लिए मुक़द्‌दमे की कहानी, सन् 1842 में अँग्रेज़ अफ़सरों के हाथों से मन्दिर का विवाद सिविल कोर्ट में जाने की बातें, पानी के शुल्क के लिए हुए झगड़े और नाबालिगों के बीच ज़मीन तथा मन्दिर के काम को लेकर हुए मुक़द्‌दमे—इन सब घटनाओं को डम्बरूधर अच्छी तरह से जानना चाहता है। अपने पूर्वजों और दादाजी के मुँह से वह ये बातें बचपन से ही सुनता आ रहा है।

सन् 1873 में कर्नल एण्ड्रज़ की सज़ा के बारे में भी डम्बरू ने सुना था। सेवाईत,[1] चण्डीपाठक[2] और दलैयों ने मिलकर बड़े पुरोहित के अधिकार कम करने के लिए मुक़द्‌दमे किये थे। कैप्टन राउलट् ने अदालत में इसकी सुनवाई की और आख़िर में 'आसाम वेली डिस्ट्रिक्ट' की अदालत में सब-आर्डिनेट जज की सुनवाई के बारे में डम्बरूधर ने अख़बारों में पढ़ा था। न्यायिक आयुक्त की राय के बारे में भी उसे याद था।

हाँ, यह सच है कि उत्तराधिकार से कोई भी कामाख्या पीठ का दलै नहीं बन सकता। पुरोहितों के मतदान से ही यह पद मिल सकता है। न्यायिक आयुक्त की राय के अनुसार अँग्रेज़ सरकार मन्दिर के पूजा-पाठ और दान-दक्षिणा में हाथ नहीं

1. मन्दिर की ज़मीन में रहकर पूजा करनेवाले लोग।
2. चण्डीपाठ करनेवाले पुरोहित।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

डालेगी। सिर्फ़ निर्वाचित अधिकारी ही भ्रष्टाचार दूर करनेवाले काम करेंगे। धर्मोत्तर[1] ज़मीन और निःशुल्क पानी का इस्तेमाल करनेवाले पुजारियों में कोई भेद नहीं रखा गया। भोग-प्रसाद, दान-नैवेद्य और पंचामृत में हेरफेर न होने देने के लिए निर्वाचित अधिकारी एजेण्ट की तरह काम करेंगे।

न्यायिक आयुक्त की राय पर भी किसी ने एक और राय दी थी। डम्बरू को अच्छी तरह से याद है—यही कि पुरुषों की अनुपस्थिति में किसी महिला को यह अधिकार दिया जाए। यह काम पुरुषों की तुलना में महिलाएँ ही ज़्यादा क़ायदे से कर सकती हैं।

लेकिन अदालत में महिलाओं के लिए की गयी फ़रियाद को कोई महत्त्व नहीं दिया गया। उनके लिए की गयीं अधिकार, ज़मीन और पद की माँगें नहीं मानी गयीं।

मातृरूपी देवी के इस स्थान में औरतों की फ़रियाद मिट्टी में मिल गयी। हाँ, हाँ, कहा जाता है कि इसी शक्तिपीठ के हर घर में देवी का निवासस्थान है और इसी जगह पर औरतों की माँगें मिट्टी में मिल जाती हैं। अपनी सोच से बाहर निकलकर डम्बरू ने रत्नधर से पूछा, "मैंने छिन्नमस्ता के जटाधारी के बारे में बहुत कुछ सुना है। क्या यह सच है कि वे ईश्वरीय शक्तिसम्पन्न व्यक्ति हैं ? सुना है पूँछ हिलाकर चलनेवाला खंजन पक्षी भी उनके पास बैठकर चहचहाता था ! नदी-किनारे की झाड़ियों में रहनेवाली और किसी के सामने आसानी से नहीं निकलनेवाली दलपुंगा चिड़ियाँ भी उन्हें देखकर चहकती थीं !"

रत्नधर ने हाँ में सिर हिलाया। डम्बरू ने फिर कहा, "एक भक्त ने कहा था कि ब्रह्मपुत्र के पानी पर वे खड़े रह सकते हैं ? क्या यह सच है ? उनकी जटाओं में हर समय साँप फन निकालकर...!"

रत्नधर ने इस बार भी सिर हिलाया।

डम्बरू कहने लगा, "सुना है, पानी के नीचे घण्टों अदृश्य रह सकते हैं ! क्या यह भी सच है ?"

रत्नधर ने फिर हामी भरी।

डम्बरूधर मज़बूत शरीरवाला आदमी है। वह बीच से माँग निकालकर बाल बनाता है, उसके शरीर का रंग साफ़ है। बाक़ी लोगों की तरह डम्बरू की भी उन बातों में जिज्ञासा थी।

"अगर इस बार डरथी ब्राउन गर्भवती होकर वापस लौटती है तो क्या होगा ? क्या होगा ? उसके पति हेनरी ब्राउन कहते हैं कि डरथी को माँ बनने की बहुत इच्छा है। पिछले साल वह इसी के इलाज के लिए विदेश गयी थी !"

---

1. धर्म-पालन के लिए पुजारी को दान में मिलनेवाली ज़मीन।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

रत्नधर डम्बरू को आँखें फाड़कर देखता रहा। फिर उसने नज़र हटा ली। मन्दिर के दरवाज़े से उसकी दृष्टि बिलकुल अन्दर तक चली गयी। साँप की कुण्डलियों की तरह उसकी नज़र घूमने लगी।

ऐसी बात नहीं है कि उसकी नज़र से कुछ भी छिपा हो। आमने-सामने बैठे संन्यासी और डरथी को उसने देखा है। मिट्टी के दीये की रोशनी में उसने डरथी के खुले कन्धों को भी देखा है। विष्णुकिंकर गोसाईं की अटारी में रखे पुराने हाथी-दाँत के टुकड़े की तरह उसकी खुली बाँहें ! अब अगर कुछ घट गया तो ? रत्नधर ने शरीर में एक सिरहन-सी महसूस की। वह तेज़ी से ऊपर चढ़ने लगा। डम्बरूधर भी उसके पीछे-पीछे जाने लगा। फिर वे दोनों पुराने पीपल के पेड़ के नीचे कुछ देर तक रुके। पीपल के नीचे कुछ ख़ाली कारतूस बिखरे पड़े थे। डम्बरू ने उनमें से एक उठा लिया और नाक के पास ले जाकर उसे सूँघने लगा। बारूद की गन्ध ! ख़ाली कारतूस को रत्नधर ने भी नाक से लगाकर देखा।

यह बारूद की गन्ध है। मृत्यु की गन्ध ! मिट्टी भी ख़ून पी-पीकर बारूद बन गयी है। कहीं लिखी हुई पंक्ति डम्बरू को याद आयी—इसी भूमि में बारूद का जन्म है। रत्नधर ने महसूस किया जैसे चारों तरफ़ की हवा में यह मृत्यु की गन्ध मिली हुई है। उसकी नाक से बार-बार यह गन्ध टकरा रही है।

नहीं, नहीं, डरथी ब्राउन की बात इस समय रत्नधर नहीं सोचेगा। उसे बहुत सारे ज़रूरी काम करने हैं। जीवन के बहुत महत्त्वपूर्ण काम हैं—जीवन के बड़े प्रश्न का जवाब उसे ढूँढ़ना है। वे दोनों भुवनेश्वरी के पास एक पत्थर पर बैठ गये। रंगहीन आसमान में अब कुछ लाल बादल के टुकड़े जमा हो रहे हैं। कटे और साफ़ किये मांस की तरह जगह-जगह ढेर लगे हैं लाल बादलों के टुकड़ों के। ज़ख़्मों से भरा क्षत-विक्षत आकाश जैसे ब्रह्मपुत्र के ऊपर लटक रहा है। जैसे हृदय के खूँटे में लटका, किसी वेश्या का ज़ख़्म भरा शरीर है !

रत्नधर ने डम्बरू की तरफ़ देखकर सीधा सवाल किया, "विधिबाला की इस शादी से क्या तुम उत्साहित हो ?"

प्रश्नभरी निगाहों से डम्बरू ने रत्नधर को देखा। कुछ समय तक चुप रहने के बाद उसने रत्नधर से कहा, "मेरी शादी दो साल पहले ही तय हो चुकी है। कन्यापक्ष को सामान वग़ैरह देने के बाद ही शादी तय हुई थी। वर्ना पुष्पितावाली अफ़वाह फैलने के बावजूद मैं विधिबाला से शादी कर सकता था ! अब उसके नाम से बलि देनेवाला भैंसा मैं उसी नाव में चढ़ाकर लाया हूँ, जिसमें विधिबाला आयी थी ! मुझे अच्छा नहीं लग रहा है—बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा है !"

रत्नधर ने डम्बरू का हाथ ज़ोर से पकड़ लिया। डम्बरू ने महसूस किया कि रत्नधर का हाथ काँप रहा है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

"रत्नधर, क्या हुआ रत्नधर ? तुम्हें क्या हुआ ?"

रत्नधर डम्बरू का हाथ उसी तरह पकड़े बैठा रहा।

"क्या हुआ ? तुम्हें क्या हुआ है रत्नधर ?"

"डम्बरू, डम्बरू, क्या तुम मेरी मदद करोगे ? बोलो, बोलो। क्या मेरी मदद करोगे ?"

डम्बरू ने अपनी आँखें बड़ी करके आश्चर्य से पूछा, "मदद ? कैसी मदद ? कैसी मदद ?"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

पन्द्रह

अब तक अम्बूवासी के मेले में आनेवाले भक्तों के दल एक-एक करके वापस जाने लगे थे। भुवनेश्वरी के आसपास की खण्डहर जैसी कोठरी और पहाड़ी की गुफाओं में डेरा जमानेवाले तान्त्रिक भी धीरे-धीरे वापस जाने लगे थे। ये तान्त्रिक अपना पूरा शरीर ज़ंजीरों से बाँधकर रखते थे। उनमें से दो तान्त्रिक ब्रह्मपुत्र में सिर्फ़ सिर निकालकर पूरी रात साधना करनेवाले दूसरे दो संन्यासियों को देखने गये थे। इन साधकों की जटाओं में साँप कुण्डली मारकर बैठे थे। भरे ब्रह्मपुत्र में सिर्फ़ सिर बाहर निकालकर साधनामग्न इन दोनों संन्यासियों को देखने के लिए दो-चार अँग्रेज़ अफ़सर भी वहाँ पहुँचे थे। निशानेबाज़ी साधने के लिए आये ये अफ़सर ब्रह्मपुत्र के आसपास काफ़ी देर तक रहे। संन्यासियों का ध्यान भंग करने के लिए उन्होंने आसमान की तरफ़ गोलियाँ भी दागीं।

धाँय ! धाँय ! धाँय !! नहीं, उन्हें जैसे चेतना ही नहीं है। बन्दूक़ की गोलियाँ अगर सीधे उनके सीने तक पहुँच जाएँ तो भी शायद कोई असर नहीं होगा। वे हिलेंगे ही नहीं !

रत्नधर और गुरुकुल के छात्रों ने लोगों के दस्तख़तवाली कॉपियों को लाकर डरथी ब्राउन के लिखने-पढ़नेवाली मेज़ पर सजाकर रख दिया। कॉटन कॉलेज के एक छात्र के साथ बैठकर रत्नधर अँगूठा लगानेवाले हर व्यक्ति का नाम-पता जाँचने लगा। असंख्य नाम और पते—बांग्ला, हिन्दी और अँग्रेज़ी में भी दस्तख़त हैं। अदालत के मुंशी के पास रत्नधर ने एक लड़के को भेजा है। मुंशी की सहायता से उन दस्तख़तों को ठीक तरह से अदालत में पेश किया जा सकेगा। विलियम ने भी किसी मुंशी के हाथ से रत्नधर के लिए ख़त भेजा था। विलियम ने किसी 'सब-जज' के साथ भी बातचीत की है। इसलिए उम्मीद की जा सकती है कि काम भी जल्दी आगे बढ़ेगा। रत्नधर को छिन्नमस्ता के संन्यासी से भी एक पत्र मिला है—'देवध्वनि' से पहले वे वापस आ जाएँगे। साफ़-सुथरी असमिया भाषा में डरथी ब्राउन ने भी एक पंक्ति लिखी है—"तुम्हारी याद बहुत आती है। अब वक़्त आ गया है कि तुम

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
अपना काम पूरा करो। देवी दशभुजा तुम्हारी सहायता करेंगी।''

सोने-चाँदी के गहनों की तरह रत्नधर ने बड़े जतन से दस्तख़तवाले बही-खाते एक बक्से में रख दिये और द्वारभांगा-घर में ताला लगाकर बाहर निकल आया।

सुबह होते ही मनमोहन पुजारी के घर में कोहराम मच गया। बलि के लिए लाया हुआ भैंसा छप्पर के नीचे से ग़ायब हो गया था। सुबह-सुबह शुवालकुचि से आये विधिबाला के पिता जैसे अपने कानों से सुनी बात पर विश्वास नहीं कर पाये। वे भागते हुए सौभाग्य कुण्ड के पास गये। पागलों की तरह वे हर व्यक्ति से भैंसे के बारे में पूछने लगे। धोती की गाँठ से पैसे निकालकर उन्होंने दो-तीन आदमियों को दिये और पहाड़ी के नीचे तक दौड़ाया ताकि वे भैंसा खोजकर ला सकें। इस हट्टे-कट्टे आदमी ने खुद भी मालीपाड़ा से उतरकर कई ऐसी जगहों को छान मारा जहाँ भैंसा जा सकता था। बढ़ती उम्र में इतनी दौड़धूप करने से वे बिलकुल थक गये थे।

वापस आकर उन्होंने देखा कि उनका बेटा, डम्बरू और ख़ुद मनमोहन भागवती भी भैंसे को ढूँढ़ने के लिए बाहर गये हुए हैं। बाक़ी सब लोग किंकर्तव्यविमूढ़ होकर बरामदे में बैठे हैं। बेटे को ख़ाली हाथ लौटते देखकर बूढ़ी दादी छाती पीटकर रोने लगी, ''लड़की का क्या होगा अब ? पण्डितजी ने कहा था कि उसकी जनमपत्री में खोट है। यह भी कहा था कि उसके लिए बुरे दिन आ रहे हैं। बँधा हुआ भैंसा कैसे छूट गया ?''

विधिबाला के पिता सिंहदत्त शर्मा दाँत पीसकर बोले, ''यह किसी की बदमाशी है। सब-कुछ जानते हुए भी तुम लोग यहाँ क्यों रहने आये ? एक भैंसा गुम हो गया—जाने दो, मैं माँ दशभुजा के लिए दस भैंसे लाकर दूँगा। मैं विधिबाला के लिए देवी के चरण रक्त से धो दूँगा। मैं...सिंहदत्त शर्मा...सिंहदत्त !!''

बरामदे के एक कोने में सिकुड़कर बैठी विधिबाला थर-थर काँपने लगी। अपने पिता के बारे में वह जानती है। यह भी जानती है कि ऐसा कोई काम नहीं है जो उसके पिता नहीं कर सकते।

सिंहदत्त की माँ रोना छोड़कर चीख़ पड़ी, ''ऐ सिंहदत्त, कहाँ से तू देवी दशभुजा के लिए दस भैंसे लाएगा ? क्या खेत बेचेगा ? लड़के को पढ़ाई छोड़कर वापस लौटना पड़ेगा। अरे, घमण्ड छोड़ ! घमण्ड छोड़ सिंहदत्त ! जो भी है वही देकर सन्तुष्ट कर देवी को। लड़के के नाम की ज़मीन रहने दे। कहते हैं न—कि अहंकार में हाथी मरता है और साँप मरता है फन दिखाकर—लाश खाकर गिद्ध मरता है...''

सिंहदत्त गरज उठे, ''चुप रहो 'आई', चुप रहो। तुम लोगों की आँखों के सामने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
इस तरह भैंसा ग़ायब हो गया !''

सिंहदत्त का नाम बचपन में दूसरा था। उनका तेज़ गुस्सा देखकर बाद में उनके पिता ने यह नाम रखा था। एक बार बाज़ार का हिसाब ठीक से न बताने पर गुस्से के मारे उन्होंने अपनी पत्नी के केश चाक़ू से ही काटने की कोशिश की थी—यह बात आज तक लोग भूले नहीं हैं। इसलिए उनको गुस्सा आने पर या तो परिवार के लोग उनके सामने से भाग जाते हैं, या फिर गूँगे बनकर उनकी बातें सुनते रहते हैं।

एक-एक करके सारे लोग आकर बरामदे में बैठ गये। डम्बरू और विधिबाला के बड़े भाई रुद्र भी बरामदे में बैठ गये और गमछे से मुँह का पसीना पोंछने लगे। नहीं, भैंसा कहीं भी नहीं मिला। वे नदी के सारे घाटों पर देख आये। नहीं, कोई भी बड़ी नाव घाट पर नहीं लगी है। यात्री और किसी भी पण्डे ने नाव घाट पर लगती नहीं देखी है। यहाँ तक कि पहाड़ी के नीचे कालीपुर आश्रम में सुबह-सुबह बन्दूक़ का निशाना साधने आनेवाले साहबों से भी डम्बरू और रुद्र ने पूछा था—''भैंसा रात से ही ग़ायब है। क्या आप लोगों ने देखा है ?''

साहब भी ठीक से जवाब नहीं दे सके। एक साहब ने कहा कि रात के आख़िरी पहर में चप्पू की आवाज़ सुनाई दी थी। लेकिन नाव में भैंसा था या शेर—वह नहीं कह सकते। भैंसा ग़ायब होते ही ख़बर सुनकर बेजपारा, मालीपारा, नाथपारा, भुवनेश्वरी के निचले भाग और बामुनपारा से भी लोग आकर मनमोहन भागवती के घर के बाहर ताक-झाँक करने लगे।

देवीभक्त ये लोग मनमोहन पुजारी के घर के बाहर चिल्ला-चिल्लाकर बोलने लगे, ''मन्दिर का 'पगला घण्टा' बजाना पड़ेगा। एक-दो करके इस देवीपीठ से बीस के आसपास बलि के पशु ग़ायब हुए हैं। यह काम किसका है, यह हम अच्छी तरह से जानते हैं।''

सब लोग बाहर खड़े होकर इस तरह से बातचीत करते रहे। लेकिन कोई भी उठकर रत्नधर को खींचकर बाहर न ला सका।

विष्णुप्रिया रसोई में ज़रूर घुसी थी लेकिन उसका दिल धड़क रहा था, कान खड़े करके वह बाहर की बातें सुन रही थी। वह अच्छी तरह से समझ गयी थी कि यह काम रत्नधर का ही है। लेकिन वह क्या कर सकती है ? अपने यजमानों को ऐसी परिस्थिति में डालना महापाप है; लेकिन क्या करें ?

रत्नधर कमरे में बैठकर लिफ़ाफ़े में देवी के रक्तवस्त्र के टुकड़े डालने में व्यस्त था, बाहर के हो-हल्ला पर उसने बिलकुल ध्यान नहीं दिया था।

किसी की चिल्लाकर कही हुई बातें सिंहदत्त ने सुन लीं—''लाओ, रत्नधर को खींचकर बाहर लाओ। वह बता सकेगा। लाओ, खींचकर लाओ।''

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसी बात नहीं है कि सिंहदत्त शर्मा ने रत्नधर के बारे में नहीं सुना था, पिछले साल विधिबाला की कुमारी-पूजा के उपलक्ष्य में पीठ में आते समय उन्होंने छिन्नमस्ता के संन्यासी, डरथी ब्राउन और रत्नधर की बलिप्रथा बन्द करने की कोशिश की कहानी सुनी थी।

लेकिन किस परिस्थिति में आज उसी रत्नधर के घर में यजमान बनकर रुके हैं—वे खुद ही समझ नहीं पाये थे। सोचते-सोचते उनकी साँसें तेज़ होने लगीं। गुस्से में उनकी आँखें लाल हो गयीं। नथुने फूलने लगे। ज़ख्मी भेड़िये की तरह वे बरामदे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहलने लगे। आख़िर इस गुस्सैल आदमी ने हुंकार भरी, "चुप रहो, चुप रहो तुम लोग !"

उनकी इस हुंकार से टीन की छतवाला घर जैसे काँप उठा। उनका शरीर मल्लयुद्ध करनेवालों की तरह मज़बूत था। उनकी आँखें बड़ी-बड़ी और भौंहें घनी थीं। हाथ की मुट्ठियाँ भी बड़ी-बड़ी थीं। उनके चेहरे पर हमेशा एक हिंस्र भाव रहता था। वे पैदल चलते थे तो ऐसा लगता था जैसे भाग रहे हैं।

सभी जानते थे कि सिंहदत्त गुस्सैल प्रकृति का आदमी है। यहाँ तक कि पिछले एक महीने से दशभुजा के लिए सुरक्षित भैंसे के गले की सुबह शुद्ध घी से मालिश करना उनकी आदत बन गयी थी। भैंसे के गले में खड्ग के दो वार नहीं पड़ें, इसलिए वे यह काम नियमित रूप से करते थे। माराभिठा के एक ब्राह्मण परिवार द्वारा चढ़ाए गये एक भैंसे पर तीन बार खड्ग से वार करना पड़ा था, यह बात सिंहदत्त को मालूम थी। फिर प्रायश्चित्त के लिए उस ब्राह्मण को बहुत सारे कर्मकाण्ड करने पड़े थे। उसी दिन से वधिक सिकदार हाथ पक्का करने के लिए मुँह-अँधेरे जाकर नदी किनारे महानीबू पानी में फेंककर एक ही वार में काटने का अभ्यास करने लगा था। माराभिठा के ब्राह्मण ने अपने हैजाग्रस्त बेटे के नाम से भैंसा चढ़ाया था। लेकिन उनका बेटा नहीं बच पाया था।

सिंहदत्त द्वारा सुबह मोढ़े पर बैठकर भैंसे के गले में मालिश करने के दृश्य ने विधिबाला को अन्दर से तोड़ दिया था। कभी-कभी वह सोचने लगती थी—क्या वह खुद अपनी जान दे दे ? क्या वह अपना सिर वधस्थल में डाल दे ?

सिंहदत्त को तेज़ अस्त्र की धातु जैसी आवाज़ सुनाई दी—"लाओ, खींचकर लाओ रत्नधर को—भैंसा कहाँ गया, वही बताए !"

अब सिंहदत्त एक जगह पर खड़े हो गये। वे ज़ोर से चिल्लाये जिससे सभी को सुनाई दे—"ऐ, मैं सिंहदत्त हूँ। माँ दशभुजा के लिए मैं एक क्यों, दो भैंसे ला दूँगा। जाओ—जाओ तुम लोग। यहाँ हल्ला करने की ज़रूरत नहीं है। जाओ—जाओ !"

दो-चार आदमी वहाँ से हट गये लेकिन ज़्यादातर लोग मनमोहन पुजारी के घर के सामने डूमर के पेड़ के नीचे बैठे रहे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब उस बरामदे में जहाँ विधिबाला और दादी बैठी हुई थीं, सिंहदत्त तेज़ी से चहलक़दमी करने लगे। गुस्से के मारे उनकी आँखें लाल हो गयीं। अब संयम बनाये रखना उनके लिए कठिन हो गया। वे हाथ-पैर पटककर चीख़ने लगे, ''यहाँ क्यों आये ? इस पूरे नीलाचल में और कोई पुजारी नहीं था क्या ? क्यों आये यहाँ ?'' कुछ बातें स्पष्ट रूप से न कह पाने के कारण वे ज़ोर-ज़ोर से हाँफने लगे। इस बढ़ती उम्र में भी वे अपने व्यवहार में संयम नहीं ला पाये थे। जो मौलिक गुण और सहानुभूति संयम रखने के लिए ज़रूरी होते हैं, वह सब उनके पास थे ही नहीं। इसलिए अपने जनेऊ को ही उन्होंने कसकर पकड़ लिया और बोले, ''मैंने देवी दशभुजा के लिए भैंसा चढ़ाया था। मेरी बात अटल है। मैं अपना जनेऊ छूकर कह रहा हूँ कि वह भैंसा मैंने देवी माँ के लिए चढ़ाया था। अब मैं एक नहीं, दो भैंसे देवी के नाम से चढ़ाऊँगा। अगर मुझे ज़मीन बेचनी पड़े तो भी मैं देवी दशभुजा को दो भैंसे का रक्त दूँगा। मैं क़सम खा रहा हूँ—मैं क़सम खाकर कह रहा हूँ।'' सिंहदत्त उरियाम लकड़ी के खम्भे पर अपना सिर पटकने लगे।

लकड़ी के ढाँचे से बना पूरा घर भूकम्प के जैसा हिलने लगा। मांस-मछली और घर का दूध-घी खाकर उन्होंने अपना शरीर मल्लयोद्धा की तरह मज़बूत बनाया था। इसलिए उनके सिर पटकने से पूरे घर का हिल जाना स्वाभाविक था।

''बेच दूँगा मैं ज़मीन ! देवी दशभुजा के लिए मैं ज़मीन बेचकर भैंसा लाऊँगा। मैं ज़रूर भैंसा लाऊँगा।''

चारों तरफ़ कोहराम मच गया। मनमोहन भागवती के घर के सामने जमे हुए लोगों में दो बौने भी थे। वे दोनों राजा विक्रमादित्य के राज-दरबार के ताल-बेताल जैसे थे। दोनों मन्दिर के आँगन में ही बड़े हुए थे। पुजारियों को हर तरह के समाचार लाकर देना, यजमानों को लेकर पण्डों के बीच झगड़ा करवाना और भक्तों द्वारा मन्दिर के लिए छोड़े कबूतरों को पहाड़ी के नीचे बाज़ार में बेच आना इन बौनों का मुख्य काम था।

गमछे को लँगोटे की तरह और फटी-पुरानी बनियान पहने विचित्र चेहरेवाले ये बौने तेज़ी से सीढ़ियाँ चढ़कर सिंहदत्त के पास पहुँचे और कहने लगे, ''हम लोग दो-तीन घण्टे के अन्दर ही भैंसा ख़रीदकर ला सकते हैं !''

भीड़ में से एक तान्त्रिक आगे बढ़ आया। उसके हाथ में एक लाठी थी और लाठी के ऊपरी भाग में मृत आदमी की खोपड़ी बँधी थी। सिर्फ़ शरीर के निचले हिस्से में उसने एक छोटा-सा लाल कपड़ा बाँध रखा था। उसके शरीर का रंग गोरा था लेकिन इस गोरेपन के ऊपर भी कुछ विचित्र दाग़ स्पष्ट दिखाई दे रहे थे, इसलिए वह धवल रोगग्रस्त आदमी जैसा लग रहा था। उसके लाल रंग के खड़े बाल थे—बिलकुल बीमार आदमियों की तरह और आँखें गड्ढे में घुसी हुई थीं। वह खोपड़ी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाली लाठी लेकर भीड़ को धक्का देता हुआ आगे आया और इशारे से कुछ समझाने लगा। सभी समझ गये कि शायद ब्रह्मवध या गोवध जैसा कोई पापकर्म करने के बाद वह इस शक्तिपीठ में अज्ञातवास काट रहा है। उसने इशारे से क्या कहा, यह वहाँ खड़ा कोई भी व्यक्ति समझ नहीं सका। वह बलि के पक्ष में बोल रहा था या विरोध में यह किसी के समझ में नहीं आया। भागवती के घर में फिर से कोहराम मच गया।

अब सिंहदत्त ने सभी को सुनाकर विकट रूप में चीख़ते हुए कहा, "मैं रत्नधर को तीन घण्टे का समय दे रहा हूँ। वह भैंसा ढूँढ़कर लाए। मैं क़सम खाकर कह रहा हूँ। देवी दशभुजा के चरण मैं ख़ून से धो दूँगा। मैं...मैं...।"

तभी ने जैसे आँखों के सामने एक ख़ून की नदी बहते हुए देखी। दोनों बौने एक साथ बोल पड़े, "अरे सिंहदत्त, भैंसा को अपने शत्रु का नाम लेकर दो टुकड़े करना। देखना कि वधिक को दो वार न करना पड़े। भैंसे के कटे हुए सिर पर दीया जलाकर देवी के सामने एक दिन और एक रात खड़े रहना। तब तू राजा बनेगा। सिंहदत्त, तू राजा बनेगा।"

सिंहदत्त फिर से चिल्लाने लगे। वे चीख़ते हुए कहने लगे, "ऐ रुद्र, मेरा छाता और लाठी लेकर आ ! मैं अभी नदी पार करके भैंसा लाऊँगा।" वे बरामदे में तेज़-तेज़ क़दमों से टहलने लगे। उनके पैरों की आवाज़ से पुजारी का पुराना घर फिर से काँप उठा।

ठीक उसी समय अन्दरवाले कमरे से मनमोहन भागवती की पत्नी रोती-बिलखती हुई बाहर निकली और सिंहदत्त के पास खड़ी हो गयी—"आप इस तरह नहीं जा सकते। सुवह से पेट में एक भी दाना नहीं पड़ा है।"

सिंहदत्त गरज उठे, "इतना कुछ होने के बाद कुछ खाने का सवाल कहाँ उठता है ? ला, रुद्र—मेरा छाता और लाठी लेकर आ। आज मैं भैंसा लाकर ही छोड़ूँगा। आज मैं भैंसा लाकर इस जगज्जननी की पीठ पर ज़रूर चढ़ाऊँगा।"

अब घर के अन्दर भयानक चीख़-पुकार होने लगी। सिंहदत्त के सामने कभी भी सिर उठाकर बात न करनेवाली विधिबाला बाहर निकल आयी। आग की लपटों जैसी पूर्णयौवना इस तरुणी को वाहर खड़ी देखकर सिंहदत्त ग़ुस्से में आगबबूला हो गये। उन्होंने अपने पैर से एक खड़ाऊँ उतारकर विधिबाला की तरफ़ मार फेंकी। चोट खाकर उफ्-उफ् करती हुई विधिबाला ने अब रुद्ररूप धारण कर लिया—"तू भैंसा नहीं ला सकता। तू भैंसा नहीं ला सकता। मैं एक और औरत रखनेवाले उस आदमी से..." वह पूरा वाक्य ख़त्म नहीं कर सकी और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। विष्णुप्रिया, नौकरानी देव और रुद्र गिरती हुई विधिबाला को सँभालने लगे।

विधिवाला चीख़-चीख़कर हाहाकार मचाने लगी, "तू भैंसा वलि नहीं दे सकता।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
तू भैंसा बलि नहीं दे सकता !''

सिंहदत्त को समझाने की हिम्मत किसी में नहीं थी। अब सिंहदत्त अन्दर जाने ही वाले थे कि बरामदे में रत्नधर आकर खड़ा हो गया। सिंहदत्त के कुछ कहने से पहले ही रत्नधर ने कहा, ''लड़की का अगर शादी में बैठने का मन नहीं है तो भैंसों को क्यों बेकार में बलि दे रहे हो ? विधिबाला की शादी करवाने की क्षमता अगर आप लोगों में नहीं है तो मैं उससे ब्याह करूँगा। मैं ब्याह करूँगा।''

सिर पर बिजली गिरनेवाले व्यक्ति की तरह एक पल के लिए सिंहदत्त और विधिबाला के भाई रुद्र एक ही जगह पर स्तब्ध खड़े रहे। बाहर खड़े लोग भी यह बात सुनकर आश्चर्यचकित हो गये। रत्नधर की माँ उसका हाथ पकड़कर पीछे की तरफ़ खींचने लगी। वह असहाय होकर बाहर के लोगों को सम्बोधित करके चिल्लाने लगी, ''बुलाओ, रत्नधर के पिता को बुलाकर लाओ। सर्वनाश होने जा रहा है। यजमान अब हाथ में कुल्हाड़ी उठाएगा। बुलाओ, बुलाओ !''

सिंहदत्त गरज उठा, ''ऐ रत्नधर, तुझे पागलपन का दौरा नहीं पड़ता था क्या ? तेरे ऊपर देवी माँ की कोपदृष्टि नहीं पड़ी थी ? तूने फ़िरंगी लड़की के साथ रहकर अपना धर्म नष्ट नहीं किया है ? ऐ रत्नधर, तुझे 'चाण्डालान्न भक्षण प्रायश्चित्तम्' करना चाहिए।'' गुस्से में पागल होकर सिंहदत्त चिल्लाने लगे, 'ऐ रत्नधर, तेरा चरित्र भ्रष्ट हो गया है। तू मेरी लड़की पर नज़र डालता है ! तू बँधा हुआ भैंसा छप्पर के नीचे से ग़ायब करवाता है ! तू मर जा। मर जा तू !''

अब बामुनपारा के लोगों के सामने कभी भी ऊँची आवाज़ में बात न करनेवाली विष्णुप्रिया चिल्लाने लगी, ''ऐ शुवालकुचि के सिंहदत्त ! तू मेरे बेटे को शाप देता है ! मैं तुझे—मैं तुझे—देख, मेरा यह हाथ ! यजमानों के लिए खाना पकाते-पकाते मेरे हाथ की चमड़ी जलकर काली पपड़ी बन गयी है। देवी दशभुजा जानती है—सब-कुछ जानती है। मेरे लड़के को तू शाप देता है ? मैं तुझे शाप देकर भस्म कर दूँगी।''

सिंहदत्त की माँ दौड़कर आयी और विष्णुप्रिया का हाथ पकड़कर बिलखने लगी, ''शाप मत दो। हमारे परिवार को बहुत विपत्ति का सामना करना पड़ा है। रुद्र का भाई मरा है। सिंहदत्त गुस्सैल आदमी है, इसलिए विवेकहीन हो गया है। मैं... मैं...।''

सिंहदत्त घर के अन्दर घुस गये और सामान खींच-खींचकर बाहर निकालने लगे। अब रुद्र और शान्त नहीं रह सका, वह भी चिल्लाने लगा, ''क्या करते हैं आप ? क्या कर रहे हैं ? हम लोग हैं न !''

उसी समय विधिबाला ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई कहने लगी, ''मैं नहीं जाऊँगी, मैं नहीं जाऊँगी।''

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामान से नज़र हटाकर अब सिंहदत्त ने विधिबाला की तरफ़ सिर उठाकर देखा। उनके सब्र का बाँध टूट गया। वे बिजली की गति से विधिबाला के पास पहुँचे और आपे से बाहर होकर उसे लातें जमाने लगे। दादी और रत्नधर की माँ विष्णुप्रिया सिंहदत्त की मुट्ठी से विधिबाला के बाल छुड़ाने की कोशिश करने लगीं, लेकिन उनकी प्रचण्ड शक्ति के सामने दोनों नहीं टिक पायीं। दादी बिलखने लगी, "लड़की को मार डालेगा अब ! लड़की को मार डालेगा। जा बेटी, तेरे नसीब में सुख नहीं लिखा है, तेरी क़िस्मत में विधि ने सुख नहीं लिखा है।"

रोने-बिलखने की आवाज़ सुनकर बाहर लोग इकट्ठे हो गये। डम्बरू और रुद्र ने अब सिंहदत्त को कसकर पकड़ लिया। दादी से वे कहने लगे, "लाओ, उसे पकड़ लाओ।"

विष्णुप्रिया फिर से चिल्लायी, "रत्नधर के पिता मन्दिर से अब तक नहीं लौटे हैं। आप लोग यह क्या कर रहे हैं ? मैं आप लोगों के पैर पड़ रही हूँ। मैं गले में गमछा डालकर आपसे विनती कर रही हूँ।"

विष्णुप्रिया की चीख़-पुकार सुनने की किसी को ज़रूरत नहीं पड़ी। रुद्र के आँखों से इशारा करते ही दो नौकर बरामदे में रखे हुए बक्से और बिस्तरबन्द कन्धे पर उठाकर तेज़ क़दमों से सड़क पर उतर गये। रुद्र पिता का हाथ पकड़कर आगे बढ़ने लगा। उनके पीछे-पीछे दादी रोती हुई विधिबाला का हाथ पकड़कर जाने लगी। देवध्वनि उत्सव में जैसे महादेव के मन्दिर के लिए रवाना होनेवाले भैरवी, बगला, महाराज, काली और कुबेर का घोड़ा[1] का अनुकरण करता भक्तों का दल कोहराम मचाता हुआ चलता है, ठीक उसी तरह बिलखती हुई विधिबाला और पैर पटककर चलनेवाले सिंहदत्त के पीछे-पीछे तमाशा देखनेवाले लोगों का दल आगे बढ़ने लगा। बामुनपाड़ा के सभी—बच्चों से बूढ़े तक—दुमंज़िला मकानों के बरामदों में खड़े होकर यह दृश्य देखने लगे। हो-हल्ला और कोहराम मचाता हुआ लोगों का झुण्ड आगे बढ़ने लगा।

---

1. देवी चढ़े हुए लोगों को 'देवी का घोड़ा' कहा जाता है। अलग-अलग देवी-देवताओं का उसी नाम का घोड़ा है, जैसे—'काली का घोड़ा', 'कुबेर का घोड़ा' आदि।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सोलह

देवीपीठ के चारों तरफ़ इस बात का प्रचार हो चुका था कि छिन्नमस्ता के संन्यासी और डरथी ब्राउन एक-दो दिन में वापस आएँगे। देवीपीठ के चरों तरफ़ यही बात सभी की ज़बान पर थी। रोज़ सुबह छिन्नमस्ता के मन्दिर के सामने भक्तों की भीड़ बढ़ने लगी थी। सब लोग छिन्नमस्ता के संन्यासी की प्रतीक्षा कर रहे थे। उत्तरी किनारे के तीन युवकों ने हताशा से ग्रस्त एक लड़के को खींचकर छिन्नमस्ता के मन्दिर के सामने बड़े-से पत्थर पर बैठा दिया। अब तक मन्दिर के दोनों बौने आकर वहाँ खड़े हो गये थे। उनमें से एक अर्धचेतन-से बैठे उस लड़के के पास जाकर ध्यान से देखने लगा। नहीं, उस लड़के ने किसी की तरफ़ सिर उठाकर नहीं देखा है। वह ज़मीन में नज़रें गड़ाए बैठा है। उसके हाथ-पैर ठिठुर-से गये हैं। घने बालोंवाले सिर में बीच से निकली माँग में धूल भरी हुई है ! वह ढीली बनियान और धोती पहने हुए था।

छिन्नमस्ता के संन्यासी का इन्तज़ार कर रहे एक भक्त ने सवाल किया, "क्या हुआ है ? क्या हुआ इस लड़के को ?"

लड़के के साथ आये दोस्त पहले कुछ संकोच करते रहे। दुबले-पतले शरीरवाले दोस्त ने आख़िर मुँह खोला, "हम लोग मरे मानाह[1] किनारे के साफ़ाखामोर के रहनेवाले हैं। इस लड़के की शादी तय हो गयी थी। लड़की बूढ़ीखामार के तरफ़ की थी। कुछ दिनों से लड़की का विचार बदल गया है। अब वह शादी नहीं करना चाहती। इसी दुःख से हमारे दोस्त ने खाना-पीना छोड़ दिया है। हमने सुना था कि एक बार छिन्नमस्ता के संन्यासी ने 'स्त्री-वशीकरण' मन्त्र देकर किसी का टूटा हुआ रिश्ता जोड़ दिया था।"

भक्त ने ज़ोर देकर कहा, "एक सौ आठ बार मन्त्र का जाप करना पड़ेगा।" फिर वह भक्त उठकर उन लड़कों के पास आकर धोती समेटता हुआ बैठ गया और

---

1. मानाह एक नदी का नाम है। जब किसी कारणवश नदी अपनी दिशा बदलकर दूसरी ओर बहने लगती है तो पुराने मार्ग को मरा हुआ कहते हैं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
फुसफुसाकर कहने लगा, "सुनो, मैंने छिन्नमस्ता के संन्यासी से ही चामुण्डा का मन्त्र लिया था, उस मन्त्र का एक अंश अभी भी मुझे याद है–

"ओम् ह्रींग चामुण्डे तूरु तूरु
अमुकींग मा हृषय तूरु ह्रींग
ओम् चामुण्डे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा
ओम् कृष्णवर्णाय स्वाहा..."

बड़े विचित्र उच्चारण करते हुए उस भक्त ने चामुण्डा मन्त्र का एक अंश पढ़कर सुनाया। जैसे वह वशीकरण विद्या में बिलकुल माहिर हो–"लड़की को वश में करने के लिए 'चतुरक्षरी मन्त्र' का भी जाप करना पड़ता है : 'धीत् अं ह्रं क्रं' और भोजन-सामग्री थाली में रखकर सात अक्षरवाला मन्त्र भी एक सौ आठ बार पढ़ना होगा : 'ओम काममालिनी-पतिं मे वशमानय ठं ठं'–"

अब कुछ दूरी पर बैठे दो आदमी भी उसी जगह पर गोल होकर बैठ गये। वे कहने लगे, "हम कई लोग साथ में आये हैं। हम लोग बरपेटा ज़िले की हूदूखाटा फातेमावाद के रहनेवाले हैं। हम लोग जगज्जननी के पास डर और दुःख से निजात पाने के लिए आये हैं।"

"डर और दुःख ?"

"ज़मीन का मुक़द्दमा जीतने के बाद चारों तरफ़ से शत्रु का डर हमें खाये जा रहा है। किस दिन पीछे से आकर हमारी पीठ पर चाक़ू घोंप देगा, उसका कोई ठिकाना नहीं है। कई बार वे धमकी भी दे चुके हैं। प्राण बचाने की चिन्ता है !"

एक दूसरे भक्त ने कहा, "इसका मतलब शत्रु पर विजय पाने के लिए जगज्जननी के पास आये हो ?"

'हाँ, हाँ' कहकर वशीकरण मन्त्र पढ़ते भक्त की तरफ़ सभी सिर उठाकर देखने लगे। भक्त ने कहा, "एक हज़ार साल पहले जगज्जननी के इसी स्थान में अद्वैतवादी शंकराचार्य के शरीर में अभिनव गुप्त ने मन्त्र से भगन्दर रोग नहीं डाल दिया था क्या ? क्या सिर्फ़ तर्कशास्त्र में हराने के लिए ही ? सुनो, शत्रु पर रोग डाल दो, साँप भी नहीं काटेगा और लाठी भी नहीं टूटेगी।"

अब सब लोग उस देवीभक्त की तरफ़ ध्यान से देखने लगे।

"भगन्दर रोग दूसरे पर डालनेवाले कुमारिल भट्ट की तरह लोग हैं क्या ?"

"क्यों नहीं ? उस दिन अश्वक्लान्त घाट से एक जटाधारी आया था न ? महारानी की तस्वीरवाला रुपया माँगने पर मैंने ही जेब से निकालकर दिया था। उसने धोती की गाँठ से भस्म निकाली और रुपये को आँखों के सामने आग में डाल दिया। ताँबे का रुपया सोने का बन गया। सुबह वह आदमी ग़ायब हो गया। देखो, यह

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
रानी की तस्वीरवाला सोने का रुपया अब भी मेरे पास है।''

भक्त ने अपना चेहरा थोड़ा-सा निकाल रखा था। एक बड़ी चादर से उसका मुँह ढँका हुआ था। बातें करते समय भी उसने चादर से मुँह ढँककर रखा था, चेहरे से ज़रा भी हटने नहीं दिया था। अब तक और कुछ लोगों ने उसे घेर लिया। तन्त्र-मन्त्र की कुछ मज़ेदार बातें वह कहने लगा, ''तो सुनो, कबूतर की विष्ठा, कड़वी लौकी के बीज का तेल, गधे की अस्थि और मयूरलता की जड़ को सिलबट्टे से महीन पीसकर शत्रु के माथे पर उसका लेप लगाना पड़ता है। देखते-ही-देखते शत्रु का चेहरा रावण का मुँह जैसा बनने लगेगा।''

बैठे हुए सभी लोग ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

''सुनो, अगर बिल्ली बनाना चाहते हो तो काली बिल्ली के मुँह पर 'एरा' पौधे का बीज रखना। फिर वह बीज काली मिट्टी में रोपना। फिर पेड़ उगने के बाद उसमें जो बीज फलेगा उसे पीसकर शत्रु के चेहरे पर लेप लगाना। शत्रु का चेहरा बिल्ली जैसा बन जाएगा।''

फिर से सब लोग ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। भक्तों के बीच में से किसी ने आवाज़ दी, ''महाशय, आप तो बहुत माहिर व्यक्ति हैं ! आप खुद ही इन सबका धन्धा शुरू कर सकते हैं !''

भक्त ने कहा, ''सुनो, मैंने तर्सा-किनारे से आये संन्यासी से 'कामरत्न तन्त्र' के लगभग सभी मन्त्र सीखे थे। लेकिन वह आदमी अचानक ग़ायब हो गया।''

किसी ने कहा, ''फ़िरंगी लड़की डरथी के बलात्कार की कोशिश के समय से ही तर्सा-किनारे का सिरमुँडा वह संन्यासी ग़ायब हो गया था। अश्लेषा नक्षत्र के दिन शाम को उस संन्यासी ने अनार के बीज का रस निकाला था और कृष्णाष्टमी के दिन कमल के फूल की जड़ें लाकर पीसी थीं। फिर इस पीसी हुई जड़ों में अनार का रस मिलाकर वह आँखों में मलता था। ऐसा करके वह अदृश्य चीज़ को भी देख सकता था।''

सब लोग एक साथ आश्चर्य कर उठे, ''अदृश्य चीज़ देख सकता था ?''

''हाँ, हाँ, अदृश्य को भी देखता था। कहता था कि उसने धुएँ की कुण्डलियों के बीच रहस्यपूर्ण 'काम' गुफा देखी थी। इस गुफा का आकार इक्कीस उँगली लम्बा और चौड़ा है। उसके अन्दर बने रक्तवर्ण के शिलाखण्ड का आकार योनि की तरह है। संन्यासी कहता था कि उसने इस योनि में अद्भुत सौन्दर्यमयी तेजस्विनी मूलभूता कामाख्या महादेवी की छायामूर्ति देखी है।''

भक्त बोल उठे, ''जय, जगज्जननी की जय। जय, दशभुजा की जय ! जय, भस्मशैलानुगामिनी की जय !!''

भक्त ने फिर कहा, ''उसकी दिव्यदृष्टि ने सिर्फ़ 'कामगुफा' ही नहीं देखी थी।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
संन्यासी ने कहा था कि उस रहस्यपूर्ण धुएँ के अन्दर स्थित श्रीकामा, गुप्तकामा, कोटीश्वरी, पाददुर्गा, वनस्था, विन्ध्यवासिनी की पीठ भी उसकी आँखों के सामने स्पष्ट प्रकट होने लगी। उसकी आँखें चौंधिया गयीं। सभी दशभुजा की माया थी। अमावस की रात की तरह देवी की केशराशि और पूरे शरीर में रक्त का दाग़। संन्यासी ने कहा कि—मेरी तरफ़ उँगली उठाकर देवी बोल उठी—'लाओ, भैंसे की बलि लाओ। मैं जिस श्मशान में रहती हूँ वहाँ मनुष्य का रक्त चढ़ाओ। पापी नर के ख़ून से मेरा चरण धो दो। तेरी तरह वह नर भी पापमुक्त हो जाएगा। मनुष्य-देह त्यागकर वह गण का अधिपति बनेगा। मैं मनुष्य के रक्त से आठ महीने तक तृप्त रहूँगी। लाओ—लाओ, मनुष्य का रक्त लाओ। संन्यासी ने कहा कि उसने बलि के लिए लानेवाले मनुष्य के पैरों में बँधी ज़ंजीरों की झनझनाहट सुनी थी। बलिवाले मनुष्य की साँसें नाग की फुफकार जैसी सुनाई दे रही थीं।"

भक्तों के बीच बैठे मन्दिर के दोनों बौने खड़े हो गये। उनके शरीर पर विचित्र दाग़ है। उनके सिर बड़े-बड़े हैं। ये अद्भुत चेहरेवाले बौने ज़ोर-ज़ोर से कहने लगे—दोनों के स्वर में व्यंग्य था, "अश्लेषा नक्षत्र में अनार का रस और कृष्णाष्टमी में कमल के फूल की जड़ें पीसकर आँखों में लगानेवाले और अब ग़ायब होनेवाले तर्सा-किनारेवाले सिरमुँड़े संन्यासी को खींचकर लाओ। साला, बलि देना चाहता है! आने दो उस आदमी की बलि चढ़ानेवाले को! साला—कहता है कि चार हज़ार सालों से चली आ रही बलिप्रथा अब बन्द नहीं हो सकती! मनुष्य की बलि बन्द करना उचित नहीं है!"

अब एक बूढ़ा भक्त खड़ा हो गया। काँपता हुआ उसका शरीर! वह घुटनों के ऊपर धोती बाँधे हुए था। बोला, "हम तर्सा-किनारेवाले संन्यासी के बारे में सुनने नहीं आये हैं। हम लोग छिन्नमस्ता के संन्यासी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे माता के इस स्थान में लगे ख़ून के दाग़ पोंछना चाहते हैं। उनके विचारों को मानते हुए कई सौ बूढ़े और जवान एकत्रित हुए हैं, हम लोग ऊपरी असम से आये हैं, उनसे मिलना चाहते हैं।"

तमाशा देखनेवालों में से एक ने कहा, "तर्सा का संन्यासी कहता है कि हज़ारों साल से ख़ून देने की प्रथा चल रही है! देवी-पूजा की विधि के अनुसार वह अपना रक्तदान करके तो दिखाए! हमारे महाराज का 'घोड़ा' अब भी प्रमाण देता है कि इसी कामाख्या माता की पीठ में महाराज नरसिंह ने अपना सिर काटकर देवी को उत्सर्ग किया था।"

सब लोग एक साथ बोल उठे, "हाँ, हाँ राजा नरसिंह ने इसी शक्तिपीठ में देवी भैरवी को खड्ग से अपना सिर काटकर दिया था। गौड़ की रहनेवाली एक लड़की ने महादेवी की इस पीठ में अपनी जीभ नहीं दी थी क्या?"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

दस्तख़त इकट्ठा करनेवाले गुरुकुल के एक छात्र ने कहा, "राजा सुरथ ने अपने शरीर के रक्त में डुबोकर देवी के लिए नैवेद्य नहीं सजाये थे?"

गुरुकुल के छात्र ने सभी को सुनाकर ज़ोर से कहा, "तर्सा का संन्यासी कहता है कि अगर आज बलिप्रथा बन्द कर दी जाय तो हज़ारों साल से बलि का रक्त लेनेवाली देवी रुष्ट हो जाएगी और सारे संसार का ध्वंस कर डालेगी। फिर नरबलि क्यों बन्द हुई? और इससे क्या संसार का ध्वंस हुआ? देवी के शास्त्र में तो लिखा है कि दो हज़ार भैंसे से एक गेंदा ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है—एक हज़ार गेंदों से एक आदमी ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है—तो फिर मनुष्य की बलि बन्द क्यों हो गयी?"

छिन्नमस्ता के संन्यासी से मिलने आये ऊपरी असम के भक्तों ने कहा, "मनुष्य-बलि बन्द होने के कारण ही आज तक जगज्जननी की यह पीठ ब्रह्मपुत्र में लीन नहीं हुई है। शस्य श्यामला देश ध्वंस नहीं हुआ है। माँ का आशीर्वाद है। माँ का आशीर्वाद है।"

मन्दिर के बौने ताल और बेताल ने व्यंग्य से ठहाका मारा, "ऐ लाओ तो! आदमी लाकर दिखा! ओह् हो...!"

दोनों कूद-कूदकर नाचने लगे।

फिर से किसी ने सवाल किया—हाँ, हाँ, अगर हज़ारों साल से ख़ून चढ़ा रहे हो तो मनुष्य का रक्तदान बन्द क्यों हो गया? यह तो स्वार्थियों जैसा काम हुआ! अपना प्राण बचाकर मुँह से न बोल पानेवाले पशुओं को ज़बरदस्ती बलि देते हो! माँ ने तो कभी नहीं कहा है कि ख़ून न मिलने पर इस शस्य-श्यामला धरती को भस्म कर डालेंगी! शास्त्र में लिखा ही है—कि देवी को फूल से पूजो, फूल से। शास्त्र में लिखा है कि जो भी एक हज़ार 'कनेर' के और एक हज़ार 'रात की रानी' (कुन्द) के फूलों से माता की पूजा करेगा उसकी हर इच्छा पूर्ण होगी। वही आदमी देवीलोक में निवास करने का पुण्य लाभ करेगा :

"करबीरस्य कुन्दस्य सहस्राणि ददाति यः।
स कामान् प्राप्य चाभिष्टां देवीलोके महीयते।"

शास्त्र जाननेवाले इस भक्त ने फिर से कहा, "ख़ून के बदले फूल दो—एक पुष्पगृह निर्माण करके कामाख्या देवी को अर्पण करने पर पृथ्वी पर सभी इच्छाएँ पूर्ति करने के बाद भी, यानी मृत्यु के बाद, दुर्गालोक में निवास कर सकेंगे।

कृत्वा पुष्पगृहं तत्र कामाख्यायै प्रयच्छति।
इह कामानवाप्नोति दुर्गालोके महीयते॥

सब लोग एक साथ कह उठे, "पुष्पगृह उत्तम है! पुष्पगृह उत्तम है!"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपना पाण्डित्य दिखाते हुए उस भक्त ने फिर से कहा, "जो देवीभक्त एक हज़ार नीलकमल से देवी-पूजा करता है वह सौ करोड़ एक हज़ार साल देवी का सेवक बनकर रुद्रलोक में निवास करता है :

नीलोत्पल-सहस्रेण यस्तु मालां प्रयच्छति।
दुर्गायाः पूजया चैव तस्य पुष्पफलं शृणु ॥
वर्षकोटिसहस्राणि वर्षकोटिशतानि च।
देव्या अनुचरो भूत्वा रुद्रलोके महीयते ॥

सुनो, सुनो, योगिनीतन्त्र-शास्त्र के बारे में सुनो! इसी शास्त्र में देवी-पूजा में फूलों के महत्त्व के बारे में बताया है। इस शास्त्र ने ख़ून से फूल का स्थान ऊँचा बताया है। एक भैंसे के रक्त से देवी साल-भर तक तृप्त रहेंगी—ऐसा शास्त्र में लिखा है। लेकिन सिर्फ़ कनेर का एक फूल चढ़ाने पर अश्वमेध यज्ञ के बराबर फल-लाभ होनेवाली बात भी शास्त्र में लिखी है। कनेर की प्रजातिवाले सभी फूलों से पूजा करने पर अग्निष्टोम यज्ञ की फलप्राप्ति होगी और दाता सूर्यलोक में जाएँगे। हाँ, हाँ, अनन्तकाल तक सूर्यलोक में रह पाएँगे।"

छिन्नमस्ता के संन्यासी के लिए प्रतीक्षा करनेवाले भक्तों ने एक साथ कहा, "रक्त को त्यागकर फूल से होनेवाली पूजा का महत्त्व ज़्यादा है। रक्त को त्यागकर फूलों से देवी जगज्जननी के पैर धुलाओ। माँ! माँ! फूलों की पंखुड़ियों में मनुष्य का हृदय छुपा रहता है। मनुष्य की अदृश्य आत्मा को फूल ही सुगन्धित बनाये रखता है। जिस हृदय में हर समय फूलों की खुशबू रहती है वह मृत्यु के यात्री को भी वापस ला सकता है। रक्त को त्याग दो। फूलों से देवी माँ की पूजा करो।"

सभी भक्त जगज्जननी के प्रति भक्ति से विह्वल हो उठे। वे माँ-माँ कहकर पुकारने लगे।

ठीक उसी समय पाँच-छह औरतें हँसती-खिलखिलाती हुई कोटिलिंग की तरफ़ जाने लगीं। उनका अनुकरण करते चार हट्टे-कट्टे भक्त मृदंग बजाते आगे बढ़े। वे साफ़-सुथरी धोती पहने थे, माथे पर चन्दन का तिलक लगाये थे और गले में पूजा में अर्पित फूलोंवाली माला पहने थे। छिन्नमस्ता के संन्यासी के लिए प्रतीक्षा करनेवाले भक्तों ने सिर उठाकर देखा। सभी औरतों के शरीर का रंग साँवला था। लाल कनेर की खुशबू चारों तरफ़ फैल गयी। किसी को भी समझने में देर नहीं लगी कि ये उत्तर शेखदारी की रहनेवाली वेश्याएँ हैं। कोई भी देवीभक्त इस शक्तिपीठ के किसी भी उत्सव को छोड़ना नहीं चाहता। सभी ने देखा, उन वेश्याओं में से एक अँग्रेज़ अफ़सरों द्वारा निशानेबाज़ी सुधारने के लिए चलाई गयी गोलियों के ख़ाली कारतूस उठा रही थी। छिन्नमस्ता के संन्यासी की प्रतीक्षा में बैठे भक्तों में से कोई बोल

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

उठा, "शायद ये लोग ही वेश्याकुल की कांचीकुमारी हैं!"

सब लोगों ने एक साथ हामी भरी, "हाँ, हाँ, यही लोग वेश्याकुल की कांचीकुमारी हैं।"

एक दूसरे भक्त ने कहा, "अँधेरी रात की तरह काले चेहरेवाली एक वेश्या की बेटी की पूजा करने से चैत्रवंश के राजा विश्वम्भर को महामुक्ति लाभ हुआ था।"

भक्तों के बीच खुसर-फुसर शुरू हो गयी। कई भक्त खड़े होकर कोटिलिंग की तरफ़ जानेवाली उन लड़कियों को झाँककर देखने लगे। कौतूहल दिखानेवाले इन भक्तों को वैसे कोई ठीक से पहचान न सका।

भक्त ने फिर से कहा, "चैत्रवंशी राजा ने जिस वेश्या की पूजा की थी वह कोयले की तरह काली थी, यह सच है। लेकिन इसी चैत्रवंशी राजा ने वेश्या की बेटी कांचीकुमारी के शरीर से निकलती हुई रहस्यपूर्ण रोशनी में नहाकर मुक्तिलाभ किया था। इसलिए शास्त्र ने कहा है—भारतभूमि में पूजा की गयी कुमारियों की देह से प्रत्यक्षरूप से एक प्रकार की ज्योति निकलती है। योगिनीतन्त्र में इसी तरह से लिखा हुआ है।"

लड़कियों की खिलखिलाती हँसी की तरंग चारों तरफ़ फैल गयी। ठीक उसी समय सिर पर पगड़ी बाँधे सिंहदत्त को हाल में लाठी लिये घाट की तरफ़ उतरते देखा गया। उनका अनुकरण करते हुए बेटा रुद्र भी हाथ में बक़्सा लिये तेज़ क़दमों से जा रहा था। किसी के मुँह से कोई भी शब्द नहीं निकल रहा था। जैसे कोई गम्भीर फ़ैसला लेने के बाद ही वे इस तरह जा रहे हैं।

भीड़ में से ताल और बेताल ने व्यंग्यभरी टिप्पणी की, "सिंहदत्त अब ज़मीन-जायदाद बेचकर भैंसा ज़रूर ख़रीदेगा। दो-दो भैंसे के ख़ून से वधस्थल डूब जाएगा। सिंहदत्त ज़मीन बेचकर भिखारी भले ही बन जाए, भैंसा ज़रूर ख़रीदेगा।"

छिन्नमस्ता के संन्यासी के लिए प्रतीक्षारत भक्तगण अफ़सोस ज़ाहिर करने लगे, "ओह, ओह! उससे पहले ही छिन्नमस्ता के संन्यासी आ जाएँगे। कई तरह के फूलों से गृह-निर्माण करके वे उसे माँ को अर्पण करेंगे।"

एक दूसरे भक्त ने कहा, "दो भैंसों के ख़ून से मिले पुण्य से ज़्यादा आशीर्वाद पुष्पगृह-अर्पण से प्राप्त होगा। शास्त्र में लिखा है कि इस तरह के पुष्पगृह से देवी दशभुजा सन्तुष्ट होंगी और आशीर्वाद देंगी। ऐसे भक्त दुर्गालोक प्राप्त करेंगे।"

ठीक उसी समय हो-हल्ला शुरू हो गया। किसी भक्त द्वारा बलि के लिए लाया गया एक भैंसा रस्सी तोड़कर भक्तों के बैठने की जगह में घुस आया था। भक्तों के कपड़े और सामान को तहस-नहस करता हुआ वह पहाड़ी के नीचे भाग गया। सारे भक्त डर के मारे इधर-उधर भागने लगे।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्रह

ब्रह्मपुत्र के पानी में पूर्ण चाँद का प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। जैसे वह चाँद का प्रतिबिम्ब न हो बल्कि कोई श्वेतवर्ण की औरत नग्न होकर छटपटाती हुई पानी में गिर पड़ी हो। उत्तर शेखदारी से आयी औरतें कामाख्या की गुफाओं से बाहर निकलकर यह अभिनव दृश्य देखने लगीं। कुमारी-पूजा के लिए आयी दो किशोरी बालिकाएँ ज़ोर-ज़ोर से गाने लगीं, ''हे माँ! तुम्हारी नदी और तुम्हारे चाँद को शतकोटि प्रणाम! हे माँ! तुम्हारी नदी—तुम्हारा चाँद...!''

किशोरियों के साथ आयी सारी औरतें साथ-साथ गाने लगीं, ''हे माँ! तुम्हारी नदी—तुम्हारा चाँद...!'' उनके साथ दो-चार लोग मृदंग और करताल बजाने लगे। इस तरह एक घण्टे तक चन्द्रवन्दना करने के बाद वे गुफा में वापस चले गये।

चप्पू की छप्-छप् आवाज़ के साथ कई नाव घाट से लग गयीं। रात बढ़ने के साथ-साथ चन्द्रमा की दीप्ति और बढ़ने लगी। शक्तिपीठ की ब्राह्मण-कन्याओं की गोरी चमड़ी छीलकर जैसे चन्द्रमा ने ओढ़ ली है। मानो इस गोरी चमड़ी को ओढ़कर चाँद झिलमिला रहा है।

अब शक्तिपीठ की हर लड़की जैसे चाँद की सफ़ेद चमड़ी उतार लाना चाहती है! लेकिन कौन ओढ़ सकता है वह चमड़ी? बार-बार वह चमड़ी फट जाती है, ख़ून से लथपथ हो जाती है। हाँ, कौन छीनकर पहन सकता है वह चमड़ी?

रात बढ़ने के साथ-साथ लोगों का शोर, यात्रा की रिहर्सल आदि की आवाज़ कम होने लगी। देवी दशभुजा के 'घोड़ा' बननेवाले भक्तों की चीख़ सुनी गयी। 'घोड़ा' के माई ऐ! ए माई चामुण्डा! ऐ माई भैरवी आदि विकट शब्द रात का रहस्य बढ़ाने लगे। उत्तर शेखदारी से आये अधेड़ उम्र के भक्त चादर और गद्दे बिछाकर सोने की व्यवस्था करने के लिए बक्से, कपड़े-लत्ते, मृदंग और बाक़ी सामान खींचकर एक तरफ़ रख रहे थे । ठीक उसी समय गुफा के पासवाले खँडहरनुमा मकान के सामने मृदंगवादक ने एक छायामूर्ति देखी।

लड़कियों के बीच कोहराम मच गया। वह कौन खड़ी है? वहाँ कौन लड़की

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

खड़ी है? चाँद की रोशनी उसके बालों में रुपहली तरंग बनकर चमक रही है—जैसे उसने सिर पर एक रुपहला घूँघट डाल रखा है। उसके गोरे बदन से भी जैसे रोशनी निकलकर चारों तरफ़ बिखर गयी है। उसका शरीर जैसे एक दीपक बन गया है।

दीपक? एक अधेड़ उम्र की औरत सरसों के तेलवाला एक दीया लेकर सावधानी से क़दम बढ़ाती हुई बाहर निकली। बाहर एक जवान लड़की खड़ी थी। कुछ समय तक वह अधेड़ उम्र की औरत ठिठककर रुकी रही। हाँ, सच ही तो है—थोड़ी दूरी पर एक लड़की खड़ी है।

बाक़ी लड़कियाँ चिल्ला पड़ीं—"और आगे मत बढ़ो बाई, और आगे मत बढ़ो!"

"कौन हो? कौन?" औरत ने पूछा।

दीपक जैसे चेहरेवाली वह लड़की बिना हिले-डुले एक ही जगह पर खड़ी रही। औरत मिट्टी का दीया लिये आगे बढ़ गयी। बाहर खड़ी लड़की के चेहरे के सामने औरत ने हाथ का दीया उठाकर देखा। वह आश्चर्यचकित रह गयी। इस देवीपीठ में उसने पहले कभी इतनी गोरी और सुन्दर लड़की नहीं देखी थी।

"ओह्, ओह्, बाहर क्यों खड़ी हो? आओ, आओ।" उस औरत ने लड़की का हाथ कसकर पकड़ लिया और गुफा के पासवाली कोठरी में लगभग घसीटकर ले गयी। पास आनेवाली लड़कियों को औरत ने 'हट-हट' कहकर वहाँ से भगा दिया। सारी लड़कियाँ उस नवयुवती को घेर लेना चाहती थीं।

अधेड़ उम्र की औरत ने उसे एक कोने में ले जाकर पूछा, "तुम्हारा घर कहाँ है? तुम उत्तरी किनारे की हो या ऊपरी असम से आयी हो?"

वह नवयुवती आँखें फाड़कर देखती रही। क्या वह नाम नहीं बताना चाहती?

"नाम क्या है?"

लड़की ने कोई जवाब नहीं दिया।

"क्या ब्राह्मणकुल से हो?"

लड़की ने हाँ में सिर हिलाया।

तो फिर? वह लड़की बड़ी-बड़ी आँखों से देखती रही।

अब वह अधेड़ उम्र की वेश्या बोली, "यहाँ क्यों? यहाँ क्यों आयी हो?" फिर उसने लड़की का हाथ पकड़ लिया और दोनों धीरे-धीरे गुफा के पासवाली कोठरी के अन्दर घुस गयीं।

अन्दर बैठे मृदंगवादक और लड़कियों में हलचल मच गयी। अधेड़ उम्र की औरत ने कुमारी-पूजा के लिए लायी दोनों लड़कियों को इसी कोठरी में रखा था। कोठरी के अन्दर कनेर और गेंदे के फूल चारों तरफ़ बिखरे पड़े थे। वह औरत बड़बड़ाने लगी, "साफ़ करो। पूरा कमरा साफ़ करो। यह देखो, गेंदे की माला और बेलपत्ते कैसे बिखरे पड़े हैं! यह सब देवी माँ का निर्माली है। इन पंखुड़ियों को सिर पर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

रखो। और ये दो लड़कियाँ? कुमारी-पूजा के लिए लायी गयी थीं लेकिन ये तो यात्रावाले मैदान से हिलना नहीं चाहतीं! ऐ लड़कियो! बारह मरद रखनेवाली लड़कियो! इसे बैठने दो। बैठो बेटी, बैठो बेटी।"

एक बड़ी कौतूहलभरी नज़र से वह औरत फिर से नवयुवती की आँखों में झाँकने लगी। ऐसा काण्ड पहली बार नहीं हुआ है। उरपूत और बकों में रहनेवाली पतिता और गर्भवती एक विधवा ब्राह्मण औरत उत्तर शेखदारी की वेश्याओं के डेरे में थोड़े दिन पहले ही आयी थी। उस बेचारी विधवा ने ज़मीन के मुक़द्दमे को सुलझाने के लिए एक वकील को बुलाया था। वही उसका काल बना। इससे पहले दखला में रहनेवाली एक ब्राह्मण गर्भवती औरत के माछखोवा के मुसलमानों की बस्ती में जाकर बसनेवाली बात आज तक लोगों को याद है।[1]

तब तक दरवाज़े पर फिर भीड़ इकट्ठा हो गयी। उस औरत ने ताली बजाकर भीड़ लगाती लड़कियों को वहाँ से हटने का इशारा किया। फिर अचानक खींचकर नवयुवती की चादर खोल दी। ब्लाउज़ के नीचे उसने कुछ और नहीं पहन रखा था। इतनी फुर्ती से औरत ने उसके स्तनों से आँचल हटाया था कि वह एक पल के लिए कुछ समझ ही नहीं पायी। यह क्या हुआ? क्या हुआ यह? मांस के दो टुकड़ों पर उस औरत की नज़र पड़ी। उस समय मांस के वे टुकड़े जैसे पत्थर बन चुके थे।

मांस के दो टुकड़े? यही मांस के टुकड़े किसी भरी हुई नाव को ब्रह्मपुत्र में डुबा सकते हैं।

यही मांस के टुकड़े किसी साम्राज्य की बुनियाद को हिला सकते हैं? औरत चिल्लायी—"आओ, आओ लड़कियो, इधर आओ, पुरुषरूपी जंगली कुत्ते से बची हुई लड़की के स्तन कैसे होते हैं, आकर देख लो।"

अब तक पूरब दिशा में आसमान गुलाबी होने लगा था। भस्माचल के ऊपर कुछ लाल और काले बादल के टुकड़े जमा हो रहे थे। जैसे शिवजी के कन्धे पर टँगी सती की देह के टुकड़े हों! ब्रह्मा, विष्णु और शनि के काटे हुए टुकड़े हैं ये। हाँ, हाँ, कहावत है कि देवी सती के पैर, जाँघें, योनि, नाभि, स्तन, कन्धे, और गले के अंश कटकर विभिन्न स्थानों पर गिर जाने के बाद शरीर के बाक़ी अंगों को देवताओं ने टुकड़ों में काटकर चारों तरफ़ बिखेर दिया था। उड़ते हुए लाल-लाल बादलों के टुकड़े जैसे आकाशगंगा में गिर रहे हैं—जैसे वही सती के कटे हुए मांस के टुकड़े हैं।

थोड़ी देर में गुफा के पासवाली कोठरी के दरवाज़े में लोगों की भीड़ बढ़ने लगी।

---

1. सन् 1927-28 में घटित ऐसी कुछ घटनाएँ मैंने अपनी माँ के मुँह से सुनी थीं।—[लेखिका]

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृदंगवादक, तबलावादक और हारमोनियम बजानेवाले सभी लोग कोठरी के दरवाज़े पर खड़े होने लगे।

छिन्नमस्ता के संन्यासी की प्रतीक्षा करता भक्तों का एक दल भी कोठरी के दरवाज़े पर खड़े होकर अन्दर ताक-झाँक करना चाहता था लेकिन पहरेदार बनी उस अधेड़ उम्रवाली औरत ने सभी को खदेड़ दिया—"भागो, भागो, यहाँ कोई नहीं है। साले कुत्ते!"

वेश्याओं की इस मुखिया महिला ने बाहर आकर मुँह का पान थूका और फिर लड़कियों की तरफ़ उँगली नचाकर सख़्ती से कहने लगी, "ऐ लड़कियो! हमारे डेरे पर वह आयी है—यह बात किसी को पता नहीं लगनी चाहिए। सुना तुम लोगों ने?"

सभी ने सहमे हुए स्वर में कहा, "हाँ, जैसी आपकी आज्ञा।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अठारह

दूसरे दिनों की तरह आज भी मुँह-अँधेरे ही कामाख्या की तलहटी के जंगल में निशानेबाज़ी का अभ्यास करनेवाले गोरे साहबों का एक दल आया है। बरसात के साथ-साथ जंगल के पेड़-पौधे हरे-भरे और घने दिखने लगे हैं। चाक़ू से तराशकर नक़्शा बनाने की तरह दिखनेवाले भेलेऊ पेड़ों में हरे-भरे फूल गुच्छों में खिले हैं। मदार और मरै फूल की डालियाँ भी भर गयी हैं। भातघिला पेड़ की डालियों में लगी फलियों के अन्दर के बीज स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं। मानो ये ज़िन्दा छिपकली के पेट के अण्डे हों। (ज़िन्दा छिपकली के पेट के अण्डे बाहर से ही दिखाई देते हैं।) गन्धसरै के पत्ते रानी की मोहरवाले रुपये की तरह धूप में झिलमिला रहे हैं। चोम और कटहल के पत्ते एक-दूसरे से लिपटे हैं। गिलहरी की पूँछ की तरह लम्बे पत्तेवाले 'जरी' के पेड़ से यह जंगल अटा पड़ा है। लम्बी पूँछवाले बन्दरों की हुक्-हुक् आवाज़ से चारों दिशाएँ गूँज रही हैं।

निशानेबाज़ी का अभ्यास करने आये साहब बाक़ी दिनों की तरह कुछ देर तक जंगल में घूमते-टहलते रहे। उन्हें एक साथ कई नाव ब्रह्मपुत्र में तैरती दिखाई दीं। उलटी दिशा से आयी एक नाव भी घाट से लगती हुई उन लोगों ने देखी। साहबों ने देखा कि इस नाव से दो भैंसे उतारे जा रहे हैं। भैंसे किनारे पर चढ़ना नहीं चाह रहे थे, उन्हें घसीटकर और हो-हल्ला करते हुए ऊपर चढ़ानेवाला दृश्य गोरे साहब बहुत देर तक मज़ा लेते हुए देखते रहे।

अचानक देवीपीठ से आती चीख़-पुकार ने गोरे साहबों का ध्यान भंग किया। किसी भी दुर्घटना के बाद सवाल-जवाब करनेवाले पण्डों का एक दल भुवनेश्वरी के नीचेवाली सड़क से भागते हुए आकर गोरे साहबों के सामने खड़ा हो गया। ये पण्डे लाल रंग की धोती पहने हुए थे। उनकी बण्डी की जेबों में यजमानों के काग़ज़ात ठुँसे हुए थे। हाँफते हुए वे सवाल करने लगे, "महाशय, आप लोग पौ फटते ही यहाँ हाज़िर हो जाते हैं। एक जवान लड़की ग़ायब हो गयी है। अच्छे कुल की है—ब्राह्मण की बेटी है!"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

"लड़की? ए यंग गर्ल?" लम्बे और मज़बूत शरीरवाले बन्दूक़धारी अँग्रेज़ ने पूछा।

दोनों पण्डों ने एक साथ कहा, "हाँ, हाँ जवान लड़की—शुवालकुचि की रहनेवाली है।"

जंगल की आड़ से एक नाटा-सा गोल-मटोल साहब तेज़ी से आगे आकर बोला, "पिछली रात को मुझे अपना रिवाल्वर नहीं मिल रहा था, मैं अपने मुंशी के साथ यहाँ आया था। तब मैंने एक अद्भुत दृश्य देखा था।"

"अद्भुत दृश्य?"

"चप्पू की आवाज़ सुनकर मैंने सामने सिर उठाकर देखा था। चाँदनी रात थी। चारों तरफ़ दिन जैसी रोशनी थी। पहाड़ी से मिट्टी के टुकड़े लुढ़कने की तरह एक झुण्ड नीचे उतर रहा था। भागते हुए वे लोग घाट पर बँधी नाव पर चढ़ गये। मैंने फिर से चप्पू की आवाज़ सुनी। फिर मेरी आँखों के सामने से वह नाव कोहरे की मोटी परतों में छुप गयी।"

लाल धोती पहने पण्डे बोल पड़े, "हाँ, हाँ वही थे। ज़रूर वही लोग थे।"

वही थे! इसका मतलब लड़की पिछली रात को ही ग़ायब हुई थी। दोनों पण्डे पहाड़ी के ऊपर की तरफ़ दौड़ने लगे, जैसे उन्हें कोई सुराग़ मिल गया हो।

श्रावण महीने के आख़िरी कुछ दिन बचे हुए हैं। आजकल 'घोड़ा' कहे जानेवाले देवी-शक्ति से प्रेरित आदमियों की चीख़ ने रात के अन्धकार को और भयानक बना दिया था।—"ऐ, ऐ, आओ, आओ। माई! माई! ऐ माई चामुण्डा! ऐ माई तारा!!"

इन चीख़ों से अचानक नींद से जगे बच्चे बुरी तरह से डर जाते थे। कितने ही देवी-देवताओं का 'घोड़ा'—कामाख्या, महादेव, छिन्नमस्ता, श्मशान-काली, मनसा, चलन्ता, भुवनेश्वरी, बगलादेवी, गणेश, नारायण और महाराज का 'घोड़ा'। कभी-कभी देवी चढ़नेवाला 'घोड़ा' लोगों के बीच से ही दौड़ता हुआ निकल जाता है। उनके नंगे बदन में सिन्दूर और अबीर का रंग लगा होता है और उनका पहनावा है एक छोटे से वस्त्र का टुकड़ा। लोगों के बीच से दौड़ते ये 'घोड़े' ज़मीन में साष्टांग मुद्रा में गिर पड़ते हैं। लड़की ढूँढ़नेवाले पण्डे जब ऊपर चढ़ रहे थे, तभी उनको धक्का देता गौड़ की तरफ़ का देवी चढ़नेवाला एक 'घोड़ा' दौड़कर निकल गया।

"यह 'घोड़ा' गौड़ की तरफ़ से आया हुआ मुसलमान है।" एक पण्डे ने ज़ोर से कहा।

फिर दूसरा पण्डा बोला, "लेकिन सवाल-जवाब में नहीं टिक सकेगा।"

एक और पण्डे ने बताया, "पिछले साल भी एक मुसलमान भक्त आया था।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपने को कालीमाता का 'घोड़ा' बता रहा था। याद नहीं क्या? लेकिन कहाँ—आगे टिक ही नहीं पाया! सौभाग्यकुण्ड के पास एक झुण्ड 'घोड़े' ने जब सवाल-जवाब किया तो सुना था कि देवी ने उसे छोड़ दिया था।''

अब दोनों पण्डे नीचे झाँककर देखने लगे। नदी के घाट लोगों से भर चुके हैं। पण्डों को धक्का देते कई भक्त नीचे उतर गये। धक्का-मुक्की में पण्डों की जेब से काग़ज़ात नीचे गिरने लगे। वे जल्दी-जल्दी काग़ज़ों को उठाने लगे। चारों तरफ़ हो-हल्ला मचा हुआ था। लोगों के मुँह से एक ही आवाज़ सुनाई दी—''छिन्नमस्ता का संन्यासी वापस आ गया है।''

''छिन्नमस्ता का संन्यासी वापस आ गया है!''

पण्डों में से एक ने दूसरे के कान में फुसफुसाकर कहा, ''इस बार बात गम्भीर है। अब 'होता' कुल के पुजारी और विधिपाठकों के बेटे भी एकजुट हो गये हैं।''

''हज़ारों साल से चलते आये रिवाज साले ये लड़के बन्द करवाना चाहते हैं! ये लड़के कहते हैं कि आख़िर मनुष्य-बलि तो बन्द हो गयी थी। साले—ये लड़के जानते नहीं कि ख़ून आदमी का हो या बकरे का...।''

साथ के पण्डा ने सिर हिलाया—''हाँ, हाँ, ख़ून आदमी का हो या बकरे का!''

''लेकिन लड़की का क्या होगा? लड़की का क्या होगा? सिंहदत्त भैंसे लाकर शक्तिपीठ पहुँच गया है।''

''लड़की कहाँ गयी है?''

अचानक सौभाग्यकुण्ड के पास चीख़ने की आवाज़ और शोरगुल पण्डों ने सुनी। सिंहदत्त शर्मा भयानक रूप धारण करके गरजने लगा, ''ऐ, ऐ लड़की कहाँ गयी? इतने सारे लोगों की आँखों के सामने से लड़की ग़ायब हो गयी! कहाँ गयी मेरी बेटी? कहाँ गयी मेरी बेटी?''

सौभाग्यकुण्ड की सीढ़ियों के आसपास लोग भर गये। हाजो की तरफ़ से बगला देवी का 'घोड़ा' बनने आनेवाले एक लड़के से 'पुराने घोड़े' सवाल पूछ रहे थे।

दखला और उरपूत से देवी चढ़े दो नवयुवकों के पिता पूरी रात सौभाग्यकुण्ड की सीढ़ियों पर चिन्तामग्न होकर सिर नीचे किये बैठे थे। उनके बेटे स्कूल के छात्र हैं। दोनों के बेटों में एक ही लक्षण दिखाई दे रहे हैं। कई दिनों से उन्होंने खाना-पीना छोड़ दिया है। पहले कभी मांस-मछली पसन्द नहीं करनेवाला उरपूत से आया छात्र घर में पाले कबूतरों का गला मरोड़कर ख़ून पी गया था। वह भैरवी मन्दिर के आसपास 'माई ऐ—माई ऐ' कहकर चिल्लाता रहा। गाँव की औरतों ने आँगन में बैठकर उसके लिए महादेव के गीत भी गाये—''देखो, देखो—आँखें खोलो, श्मशान के नाथ।''

लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। लड़कों पर देवी का प्रभाव कम करवाने के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिए और उन्हें फिर से स्कूल में जाने लायक़ बनाने के लिए दोनों के पिता बूढ़े वैद्य से कवचवाले कपड़े लाये थे लेकिन फिर भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

भक्तों की भीड़ बढ़ने लगी। आज बलि के लिए असंख्य बकरे लाए गये हैं। वधस्थल के सामनेवाले घर के आँगन में सारे बकरों को बाँधकर रखा गया है। उनके बीच से खींचकर बलि देनेवाले बकरे का कच्चा ख़ून छिटककर बाक़ी बकरों के शरीर पर पड़ा है।

सिंहदत्त की चीख़ सुनकर सभी ने उस तरफ़ सिर उठाकर देखा। भीड़ को धक्का देते, देवी का 'घोड़ा' बनने आनेवाले एक युवक के ऊपर से कूदकर सिंहदत्त तेज़ी से नीचे उतर गये।

माँ काली का 'घोड़ा' बनने आनेवाले हाजो का एक नवयुवक बहुत दिनों से मन्दिर के सामने चीख़-पुकार रहा था। उसकी आँखें लाल हो गयी थीं। सिर के लम्बे बाल पसीने से भीगकर चिपचिपे हो गये थे। होठों से लार टपकती रहती थी। शरीर धूल-मिट्टी से भर गया था। काली माता के मन्दिर के सामने 'पुराने घोड़े' के सवालों से वह घिर गया—"देवी काली का स्थान कहाँ है?"

उसने साफ़-साफ़ जवाब दिया, "कालिकायाः श्मशानाद्धि नान्यतः स्थानं प्रशस्यते। काली माई का प्रिय स्थान श्मशान है! श्मशान!"

"काली माई का वर्णन करो।"

काँपती आवाज़ से वह नवयुवक काली माता का वर्णन करने लगा, "कृष्णवर्णा, मुण्डमाला-शोभिता, मुक्तकेशी और रक्तवर्ण की लपलपाती हुई जीभवाली। रक्तवर्णवाली तीन आँखें। शास्त्र में लिखा है कि महाकाली के प्रचण्ड प्रकाश से महायुद्ध-अभिलाषी योगिनियों का जन्म हुआ। महाकाली के शरीर के हर रोमकूप में करोड़ों ब्रह्माण्ड प्रकाशमान होते हैं। जगन्माता ने भयानक दानव को अपनी लपलपाती जीभ से खींचकर समग्र ब्रह्माण्ड के साथ चबाकर ख़त्म कर दिया था।"

"दाँतों से चबाकर?"

"हाँ, हाँ दातों से चबाकर! ब्रह्माण्ड सहिता माता सर्वचिन्ता ततक्षनात्।"

अब हाजो का 'घोड़ा' ज़मीन में लेटकर हाथ-पैर पटकने लगा। इस तरह से हाथ-पैर पटकते वक़्त भी काली माता का 'घोड़ा' बननेवाला यह नवयुवक ज़ोर-ज़ोर से बोलता रहा—"माँ, माँ! माँ के लिए लाल झण्डा फहराओ! माँ के लिए काले बकरे लाओ! मैं अपने दाँतों से उसका गला चीर दूँगा। माँ के लिए ढोलक बजाओ, ढोलक—ढम् ढम् ढम्!"

फिर वह लड़का फुर्ती से उठकर भीड़ की दिशा में दौड़ने लगा। विधिबाला को पागलों की तरह ढूँढते रहे सिंहदत्त को धक्का देता हुआ वह पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब तक मुख्य पुजारी को भी ख़बर मिल गयी थी कि विधिवाला ग़ायब हो गयी है। उन्होंने जल्दी से पहाड़ी के नीचेवाले इलाक़ों में कुछ लोगों को भेज दिया। ब्रह्मपुत्र के बाक़ी घाटसमूह तक भी लोग भेजे गये। कामेश्वर, सिद्धेश्वर और अम्रातकेश्वर–कहीं भी ढूँढने में कोई कसर बाक़ी नहीं रही।

छिन्नमस्ता के संन्यासी को लेकर नाव धीरे-धीरे किनारे तक आने लगी। इस नाव में केसरी रंग का झण्डा हवा में थिरक रहा था। नाव के सामने रखे हुए बेलपत्रवाला कलश स्पष्ट दिख रहा था। उनके भक्त ढोलक और करताल बजाकर देवी दशभुजा के गीत गाते हुए आ रहे हैं। किनारे पर खड़े लोगों में हलचल मच गयी।

कनेर और कमल के फूलों की माला लिये अनेक छात्र किनारे पर उत्साहित खड़े थे। उनमें से गुरुकुल के एक छात्र ने ज़ोर से कहा, "आसन बिछाना होगा। पानी के बिलकुल पास जाकर उन्हें आदरपूर्वक लाने के लिए पत्थर, कुश या लकड़ी का बना आसन या पीढ़ा चाहिए। शास्त्र में लिखा है–कामाख्या देवी की पूजा में पत्थर के बने आसन और धागे से बनी हुई दरी को श्रेष्ठ माना गया है। सुनो, सुनो–हाथी की अस्थि को छोड़कर बाक़ी प्राणियों की अस्थि से आसन बनाना उचित नहीं है। लोहा, काँसा और सीसा के बने आसन की ज़रूरत नहीं है।" पास खड़े रत्नधर को सम्बोधित करके उसने फिर कहा, "सुनो रत्नधर, तुमने शायद पढ़ा है कि साधकों के लिए सोना-चाँदी और मोती-जड़े आसन की ज़रूरत नहीं होती है। साधकों के लिए लकड़ी, दरी और कपास से बने आसनों को ही श्रेष्ठ माना गया है।

'न यथेष्ठासना भूयात् पूजाकर्मणि साधकः।
काष्ठादिकासनं ब्रूयात् श्रेष्ठमेव सदा बुधः।"

रत्नधर अपने गुरु के लिए व्याकुल था। कब जाकर वह छिन्नमस्ता के संन्यासी के पैरों पर झुक सकेगा–यही सोच-विचारकर वह मन-ही-मन बहुत उत्साहित और खुश था।

नाव पर लहराते लाल और केसरिया झण्डे अब बिलकुल स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। तभी अचानक उसके मन में आया कि एक आसन की ज़रूरत पड़ेगी। किनारे पर बिछे आसन पर बैठकर वे भक्तों से यहाँ का समाचार और अन्य बातें सुनेंगे। इसी स्वर्गद्वार से वे ऊपर चढ़ेंगे। यही उत्तरी दिशा का दरवाज़ा है–यही मुक्ति का दरवाज़ा है। इसी जगह पर खड़े होकर छिन्नमस्ता के संन्यासी 'आरोहण मन्त्र' का उच्चारण करेंगे–

"नील-शैल गिरिश्रेष्ठ त्रिमूर्ति रूपधारक–"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

धीरे-धीरे लोगों की भीड़ और बढ़ने लगी। भक्तों के बीच कोलाहल होने लगा। देवध्वनि उत्सव के लिए कुछ दिनों पहले पहुँचे हुए दरंग ज़िले के दो ढोलकिया ढोलक बजाने लगे। मीर्जा और पलाशबाड़ी से आयी औरतों की उलुध्वनि से चारों दिशाएँ मुखर हो उठीं—"उलू—लू—लू—उलू—लूलू—!"

ठीक उसी समय रत्नधर संन्यासी के लिए एक आसन लाने के लिए भागते हुए ऊपर चढ़ने लगा। तब तक ऊपर भी हलचल मच गयी थी। विधिबाला के ग़ायब होने की ख़बर जंगल की आग की तरह चारों ओर फैलने लगी थी। सिंहदत्त रुद्र और डम्बरू को साथ लेकर पागल की तरह सभी जगह अपनी बेटी को ढूँढने में लगे थे। नटपाड़ा, हेमतला, बामुनपाड़ा, बेजपाड़ा, नापितपाड़ा आदि जगहों में अच्छी तरह खोज-ख़बर करने के बाद सिंहदत्त पहाड़ी के नीचे उतर आये। उनके साथ-साथ रुद्र और डम्बरू के अलावा भी लोगों का एक झुण्ड नीचे उतर आया।

सिंहदत्त ने हाथ-पैर पटकते हुए भयानक रूप धारण कर लिया और घाट पर छिन्नमस्ता के संन्यासी का इन्तज़ार करते लोगों को सुनाकर बड़बड़ाने लगे—"कहाँ गया रत्नधर? कहाँ गया?" लोगों के बीच में रत्नधर को ढूँढ़ते हुए वे चिल्लाने लगे, "कहाँ है रत्नधर! मेरी बेटी को उसी ने ग़ायब किया है। रत्नधर, ऐ साले कुत्ते रत्नधर!"

गुरुकुल के सभी छात्र डर के मारे चुपचाप खड़े रहे। लोगों के बीच रत्नधर को न पाकर सिंहदत्त तेज़ी से ऊपर चढ़ गये और एक टूटे मन्दिर के अन्दर 'कालापहाड़' नाटक का रिहर्सल कर रही एक 'नाटक-मण्डली' के दल के बीच घुस गये।

'कालापहाड़' का अभिनय कर रहे ज़बरदस्त चेहरे का एक आदमी अपना संवाद दोहरा रहा था—"मैंने श्री रामचन्द्र की खड़ाऊँ उछालकर श्रीफल (बेल) तोड़ा है। मैंने मन्दिर की मूर्ति के टुकड़ों से मांस तौलनेवाला बाट बनाया है। मैंने—मैंने पुरी के जगन्नाथ की लकड़ी से बनी मूर्ति को मुर्शिदाबाद की सड़क पर जला दिया है। मैं—मैं—"

नरबलि में इस्तेमाल करनेवाली तलवार जैसी एक नक़ली तलवार घुमाता वह अभिनेता 'कालापहाड़' का ताण्डव रूप दिखा रहा था।

ठीक उसी समय उसके सामने सिंहदत्त शर्मा हाज़िर हुए। वे झुककर, घुटनों के बल कोने-कोने में रत्नधर को ढूँढ़ने लगे। वे शक की निगाहों से देखने लगे कि आख़िर रत्नधर कहाँ छुपा हुआ है। 'कालापहाड़' के चरित्र में अभियन करता आदमी बोल पड़ा, "क्या करते हैं, क्या करते हैं आप? हम लोग श्री रामपुर नाटक-पार्टी के लोग हैं। हम लोग भागे हुए आसामी को छुपाकर नहीं रखते।"

उस अभिनेता ने तेज़ी से कमरे के दूसरे कोने में शाहबानो बेगम आदि के साथ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

रिहर्सल करते दो कम उम्रवाले लड़कों के सिर से लकड़ी और चमकीले काग़ज़ से बनायी तलवार से चुनरिया हटा दी।

सिंहदत्त भीड़ ठेलते हुए आगे बढ़े। उनका अनुकरण करते हुए रुद्र और डम्बरू भी फ़ुर्ती से ऊपर चढ़ने लगे। दोनों बहुत उत्तेजित थे। क्या पता, आज सिंहदत्त ज़रूर किसी का ख़ून कर देंगे! उनको मना करना बेकार है।

देवध्वनि उत्सव के लिए आये भक्तों की भीड़ को धक्का देते हुए गुस्से में आगबबूला सिंहदत्त बीच-बीच में चिल्ला उठते थे, "विधिबाला कहाँ गयी ? विधिबाला कहाँ गयी? विधिबाला कहाँ गयी?..."

विधि का विधान यही था कि सामने आनेवाली भयानक विपत्ति से अनजान रत्नधर सिर पर छिन्नमस्ता के संन्यासी के लिए लकड़ी से बना रंगीन फुलकारी किया आसन उठाकर गुरुकुल के दो-चार छात्रों के साथ नीचे उतर रहा था। यहाँ तक कि उसे अब तक यह भी पता नहीं था कि विधिबाला ग़ायब हो गयी है।

'मेखला ऊजोवा' नाम की सड़क पर अचानक कोहराम मच गया। सिंहदत्त ने एक ही झटके में रत्नधर के सिर पर रखे लकड़ी के सामान को गिरा दिया। रुद्र दोनों को अलग करने की कोशिश करने लगा। सिंहदत्त ने रत्नधर की पीठ पर ज़ोर से लात जमा दी और फिर उसे तमाचे और मुक्के जड़ने लगे। दोनों पहाड़ी के नीचे गिरने लगे तो भक्तों के बीच चीख़-पुकार शुरू हो गयी। कुछ लोग साहस कर सिंहदत्त के क़ब्ज़े से रत्नधर को छुड़ाने की कोशिश में जुट गये। लेकिन सिंहदत्त के शरीर में जैसे प्रचण्ड शक्ति आ गयी थी। उनका रूप ख़ूँख़ार पशु की तरह बन गया था। विधिबाला का अपहरण करनेवाला लड़का रत्नधर के अलावा और कोई नहीं हो सकता—ऐसा ही उनका विश्वास था। गुस्से में होश गँवाकर वे लड़के को जैसे नोचने-छीलने लगे। रत्नधर का पूरा शरीर ख़ून के क़तरों से भर गया। सिंहदत्त उसे छिन्नमस्ता के संन्यासी के लिए इन्तज़ार करनेवाले भक्तों के बीच घसीट लाये। गुरुकुल के छात्रों ने सिंहदत्त के क़ब्ज़े से रत्नधर को छुड़ाने की कोशिश में छीना-झपटी शुरू कर दी। वे चिल्लाने लगे, "इसकी क्या ग़लती है? क्या ग़लती है? बिना किसी दोष के ही यह लड़के को मार डालेगा। पकड़ो, पकड़ो...!"

चारों तरफ़ जमकर हो-हल्ला मच गया।

"पकड़ो, पकड़ो, लड़का अब मर जाएगा! पकड़ो..."

ठीक उसी समय छिन्नमस्ता के संन्यासी की नाव घाट पर लग गयी। पकड़ो, पकड़ो—मारो, मारो जैसे शब्दों को दबाती एक हृदयस्पर्शी आवाज़ ने जैसे आसमान छू लिया।

यह आवाज़ छिन्नमस्ता के संन्यासी की थी। एक पल के लिए सब लोग स्तब्ध हो गये। नाव से उतरकर उन्होंने घाट की ज़मीन पर पैर रखा। भक्त महिलाओं ने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

उलुध्वनि दी—"उलू—लूलू—उलू—लूलू...।"

झाँझ, शंख और घण्टा बजने लगे। छिन्नमस्ता के संन्यासी किनारे पर खड़े हो गये। बलि के सूखे ख़ून-मिली शक्तिपीठ की मिट्टी की नाईं भयानक दिखनेवाली उनकी जटाएँ साँप की तरह कुण्डली बनाकर सिर पर विराजमान हैं। इन दिनों उनके शरीर का मोटापा बढ़ गया है। उनकी तीखी नज़रों से जैसे कोई ज्योति निकल रही है। इस ज्योति में क्षोभ था और क्षोभ के साथ मिले हुए थे विराग और अपमानित होने का भाव। भीड़ के बीच से चलकर जटाधारी ने तेज़ी से सिंहदत्त के क़ब्ज़े से रत्नधर को खींचकर निकाला। सिंहदत्त दूर जा गिरा। गरजते हुए संन्यासी ने कहा, "रत्नधर मेरा शिष्य है। वह ऐसा काम नहीं कर सकता। तुम्हारी लड़की विधिबाला की नाव मैंने नदी में दो मील की दूरी पर पार की है। मेरे साथ आया शुवालकुचि का एक भक्त आवाज़ दे रहा था—'उत्तर शेखदारी की वेश्याओं के साथ सिंहदत्त की बेटी विधिबाला! मनमोहन पुजारी के यजमान सिंहदत्त की बेटी विधिबाला!"

सिर पर गाज गिरनेवाले व्यक्ति की तरह स्तब्ध खड़े सिंहदत्त के सामने वह व्यक्ति दौड़कर पहुँचा। शुवालकुचि का यह भक्त ज़ोर-ज़ोर से कहने लगा, "मैंने विधिबाला को देखा है। नाव के आख़िरी छोर पर बाल खोलकर खड़ी वेश्याओं के साथ वह भी थी। मैंने विधिबाला को देखा है।"

छिन्नमस्ता के संन्यासी ने अब किसी की परवाह किये बिना बेहोश पड़े रत्नधर को कन्धे पर उठा लिया और तेज़ क़दमों से पहाड़ी पर चढ़ने लगे। इतनी देर से उनको घेरे भक्तगण भी पीछे-पीछे जाने लगे।

सिंहदत्त शर्मा बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्नीस

पलाशबाड़ी, कैहाटी, दतकुचि, बरक्षेत्री और यहाँ तक कि दरंग ज़िले के सातघरिया, बरदौलगुड़ि और ग्वालपाड़ा ज़िले के मारिया से आये ढोलकिया कामाख्या पीठ के अस्थायी तम्बुओं और घरों में खचाखच भर गये। कामाख्या की ज़मीन का बिना शुल्क इस्तेमाल करनेवाले देवीपीठ के निजी ढोलकियों ने भी अपने-अपने स्थानों पर क़ब्ज़ा जमा लिया। दूर से आये ढोलकिया ढीली बाँहवाली कमीज़ें पहने थे। दो-एक ने बेरंग कोट भी पहन रखे थे। बाहर से आये दो-चार ढोलकियों ने सिर पर गाँधी टोपियाँ भी पहन रखी थीं। शायद इसी समय गाँधी टोपी काफ़ी प्रचलित हुई थी। ज़्यादातर ढोलकियों की पोशाकें काले रंग की थीं।

दो ढोलकिया सियार और बिल्ली के मुखौटे पहनकर नीचेवाली जगह में कई तरह के खेल दिखाने लगे। मन्दिर के ताल-बेताल नाम के दोनों बौने उन ढोलकियों के साथ छाया की तरह चिपके हुए थे। ऊँची कूद और कलाबाज़ियाँ दिखाने में वे ढोलकिया बहुत माहिर थे। देवध्वनि उत्सव के लिए आये हुए भक्तों के दल भीड़ बढ़ा रहे थे। ढोलकियों की हर ऊँची कूद के साथ ही भक्त किलकारियाँ भरने लगते थे। झाँझ, ढोलक घण्टा और तुरही की आवाज़ से पूरा इलाक़ा मुखर हो उठा था।

मन्दिर की ज़मीन निःशुल्क पानेवाले ढोलकियों को आने-जाने का ख़र्च मन्दिर की तरफ़ से ही मिला था। वे कुछ दूर पैदल और कुछ दूर बैलगाड़ी से आये हैं। ख़र्च पाने के कारण ज़्यादातर ढोलकिया ख़ुशी और उमंग से नाचते हुए आये हैं। पीठ में रहने के दौरान हर दिन उन्हें मन्दिर से भोग मिलेगा, मुख्य पुजारी से दो-दो धोतियाँ और ख़र्च चलानेवाले पुजारी से भी एक-एक धोती मिलेगी—इसके अलावा देवीपीठ से भी कपड़े मिलेंगे। ख़ूब सारी चवन्नियों और अठन्नियों से झोले भर जाएँगे।

छिन्नमस्ता की सीढ़ी पर एक पुराना 'देउधा' (देवी-शक्ति से प्रेरित आदमी) बैठा था। पिछले साल उसे नाच से बाहर होना पड़ा था। वधस्थल की सफ़ाई करनेवाली एक लड़की को वह रात में घसीटकर पहाड़ी के नीचे भातघिला पेड़ के पास ले गया

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

था और वहाँ उससे बलात्कार किया था।

सुबह हाहाकार मच गया था।

''कहाँ का 'घोड़ा' था?''

''कहाँ से आया 'घोड़ा' था?''

''हाँ, हाँ उत्तर शेखदारी का रहनेवाला था। देवी छिन्नमस्ता के मन्दिर में पिछले एक महीने से चीख़-पुकार कर रहा था। शायद उसी समय वधस्थल की सफ़ाई करनेवाली मन्दिर की दासी को उसने देखा था। अब वह पेट में अर्बुद की बीमारी लिये फिर रहा है; लोग कहते हैं—यह महापाप का नतीज़ा है। पहले वह लोहार था। अब भीख माँगता है। सिर से पैर तक ढँककर रखने के बावजूद उसके सिर का निकला हुआ हिस्सा देखकर ही लोग उसे पहचान लेते थे, क्योंकि दूसरे लोगों की तुलना में उसका सिर बड़ा था। उसके बाल खड़े-खड़े थे, जैसे किसी ने रोप दिये हों। नंगे पैरों की चमड़ी इतनी खुरदरी हो गयी थी कि वे आदमी के पैर जैसे नहीं लगते थे।

अब तक 'नाटघर' में देवी मनसा का कलश अष्टदल कमल पर स्थापित किया जा चुका था। सिन्दूर और हल्दी, पीपल, वटवृक्ष, बकुल बाँस आदि के पाँच प्रकार के पत्तों से कलश को अलंकृत करने का काम शुरू हो गया था। अष्टनाग के लिए चढ़ाए जानेवाले नैवेद्य को सजाने के लिए नाटघर के आँगन में तैयारियाँ चल रही थीं। महानीबू, नारियल, गेंदे और हरसिंगार के फूलों से पूजास्थल भर गया था।

मनसा देवी की स्थापना की गयी। चाँदी के बने दो साँप फन निकाले हुए देवी की बाँहों के पास जैसे नृत्य की भंगिमा में बैठे हैं। दो फनवाले नाग मनसा देवी के सिर पर मुकुट बनकर विराजमान हैं। देवी का पूरा शरीर सफ़ेद फूलों से सजाया गया है। बीच में भयानक रूप धारण किये कालनाग[1] को सोने से बनाया गया है। किंवदन्ती के अनुसार मान के आक्रमण के समय लोहारघाट के रहनेवाले एक सुनार द्वारा खेत में छुपाकर रखे सोने की मोहरवाला एक घड़ा 'भराली' कुल के एक परिवार को मिला था। उन लोगों ने मनसा देवी के लिए यह सोने का साँप चढ़ाया था। कुछ लोगों का कहना है कि घड़े का पहरा देनेवाले साँप को भराली परिवार के सदस्य ने मार डाला था, जिससे उनके मन में डर बैठ गया। परिवार के एक-दो सदस्यों ने सपना भी देखा। इसलिए उन्होंने मनसा देवी के लिए सोने का साँप बनवा दिया।

मनसा देवी की आँखों से जैसे रोशनी निकल रही थी। कौन-सा मूल्यवान पत्थर लगाया गया होगा इन आँखों में? देवी के सिर के ऊपर फूलों से बना चँदोवा सजा हुआ है। देवी-चढ़े घोड़े यानि देउधा लोग वधस्थल के पास सिमटकर बैठे हैं। भक्त उनके पैरों पर साष्टांग होकर गिर पड़े हैं और अपने-अपने भविष्य के बारे में सवाल

---

1. कालनाग – Cobra

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
पूछने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे हैं।

जटाधारी भक्तों को विदा करने के बाद मनमोहन पुजारी के घर जाने की तैयारी कर रहे थे। भक्तगण उन्हें रात के आख़िरी पहर तक नहीं छोड़ते थे। उनके जाने के बाद ही जटाधारी ब्रह्मपुत्र में जाते थे। दूसरे दिनों की तरह आज भी ब्रह्मपुत्र में उतरने के बाद वे कहाँ ग़ायब हो गये कोई समझ नहीं सका। लोग कहते हैं कि वे तैरते हुए ब्रह्मपुत्र के मध्यभाग में स्थित उमानन्द तक चले जाते हैं।

पहाड़ी पर पैदल चढ़ते समय जटाधारी ने बहुत सारे ख़ाली कारतूस देखे। इसका मतलब आजकल पहले से ज़्यादा साहब निशाना साधने के लिए आते हैं। आज़ादी की ज़बरदस्त लड़ाई शुरू हो गयी है। गोरे साहब सतर्क हो गये हैं। जन्मभूमि के पैरों से ज़ंजीरें तोड़ने के लिए स्वयंसेवी लोगों ने अपने-अपने सीने तान दिये हैं। महात्मा ने बारूद का नहीं—हृदय का युद्ध शुरू कर दिया है।

सन् 1921 के अगस्त महीने में महात्मा गाँधी के स्वराज्य हेतु पूँजी संग्रह करने के लिए गुवाहाटी आने पर हलचलें और बढ़ गयी थीं। उसी मौक़े पर हस्तीविद्यर्न के कथा-गीता आदि बहुमूल्य ग्रन्थ महात्मा को दिखाते हुए हेमचन्द्र गोस्वामी ने उनसे सवाल-जवाब किया था कि आपने एक बार असमिया जाति को बर्बर और असभ्य कहा था। कहते हैं गाँधी महाराज बिलकुल भौंचक्के रह गये थे। हाँ, हाँ, उन्होंने ऐसा कहा था। अब उसी जाति का सभ्य और सुसंस्कृत रूप देखकर वे आश्चर्य में पड़ गये हैं। अपने बच्चों को स्तनपान करानेवाली माँ ने भी सारे गहने उतारकर गाँधी को दे दिये थे। आख़िर माफ़ी माँगी थी उन्होंने।

पानी से निकलकर फुर्ती के साथ किनारे पर चढ़ गये छिन्नमस्ता के संन्यासी। ऊपर चढ़ते समय हृदय से वह चीख़ उठे थे—"माँ! माँ!! जय हो माँ! तुम्हारी जय हो!! माँ रुद्रेश्वरी! माँ महाकाली! माँ छिन्नमस्ता माँ!"

वे कुछ देर तक अपनी कोठरी में घुसे रहे। फिर छोटा-सा वस्त्र पहनकर और भक्तों द्वारा दिये 'पाट' रेशम की चादर ओढ़कर मनमोहन पुजारी के घर के लिए रवाना हो गये। जटाधारी को किसी भी पुजारी के घर जाते हुए पहले किसी ने नहीं देखा था। इसलिए लकड़ी के बने बरामदों में खड़े होकर पण्डों के परिवारवाले एक-दूसरे को ठेलते हुए उन्हें देखने लगे। जटाधारी का अनुकरण करता भक्तों का एक दल भी आगे बढ़ा। इनमें से ज़्यादातर संस्कृत गुरुकुल के छात्र थे। ज़ख़्मी हालत में कन्धे पर लादकर लाने के बाद जटाधारी ने मन्त्र और दवाई से रत्नधर का इलाज किया था। अब उन्होंने बड़बड़ाते हुए किसी मन्त्र का उच्चारण किया और कुछ देर तक चुपचाप मनमोहन पुजारी के दरवाज़े पर खड़े रहे। मालीपाड़ा की एक बुढ़िया रत्नधर के सिरहाने बैठकर सुर लगाती हुई मन्त्रवाला गीत गा रही थी। यह दर्द कम करनेवाला मन्त्र था—

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

"जन्म लेते ही तीनों दिशाएँ विषपूर्ण हुईं–
हाथ में उठाकर महादेव ने विषपान किया–
विष खाता हूँ, विष भक्षण करता हूँ, विषपान करता हूँ
महादेव की उत्पत्ति से विष होता है अदृश्य।
रोगी की रक्षा करते हैं श्री गोरक्षनाथ।"

मनमोहन पुजारी के परिवार के लोग एक-एक करके बाहर आ गये। रत्नधर को इलाज के लिए मन्दिर की पालकी से ही गुवाहाटी ले गये थे। सिर में अब भी पट्टी बँधी थी लेकिन सौभाग्य से उसकी हड्डियाँ नहीं टूटी थीं, इसलिए छिन्नमस्ता के संन्यासी के आने की ख़बर पाकर वह हड़बड़ाकर बिस्तर पर बैठ गया।

मनमोहन पुजारी जटाधारी को सम्मान के साथ अन्दर बुला लाये। पुजारी ने रत्नधर के बिस्तर के पास एक बड़ा-सा पीढ़ा रख दिया। उनके साथ आये बाक़ी भक्त और संस्कृत गुरुकुल के छात्रगण बाहर खड़े रहे।

इसी जगह से सौभाग्यकुण्ड स्पष्टरूप से दिखाई देता है। कुण्ड के किनारे प्रायश्चित्त रस्म के लिए देउधा लोग क़तारों से बैठे हैं। उनकी कमर में बँधे कपड़े बलि में कटे बकरे की सूखी चमड़ी जैसे दिख रहे हैं। किसी के लम्बे बाल हैं, कन्धों पर बिखरे पड़े हैं। कोई सिरमुँडा है। किसी के बालों का रंग शक्तिपीठ की ख़ून-मिली मिट्टी जैसा है–खड़े-खड़े छोटे बाल। किसी के कन्धे पर गमछा है और कोई बिलकुल नंगे बदन बैठा है। सभी के शरीर पर सिन्दूर और हल्दी के रंग स्पष्ट हैं। आज इनका प्रायश्चित्त करवाने 'दलै' यानि मुख्य पुजारी ख़ुद आये हैं। एक भक्त ने उँगली से इशारा करके सबसे लम्बे देउधा के बारे में बाक़ी सब को बताया। वह फातेमाबाद के पास हुदूखाट का आदमी है। पुराना देउधा है। एक बार हैजा में खटिया पकड़ने के बावजूद किसी शक्ति से प्रेरित होकर वह देवीपूजा में नाचने आया था और लोग कहते हैं कि देवी के आशीर्वाद से उसका जैसे पुनर्जन्म हुआ था। जवाकुसुम फूल से गुँथी उसकी लम्बी चोटी देखकर ही लोग उसे पहचान लेते थे।

रत्नधर ने बिस्तर से उतरकर दोनों हाथों से जटाधारी के घुटने पकड़ लिये। रत्नधर की माँ विष्णुप्रिया जटाधारी के पास खड़ी होकर फूट-फूटकर रोने लगी। छिन्नमस्ता के पैरों के पास बैठकर वह रो-रोकर कहने लगी, "वह ठीक हो गया था। अब क्या होगा? क्या होगा? रात को सपना देखकर बड़बड़ा रहा था–'विधिबाला कहाँ गयी? विधिबाला कहाँ गयी?' मेरे भाग्य फूट गये। ऐसा कैसे हुआ?"

ज़ार-ज़ार रोने लगी विष्णुप्रिया।

जटाधारी रत्नधर को सीने से लगाकर विष्णुप्रिया को तसल्ली देने लगे, "कुछ नहीं होगा। कुछ नहीं होगा। ज़्यादा चोट लगती तो इसे अस्पताल में ही रख लेते। अस्पतालवालों ने जब घर भेज दिया है तो चिन्ता की कोई बात नहीं है।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब विष्णुप्रिया चीख़ पड़ी, "मेरे बेटे को अगर कुछ हो गया तो मैं शाप दूँगी। मैं शाप दूँगी। माँ दशभुजा—माँ छिन्नमस्ता जानती है कि भक्तों के लिए खाना बनाते-बनाते मेरे हाथ की चमड़ी में पपड़ी पड़ गयी है। मैं शाप दूँगी। मैं शाप दूँगी सिंहदत्त को!"

जटाधारी उन्हें तसल्ली देने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाते हुए बोले, "रत्नधर आज ही अच्छी तरह से उठने-बैठने लायक़ हो जाएगा।"

मनमोहन शर्मा जटाधारी को एक तरफ़ बुला लाये और उनके कान में फुसफुसाकर बोले, "आप सावधान रहिए। मैंने नाटघर के सामने लोगों को कहते हुए सुना है—'बलि बन्द करनेवालों को तुम लोग खींचकर गला काट देना।' मैंने बगला के देउधा को कुछ समझाते हुए भी देखा है। चारों तरफ़ सारे देउधा हल्ला-गुल्ला करते हुए घूम रहे हैं। मन्दिर के आँगन में भी दो-चार देउधा 'माई, माई' कहकर चिल्ला रहे हैं। उनके सिर के बाल सिन्दूर और अबीर से भरे हैं।"

जटाधारी अपनी लाल-लाल आँखें उठाकर रत्नधर के पिता को देखने लगे, "क्या कहना चाहते हो तुम?"

" 'देवी के घोड़े' से सभी डरते हैं, सभी उन्हें मानते हैं। भक्त उन्हें सिर चढ़ाकर रखते हैं। वे समझते हैं कि 'घोड़ा' के मन को दुःखी करने का मतलब है देवी को असन्तुष्ट करना।"

जटाधारी ने कहा, "जानता हूँ। लेकिन..."

"मैंने उड़ती हुई ख़बर सुनी है कि श्मशान काली के 'घोड़े' की कमर में किसी भक्त ने चाक़ू लटका दिया है। प्रभु, आप तो जानते हैं कि देवी के घोड़े कोई नियम नहीं मानते, वे तो जन्म-मृत्यु की अशुद्धि भी नहीं मानते। क्या आपको तीन साल पहले की बात याद नहीं? शेखदारी के उस छिन्नमस्ता के 'घोड़े' की बात याद नहीं? मृत माँ को जलाने के बाद सीधे श्मशान से दौड़ता हुआ आकर बलि में कटे काले बकरे का ख़ून गटागट पी गया था और नाचने लगा था। किसी ने मुँह से चूँ तक नहीं की थी।"

छिन्नमस्ता के संन्यासी अब जाने के लिए उठे, "लेकिन तुम क्या कहना चाहते थे मनमोहन?"

"वह चाक़ू को आपके सीने में भी घोंप सकता है।"

"मेरे सीने में चाक़ू?" जल्दी-जल्दी अपने क़दम बढ़ाये जटाधारी ने। केले के पत्ते जैसा एक तोता कहीं से उड़कर आया और उनके कन्धे पर बैठ गया। उनके साथ-साथ संस्कृत गुरुकुल का छात्रसमूह और नीचे रुके हुए देउधाओं की प्रायश्चित्त की रस्म देखनेवाले भक्तगण भी नीचे उतरने लगे। सभी जान गये हैं कि बलि-विरोधी दल पर मौक़ा देखकर आक्रमण करने के लिए एक मज़बूत गुट तैयार है। अँग्रेज़ों

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

के लगान से मुक्त और आधे लगान पर दी गयी ज़मीन का हिसाब रखनेवाला मन्दिर का मण्डल, होता कुल के पुजारी, विधिपाठक और लड़के-बूढ़े सभी आजकल भैरवी-माता और भुवनेश्वरी की मन्दिरोंवाली बैठक में शामिल हो रहे हैं। उनके बच्चे भी इन बैठकों में शामिल हो रहे हैं। छिन्नमस्ता के संन्यासी के लिए मन में श्रद्धा रखनेवाले भक्त उनके वापस आने से चिन्तित हो गये हैं। मन्दिर के शूद्रों की गुप्त बैठक में शम्भू बधिक के वंश के लोग इकट्ठा हुए थे। शायद शम्भू बधिक ही पहला व्यक्ति था, जिसने और दो-तीन लोगों के साथ मिलकर 'असम वेली डिस्ट्रिक्ट' के जज की अदालत में अर्ज़ी दी थी कि मुख्य पुजारी और हिसाब रखनेवाले लोग ठीक तरह से मन्दिर की देखभाल नहीं कर रहे हैं। ज़मीन-जायदाद का हिसाब भी वे ठीक तरह से सँभाल नहीं पाये हैं। यह अर्ज़ी सन् 1924 के सितम्बर महीने में दी गयी थी।

देउधाओं के 'लाह'[1] के लिए केले के पत्ते काटते समय ही बलि-विरोधी एक दल भयानक षड्यन्त्र की साज़िश करने लगा। अबीर, सिन्दूर, देवी को अर्पण होनेवाली बलि का रक्त, सिर में बेल के पत्ते का मुकुट और हाथ में सिन्दूर लिपी तलवार! कौन-सी तलवार दी जाएगी देउधाओं को? नक़ली या...। भयानक भंगिमा का प्रदर्शन करता हुआ देउधा अगर किसी पर कूद पड़ा और उसे तलवार से दो टुकड़े कर दिया तो? क्या लोग कुछ बोल पाएँगे?

मन्दिर की रहस्यपूर्ण कोठरी से बाहर निकल आये जटाधारी। गुरुकुल के छात्र चारों तरफ़ से घेरकर उन्हें ऊपर ले आये। उन लोगों ने देखा कि नाटघर और मनसा देवी के मन्दिर तक जानेवाले रास्ते पर एक झुण्ड नये लाये बकरों का घूम रहा है। संन्यासी के साथ चलनेवाले गुरुकुल के छात्र बीच रास्ते से इन बकरों को भगाते हुए आगे बढ़ने लगे। जटाधारी कहने लगे, "उत्तर शेखदारी और बाकुरा के मुसलमानों द्वारा देवी के लिए उत्सर्ग करनेवाले बकरे हैं ये!"

सब लोगों ने छिन्नमस्ता के संन्यासी को सिर उठाकर देखा। संन्यासी ने मन्दिर में छोड़े गये एक बकरे के शरीर पर प्यार से हाथ फेरा। फिर अनुसरण करनेवाले गुरुकुल के छात्रों और भक्तों से कहने लगे, "देखो, कितने खुश होकर ये मन्दिर के आँगन में घूम रहे हैं। लोगों के बुलाने पर पास आ रहे हैं। ये सब-कुछ समझते हैं। सब-कुछ समझते हैं ये पशु।"

अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर मन्दिर के स्वर्णशिखर को देखते हुए संन्यासी ने 'माँ माँ' कहकर पुकारा। फिर भक्तों की तरफ़ देखकर बहुत कोमल स्वर में कहने लगे, "ये सब सुन्दर, पवित्र और निर्दोष पशु हैं। उनके सीने में कान लगाने पर

1. देउधाओं को नये वस्त्र, बेलपत्ते की माला, सिन्दूर आदि से सजाया जाता है। हाथ में लाल रंग का वेंत और लकड़ी से बनी तलवार भी दी जाती है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
तुम्हें माँ कामाख्या की पदध्वनि सुनाई देगी। सुनो, सुनो, तुम लोग इन पशुओं के शरीर से कान लगाकर सुनो। माँ की पदध्वनि सुनो। माँ, माँ–तुम लोगों के हृदय में जैसी धड़कन है, इन पशुओं के दिल भी वैसी ही आवाज़ करते हैं। एक ही आवाज़ है, एक ही आवाज़!''

मुसलमान भक्तों के छोड़े बकरे के पास जाकर संन्यासी ने उनके शरीर से कान लगाकर धड़कन सुनने की कोशिश करने लगे। कुछेक बकरों के गले में बँधे घण्टों से टन्-टन् आवाज़ होने लगी।

संन्यासी ने फिर कहा, ''सुनो, मेरे प्यारे भक्तो! मैंने और तुम्हारी माँ ने जैसे हमेशा अपनी सन्तानों को खुश और ज़िन्दा देखना चाहा, ठीक वैसे ही माँ कामाख्या भी चाहती है कि उनकी सृष्टि की हुई और जन्म दिया हुआ हर प्राणी ज़िन्दा रहे–खुश रहे और सुरक्षित रहे।

''जय हो, देवी कामाख्या की जय हो! मेरे पास आओ भक्तो, हिन्दू और मुसलमान–सभी मेरे पास आओ! तुम लोगों की जय हो! माता की बनायी हुई इस सुन्दर पृथ्वी से तुम लोग ख़ून के धब्बे धो डालो! जय हो! तुम लोगों की जय हो! सुनो, तुम लोग भी इन प्राणियों की देह में कान लगाकर सुनो–माँ कामाख्या के पैरों के नूपुर की रुनझुन ध्वनि तुम सुन सकोगे!''

अब तक छिन्नमस्ता के संन्यासी के चारों तरफ़ लोगों का झुण्ड जमा हो गया था। उड़ते हुए कई कबूतर जटाधारी की जटा और कन्धे पर बैठने लगे।

तभी सिर पर बेल के पत्तोंवाला मुकुट और पूरे शरीर पर सिन्दूर और अबीर लगाये एक देउधा दौड़ता हुआ वहाँ पहुँचा। भक्तों के बीच हल्ला-गुल्ला शुरू हो गया। भीड़ में घुसकर कुछ देर तक संन्यासी के आसपास धक्का-मुक्की करने के बाद वह बन्दूक़ की गोली की गति से सौभाग्यकुण्ड की तरफ़ भाग गया। पशु-पक्षी के रक्षक जटाधारी के कन्धे से ठप्-ठप् आवाज़ करते सभी कबूतर उड़ गये।

सारे भक्त छिन्नमस्ता के संन्यासी से ऐसे लिपटे रहे जैसे मन्दिर की दीवारों पर कबूतरों के झुण्ड रहते हैं। हाँ, हाँ जटाधारी की विशाल देह जैसे मन्दिर में बदल गयी और उनके शिष्य कबूतर बन गये!

ठीक उसी समय बलि विरोधी दस्तख़तवाले खाते काँख में दबाकर खड़ा नवयुवक दहाड़ मारकर रोने लगा। वह कहने लगा, ''प्रभु, क्या होगा, कुछ पता नहीं है। वह कच्चा ख़ून पीनेवाला काली का 'घोड़ा' था, वह बलि का ख़ून अपने शरीर में लीपकर आया था–उसकी कमर में बँधे गमछे के नीचे चाक़ू था।''

सभी भक्त डर से चिल्ला पड़े–''गमछे के नीचे चाक़ू?''

भक्तों के साथ जटाधारी आगे बढ़े। सभी ने देखा कि वधस्थल के पास भंग पीकर मस्त चार देउधा बैठे हैं। कहाँ से आये हुए देउधा हैं ये? उत्तर शेखदारी,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोहारघाट या बरिहाट के हैं? कहाँ से आये हैं?—उनके शरीर से पसीने की धाराएँ बह रही हैं। बीच-बीच में उनको प्रणाम करने आनेवाले भक्तों को अपने शरीर से बहते पसीने से भिगोकर बेलपत्ते दे रहे हैं और आशीर्वाद देने की मुद्रा में बोल रहे हैं—"हे माई, हे माई!" देवी मनसा के स्तुतिगान से चारों दिशाएँ मुखर हो उठी हैं।

"हे माई मनसा ए
हे माई तेरा सर्प अलंकार—"

नाटगृह के पास आकर जटाधारी रुक गये। गुरुकुल के छात्रसमूह ने उन्हें घेर लिया। मनसा देवी की मूर्ति ने अब एक भयानक रूप धारण कर लिया है। सिन्दूर और हल्दी-सने कबूतर मनसा की मूर्ति के चारों तरफ़ छटपटा रहे हैं—वहाँ कबूतरों से जैसे पहाड़ बन गये हैं। इन पक्षियों के पंखों में लगे सिन्दूर और हल्दी के रंग घी के दीये की रोशनी में स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। मनसा देवी के पैरों के पास बलि चढ़ाए गये असंख्य बकरों के कटे सिरों ने वहाँ का माहौल भयानक बना दिया है। बकरों के इन सिरों से जैसे एक और पहाड़ बन गया है। लगातार नृत्य करने के बाद थकनेवाले देउधा लोग वधस्थल में बैठकर भंग पी आते हैं। फिर दौड़कर देवी के पास लेट जाते हैं। उठते समय वे फूल, बकरे के कटे सिर के ढेर और एक जगह पर बैठे कबूतरों के बीच हाथ डालकर कुछ ढूँढ़ने लगते हैं। यह क्या रहस्य है? अचानक जैसे उन्हें कोई चीज़ मिल जाती है। उस चीज़ को शरीर में कहीं छुपाकर वे फिर से दौड़ते हुए वधस्थल पहुँचते हैं और भंग पीने लगते हैं। थोड़ी ही दूरी पर मदिरा पीकर गिरे एक भक्त को कोई गोद में उठाकर बाहर निकाल ले गया। देवी मन्दिर में ज़ोर-ज़ोर से ढोलक बजने लगे। मन्दिर में बिना लगान ज़मीन पानेवाले ढोलकियों के अलावा भी मनसा-भक्त ढोलकियों के ढोलक की आवाज़ सुनी गयी। इस हो-हल्लावाले माहौल में भी भक्तों द्वारा गाये जानेवाले देवी मनसा के गीतों से चारों दिशाएँ गूँज उठीं :

"बनियों की नारी, पहनी है पाट की साड़ी
देखने आयी विषहरि
सिन्दूर से सज्जित पद्मकलश से
एकचित्ते पूजा की देवी पद्मा की
हंस, बकरे, भेड़, महिष की बलि से—
बनियों की नारी—"

बलि में काटे गये बकरों के सिरवाला पहाड़ और ऊँचा होने लगा। उसी समय भीड़ ठेलकर लाल कपड़ा पहने एक तान्त्रिक आगे आया। उसके पीठ से पसीने की धारा बह रही थी। उसकी आँखों से जैसे शोले बरस रहे थे। दरवाज़े के पास छिन्नमस्ता के संन्यासी को देखकर वह चिल्लाने लगा, "यह महापाप है, महापाप!

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवी के ख़ून की प्यास बन्द करना चाहता है—यह महापाप है, महापाप!"

छिन्नमस्ता के संन्यासी बिना हिले-डुले खड़े रहे। गुरुकुल के छात्रों ने चक्रव्यूह की तरह उनको घेर रखा था। वधस्थल से किसी की विकट चीख़ सुनी—"लाओ, उसकी जटा पकड़कर उसे खींच लाओ।"

सभी देउधा ढोलक की ताल पर नाचते रहे थे और थोड़ी-थोड़ी देर बाद वधस्थल के पास बैठकर चिलम पी रहे थे। इसी समय अपनी हज़ारों समस्याएँ सुनाने और फिर उनके समाधान पूछकर भक्तगण देउधाओं के पैरों पर गिर-पड़ रहे थे। बोलिए, बोलिए—भक्तगण इन उम्मीदों के साथ देउधाओं के पैर पकड़ने के लिए एक-दूसरे को धक्का देने लगे कि वे भक्तों को भविष्य के बारे में, अच्छे दिनों के बारे में, राजा बनने की सम्भावनाओं के बारे में और लाइलाज बीमारियों की दवाइयों के बारे में बताएँ।

भक्तों की भीड़ ठेलते हुए छिन्नमस्ता के संन्यासी गुरुकुल के छात्रों के साथ बाहर निकल आये। उनके घाट पर जाने का समय हो गया था, क्योंकि आज डरथी ब्राउन वापस आ जाएगी। जटाधारी ने देखा कि वधस्थल के पास लाल कपड़े पहने तान्त्रिकों और पण्डों का एक झुण्ड तीखी नज़रों से उनकी तरफ़ देख रहा है। उन लोगों की दृष्टि नुकीले अस्त्र की तरह थी। वे जहाँ भी देखते थे जैसे ज़ख़्मी कर डालते थे। चारों तरफ़ ख़ून की गन्ध फैलने लगी थी।

श्मशान काली का 'घोड़ा' वधस्थल के सहारे बैठा भंग पी रहा था। उसकी पीठ से बलि का ख़ून, पसीना और सिन्दूर का मिश्रित तरल वहने लगा था। एक काले बकरे को घसीटता हुआ कोई भक्त वधस्थल के पास खड़ा हो गया। फिर वह श्मशान काली के 'घोड़े' के पैरों पर गिर पड़ा। वह रोते-बिलखते किसी बड़ी बीमारी की दवाई के बारे में पूछ रहा था। उस बीमारी से बचने का उपाय पूछ रहा था। गाँजेवाला चिलम किसी दूसरे के हाथ में पकड़ाकर श्मशान काली के 'घोड़े' ने गले में पहनी बेलपत्ते की माला लेकर उसे पसीना, सिन्दूर और ख़ून में लगाया और भक्त को दे दी। साथ ही चीख़कर कहा, "जाओ, जाओ, तेरा कल्याण होगा। इस माला की पूजा करना। जाओ, जाओ—तेरा कल्याण होगा।"

फिर अचानक श्मशान काली का 'घोड़ा' उनको चढ़ाये काले बकरे का गला दाँतों से काटने लगा। बकरा छटपटाता हुआ मिमियाने लगा। ज़मीन में टप्-टप् ख़ून गिरने लगा। ऐसा दृश्य किसी ने भी पहले नहीं देखा था। वैसे ज़िन्दा कबूतरों का गला मरोड़कर ख़ून पीनेवाले दृश्य सभी ने पहले देखे थे।

ठीक उसी समय संन्यासी को घेरकर खड़े गुरुकुल के छात्रों ने चीख़ना-चिल्लाना शुरू कर दिया। तीर की तरह हवा में लहराता हुआ एक चाक़ू आकर छिन्नमस्ता के संन्यासी की जटा में अटक गया। चारों तरफ़ कोहराम मच गया। गुरुकुल के

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

छात्रों के साथ जटाधारी तेज़ी से हनुमानद्वारवाले रास्ते से नीचे उतर गये।

पूरे रास्ते-भर सभी छात्र हल्ला मचाते हुए आगे बढ़े—"यह काम बलिप्रथा के समर्थक दल का है। ज़रूर उसी का काम है यह!"

"बकरे का सिर काटनेवाला श्मशान काली का 'घोड़ा' भी शायद इसमें शामिल है।"

"घोर षड्यन्त्र है यह। घोर षड्यन्त्र!"

"जटाधारी के प्राण लेना चाहता है। ओफ़्, प्राण लेना चाहता है!"

"जय माँ श्मशान काली!" संन्यासी जी अपना हाथ ऊपर उठाकर सभी को तसल्ली देने लगे, "तुम लोगों को डरना नहीं चाहिए। प्राण लेना बहुत आसान बात नहीं है। ख़ून बन्द करना चाहनेवालों को अपना ख़ून भी बहाना पड़ सकता है। यह बात अच्छी तरह से याद रखो!"

गुरुकुल के छात्रों ने भी दोहराया, "हाँ, हाँ ख़ून बन्द करनेवालों को अपना ख़ून बहाने की हिम्मत रखनी होगी।"

घाट की तरफ़ एक नाव आ रही है। डूबते हुए सूरज ने जैसे एक स्वर्णमृग की खाल नदी पर बिछा रखी है। इसी खाल को लपेटकर आगे बढ़ रही है एक बड़ी-सी टप्परवाली नाव। विदा लेते सूरज का प्रतिबिम्ब पानी में दिखाई दे रहा है। जैसे सुनहरे बाल खोलकर एक रहस्यमय नारी पानी में डूब गयी।

डरथी ब्राउन के लौटने की ख़बर चारों ओर फैल गयी थी। घाट पर अनेक लोग जमा हो गये। छिन्नमस्ता के संन्यासी ने जटा से चाक़ू निकालकर ब्रह्मपुत्र में फेंक दिया। नदी के पास जाकर हाथ धोये। गुरुकुल के छात्र तब तक उन्हें घेरे रहे।

भीड़ के बीच दो गोरे साहब भी दिखाई दिये। उनमें से एक थे डरथी के दोस्त सुनहरे बालोंवाले विलियम। उमाकान्त द्वारा दी हुई नक़ल के अनुसार शायद विलियम डरथी की वसीयत बनाकर लाये हैं। उनके घने सुनहरे बाल सूरज की अन्तिम किरण से सोने जैसे चमक उठे। उनके साथ छोटे क़दवाले गोल-मटोल चेहरे के एक और साहब भी आये हैं। विलियम ने यहाँ-वहाँ गिरे हुए ख़ाली कारतूस अपने साथी को दिखाकर कहा, "ओह, देखो, इतनी दूर तक ये कारतूस उछलकर गिरते हैं।"

मुँह-अँधेरे ही बन्दूक़ का निशाना साधने आनेवाला छोटे क़द का साहब ख़ाली कारतूसों को ज़मीन से बटोरने लगा। उस भीड़ में देउधाओं के पीछे-पीछे घूमनेवाले ताल और बेताल को भी देखा गया। वे एक-दूसरे से फुसफुसाकर कहने लगे, "ज़रूर पेट में बच्चा लेकर आएगी। लोग यही कह रहे हैं।"

"किसका बच्चा?"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"छिन्नमस्ता के संन्यासी का।"

"संन्यासी का?"

"चुप रह, चुप रह।"

लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। नाव आकर घाट पर लग गयी। इसी के साथ-साथ किसी का हृदयविदारक रोना-बिलखना सुनकर किनारे पर खड़े लोग आश्चर्यचकित रह गये।

वह रोती हुई औरत नाव से कूदकर उतर गयी। उसके अधपके खुले बाल पीठ पर अस्तव्यस्त पड़े थे। शरीर से चादर खिसक गयी थी और उसके माथे के सिन्दूर की बिन्दी लगभग मिट गयी थी। कामाख्या पीठ में पैर रखते ही वह घुटनों के बल बैठकर ज़मीन में सिर पटकने लगी—"ऐ माई, माई ऐ। इस महापाप से रक्षा करो। इस महापाप से मुझे बचाओ।" लोगों की तरफ़ देखकर वह अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर बिलखने लगी—"हे माई! पिछले एक महीने से दाना-पानी पेट में नहीं गया उसके। हम लोग शेखदारी की देह बेचनेवाली औरतें हैं। हम लोगों ने उसे शरीर बेचने के लिए नहीं कहा था। वह ख़ुद ही आयी थी, ख़ुद ही आयी थी। हे माँ! हम उसे नहीं लाये थे। उसने पिछले एक महीने से कुछ भी नहीं खाया है। सिर्फ़ चिल्लाती रहती थी कि 'मेरे भैंसे की बलि दे दी, मेरे भैंसे को काट डाला।' "

यात्रियों और भक्तों में हलचल मच गयी।

"सिर से पाँव तक ढँकी वह कौन है जो नाव में बैठी है?"

किसी की परवाह न करती शेखदारी की अधेड़ उम्रवाली वेश्या चिल्लाने लगी, "ऐ ख़ून पीनेवाली माई! हमने उसे नहीं बुलाया था, वह ख़ुद हमारे डेरे में आयी थी। ऐ ख़ून पीनेवाली माई! आने के दिन से उसके पेट में एक भी दाना नहीं पड़ा है। सिर्फ़ एक ही बात बार-बार कहती है—मेरे भैंसे की बलि दे दी ! मेरे भैंसे की बलि दे दी!"

वह औरत ज़मीन में लुढ़ककर सीना पीटकर रोने लगी, "ऐ भैंसे का ख़ून पीनेवाली माई! लड़की को मारने का पाप मैं अपने ऊपर नहीं लूँगी। इस पाप की भागीदार मैं नहीं हूँ।"

अब छिन्नमस्ता के संन्यासी गुरुकुल के छात्रों के साथ नाव में चढ़ गये और औरत पर ढँकी चादर खींचकर हटा दी। सारे लोगों को जैसे सदमा-सा लगा। वे उछलकर पीछे हट गये। यह नरकंकाल किसका है?

जटाधारी ने ज़ोर देकर कहा, "यह डरथी ब्राउन नहीं है। यह विधिबाला है।"

"विधिबाला?"

"हाँ, हाँ बिधिबाला है। उसकी मृत्यु हो गयी है। यहाँ तक लाते समय शायद वह ज़िन्दा थी। अब वह मर गयी है।"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोलाहल करनेवाले सारे लोग स्तब्ध रह गये।

उत्तर शेखदारी की वेश्या की हृदयविदारक चीख़ से जैसे देवीपीठ का आसमान टूटकर दो टुकड़े हो गया।

नोट :

1. देउधा ने मन्दिर की दासी के साथ अवैध सम्बन्ध बनाकर सजा पानेवाली बात का 'Journal of the university of Gauhati (Volume XI, 1960)' में उल्लेख है। 43 पृष्ठ पर डॉ. एम. सी. गोस्वामी ने लिखा है–''Unapproved sexual attraction for the maids of the temple bring about consequent sufferings on the violator.''

2. मुसलमान भक्त द्वारा मनसा-पूजा में बकरे चढ़ानेवाली बात बचपन में सुनी थी। Journal of the university of Gauhati, (Volume XI No. 2), Science 1960 लेख–An annual sharmanistic Dance (Deodha Nach) at Kamakhya Assam में डॉ. एम. सी. गोस्वामी ने लिखा है–''Before Partition the Hindus of East Bengal used to come here in large numbers. Muslim Visitors too may come; but their animal offerings are not be headed in sacrifice such animal offerings are let free after dedication.''

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीस

वधस्थल के पास कब रत्नधर आकर बैठ गया था, किसी को पता नहीं चला। विधिबाला का मृत शरीर तब भी बाहर पड़ा था। सब लोग शुवालकुचि में विधिबाला के परिवारवालों को ख़बर पहुँचने में देर हो जाने की आशंका ज़ाहिर कर रहे थे।

सभी का निरीक्षण कर रहे लाल कपड़ेवाले एक पण्डे ने आख़िर कह दिया, "उत्तर शेखदारी के डेरे में रहनेवाली लड़की का दाह-संस्कार करने उसके पिता सिंहदत्त नहीं आएँगे, जो भी करना है—जल्दी करो।"

आख़िर में एक समगोत्र के ब्राह्मण परिवार के छोटे लड़के से मुखाग्नि की रस्म पूरी की गयी। उसी ने पानी छिड़ककर अस्थियाँ भी बटोर लीं।

श्मशान में लोग जब क्रिया-कर्म में लगे थे तभी रत्नधर वधस्थल में पहुँच गया और चिल्लाने लगा, "विधिबाला मर गयी! विधिबाला मर गयी!! किसने मारा? किसने मारा विधिबाला को?"

मनसा देवी को उत्सर्ग किए गये रक्त से वधस्थल बिलकुल भीग गया था। रत्नधर वधस्थल में सिर पटकने लगा और ऐसे चिल्लाने लगा जैसे आसमान फट पड़ेगा—"हाय, विधिबाला भैंसे के लिए मर गयी। हाय, हाय—वह भैंसे के लिए मर गयी!"

ढोलक की ताल पर देउधा लोग नाच रहे थे। बीच-बीच में वे अपने शरीर से बहते पसीने में बेल के पत्ते भिगोकर भक्तों को दे रहे थे। नाच-नाचकर अर्धचेतन अवस्था में वे वधस्थल में खड़े भक्तों के हाथ से छीनकर चिलम लेते और फिर कूदते हुए ढोलक की ताल पर नाचने लगते। उनके पैरों से कुचले जाने के डर से सारे भक्त दूर भाग जाते।

रत्नधर की भयानक चीख़ ने ढोलक की आवाज़, गाना-बजाना और लोगों के हो-हल्ला को भी पीछे छोड़ दिया।

बलि का ख़ून बहाकर देवी-पूजा में सर्वहारा बननेवाला एक आदमी भी वधस्थल के पास खड़ा था। वह भी चिल्ला उठा, "मेरी ज़मीन बिक गयी है। मेरा घर बिक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
गया है। मैं अपने बेटों को पढ़ा नहीं पाया। मैं इस बलि के चक्कर में पड़कर भिखारी बन गया हूँ। मैं भिखारी बन गया हूँ।''

कोई चिल्लाया, ''ऐ महापापी! भाग यहाँ से। साले डण्डा मारकर सिर फोड़ दूँगा। भाग, भाग!''

अब तक लाल कपड़ेवाले पण्डों का एक झुण्ड वधस्थल के पास खड़े होकर रत्नधर का निरीक्षण करने लगा। जैसे एक महापापी को वह अपनी आँखों के सामने पाप में लिप्त होते हुए देख रहे थे। जैसे इसी मुहूर्त में वह रत्नधर पर झपट पड़ेगा और उसकी खाल खींच लेगा। उसके हाड़-मांस के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। उस झुण्ड में से एक चीख़ पड़ा, ''इस महापापी को ले जाओ। कोई इस पापी को यहाँ से ले जाओ! ऐ 'आठपरिया' लड़के! मनमोहन को बुला लाओ। ऐ लड़को! कोई है? ले जाओ इसे। घसीटकर ले जाओ। गर्दन पकड़कर बाहर कर दो। गर्दन पकड़कर बाहर करो!''

रत्नधर बलि के ख़ून से लथपथ होकर वधस्थल को दोनों हाथों से पकड़कर बैठा था। आठपरियावाले दो-चार लड़के रत्नधर को पकड़कर खींचने लगे। मनसा देवी को उत्सर्ग करनेवाले बकरे और कबूतर वधस्थल के पास छटपटाने लगे। कहीं से ताल और बेताल भी आकर वहाँ खड़े हो गये। वे भी रत्नधर को वहाँ से ले जाने के लिए हाथ पकड़कर खींचने लगे। ज़मीन-आसमान एक करके चिल्लाने लगा रत्नधर–''विधिबाला! विधिबाला!! मुझे भी साथ ले जा, विधिबाला! बिधिबाला–!!''

दूसरे दिन मन्दिर के आँगन में नृत्य करने से पहले देउधाओं को पाँच कुमारी लड़कियों ने अपने हाथों से भोजन कराया। फिर ढोलक और मंजीरा की ताल पर वे पागलों की तरह नृत्य करने लगे। मनसा देवी के सामने बकरे और कबूतरों के कटे सिरों से पहाड़ बन गया। देउधा के दल अब महादेव के मन्दिर की तरफ़ जाने लगे। बहुत ही विचित्र शोभायात्रा थी वह। लम्बे-नाटे, बूढ़े-जवान, दुबले-मोटे लोगों की यह एक विचित्र शोभायात्रा थी। नंगे पैर और पसीना, ख़ून और सिन्दूर से लथपथ थे इनके वस्त्र। बलि के लिए चढ़ाए गये कबूतरों के पंख चारों तरफ़ उड़ने लगे। ओऊ, वटवृक्ष और अमलतास के जंगल के बीच बने शिव-मन्दिर से आती ढोलक और झाँझ की ठम्-ठम् आवाज़ सुनी गयी।

'लाह' करवाने के लिए सारे देउधा तेज़ क़दमों से शिव-मन्दिर के लिए रवाना हो चुके थे। बड़े विचित्र देउधा थे ये। इनके बालों में भी सिन्दूर और अबीर का रंग सना हुआ है। पूरे शरीर पर पसीना, ख़ून, अबीर और सिन्दूर लिपटा हुआ है। बड़े अद्भुत चेहरे बन गये हैं इन देउधाओं के। किसी-किसी के मुँह और सीने पर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बलि के ख़ून के दाग़ बिलकुल स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

जंगली झाड़ियाँ—बेल, भातघिला और नगरबेरा की झाड़ियों के बीच की पगडण्डियों से कूदते-फाँदते हुए देउधा के दल शिव-मन्दिर में जा रहे हैं। घुँघराले और खड़े-खड़े, छोटे बाल वाले ये देउधा—ख़ून से लथपथ इनके चेहरे! जैसे प्रेतात्माओं का कोई दल जंगलों को लाँघता हुआ अपना 'लाह' (साज-सज्जा) करवाने शिव-मन्दिर के लिए रवाना हो गया। कामाख्या के पण्डों के घरों के लकड़ी के रेलिंगवाले बरामदे में खड़ी भीड़ आपस में बात करने लगी, ''ओह् हो, इन्हें पहचानना तो बिलकुल असम्भव हो गया है! कौन है कामाख्या का 'घोड़ा', तारा का 'घोड़ा' और कौन है छिन्नमस्ता का 'घोड़ा'? और श्मशान काली का 'घोड़ा'?''

दूसरे ने कहा, ''हाँ, हाँ, इन्हें पहचानना मुश्किल हो गया है। कौन है भुवनेश्वरी का 'घोड़ा' और बागलादेवी का 'घोड़ा'?''

शिव-मन्दिर के आँगन में 'लाह' करवानेवाले सामान का ढेर लगा था। फूलों से बने हार, नये-नये वस्त्र, सिन्दूर, तेल और बेल के पत्ते से बने मुकुट से शिव-मन्दिर का आँगन भर गया था। नये-नये वस्त्रों को केले के पत्ते पर सजाकर रखा गया था। शोभायात्रा से आनेवाले 'घोड़े' महादेव के मन्दिर की ढहती हुई सीढ़ियों के पास जमा हो गये। इन 'घोड़ों' का अनुकरण करती हुई एक विचित्र शोभायात्रा में शामिल लोगों की भीड़ मन्दिर के आँगन में घूमने-फिरने लगी। लाल कपड़े पहने हुए पुजारी जल्दी-जल्दी वहाँ पहुँचे और पहले पहुँचनेवाले कुबेर के 'घोड़े' के पैर धुलाने के लिए आगे बढ़े। एक बड़े-से पत्थर पर पीतल का कलश पहले से ही रखा था। कुबेर के 'घोड़े' के पैरों से सिन्दूर, अबीर और ख़ून के दाग़ पुजारी ने पानी डालकर धो दिये और फिर अपने कन्धे पर रखे गमछे से पोछने लगे। लेकिन अगले ही पल एक विकट चीख़ सुनाई दी। भयानक शोर होने लगा कि 'लाह' करवाने में दोष हुआ है, गलती हुई है। 'लाह' करवानेवाले कुबेर के 'घोड़े' को शिवजी के 'घोड़े' ने लाठी से पीट दिया और साथ में गाली बरसाने लगा—''ऐ, ऐ, महादेव के 'घोड़े' को सजाने से पहले कुबेर के 'घोड़े' को हाथ लगाएगा तो मरेगा तू। सात पुरखों के साथ नरक भोगेगा।''

ऐसा कहकर शिवजी का 'घोड़ा' कूदकर एक पत्थर पर चढ़ गया और ताण्डव करने लगा। उसके लम्बे, झाड़ियों जैसे बालों में ख़ून और सिन्दूर ने मिलकर अद्भुत रंग ले लिया था। उसके नंगे बदन से बहता पसीना बिलकुल ख़ून की धारा जैसा दिख रहा था। चौबीसों घण्टे लगातार नाचते रहने के बावजूद उसके शरीर में प्रचण्ड शक्ति थी।

शिवजी का 'घोड़ा' चीख़-चीख़कर बोलने लगा, ''ऐ 'लाह' करनेवाले? शिवजी के 'घोड़े' को पहले सजाना चाहिए या कुबेर के 'घोड़े' को? बोलते क्यों नहीं?''

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

वहाँ खड़े लोग भी हाय-हाय करने लगे।

"कैसे यह भूल हुई? कैसे?" शिवजी का उत्तेजित 'घोड़ा' फिर से बौखला उठा, "महापाप! महापाप! पृथ्वी ध्वंस हो जाएगी, जलकर राख हो जाएगी।"

गणेश की 'लाह' करनेवाले पुजारी और सारे भक्त उस स्थान पर गिरकर विनती करने लगे जिस पर शिवजी का 'घोड़ा' खड़ा था। लोगों की भीड़ बढ़ गयी। अब तक बाक़ी 'घोड़े' भी 'लाह' करवाने के लिए चीख़ने-चिल्लाने लगे। देवी और शिव के गीत गाने के लिए आयी हुई औरतें भी कूदते-चिल्लाते शिव के 'घोड़े' को गुस्सा छोड़ने के लिए विनती करने लगीं। आख़िर शिव के 'घोड़े' का गुस्सा ठण्डा हुआ। साथ-साथ सभी ने शिव के 'घोड़े' को पकड़कर उस पत्थर से नीचे उतारा। औरतें शिव की महिमावाले गीत गाकर मन्दिर के अन्दर घुस गयीं।

मन्दिर का भीतरी कमरा लम्बा-चौड़ा था। अन्दर घुसनेवाले दरवाज़े के पास एक त्रिशूल गाड़कर रखा हुआ था। कमरे के फ़र्श को धो-पोंछकर साफ़ किया गया था। धूप और अगरबत्तियाँ जलाई गयी थीं। दीवार से टिककर बैठी औरतें गीत गा रही थीं।

तत्पश्चात् सारे देउधा 'लाह' करवाने के बाद अन्दर से औरतों के गीतों की ताल पर नाचते हुए बाहर निकल आये। मिट्टी के दीये की रोशनी में सिन्दूर-तेल से सजाये उनके शरीर चमक उठे। सिर पर और गले में फूल और तुलसी की माला लटकाये वे एक-एक करके बाहर निकले और फिर नाचने लगे। औरतें भी सुरीली आवाज़ में ताली बजाती हुई गाने लगीं—"जय काली, जय तारा, छिन्नमस्ता बगला।"

ढोलक की आवाज से चारों दिशाएँ गूँज उठीं। त्रिशूल के पास सिर झुकाकर कूदता हुआ बगलादेवी का 'घोड़ा' बाहर निकला। उसके दुबले-पतले शरीर का रंग मिट्टी के पुराने बर्तन जैसा था। गीत गाती महिलाओं के सामने से जाकर वह ऐसे नाचने लगा जैसे एक सोलह साल की युवती हो। इसके बाद अन्दर के कमरे से सज्जित एक और 'घोड़ा' बाहर निकला। उसका पूरा शरीर भक्तिभाव से झुका हुआ था।

यह माँ तारा का 'घोड़ा' था। हाँ, हाँ माँ तारा का 'घोड़ा'। उसके गले में कनेर के फूल की और सिर पर तुलसी की माला शोभा बढ़ा रही थी। इस देउधा की उम्र ज़्यादा नहीं थी। उसकी दोनों आँखें मदिरा पीनेवाले लोगों की तरह अधखुली थीं।

वहाँ बैंगनी रंग का कपड़ा पहने कौन है? कौन है वह? क्या वही कुबेर का 'घोड़ा' है? ज़बरदस्त मांसपेशियोंवाला पुरुष है वह। औरतों के गीतों के साथ-साथ पागलों की तरह नाच रहा है।

और यह कौन है? बिलकुल सींक से हाथ-पैर, छह फुट लम्बा और रात के अन्धकार की तरह शरीर का रंग! लपलपाती हुई लाल जीभ! सभी दर्शक गुनगुनाते

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
हुए चर्चा करने लगे कि सबसे ज़्यादा ख़ून इसी 'घोड़े' ने पीया है। उस 'घोड़े' ने जीभ निकालकर त्रिशूल के सामने सिर झुकाने के बाद प्रचण्ड नृत्य शुरू कर दिया। औरतों के गीत और ढोलकिया के ढोलक की आवाज़ से सारा परिवेश गूँज उठा–

"जय काली जय तारा छिन्नमस्ता बगला
भुवनेश्वरी भैरवी धूमावती कमला
देवी करती क्रीड़ा हरि, देवी करती क्रीड़ा
लप-लप करती जिह्वा, हे हर की प्रिया।
जय काली जय तारा, छिन्नमस्ता बगला..."

डम् डम् डम् डम्। ढोलक की आवाज़ तेज़ होने लगी। औरतें उलुध्वनि देने लगीं। काली के 'घोड़े' ने अपनी जीभ और बाहर निकाल ली। पिछली रात से भक्तों द्वारा दी गयी बलियों का कच्चा ख़ून वह कई बार गटागट पी चुका है। उसकी जीभ से अभी भी ख़ून का दाग़ मिटा नहीं है। काली के 'घोड़े' के प्रचण्ड नृत्य से मन्दिर काँप उठा। अब औरतों के गीतों ने चीत्कार का रूप ले लिया।

"जय काली जय तारा छिन्नमस्ता बगला
भुवनेश्वरी भैरवी धूमावती कमला..."

दोनों हाथ ऊपर उठाते हुए, औरतों के पास जाकर और सिर झुका-झुकाकर काली का 'घोड़ा' नृत्य करने लगा। बीच-बीच में अधखुली आँखों से वह भक्तों को देख लेता था। भक्त उसकी नज़रों से डर जाते थे।

ढोलक, करताल और झाँझ के साथ-साथ औरतें ज़ोर-ज़ोर से गाने लगीं–

"जय काली जय तारा छिन्नमस्ता बगला
भुवनेश्वरी भैरवी धूमावती कमला..."

और भी 'घोड़े' निकल आये। आँखें बन्द करके बेहोश पड़े आदमियों की तरह दिखनेवाले कुछ 'घोड़े' नृत्य करने लगे। जैसे अचेत अवस्था में इन देउधाओं को ईश्वरीय शक्ति मिली हो। जैसे आँखें बन्द करके शून्य में तैर रहे हों ये देउधा। जैसे उन्हें कोई नचा रहा हो–स्वयं कुछ भी नहीं कर रहे हों। देवी-देवताओं के आदेश से सब-कुछ अपने-आप घटित हो रहा है।

अब सभी 'घोड़े' अर्थात् देउधा नाटघर वाली देवी के पास जाने के लिए क़तारों में खड़े हो गये। कुछ समय पहले केले के पत्तों के ऊपर बैठकर मट्ठा, घी और सिन्दूर घिसकर आनेवाले 'घोड़ों' के शरीर अब चिकने और चमकदार दिख रहे हैं। उनके गले पर गेंदे के फूलों और बेलपत्तों की मालाएँ सजी हुई हैं। उनकी पीठ पर वह किस तरह के कपड़ों का बोझ है? सिर पर उन्होंने जैसे माला से ही पगड़ी बना

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ली है। हाँ, ख़ूब सारे गेंदे के फूलों से बनी हुई पगड़ी है। उसके ऊपर मिट्टी का एक दीया रखा है। सबसे पहले बैंगनी कपड़े कुबेर का 'घोड़ा' आगे बढ़ने लगा।

वहाँ गणेश का 'घोड़ा' है, बिलकुल आख़िर में शिव का 'घोड़ा' सिर पर जलता दीया उठाकर तेज़ क़दमों से आगे बढ़ रहा है। मन्दिर के बौने ताल और बेताल भी सबके साथ-साथ लगभग दौड़ते हुए आगे बढ़ रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा है जैसे दो बड़े-बड़े मांस के टुकड़े हिलडुल रहे हों!

आदमी—चारों तरफ़ अनगिनत आदमी।

नटपाड़ा, हेमतला, बेजपाड़ा, नापितपाड़ा, मालीपाड़ा, ब्रह्मपुत्र के उत्तरी और दक्षिणी किनारे से—सभी जगहों से लोग आकर कामाख्या पीठ में भर गये हैं। लकड़ी की रेलिंगवाले बरामदे में खड़े होकर पण्डों के परिवार के लोग शोभायात्रा देखने लगे। देउधाओं के सिर पर बँधी फूलों की पगड़ियों पर मिट्टी के दीये झिलमिलाने लगे।

एक औरत काली के 'घोड़े' से भविष्य के बारे में पूछने के लिए बीच रास्ते पर खड़ी थी। वह एक स्वस्थ एवं सुन्दर महिला थी। उसने अपने दायें हाथ से दो-तीन साल की एक गोल-मटोल बच्ची सँभाल रखी थी। बीच-बीच में वह बच्ची ब्लाउज़ में मुँह घुसाकर माँ का दूध पीने की कोशिश कर रही थी। उस औरत ने अपने बायें हाथ से बकरे का एक बच्चा पकड़ रखा था, जिसे वह बलि के लिए लायी थी। भीड़ की धक्कामुक्की में बकरे के बच्चे ने उल्टी कर दी।

उसकी सफ़ेद रंग की उल्टी देखकर पास खड़े भक्तों में से किसी ने चिल्लाकर कहा, "ओह्! माँ का दूध पीता बच्चा है! उल्टी में यह सब दूध ही तो निकला है!"

औरत ने बड़ी-बड़ी आँखों से बलि के लिए लाये बकरे के बच्चे को देखा। पास खड़े भक्त ने फिर कहा, "दोनों दूध पीते बच्चे हैं! अभी से ही देउधा को इसका ख़ून पिलाने क्यों लायी?"

गोद की तीन साल की बच्ची ने एक बार अपनी माँ की तरफ़ और फिर बकरे की तरफ़ देखकर पूछा, "इसकी माँ कहाँ है? इसकी माँ कहाँ है?"

तब तक माथे पर बेलपत्ते का मुकुट बाँधे और सिर पर दीया उठाये हुए देउधा के दल मन्दिर की तरफ़ बढ़ने लगे थे।

दोपहर के बाद अचानक शक्तिपीठ के ऊपर आसमान में लाल और काले बादलों का खेल शुरू हो गया। लाल-लाल बादल के टुकड़े जैसे काले बादलों के बीच छुपने की कोशिश कर रहे थे। माथे पर सिन्दूर लिपा और जवाकुसुम के फूलों का हार पहना हुआ बलि के लिए तैयार किया गया एक भैंसा जैसे घने अन्धकार के बीच में छुपने की कोशिश कर रहा है। बीच-बीच में देउधाओं की भयानक चीख़ें जंगली

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथियों की चिंघाड़ को भी मात दे रही थीं।

कुछ दूरी पर डरथी ब्राउन की नाव दिखी।

डरथी ब्राउन की आने की ख़बर जंगल की आग की तरह फैल गयी। डरथी का दोस्त विलियम दोपहर से ही घाट पर बिछे पत्थर पर बैठकर डरथी का इन्तज़ार कर रहा था। कन्धे पर लटकाकर लायी दूरबीन से वह दूर की नावों को देख रहा था। कोई-कोई नाव देखकर उसे ऐसा लगता था जैसे वह नाव नहीं है, बरगोहाई या बरपात्रगोहाई [1] के बरामदे के एक-एक अंश तैर रहे हैं।

वह डरथी का सभी काम पूरा करके आया था। वसीयत का काम ख़त्म हो गया है। डरथी के लिए कोई भी काम करने के लिए विलियम तैयार है। विलियम अपने सुनहरे बालों पर हाथ फेरते हुए बार-बार पहाड़ी की तरफ़ देख रहा था।

नहीं, डरथी को लेने छिन्नमस्ता के संन्यासी नहीं आये हैं। विलियम ने सुना था कि बलि बन्द करनेवाली अर्ज़ी लेकर मुख्य पुजारी के पास जाने का ज़बरदस्त आयोजन चल रहा है। अर्ज़ी लेकर पहाड़ी पर चढ़नेवाले अर्थात् मुख्य पुजारी से मिलनेवाले लोगों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ने लगी है। डरथी का द्वार भांगा-घर दस्तख़तवाली कॉपियों से भर गया है। यह बात सच है कि अँग्रेज़ों के शासनकाल में भी मन्दिर में मुख्य पुजारी का निर्वाचन बाक़ी पुजारियों ने ही किया है। इसमें अँग्रेज़ सरकार ने कभी हस्तक्षेप नहीं किया। यहाँ तक कि कभी अगर कोई भ्रष्टाचार हुआ भी है तो वे शिकायतवाले काग़ज़ गोरे साहबों की फ़ाइलों में बन्द हैं। लेकिन बलि-विरोधियों की पहाड़ जैसी दस्तख़तवाली कॉपियाँ?

हाँ, हाँ ये कॉपियाँ? इनके बारे में कोई अनजान नहीं है। 'याचना' की सहायता लेनी होगी। ख़ून पोंछने की चाहत रखनेवाले लोगों की दिल से की गयी याचना गोरे साहब नकार नहीं सकते। हाँ, हाँ ऐसा कोई भी नहीं कर सकता। गोरे साहब भी नहीं।

जटाधारी के शिष्यों के पास अनेक प्रकार के काग़ज़ हैं। नये-नये नियमों के बारे में जानकारी भी है।[2]

हाँ, हाँ आख़िर में कोर्ट-कचहरी भी करनी पड़ सकती है—क्या पता! क्या भरोसा!

एक-दो करके कई साहब घाट पर आ पहुँचे। वे सब डरथी की फ़िक्र में या

---

1. आहोम राजा के अधिकारीवर्ग।
2. In 1842, executive officers of Government were prohibited from interfering in the management of the temple and directions were issued to the collector that in future the right of succession to the several offices should in case of disputes be determined by the ordinary courts of law.

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिर किसी और वजह से वहाँ आकर टहलने लगे, यह किसी को समझ में नहीं आया।

देवध्वनि उत्सव के भक्तों में मिले स्वयंसेवियों को पुलिस द्वारा खदेड़े जाते हुए सभी ने देखा है। लेकिन इस समय ये गोरे साहब घाट पर क्या करने आये हैं? घाट के आसपास लम्बे, नाटे, दुबले-पतले और विचित्र हाव-भाववाले ये साहब चहलक़दमी करने लगे थे।

डरथी ब्राउन आएँगी। यह बात सभी को पता चल गयी है। थाने में, साहबों के निशानेबाज़ी करनेवाले जंगल में, जहाज़घाट पर, गिरजाघर में—यहाँ तक कि कॉटन कॉलेज के गोरे साहबों के बैठनेवाले सुडमार्चन हॉल और कर्ज़न हॉल में भी इस बारे में चर्चा हो रही थी।

सिर से पाँव तक सिन्दूर का लेप लगाकर बलि के लिए लाये गये भैंसे का रूप लेनेवाले बादल अब अदृश्य हो गये थे। चप्पू की छप्-छप् आवाज़ सुनी गयी। माँझी का सुरीला गीत हवा के साथ तैरता हुआ किनारे से टकराने लगा—

"दो, अपने शरीर की छाल ही बिछा दो।
उनके जाने के रास्ते पर
हृदय को एक प्रदीप बना लो
अपने ही ख़ून से दिया जलाओ
प्रतीक्षा करो—वे आएँगे
वे आएँगे..."

आहा, यह किस गायक की रचना है? उत्तर शेखादारी की वेश्याएँ ही अकसर ऐसा गीत गाती हैं!

दो ढोलकिया सीने से घुटना जोड़कर तमाशा देख रहे थे। वे बण्डी और बिलकुल मैली धोती पहने हुए थे। दतकुचि से आया ढोलकिया ज़ोर-ज़ोर से कहने लगा, "फ़िरंगी की लड़की को हमारा मर्द पसन्द आया।"

दरंग ज़िले के सातघरिया की तरफ़ का एक दूसरा ढोलकिया बोला, "क्या बुरा हुआ? साहब हमारी लड़कियों को खींच-खींचकर नहीं ले गये हैं क्या? हम लोग 'बामुनपोरा गीत' और 'हाईदर काज़ी के गीत'[1] नाव में गाते हुए आये हैं।

"बामुनपोरा गीत?"

"हाँ बामुनपोरा गीत...चप्पू चलाते समय हम लोगों ने हाईदर काज़ी के गीतों के साथ 'बामुनपोरा गीत' भी गाये थे। सुनो, इस किनारे से एक ब्राह्मण ऊपरी असम गया था। उसने पुजारी का काम करके दो घड़े रुपये कमाये। फिर उसने वहीं एक लड़की से शादी की। लड़की बिलकुल स्वर्ग की अप्सरा जैसी थी। अब अपने गाँव

---

1. यह गीत डॉ. नवीन चन्द्र शर्मा रचित ग्रन्थ 'जनकृष्टि की रूपरेखा' में है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

में लौटने के लिए उसने टिकट ख़रीदी और ब्राह्मण-ब्राह्मणी दोनों 'भाप नाव' में चढ़ गये। बस, वेही मुश्किल हो गयी—"सातघरिया का ढोलकिया सुर लगाकर गाने लगा—

"पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण, चारों दिशा देखा
पश्चिम दिशा में साहब ने ब्राह्मणी को देखा
ब्राह्मणी का रूप साहब देखता ही रहा
मचान से उतरकर साहब खलासियों के पास जाए
साहब ने कहा—खलासियो, मेरी बात सुनो!
ब्राह्मण को मारकर ब्राह्मणी को 'मेम' बना दो—"

दतकुचि का ढोलकिया चिल्ला उठा, "ओह् ओह् साहब ने तो ब्रह्मवध किया न?"

"फिर खलासियों ने कहा कि हम लोग नरक में जाएँगे। ब्राह्मणवध का पाप हम अपने सिर पर नहीं ले सकते हुज़ूर!"

"फिर क्या कहा साहब ने?"

"रानी की मुहरवाले रुपये दिखाये।"

"हाय, हाय, रुपये के लालच में धर्म ही भूल गया!"

"इंजन दिखाने के लिए ब्राह्मण को बुला ले गया।"

दरंग ज़िले के सातघरिया से आया ढोलकिया फिर सुर लगाकर गाने लगा—

"इसी तरह ब्राह्मण को इंजन दिखाने ले गया
कोयलेवाले कमरे में ब्राह्मण को ढकेला
ढकेलकर उस पर कोयला डाला..."

"फिर क्या हुआ?"

"फिर क्या होगा? बहुत देर तक ब्राह्मण को न देखकर ब्राह्मणी रोने लगी। साहब ने आकर पूछा कि ब्राह्मण कहाँ ग़ायब हो गया है? कैसा दिखता था वह?"

सातघरिया का ढोलकिया गाने लगा—

"सुनो सुनो साहब—
कहती हूँ मैं
मेरे स्वामी के बायें पैर में
छह उँगली हैं।"

"छह उँगलीवाला अधजला एक पैर लाकर साहब ने ब्राह्मणी को दिखा दिया। ब्राह्मणी पैर देखकर बिलखने लगी और बेहोश होकर गिर पड़ी। तभी साहब ने उसे उठा लिया।"

"हाय राम, साहब ने उठाया...!"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

"हाँ, उसी दिन से साहब ने ब्राह्मणी को 'मेम' बना लिया।"

अब विलियम और वहाँ आये गोरे साहब एक साथ खड़े हो गये। डरथी ब्राउन को लेने आनेवाले संस्कृत गुरुकुल के छात्रों ने शोर मचाया—"आ गयी, आ गयी!"

चप्पू की आवाज़ थम गयी। नाव किनारे से लगी। हड़बड़ाकर दौड़ते छात्रों के दल ने नाव को घेर लिया।

डरथी ब्राउन नाव से उतरी। लाल और काले बादलों से भरे आसमान की तरफ़ उसने सिर उठाकर देखा। हाँ, वहाँ लाल-लाल बादल का एक टुकड़ा है। मानो सिन्दूर से लिपा भैंसा हो—बलि के डर से काले अन्धकार जैसे बादलों में छुपना चाहता हो!

"विलियम?" हाथ बढ़ाकर डरथी ने अपने दोस्त विलियम को बुलाया। जूता-मोज़ा पहने हुए ही विलियम पानी में उतर गया। उसका हाथ थामे सावधानीपूर्वक डरथी किनारे पर आ गयी। इन महीनों में डरथी ब्राउन बहुत बदल गयी है। विलियम कह उठा, "डरथी, तुम मोटी हो गयी हो! तुम कितनी मोटी हो गयी हो? यह—यह क्या पहने हो तुम? साड़ी! साड़ी!!"

डरथी ने फिर से आसमान की ओर देखा और साथ-साथ कह उठी, "ओहो, मैं जैसे एक युग से यहाँ नहीं आयी!"

डरथी ने हर अँग्रेज़ अधिकारी के साथ हाथ मिलाया। गुरुकुल के बलि-विरोधी छात्रों ने सिर झुकाकर डरथी को अभिवादन किया। एक-एक छात्र को सीने से लगाकर डरथी ने स्नेह जताया। अँधेरा होने से पहले उन्हें घर पहुँचना होगा। लोगों की भीड़ को ठेलती हुई विलियम का हाथ पकड़कर डरथी नंगे पैर पहाड़ी पर चढ़ने लगी। सभी ने देखा कि डरथी वाक़ई मोटी हो गयी है।

द्वारभांगा-घर पहुँचकर डरथी चीख़ पड़ी, "हाय राम, चारों तरफ़ ख़ाली कारतूस पड़े हैं! लकड़ी के दरवाज़े पर गोली से बने छेद हैं!"

सभी दरवाज़े के पास जाकर झाँकने लगे।

"हाँ, हाँ, वे बुलेट के ही निशान हैं।"

विलियम की तरफ़ देखकर डरथी ने कहा, "इतने पास निशानेबाज़ी करना उचित नहीं है, है न?"

साथ आये सहबों ने 'हाँ' में सिर हिलाया। अब तक छात्रों ने डरथी का सूटकेस, बेंत का बना बक्सा, टोपी और बाक़ी सामान लाकर बरामदे में रख दिया था। दरवाज़े पर लटका ताला खोलने के बाद फिर डरथी के मुँह से चीख़ निकली—"उफ़्, उफ़्, ये सब रत्नधर के बनाये हुए चित्र हैं!"

अभी तक पूरा अँधेरा नहीं हुआ था, फिर भी एक छात्र मिट्टी का एक दीया जलाकर चित्रों के सामने ले आया। रत्नधर के बनाये एक चित्र में राजा रुद्रसिंह का मृत शरीर नाव में पड़ा है। पास ही चाक़ू घोंपकर मारी गयी तीन नर्तकियाँ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
ख़ून से लथपथ पड़ी है।

डरथी ने गौरे साहबों को अन्दर बुलाकर कहा, "राजा रुद्रसिंह ने देवी दुर्गापूजा में बीस हज़ार भैंसे बलि चढ़ाकर इस शक्तिपीठ में ख़ून की नदी बहा दी थी। रुद्रसिंह बहुत प्रसिद्ध राजा था। गौड़ राज्य पर अधिकार जमाने की इच्छा से देवीपीठ में बलि चढ़ायी थी रुद्रसिंह ने। देखो, देखो, तुम लोग रत्नधर का बनाया चित्र देखो।" अचानक डरथी को जैसे कुछ याद आया, वह बोल पड़ी, "मुझे रत्नधर की सब ख़बर मिल चुकी है। पिछली रात उसे अस्पताल ले जाया गया है।" घुटनों के सहारे बैठकर डरथी फूट-फूटकर रोने लगी, "ओह् माँ—माँ, क्या मैं इस लड़के को खो दूँगी ? माँ—माँ, क्या वह लड़का नहीं बचेगा अब ?"

वहाँ उपस्थित सभी गोरे साहब किंकर्तव्यविमूढ़ होकर खड़े रहे। विलियम डरथी को तसल्ली देने की कोशिश करने लगा। उसने जेब से रूमाल निकालकर डरथी को दिया और आँसू पोंछने के लिए कहा।

डरथी ने फिर कहा, "देखो, वहाँ जो कॉपियाँ सजी रखी हैं—वे दस्तख़तवाली कॉपियाँ हैं। बलि-विरोधियों के दस्तख़त हैं उनमें। उत्तरी और दक्षिणी किनारे—सभी जगहों के दस्तख़तों से भरी हैं वे कॉपियाँ !"

फिर सिसकने लगी डरथी ब्राउन। विलियम ने तसल्ली देकर कहा, "चिन्ता मत करो, मैं असम वेली डिस्ट्रिक्ट के 'सब-जज' से मिला था। बलिप्रथा का विरोध करनेवाले दो ग्रामीण मुंशियों से भी मेरी बात हुई है। और सुनो, तुमसे कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं। आओ, बाहर आ जाओ।"

छात्रों ने एक लालटेन जलाकर बाहर के बरामदे में रख दी।

अब लालटेन की रोशनी में डरथी के शरीर का रूप स्पष्ट दिखने लगा। सभी के मन में एक शक था। क्या विलियम खुलकर सवाल करेगा ? या बाक़ी चारों में से कोई पूछेगा ? गुवाहाटी के गोरे साहब यह बात सुनने के लिए बेताब हैं। उनके होठों के सामने सवाल लटक गया—"डरथी, तुम्हारी कोख में क्या उस संन्यासी की सन्तान है ?"

सभी गोरे साहब जैसे इस बात की सच्चाई जानने के लिए ही यहाँ आये हैं। "डरथी तुम्हारी कोख में छिन्नमस्ता के संन्यासी की सन्तान है क्या ? तुम इतने लम्बे समय तक उसके साथ रहकर आयी हो ?"

"डरथी, डरथी !"

देउधाओं की भयानक चीख़ सुनाई दी। वे अब देवी के सामने गिर पड़ेंगे। फिर वे अपने-अपने मन्दिर के लिए रवाना हो जाएँगे।

नहीं, कोई भी मुँह खोलकर कुछ भी नहीं पूछ सका। इन साहबों के बीच अगर डरथी के पति द्वारा भेजा गया कोई था—तो वह भी डरथी से मुँह खोलकर कुछ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं पूछ सका।

विलियम की आत्मा काँप उठी। वे अच्छी तरह से जानते थे कि हेनरी कितना भयानक आदमी है। हेनरी को आज तक कोई समझ नहीं पाया है !

वह डरथी का पेट फाड़कर संन्यासी के नाजायज़ बच्चे को निकाल देगा और उसे बूटों से कुचल डालेगा।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

इक्कीस

गौड़ से आया एक संन्यासी गा रहा था—

"हे देवि, अपने शरीर की यह छाल
तुम्हारे आगमन के लिए बिछा दूँगा
हृदय के रक्त से दिया जलाकर
तुम्हारा रास्ता सुगम बना दूँगा
देवि, तुम उसी रास्ते से आना—
मैं अपने मन्त्र से तुम्हारी पूजा करूँगा
शास्त्र में लिखी पंक्ति से नहीं।

इस शरीर की छाल...तुम्हारे आगमन के लिए बिछा दूँगा।
देवि, तुम आना—ज़रूर आना
तुम्हारी योनि के रक्त से जन्म लेंगे सहस्र सूर्य
तुम्हारे स्तनों का दूध, जीवन को अमर बना देगा
देवि, मैं जानता हूँ, तुम इसी रास्ते से आओगी—
जिस रास्ते पर बिछी हुई है
मेरे शरीर की सफ़ेद वर्ण की यह छाल..."

सुबह से ही देवीपीठ में लोगों का आना शुरू हो गया। आज देवध्वनि उत्सव का आख़िरी दिन है। आज शायद काली का 'घोड़ा' तलवार पर नृत्य करेगा और दाँतों से काटकर ज़िन्दा कबूतरों का ख़ून पी जाएगा। हज़ारों भक्तों के सामने काली का 'घोड़ा' यह काम कर दिखाएगा। वह वीर पुरुष की भाँति सीना तानकर यह काम करेगा। ओह् ! किन कबूतरों के भाग्य में आज यह यन्त्रणा लिखी हुई है ? ओह् !

छिन्नमस्ता के आँगन में सोया हुआ गुरुकुल का एक छात्र हड़बड़ाकर उठ बैठा। पिछली रात को उसने कालिका-पुराण पढ़ा था। उसमें लिखा है कि जो साधक अपने

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
हाथ से जीवहत्या करता है उसे ब्रह्महत्या का पाप लगता है। हाँ, हाँ, देवी के ग्रन्थ 'कालिका-पुराण' में स्पष्टरूप से लिखा है–'हस्तेन छेदयेद् मस्त प्रोक्षितं साधकः पशुम्। पक्षिणं वा ब्रह्मबध्यामवाप्नोति सुदुःसहाम ॥'

और दाँतों से काटने पर ? दाँतों से ?...फिर भी आज देवीगृह के आँगन में तलवार पर चढ़कर देउधा अपने दोनों हाथों से शान्ति के प्रतीक कबूतर को मारकर उसका रक्तपान करेंगे।

वह छात्र स्नान करने के लिए घाट पर उतर गया। वहाँ पर उसने एक अद्भुत दृश्य देखा। आज निशानेबाज़ी के लिए एक-दो नहीं, कई गोरे साहब जंगल में इकट्ठे हुए हैं। इतने सारे गोरे साहब पहले एक साथ नहीं आते थे। क्य: आज कोई उत्सव है ? क्या जनरल जेनकिंस का जन्मदिन है ? इतने सारे साहब घूम रहे हैं यहाँ ? चारों तरफ़ बन्दूक़ की धाँय-धाँय आवाज़ ! पिछली रात को देवध्वनि उत्सव देखने आये भक्तों के समूह ने जहाज़घाट के एक साहब को पीटकर मार डाला था।

वह छात्र गीले कपड़े पहने हुए ही दौड़कर छिन्नमस्ता के संन्यासी के पास पहुँचा। यह बात उन्हें बताना उसने ज़रूरी समझा। वह बहुत डर गया था। यह किस बात की भीड़ थी ? साहबों की भीड़ क्यों है ?

जटाधारी के मन्दिर के पास भक्तों की भीड़ बनी हुई है। मुख्य पुजारी के पास अर्ज़ी लेकर जाने का दिन तय हो गया है। क्या गोरे साहब पुलिस की सहायता लेंगे ? छात्रों में इसी बात की चर्चा है। वे जानते हैं कि मन्दिर के अन्दरूनी मामलों में साहब लोग कोई सहायता नहीं करेंगे। लेकिन अगर ख़ून-ख़राबा हुआ तो ? हाँ, हाँ–पुलिस की सहायता लेना उचित होगा।

वह छात्र तेज़ी से जटाधारी की कोठरी के सामने खड़ा हो गया। छिन्नमस्ता का जटाधारी ध्यान में बैठा है। कोठरी में रस्सी के सहारे लटक रहे दीये की रोशनी में छात्र ने जटाधारी का तेजस्वी चेहरा देखा। आज उनके शरीर से जैसे उज्ज्वल ज्योति निकल रही है।

वह–वह क्या है ? गोल-गोल निशानवाला एक साँप उनकी जटा पर कुण्डली बनाकर ऐसे बैठा है जैसे वह जटा के साथ खेल रहा हो। उस छात्र ने बाहर खड़े हुए भक्तों को साँप के बारे में बताया। सभी ने बिना कोई कौतूहल दिखाये कहा, "हम लोग सुबह से ही यह खेल देख रहे हैं।"

तभी पहाड़ी पर ज़ोर-ज़ोर से शोरगुल शुरू हो गया। ढोलक और करताल की प्रचण्ड आवाज़ के साथ-साथ लगातार नृत्य करनेवाले देउधाओं के शरीर से ख़ून मिले पसीने की धारा बहने लगी। वैसे यह ख़ून उनके शरीर का नहीं था। यह ख़ून भक्तों द्वारा चढ़ायी गयी बलि का ख़ून था। लगातार नृत्य करनेवाले देवी-देवताओं के 'घोड़ों'

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने भयानक रूप धारण कर लिया। उनके गले में जवाकुसुम और गेंदे की मालाएँ थीं। ढोलक और करताल के ताल पर नृत्य करते हुए उन्होंने देवी का प्रांगण हिला दिया। ख़ून, फूल और पसीने की बूँदों से देवीगृह का आँगन लथपथ होने लगा। बीच-बीच में एक-दो भक्त देउधाओं के पास जाकर उनके पैरों में ख़ून-पसीने से लथपथ फर्श पर लोटने लगे। अर्धचेतन अवस्था में नृत्यरत देउधाओं की भी नज़र इन भक्तों पर पड़ गयी। उन्होंने अपनी पीठ से बहते पसीने में बेलपत्ते भिगोकर भक्तों के हाथ में दे दिये और फिर से नृत्य में मग्न हो गये।

'ऐ माई ! ऐ माई !!' उनकी चीख़ों से धरती काँप उठी। 'माई ऐ ! माई ऐ !' जीभ निकालकर काली के 'घोड़े' ने बलि के लिए दिये गये एक बकरे को गोद में उठाकर भयानक नृत्य शुरू कर दिया। छिन्नमस्ता के 'घोड़े' की गोद में भी एक चितकबरा बकरा छटपटा रहा है। भक्तों में खुसर-फुसर शुरू हो गयी–

"क्या कच्चा ही खा जाएगा ?"

"क्या कच्चा ही खाएगा ?"

"बलि को बिलकुल गोद में ही उठा लिया !"

ठीक उसी समय केसरिया साड़ी पहने डरथी ब्राउन गुरुकुल के एक छात्र के साथ कोटिलिंग के पास पहुँची। छिन्नमस्ता के संन्यासी के साथ लम्बे समय तक रहने के बाद डरथी बहुत अच्छी तरह से असमिया भाषा सीख गयी थी।

लाल कपड़े पहने एक भक्त शायद अपनी गृहपूजा के लिए पानी लेने आया था। डरथी को देखकर उसने अपना मुँह फेर लिया। नदी से लाया पानी उसने लोटे से फेंक दिया और दोबारा पानी भरने नदी किनारे उतरने लगा। डरथी ब्राउन और गुरुकुल के छात्र समझ गये कि भक्त ने डरथी को अस्पृश्य समझ लिया है।

अब दोनों ऊपर चढ़ने लगे। गुरुकुल के छात्र ने कहा, "हम लोगों का काम जल्दी पूरा हो जाना चाहिए। एक-दो दिन के अन्दर ही अर्ज़ी लेकर पहाड़ी पर जाना उचित होगा।"

डरथी ब्राउन ने छात्र की बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। वह गम्भीरता से कोई और बात सोचने लगी। सुबह की धूप में उसका शरीर चमक रहा था। अभी-अभी पानी से निकलकर आयी हुई अप्सरा जैसी लग रही है डरथी ब्राउन। फिर लम्बे समय तक उत्तरी किनारे पर रहकर आने से उसके शरीर में मोटापा बढ़ गया है। डरथी अब पहले से ज़्यादा सुन्दर लग रही है। लोग कई तरह की बातें कर रहे हैं। "क्या वह गर्भवती है ?"

"गर्भवती ?"

ब्रह्मपुत्र की चमकती जलधाराओं को देखती हुई डरथी ने कहा, "जटाधारी के साथ उत्तर शेखदारी की तरफ़ जाते समय भी उन्होंने मुझे तन्त्र पढ़कर सुनाया था।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
सुनो, अब मैं असमिया लिपि पढ़ सकती हूँ। क्या तुम जानते हो, किसी युग में स्वर्ग की अप्सरा कंकती शापित होकर पृथ्वी पर आयी थी ? देवराज इन्द्र पर आसक्त होनेवाली इस अप्सरा के वंशज सौमारलोग ही कामरूप के राजा बने थे। वे बहुत सुन्दर-सुन्दर कहानियाँ पढ़कर सुनाते थे, आजकल मैं भी सुना सकती हूँ। क्या तुमने इस ग्रन्थ में लिखी अहंकारवाली कहानी सुनी है ?"

गुरुकुल का छात्र कुछ असमंजस में पड़ गया। उसका मन डरथी की कहानी सुनने का नहीं था। कैसे डरथी को सुरक्षित स्थान तक पहुँचा सकता है—वह यही सोच रहा था, क्योंकि आज ही ब्रह्मपुत्र में बहकर आयी पत्थरों में अटकी गोरे साहब की एक लाश लोगों ने देखी है। पहाड़ी के नीचे निशानेबाज़ी के लिए आये साहब लोग लाश के पास खड़े होकर कोहराम मचा रहे हैं। गुरुकुल के इस दुबले-पतले छात्र ने मन में विचार किया—दूर से यह दृश्य देखकर डरथी के मन में कष्ट हो सकता है। इसलिए उसने पहाड़ी की तरफ़ उँगली से इशारा करते हुए डरथी से कहा, "अब देउधाओं का भयानक नृत्य शुरू हो गया है। वे अब तलवार पर खड़े होकर कच्चा ख़ून पिएँगे। मैं पहाड़ी के ऊपर आपको ले जाऊँगा। उधर आपको कोई नहीं देख पाएगा।"

डरथी ब्राउन ने आँख उठाकर छात्र को देखा। इस तरह की नीली आँखें छात्र ने पहले नहीं देखी थीं। एक नीला आसमान जैसे उन आँखों में डूबा हुआ था।

आश्चर्य ! आश्चर्य !

उस छात्र ने छिन्नमस्ता के संन्यासी की आँखों में भी इसी तरह की गहराई देखी थी। किसी ने कहा था—हाँ, किसी को कहते हुए उसने सुना था—संन्यासी की आँखों में श्मशान डूबा हुआ है। किसी कवि ने कहा भी है कि जिसके हृदय में अनेक श्मशान रहते हैं, वही पृथ्वी पर परिवर्तन ला सकता है।

दोनों तेज़ी से ऊपर चढ़ने लगे। जामुन, भातघिला, बेल और कँटीली झाड़ियों के बीच से गुज़रकर डरथी एक ऐसे स्थान पर खड़ी हो गयी जहाँ से देउधाओं का नृत्य अच्छी तरह से देखा जा सकता था।

डरथी ने देखा कि नाटघर के पासवाले मन्दिर के आँगन में देउधा लोग नृत्य कर रहे हैं। लम्बे-नाटे, दुबले-मोटे और सिरमुँड़े या लम्बे-लम्बे बालोंवाले देउधाओं की नज़रें नशीली हो गयी हैं। दिन-रात लगातार नाचने के बावजूद उनके थकने का कोई लक्षण नहीं है। ढोलक और करताल की ढम्-ढम् आवाज़ से सारा परिवेश मुखर हो उठा है।

कुछ ही देर में शक्तिपीठ में लोगों के पैर रखने की जगह नहीं बची। लोगों से खचाखच भर गया पूरा शक्तिपीठ। आज देउधा तलवार पर नृत्य करेंगे।

डरथी ब्राउन और छात्र सुरक्षित स्थान ढूँढ़ते हुए और ऊपर चढ़ने लगे। एक

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

टूटी-फूटी कोठरी के पास उन लोगों ने दो आदमियों को सिलबट्टे से मसाले पीसते देखा।

उनको देखकर गुरुकुल के छात्र ने उनसे प्रश्न किया, "इस समय मसाला क्यों पीस रहे हो ?"

"हम लोगों को सुबह ही नाव लेकर जाना होगा। वहाँ बँधे बकरे देख रहे हो ? इनकी बलि चढ़ायी जाएगी। हम लोगों को बाद में मसाला पीसने का समय नहीं मिलेगा।"

डरथी ने देखा कि दो हाथ की दूरी पर कई बकरे निश्चिन्त होकर घास खा रहे हैं। पीसे जा रहे मसाले के छींटे उन पर भी पड़ रहे हैं। डरथी ने छात्र का हाथ कसकर पकड़ लिया और तेज़ी से पहाड़ी पर चढ़ने लगी।

घुँघराले बालवाले एक देउधा द्वारा बेलपत्ते से अपना पसीना पोंछकर भक्त को देने का दृश्य डरथी ने देखा। सारे देउधाओं के शरीर लथपथ हो गये हैं। जैसे ये बारिश में भीगकर होली खेलते लोगों का दल हो !

अब जीभ निकाले काली का 'घोड़ा' बाक़ी सबको मात देता हुआ नाचने लगा। किसी ने उसकी पीठ पर बलि के लिए लाया हुआ एक बकरा चढ़ा दिया। बकरे को पीठ पर लेकर वह उछल-उछलकर नृत्य करने लगा। एक भक्त काली के 'घोड़े' का पैर पकड़कर अपने भविष्य के बारे में बताने के लिए विनती करने लगा। इस 'घोड़े' के भयानक नृत्य के साथ-साथ वह भक्त भी ज़मीन पर रेंगने लगा।

आश्चर्य ! आश्चर्य ! कोई थका नहीं है। यहाँ घण्टों का कोई हिसाब नहीं है। दिन-रात का भी कोई हिसाब नहीं है। खाने-पीने का कोई ठिकाना नहीं है। ख़ून-पसीना और रंग—सब-कुछ एक होकर शरीर से बहने लगा है।

हाँ, हाँ, अब उनकी पीठ का रंग टुकड़ों में कटे मांस जैसा हो गया है। पूरा फर्श ख़ून, पानी, विभिन्न तरल पदार्थों और फूल-निर्माली से भर गया है। सारी चीज़ों ने मिलकर अद्‌भुत रूप ले लिया है !

ओह् !...जैसे स्वर्ग से मिली मदिरा का पान करके मग्न हो गये हैं ये देउधा।

आज सुबह ही छिन्नमस्ता के संन्यासी ने ध्यान में बैठने से पहले डरथी के पास आकर चेतावनी दी थी—"हो सके तो आज बाहर मत निकलना। इन्कलाबियों की धर-पकड़ के लिए गोरे साहब चारों तरफ़ घूम रहे हैं। शत्रुओं के नाख़ून बढ़ गये हैं और उनके दाँत चाक़ू जैसे तेज़ हो गये हैं। सतर्क रहना ! सतर्क रहना !"

अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर माँ माँ कहकर चीख़ने के बाद उन्होंने डरथी से विदा ली थी।

"माँ ! माँ ! तुम अपने ख़ून से ही तेजस्विनी हो ! माँ, तुम फूल से बनी पोशाक पहनो ! माँ ! माँ ! तुम फूलोंवाली पोशाक पहनो !"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

छिन्नमस्ता के जटाधारी दस्तख़त संग्रह करनेवाले गुरुकुल के छात्रों के साथ सँकरे रास्ते से नदी के उस भाग में पहुँच गये जो बहुत गहरा था। उस स्थान पर आमतौर पर लोग नहीं जाते थे। बूढ़े, जवान और कोई विधिपाठक के अलावा ब्रह्मा नाम का जो कुल समाप्त हो गया है, उसकी कई महिलाओं के इस पानी में सती हो जाने की किंवदन्तियाँ हैं।

छिन्नमस्ता के संन्यासी का आदेश न मानकर इस छात्र के साथ डरथी देउधा के नृत्य देखने आयी है। क्या यह ठीक बात है ?

किसके 'घोड़े' की विकट चीख़ है वह ? ढोलक की धम्-धम् आवाज़ को मात देते किसके 'घोड़े' ने चिल्लाया होगा इस तरह !

हाँ, हाँ, किसका 'घोड़ा' है वह ? माँ भैरवी या माँ बगला का 'घोड़ा' ? कन्धे पर काला बकरा लेकर फिर से भयानक रूप से कूदने लगा काली का जीभ निकाले वह 'घोड़ा'। डरथी ब्राउन ने दूर से ही देखा कि काली के 'घोड़े' की जीभ से टप्-टप् ख़ून गिरता जा रहा है।

चारों तरफ़ हवा में चीत्कार तैरने लगा। किसकी चीत्कार है यह ? कैसी चीत्कार ? किसी की यन्त्रणा-भरी चीत्कार है यह ! जिन्हें बेदर्दी से मारा गया है उन्हीं की बीभत्स चीख़ है यह ! धोती और कमीज़ पहने घुँघराले बाल और कम उम्रवाले छात्र ने ज़ोर से कहा, "इस तरफ़ ऐसे खड़े रहना उचित नहीं है। यहाँ खड़े रहना उचित नहीं है। अस्त्र से किसी पर घात किया गया है !"

"अस्त्र से ?"

"हाँ, हाँ, अस्त्र से।"

डरथी बिना हिले-डुले खड़ी रही और आश्चर्य से देउधाओं का अद्‌भुत नृत्य देखने लगी। फिर वह एक बेल के पेड़ के नीचे आकर खड़ी हो गयी। यहाँ से कोई उसे देख नहीं पाएगा।

वह किसका दाग़ है ? हाँ, बहुत सारे दाग़ हैं। किसके दाग़ हैं ? काले-काले दाग़। मानो किसी आदमी के शरीर में सूखे हुए ज़ख़्मों के भयानक दाग़ ! छात्र ने कहा, "निशानेबाज़ी करनेवाले साहबों की बन्दूक़ों की गोलियों के दाग़ हैं ये। देखो, नीचे ख़ाली कारतूस भरे पड़े हैं।"

बहुत डरावनी हो गयी है ये जगह। छात्र का मुँह सूखकर लटक गया।

डरथी ने कहा, "हाय, हाय, बेल का पेड़ घायल हो गया ! संन्यासी ने कहा था, बेलपत्ते ही शिवजी की जटा का रूप हैं।"

छात्र उत्साहित होकर बोला, "हाँ, हाँ शिवजी ने देवी से कहा था—'मम जटास्वरूपं हि पर्णं जानहि सुन्दरि।' और बेलपत्ते के तीन भाग दरअसल, ऋग्, यजुः और सामवेद हैं !"

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
आज इस पेड़ में बन्दूक़ की गोली लगी है। ओह् कितनी कहानियाँ सुनी थीं उसने ! ब्रह्मपुत्र के उत्तर और दक्षिण किनारेवाली जगहों में छाया बनकर जटाधारी के साथ घूमते समय कितनी सारी कहानियाँ सुनी थी उसने ?

अगर भक्त कमल के फूलों की माला से चण्डी-पूजा करता है तो वह ज्योतिष्टोम यज्ञ का फल पाकर सूर्यलोक में रहने योग्य हो जाता है।

अनेक विचित्र फूलों से कामाख्या माँ के लिए पुष्पगृह बनाकर अर्पण करने पर, उनके आशीर्वाद से ब्रह्माण्ड के सभी सुख भोगने के बाद दुर्गालोग में रहने योग्य बना जा सकता है।

एक हज़ार कनेर और एक हज़ार कुन्दफूल से देवी की पूजा करने पर उसकी सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं, उसकी सभी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं।

ओह्, समग्र नीलाचल पहाड़ फूलों से भरा हुआ क्यों नहीं है ? माँ की पवित्र भूमि फूलों से भरी होनी चाहिए। वह सब क्या है ? क्या है वहाँ ? चारों तरफ़ ख़ून के दाग़...!

माँ ! माँ ! माँ !!

अब तक भक्तों का चीख़ना-चिल्लाना बढ़ गया था। पुजारी मनसा देवी की पूजा करने के बाद मन्दिर के अन्दर से भैंसा-बलि देनेवाला खड्ग निकाल लाया। साथ-साथ चारों तरफ़ लोगों में दबी उत्तेजना साँप की फुफकार की तरह सुनाई देने लगी। ढोलक, करताल और औरतों की उलुध्वनि से आकाश गूँज उठा। चार आदमियों में से एक ने क़तार में से आगे आकर यह खड्ग उठा लिया। काली का 'घोड़ा' कूदकर खड्ग पर चढ़ गया। आश्चर्य ! आश्चर्य !

डरथी ब्राउन की आँखें भर आयीं। क्या करे ? क्या करे वह ? छात्र का हाल ज़ोर से पकड़े वह उस अवर्णनीय दृश्य को देखने लगी।

माँ ! माँ ! माँ ! सभी ओर से यही चीख़ प्रतिध्वनित हो रही थी। चारों तरफ़ से फिर प्रचण्ड आवाज़ आने लगी, "हे माँ ! हे माँ ! हे माँ परमेश्वरी ! मुक्तकेशी दिगम्बरी, सनातनी ! माँ ! माँ !" दिशाएँ प्रतिध्वनित होने लगीं—माँ ! माँ ! ढोलक और करताल की आवाज़ से जैसे पूरा आसमान चूर-चूर होकर ज़मीन पर गिर गया।

ठीक उसी समय काली के 'घोड़ा' ने एक भयानक काम किया। पास खड़े भक्त धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़कर सफ़ेद-काले और भूरे रंग की चमकती आँखोंवाले कबूतरों को लपलपाती जीभवाली तलवार पर नंगे पैर खड़े काली के 'घोड़े' को एक-एक करके देने लगे। एक ही पल में काली का 'घोड़ा' कबूतरों की गर्दन दाँतों से काटकर गट्-गट् ख़ून पीने लगा। कबूतरों की अँतड़ियाँ रस्सियों की तरह लटक गयीं। छटपटाते कबूतरों के शरीर का हिस्सा वह भक्तों के बीच फेंकने लगा।

"हाय, हाय," ज़मीन में गिर पड़ी डरथी ब्राउन ! "हाय, हाय, जटाधारी ने कहा

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
था–ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए। माँ के शास्त्र में लिखा है–साधक अगर पशु-पक्षियों की हाथों से हत्या करता है, तो वह ब्रह्मवध जैसा है। उसे ब्रह्मवध का पाप लगता है। और यहाँ काली के 'घोड़ा' ने दाँतों से काटकर कबूतरों की हत्या की ! दाँतों से काटकर...!''

डरथी के साथ आया छात्र भी चीख़ पड़ा, ''हाँ, हाँ, शास्त्र में लिखा है–अगर हाथों से मारना पाप है तो दाँतों से काटकर हत्या करने पर क्या होगा ? वह भी देवी के इस पवित्र आँगन में ? हाँ, हाँ, देवी के आँगन में यह कैसा काम हुआ ?''

दूर से फिर किसी की चीख़ सुनाई दी–''माँ ! माँ !''

यह छिन्नमस्ता के संन्यासी की आवाज़ है। कामाख्या पीठ के किसी मन्दिर से यह आवाज़ आ रही है–हृदय चूर-चूर कर देनेवाली आवाज़ कहीं-कहीं अब धूप के टुकड़े दिख रहे हैं। मानो पिघले हुए सोने और ख़ून-पानी ने मिलकर माँ की पवित्र भूमि को डुबा दिया है। किसी तान्त्रिक ने कहा था–माँ की योनि रक्त से पूर्ण रहनी चाहिए, तभी पृथ्वी बनी रहेगी। काटो, काटो और काटो ! तान्त्रिक सिर्फ़ एक ही बात दोहराता रहा।

लेकिन भक्तों ने हमेशा माँ का स्नेह माँगा है–महादेव का बताया महाकाली का मन्त्र वे अपने हृदय से जाप करना चाहते हैं–''माँ ! माँ ! तुम्हारा कमल जैसा मुखमण्डल कोटि-कोटि चन्द्र-सूर्य की भी उपेक्षा कर रहा है। तुम्हारे चरण करुणा के सागर हैं। माँ ! माँ ! तुम्हारे मुखमण्डल पर जैसे कोटि-कोटि चन्द्र पिघलकर चारों तरफ़ रोशनी बिखेर रहे हैं।''

किसी युग में शिव ने जिस तरह अनाथ की तरह देवी को ढूँढ़ते हुए पाँच लाख वर्ष बिताये थे, उसी तरह समग्र भक्तों के हृदयों से हर समय पुकार उठती रहती है–माँ ! माँ ! माँ ! अपने चरणों में जगह दो माँ, ख़ून नहीं–स्फटिक की तरह स्वच्छ, अमृतमय दूध दान करो माँ ! हमें जीवनदान दो माँ !

कितनी ही बातें सुनी थीं छिन्नमस्ता के संन्यासी से ! एक दिन बातों-बातों में संन्यासी ने डरथी से कह भी दिया था–पहले वे इतिहास के छात्र थे। संन्यास लेने के बाद बहुत दिनों तक विन्ध्यपर्वत की किसी रहस्यपूर्ण गुफा में अनेक दिन रहे थे। उत्तरकाशी से आनेवाले तान्त्रिकों के एक दल के साथ वे कामाख्या पीठ में आये थे।

कौन-सी पूजा थी वह ? कौन-सी पूजा थी ? घसीटकर ले जाए गये भैंसे का अनुकरण करते हुए संन्यासी भी गये थे। हाय, हाय–भैंसा आगे नहीं बढ़ना चाहता था। घसीटकर ले जाते समय एक तरह का संघर्ष हो रहा था।

क्या करते हैं आप लोग ? क्या करते हैं ? ओह, उसकी विष्ठा निकल रही है ! यह क्या कर रहे हैं आप ?

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

भैंसे की डरी हुई आँखें उनके हृदय में घुस गयी थीं जैसे कोई बच्चा अपनी माँ के सीने में घुस जाता है।

क्या कर रहे हैं आप लोग ? ओह्, भैंसा आगे नहीं बढ़ना चाहता !

एक विशालकाय भैंसे के ख़ून और विष्ठा पर चलकर जब वे वधस्थल से वापस लौटे थे, उसी समय से वे एक दूसरे ही व्यक्ति बन गये। हर समय उनके हृदय में भैंसे की आवाज़ प्रतिध्वनित हो रही थी। हर समय माँ के सीने में घुसनेवाले किसी बच्चे का रोना वह सुन रहे थे।

डरथी ने कहा था, "मैं रहूँगी। मैं हमेशा आपके साथ छाया बनकर रहूँगी। हमारे सम्बन्ध का कोई नाम नहीं होगा। हम दोनों का सम्बन्ध दुनिया का एक अनोखा सम्बन्ध है। एक श्रेष्ठ सम्बन्ध है !"

नीचेवाले जंगल से अब एक स्पष्ट आवाज़ सुनाई पड़ी। डरथी को साथी छात्र ने आवाज़ दी थी–"आइए, आइए–यहाँ से भाग चलें। वह बन्दूक़ की नली..."

डरथी ब्राउन हड़बड़ाती तेज़ी से नीचे उतरने लगी। अचानक एक भयानक आवाज़ हुई। नीचे लुढ़क गयी डरथी ब्राउन। ऊपर से गिरते हुए गुम्बज की तरह डरथी का गोली लगा शरीर नीचे लुढ़क गया। बेल के पेड़ों की डालियाँ बन्दूक़ की गोलियों से छलनी हो गयीं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाईस

अँग्रेज़ों के सिपाही मन्दिर के बाहर सब-कुछ तहस-नहस करते चहलक़दमी करने लगे।

किसने मारा डरथी ब्राउन को?

मन्दिर के अन्दर जाने का अधिकार उन्हें नहीं दिया गया है। लेकिन सौभाग्यकुण्ड के पास तक उनके बूटों की खट्-खट् आवाज़ सुनी गयी। कुण्ड के एक तरफ़ मनसा देवी का विसर्जन हुआ था। केले का पेड़, फूल, दोना, देवी की मूर्ति और पहने हुए रेशम के कपड़े पानी में ऐसे तैर रहे थे जैसे कुछ समय पहले इस जगह पर एक नाव डूबी हो।

हाँ, हाँ इसी जगह पर एक नाव डूबी थी। केले के छोटे-छोटे पौधे ऐसे तैर रहे थे जैसे वे कई कुमारी कन्याओं के शरीर हों। गोरे सिपाही अपने भारी बूटों की आवाज़ करते हुए देवी के 'घोड़ों' को जलपान करानेवाली छतरी के पास तेज़ी से चढ़ गये थे।

हाँ, इसी जगह पर जलपान उत्सव हुआ था। देउधाओं को अलग-अलग रूपों में सजाकर इसी जगह पर जलपान कराया गया था। डाब-नारियल, अनेक प्रकार के स्वादिष्ट फल, मिठाइयाँ और कटोरे में रखा गया था बलि का कच्चा ख़ून। सभी देउधा गोल घेरा बनाकर इस जगह पर बैठे थे। मदिरा पीकर और 'घोड़े' का नृत्य देखकर मग्न दो भक्त इसी छतरी के पास गिर पड़े थे। उन्हें उठाकर यहाँ से ले जाया गया था और वधस्थल के पास लिटा दिया गया था। नाटघर की दीवार से टिककर वे बैठ सके थे।

गोरे साहब के सिपाही खट्-खट् आवाज़ करते चारों तरफ़ घूमने लगे। उनका अनुकरण करते हुए ब्रह्मपुत्र के उत्तर एवं दक्षिण किनारेवाले भक्त और कामाख्यापीठ, नटपाड़ा, हेमतला, बामुनपाड़ा, बेजपाड़ा तथा मालीपाड़ा के असंख्य लोग आने-जाने लगे। जिस ओर सिपाही गये थे, लोग भी उसी ओर चले गये।

अब भैरवी तालाब के पास सिपाही आकर रुक गये। तालाब-किनारे धूप सेंकने के लिए पानी से बाहर निकले हुए कछुए फिर से फटाफट पानी में चले गये। धीरे-धीरे

Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
मनुष्य-बलि के लिए प्रख्यात स्थान समूहों में सिपाही घूमने लगे। किसी ने कहा, "इसी जगह पर युद्ध में हारे एक सैनिक की बलि चढ़ाई गयी थी। युद्ध में जाने से पहले इसी जगह पर सैनिक आशीर्वाद लेने आये थे। उन्होंने 'इष्टधाम' नामक कवच पहन रखे थे। कालिका-पुराण में लिखा है कि मनुष्य के मांस से कामाख्या देवी और भैरवी को तीन हज़ार साल तक तृप्ति मिलती है। मन्त्र द्वारा शुद्ध किया गया रक्त अमृत समान बन जाता है।

एक और भक्त ने कहा, "इसी जगह पर राजा गदाधर के सामने उस वटवृक्ष से देवी ने पेड़ की एक शाखा गिरा दी थी। राजा के सिपाही को पता ही नहीं चला था कि अचानक यह कैसे घट गया।"

एक दूसरे भक्त ने कहा, "मैंने सुना है कि राजा गदाधर एक भैंसे का मांस अकेले ही खा सकते थे?"

एक भक्त ने फुसफुसाकर कहा, "चुप रहो, चुप रहो!"

गोरे साहब के सिपाही वधस्थल के पास से ही चलने लगे। मन्दिर के अन्दर वे नहीं जा सकते, इसलिए बाहर से ही मन्दिर के अन्दर ताक-झाँक करने लगे। भीड़ में से कोई भक्त बोला, "जिस औरत ने रक्तवस्त्र पहिन रखा है उसे माँ भैरवी की भाँति मानो। एक साथ अनेक सुन्दर युवतियाँ दिख जाएँ तो माँ भैरवी की खुशी के लिए उन औरतों की वन्दना करनी चाहिए। त्रिपुराभैरवी लाल कपड़े पहनती है। उसके चार हाथ हैं। दक्षिण दिशावाले हाथ में पुस्तक रहती है। उसके सिर, वक्ष और कमर में मुण्डमाल लटकती रहती है। ये बातें शास्त्र में लिखी हैं।"

"देखो, यही माँ भैरवी का तालाब है। देवी को अपना सिर उत्सर्ग करनेवाले महाराज के साथ तालाब-किनारे घटेश्वरी का ब्याह हुआ था। देवी कामाख्या ने यह ब्याह करवाया था। घटेश्वरी सोने की नाव पर चढ़कर भैरवी मन्दिर में लायी गयी थी।"

अब सिपाही ढोलक बजानेवालों का डेरा देखने गये। ज़्यादातर ढोलकिया पिछले तीन दिनों के हाड़तोड़ परिश्रम के बाद अफ़ीम खाकर बेहोश पड़े थे। सिपाही उनके कपड़े-लत्ते, बर्तन और अन्य सामान को तहस-नहस करते हुए कुछ ढूँढ़ने लगे। उनकी संगीनों के चुभने से नशे में सोये हुए ढोलकिया फटाफट बाहर भागने लगे। दूर से सभी का निरीक्षण करनेवाला मुखिया सिपाही हवलदार अब जंगल के रास्ते से पहाड़ी के नीचे उतरने लगा।

एक सिपाही ने अचानक ध्यान से देखा कि भातघिला के पेड़ों के नीचे कुछ ख़ाली कारतूस पड़े हैं। सिपाहियों ने मिलकर इन कारतूसों को छूकर देखा। अब घास और झाड़ियाँ काट-काटकर वे जंगल में ख़ाली कारतूस ढूँढ़ने लग गये। मन्दिर में रहनेवाले ताल और बेताल उन्हें ऐसी कुछ जगहों में ले गये जहाँ पड़े हुए असंख्य ख़ाली कारतूस

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
देखकर सिपाहियों के आश्चर्य की सीमा नहीं रही।

कुछ देर बाद द्वारभांगा-घर के आँगन में सभी आकर खड़े हो गये। एक बौने ने बताया, "इसी जगह पर गिर पड़ी थी डरथी मेम!" दूसरे ने कहा, "वह छात्र उन्हें घसीटकर यहीं लाया था। उसकी गलाफाड़ चिल्लाने की आवाज़ सुनकर लोग जमा हो गये थे। यह देखो, डरथी के ख़ून के दाग़ हैं ये!" एक नाटा-सा भक्त सिपाहियों को ख़ून के दाग़ दिखाने लगा।

सभी लोग कुछ समय तक चुप होकर खड़े रहे। कुछ लोग द्वारभांगा-घर के अन्दर घुस गये। रत्नधर द्वारा सजाकर रखी दस्तख़तवाली कॉपियों को उन्होंने तहस-नहस कर डाला। उनके साथ-साथ चलनेवाले गुरुकुल के छात्रगण चिल्ला उठे, "यह क्या कर रहे हैं आप लोग? ये दस्तख़तवाली कॉपियाँ..."

सिपाहियों ने उन छात्रों की तरफ़ तीखी नज़रों से देखा और साँप की तरह फुफकारने लगे—"चुप, चुप!"

उत्तर और दक्षिण किनारे के अनेक असमियों ने बलि बन्द करने के समर्थन में हृदय से अपने दस्तख़त दिये थे। उन दस्तख़तों को फेंकने का दृश्य गुरुकुल के छात्र अब कैसे देखते ? वे दहाड़ मारकर रोने लगे।

अब सिपाही डरथी के दोनों बक्से बाहर निकाल लाये। बक्सों को खोलकर वे डरथी के कपड़े यहाँ-वहाँ फेंकने लगे। इस आशा से कि शायद उन्हें कुछ मिल जाए—चिट्ठी-पत्री या बन्दूक़!

बक्से में रखे डरथी के कपड़ों को उन्होंने बाहर लाकर एक-एक करके खोलकर देखा। वे तह खोल-खोलकर देखने लगे—डरथी की रातवाली पोशक, लेस लगा हुआ गाउन, फुलकारी की हुई फ्रॉक, रेशमी अन्तर्वस्त्र और कपड़े के बने सुन्दर जूते, फूलोंवाली छतरी और टोपी!

लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। द्वारभांगा-घर के चारों तरफ़ जमा हुई इस भीड़ की आँखें फ़र्श पर सूखकर काले पड़ गये डरथी के ख़ून के दाग़ पर लगी थीं। एक बार डरथी के ख़ून के दाग़ और फिर उसकी पोशाकों का निरीक्षण करने के बाद मन्दिर और आसपास के इलाक़ों में हमेशा हल्ला-गुल्ला करनेवाले ताल और बेताल अब फ़र्श के बिलकुल पास आ गये और ख़ून के दाग़ को ध्यान से देखने लगे। फिर दोनों 'डरथी को किसने मारा? किसने मारा?' कहकर चिल्लाने लगे।

सिपाहियों का दल रत्नधर की बनायी तस्वीरों को ध्यान से देखने लगा। शायद कोई सुराग़ मिल जाए! तस्वीर में राजा रुद्रसिंह बना है। राजा के मृत शरीर के साथ नाव में पड़ी हैं निर्मम रूप से हत्या की गयी नर्तकियों की ख़ून से लथपथ लाशें। गोरे सिपाही इन चित्रों को उठा-उठाकर कोठरी के अन्दर पटकने लगे।

गुरुकुल के छात्र बोल पड़े "ऐ, रत्नधर अस्पताल में है। इन चीज़ों को हाथ न

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri
लगाओ! अरे कोई है? इनको सँभालो!"

वहाँ खड़े ताल और बेताल भी चिल्लाने लगे, 'ऐ सिपाहियो! होशियार! अच्छा नहीं होगा!"

उनके ज़्यादा चीख़ने-चिल्लाने पर साथ आये लोगों ने कहा, "ऐ बौने! चुप रह। ये सिपाही पीटकर तुम्हारी हड्डियाँ तोड़ देंगे। एक भी हड्डी साबुत नहीं बचेगी।"

कुछ देर तक गोरे सिपाही सामान को उलट-पुलटकर देखते रहे। फिर वे वहीं पर आसपास टहलते रहे। वे छिन्नमस्ता के दरवाज़े के पास जाकर उस रहस्यपूर्ण अँधेरी कोठरी के अन्दर झाँकने लगे। अँधेरे में उन लोगों ने एक जलते दीये को देखा। दीये की रोशनी में ताँबे की थाली में रखा हुआ ख़ून स्पष्ट दिख रहा था। वे पीछे हट गये। सरकार का निर्देश है कि मन्दिर के अन्दर कोई भी अँग्रेज़ नहीं जाएगा। अँग्रेज़ सरकार मन्दिर के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करेगी।

अब निशानेबाज़ी करनेवाले साहबों के डेरे में सारे सिपाही घुस गये और सारा सामान उलट-पुलटकर देखने लगे। गोरखा चौकीदार तम्बू के भीतर से एक बड़ा-सा रजिस्टर निकाल लाया। सिपाही हवलदार ने उसे अपने हाथ में ले लिया और उसमें लिखे हुए नाम पढ़ने लगा। अनेक नामों से रजिस्टर भरा हुआ था।

आबकारी विभाग के पीटर वार्नर के साथ और सात अधिकारी आते हैं निशानेबाज़ी करने, 'सर्वे ऑफ़ इण्डिया' के हेराल्ड हेनरी के साथ चार अधिकारी आते हैं और 'आयकर विभाग' के ये सब नये नाम हैं—सिडनी जॉन, पॉल ब्राइटन, हिल स्मिथ, रघुवीर चौधरी, विष्णुपद सेन, जोसफ़ किलार और राबर्ट हाइन। 'आसाम बेंगल रेलवे' के एक अवकाश-प्राप्त साहब के दो उद्दण्ड लड़कों के भी नाम हैं—डाँटे और एलेक्ज़ेण्डर। 'गोयानन्द जक' जहाज़ के अवकाश-प्राप्त साहब मण्टोगोमेरी का नाम भी है।

शराब की कुछ ख़ाली बोतलों को डण्डे से हटाता हुआ सिपाही हवलदार अचानक चिल्ला उठा, "सिपाहियो, जाओ और तलाशी लो।"

इसी के साथ सारे सिपाही तम्बुओं में घुस गये और अन्दर का सारा सामान तहस-नहस कर डाला। क्योंकि उस लम्बी सूचीवाले रजिस्टर में हवलदार को एक विशेष नाम दिख गया था। सब लोग सजग हो उठे। हवलदार बड़ी तत्परता से देखने लगा कि किन-किन जगहों पर खड़े होकर डरथी ब्राउन का बरामदा अर्थात् द्वारभांगा-घर का बरामदा दिखाई देता है! बाहर रखी लकड़ीवाली कुर्सी पर बैठकर पढ़ाई करते समय डरथी के शरीर का कौन-कौन-सा हिस्सा किस जगह से स्पष्ट दिखता होगा?

हाँ, हाँ उसी जगह पर डरथी गिर पड़ी थी। अलग-अलग जगहों से डरथी ब्राउन के गिरने की जगह तक गोली जा सकती है। नीचे बहुत-सारे ख़ाली कारतूस पड़े हैं। ख़ाली कारतूसों के एक ही जगह पर जमा होने के कारण रहस्य को समझना धीरे-धीरे

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

आसान होने लगा।

पिछली शाम को ठीक इसी जगह पर डरथी का पति हेनरी ब्राउन मौजूद था।

अब तक सूर्यास्त होने लगा था। जैसे बलि के रक्त से नहाकर सूर्य डूब गया। ब्रह्मपुत्र में लाल-लाल मेघ दिखने लगे। मानो विशाल ब्रह्मपुत्र की गोद में ख़ून की बूँदें टपकने लगी हों।

भरलू के पुलिस थाने में पूरी रात काटने के बाद गुरुकुल के छात्रों और अन्य भक्तों के साथ छिन्नमस्ता के जटाधारी अपने डेरे पर लौट आये। उनकी आँखें एकदम लाल हो रही थीं। मानो उन गोल-गोल आँखों में बलि के ख़ून के दो दाग़ पड़ गये हों। उनके सिर की ताम्रवर्ण की जटा खुल गयी थी। मानो ज़मीन के नीचे बहुत दिनों तक घुसा रहनेवाला कोई साँप उनकी पसीने से तर पीठ पर लटक गया हो। बीच-बीच में उनकी आँखों से पानी झड़ने लगता था और कभी-कभी आग की चिनगारियाँ निकल जाती थीं। कभी-कभी वे आँखें बन्द करके ही चलने लगते थे। देवीपीठ का रास्ता वे भलीभाँति पहचानते थे। पहाड़ी पर चढ़ते समय छिन्नमस्ता के संन्यासी बीच-बीच में चीख़ पड़ते थे—"हाय, हाय—माँ! माँ!!"

कभी-कभी उनकी हाथ की मुट्ठी सख़्त होने लगती थी। वे डरथी ब्राउन की हत्या को सहन नहीं कर पाये थे। संन्यासी होने के बावजूद उन्हें यह हत्या सहन नहीं हुई थी। उनकी चीख़ से देवीपीठ काँप उठती थी। थाने में लाठीचार्ज हुआ था। जटाधारी को थाने में बन्द करके रखने के कारण उनके शिष्य थाने के दरवाज़ों और खिड़कियों में पत्थर मारने लगे थे। पुलिस के लाठीचार्ज से घायल कई छात्रों को अस्पताल भेजना पड़ा। यहाँ तक कि तमाशा देखने जानेवालों में से भी आठपरिया, विधिपाठक और होता कुल के भी कई लोग ज़ख़्मी हो गये।

छिन्नमस्ता के जटाधारी का अनुकरण करता हुआ पूरा दल पहाड़ी पर चढ़ने लगा। इसी दल ने संकल्प लिया है कि आज मन्दिर के सौभाग्यकुण्ड वाली छतरी पर जाकर बड़े पुजारी को अर्ज़ी देंगे।

'देवीपीठ में बलि बन्द हो!

देवीपीठ में बलि बन्द की जाए!'

तेज़ क़दमों से जटाधारी आगे बढ़े। जन्म-मृत्यु के रहस्य के बारे में ज़रा-सी रोशनी की खोज में साधना करनेवाले जटाधारी पहले बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के इतिहास के छात्र थे। संन्यास ग्रहण करने के बाद वे कुछ दिनों तक उत्तर-काशी की तरफ़ भी घूमते रहे। आख़िर में उन्होंने विन्ध्यपर्वत की गुफाओं में दीर्घकाल तक साधना की थी। लोग कहते हैं कि वे गुफा में जंगली जानवरों के साथ रहते थे। उनकी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

जटा में ज़हरीले साँप लटके रहते थे। जंगल में अनेक पक्षी उनके हाथ से दाना चुगते थे। पशु-पक्षी-प्रेमी जटाधारी को इसलिए देवीपीठ में पशुबलि सहन नहीं होती थी। वे अकसर लोगों से कहते थे, "विधाता का सृजन किया सबसे ज़्यादा ख़ूँख़ार प्राणी सिर्फ़ आदमी है। आदमी को मनुष्य बनने के लिए पशुओं से सीख लेनी होगी। तभी पृथ्वी अमृतमय बन सकेगी।"

जटाधारी को लकड़ीवाली कुर्सी पर बैठाकर रातभर पुलिस सवाल ही पूछती रही—"किसने हत्या की डरथी ब्राउन की ?"

"उसके पति? हेनरी ब्राउन ने?"

"या देवीपीठ के भक्तों ने?"

"पुजारी ने?"

"इन्कलाबियों ने?"

"किसी सिपाही ने मारा?"

"या फिर निशानेबाज़ी करनेवाले साहब ने मारा? यह कोई दुर्घटना तो नहीं थी?"

"क्या डरथी के पेट में तुम्हारा बच्चा था?"

"कहाँ से आये हो? किस तरह का संन्यास लिया है तुमने? कोई प्रमाणपत्र है?"

जटाधारी मौन बैठे रहे। कोई जवाब नहीं दिया। जटाधारी के अनुगामी भक्तों की संख्या बढ़ती गयी। थोड़ी देर बाद संन्यासी अपनी गुफा जैसी कोठरी में चले गये।

तान्त्रिकों और पुजारियों का एक दल सौभाग्यकुण्ड के आसपास जटाधारी का इन्तज़ार कर रहा था। आज आख़िरी दिन है। आज ही कोई फ़ैसला लेना होगा। मन्दिर की पूजा ख़त्म हो गयी थी। मन्दिर का दरवाज़ा बन्द हो गया था। आठपरिया ने अच्छी तरह से वधस्थल की सफ़ाई नहीं की थी। यहाँ-वहाँ लगे ख़ून के धब्बे अब भी मिटे नहीं थे। शायद बहुत सारे पशुओं की बलि थी! वधस्थल में लगा ख़ून सूखकर काला हो गया है। बलि में काटे गये एक बड़े भैंसे को चार आदमी उठाकर नीचे ले जाने की तैयारी कर रहे हैं। भैंसा को उठाने के साथ ही उसकी क़टी गर्दन से टप्-टप् ख़ून गिरने लगा।

अब तक सौभाग्यकुण्ड की छतरी के आसपास असंख्य लोग जमा हो गये थे। आज जैसे देवीपीठ के चारों दरवाज़ों से लोग घुस आये हैं।

कश्यप गोत्र के विधिपाठकों के वंशज, भार्गव गोत्र के होता कुल के लोग—कोई बाक़ी नहीं है, कोई भी बाक़ी नहीं। मुडियार, भण्डारी, आठपरिया, माली और उन परिवारों के बच्चे—आज कोई घर में नहीं बैठा है। यहाँ तक कि दो वधिक भी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

वधस्थल के पास खड़े थे। दोनों वधिक लाल धोती पहिने थे। उनकी आधी बाँहवाली बण्डी की जेब में काग़ज़ के बण्डल रखे हैं। सौभाग्यकुण्ड के आसपास साँसें रोककर अनेक लोग खड़े हैं। मुख्य पुजारी को आज छिन्नमस्ता के संन्यासी अर्ज़ी देने आएँगे। बलि के बदले फूलों से पूजा करने के लिए आवेदन करेंगे। उनकी जटा में आज भी साँप ज़रूर दिखेगा।

यह विनती है।

यह निवेदन है। माँ के भक्तों के हृदय से—आत्मा से लिखी गयी अर्ज़ी है यह।

छिन्नमस्ता के संन्यासी से पहले ही तश्तरी में रखी इस अर्ज़ी को सिर पर उठाकर दक्षिण किनारे के गुरुकुल का एक नवयुवक सौभाग्यकुण्ड की तरफ़ जाने लगा था। इस ब्राह्मण युवक के शरीर का रंग निशानेबाज़ी करनेवाले साहबों की तरह गोरा था। दक्षिण किनारे रहनेवाले शाण्डिल्य गोत्र के ब्राह्मणों के शरीर का रंग ऐसा ही होता है।

नवयुवक का शरीर मज़बूत है। शहद के छत्ते जैसे रंगवाले उसके घुँघराले बाल हैं। रेशमी चादर के नीचे जनेऊ में बँधी सोने की अँगूठी चमक रही थी। कहा जाता है कि फूलों में भी कुन्द, बकुल और बेल के पत्ते देवी को ज़्यादा पसन्द हैं। इन फूलों से बनी माला और सुन्दर अक्षरों से असमिया भाषा में लिखा निवेदनपत्र लेकर नवयुवक तेज़ी से आगे बढ़ने लगा। जटाधारी का अनुकरण करता हुआ भक्तों का दल भी आगे बढ़ा।

डरथी ब्राउन की भयानक दुर्घटना के बाद जटाधारी ने मौनव्रत धारण कर लिया था। कर्काबरि और उरपूत से आये ढोलकियों के एक दल के प्रतिनिधि बने दो ढोलकिया ढोलक से ढम्-ढम् आवाज़ करते हुए आगे बढ़ रहे थे। लगता था जैसे आधी रात को बलि के लिए ले जाए गये किसी भैंसे के खुर की आवाज़ हो यह!

तान्त्रिक पुजारियों की तरह जटाधारी ने आज लाल रंग के वस्त्र पहने थे। ताल और बेताल नाम के बौने भी जटाधारी के साथ-साथ आगे बढ़ रहे थे लेकिन बीच-बीच में वे सड़क के दोनों ओर के इमली और भातघिला के पेड़ों पर बन्दरों की तरह लटकने लगते थे। उन बौनों की हरकतें सभी देख रहे थे, लेकिन कोई कुछ नहीं बोला था। सब लोग मौन थे।

अचानक कहाँ से इतने तान्त्रिक आ गये? भण्डारगृह, पगला घण्टा के आसपास छुपे ये कहाँ से आये तान्त्रिक हैं? इनमें से एक-दो की जटाएँ हैं लेकिन ज़्यादातर तान्त्रिक सिरमुण्डा हैं। सरकण्डों की तरह इनके शरीर का रंग है और चेहरे पर रहस्य और कौतूहल का हाव-भाव झलक रहा है।

गमछे से मुँह ढाँके एक तान्त्रिक टूटे पड़े खम्भे के नीचेवाले गड्ढे से निकला। वैसा ही सरकण्डे जैसा शरीर का रंग। लंटका-सा मुँह। जैसे मिट्टी और सूखे पत्तों के नीचे छुपा रहनेवाला साँप हो।

Pref. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

निकलते ही वह गरजने लगा। गुरुकुल के छात्रों में खुसर-फुसर शुरू हो गयी। "बलि का कच्चा ख़ून दोने में लेकर पीनेवाला तान्त्रिक है यह! नदीवाले रास्ते से देवीपीठ में आया है। उसे कोई नहीं पहचानता। शरीर पर वह भस्म और धूल की तरह बलि के ख़ून का भी लेप करता है।"

वह तान्त्रिक चिल्लाने लगा, "ऐ, ऐ, हज़ारों साल से देवी कामाख्या ने बकरे, भैंसे और मनुष्य का ख़ून पीया है। महामूर्खो, तुम लोगों ने सुना नहीं है कि लड्डू से गणपति, घृत से हरि, वाद्य से शिव और बलि से चण्डिका देवी की पूजा की जाती है! महामूर्खो, वामाचार और दक्षिणाचार पूजा का रहस्य नहीं जानते? मूर्खो, हज़ारों साल से चलते आ रहे नीति-नियमों को तोड़ना चाहते हो? तुम लोग नरक में जाओगे। नरक में... ।"

तश्तरी में फूलों की माला में लपेटकर निवेदन-पत्र ले जानेवाला लड़का चौंककर कुछ पीछे हट गया।

छिन्नमस्ता के संन्यासी ने हुंकार भरी, "आगे बढ़ो, आगे बढ़ो!" संन्यासी का अनुकरण करता भक्तों का दल भी चिल्लाया, "आगे बढ़ो, आगे बढ़ो!"

निवेदन-पत्र मुख्य पुरोहित के हाथ में देना है। सब लोगों ने देखा कि मुख्य पुरोहित मौन खड़े हैं। दूसरे पुजारियों के पास वे खड़े नहीं थे। वे वधस्थल के पास खड़े हैं। भीड़ धीरे-धीरे बढ़ने लगी है। ढोलकिया के ढोलक की आवाज़ फिर से आधी रात को बलि के लिए लाये जानेवाले भैंसे के खुर की खट्-खट् आवाज़ जैसी लगी।

फिर से दहाड़ने लगा खँडहरों के बीच में से निकले हुए साँप जैसा वह तान्त्रिक "क्या देख रहे हो? लाओ, लाओ, खड्ग लाओ!" वह वधस्थल के पास पहुँच गया था।

छिन्नमस्ता के संन्यासी के मुँह से चीख़ निकल गयी—"माँ! माँ!!"

उनके साथ-साथ आनेवाले भक्त भी चीख़ पड़े—"माँ! माँ! माँ!!" वधस्थल के पास खड़े मुख्य पुजारी के सामने ब्राह्मण छात्र ने फूलों से लिपटा हुआ निवेदन-पत्र तश्तरी समेत रख दिया।

निष्ठुर चेहरेवाला वह तान्त्रिक फिर चिल्लाया, "लाओ, लाओ—खड्ग ले आओ!"

मुख्य पुजारी बिलकुल मौन रहे। वे भव्य चेहरेवाले गम्भीर व्यक्ति थे। उनके शरीर का रंग पुराने हाथी दाँत की तरह था। उनकी आँखों में गहराई थी।

उनके पास दूसरे तान्त्रिक का एक दल आकर खड़ा हो गया। उनके लाल वस्त्रों को देखकर ऐसा लगा जैसे उन कपड़ों को अभी-अभी ख़ून में भिगोया गया हो। उनकी आँखों में तिरस्कार और घृणा स्पष्ट दिखाई दे रही थी। उनका हृदय मानो स्रष्टा ने ताम्रेश्वरी मन्दिर के ताँबे से बनाया होगा। उनके चेहरे का रंग ताँबे की उस तश्तरी जैसा बन गया था जिसमें देवी के लिए बलि का ख़ून अर्पण किया जाता है—मिट्टी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
के दीये की रोशनी में एक रहस्यपूर्ण चमकवाली ताँबे की तश्तरी–

छिन्नमस्ता के संन्यासी का अनुकरण कर रहे भक्तों, छात्रों और तमाशा देखनेवालों से मन्दिर का आँगन भर गया। ढोलकिया ढोलक बजाते रहे। यह आवाज़ अब दिन की धड़कनों जैसी सुनाई दी।

अनेक जगहों से लोग आये थे–उत्तर शेखादारी, नलबाड़ी, बको, पलाशबाड़ी, कर्काबड़ी, यहाँ तक कि दरंग ज़िले के खाखापाड़ा, खटरा, देउमरनै आदि जगहों से भी लोग आकर जमा हो गये थे। अनेक भक्तों से छात्रों ने दस्तख़त संग्रह किये थे।

इन भक्तों में से ज़्यादातर ग़रीब हैं। ज़्यादातर भक्तों के शरीर सूखे हुए हैं। कन्याशुल्क देने में असमर्थ होने की वजह से कोचबिहार में पुजारी का काम करने जानेवाले और फिर बूढ़े होकर लौटनेवाले ब्राह्मणों की संख्या भी बहुत थी। अपनी शादी न होने के कारण वे बहुत दुःखी थे। उनके शरीर का रंग पुराने हाथी दाँत की तरह फीका पड़ गया था। सिर्फ़ दो-चार ने साफ़-सुथरे कपड़े पहने थे, लेकिन ज़्यादातर ब्राह्मणों की धोतियाँ मैली और पुरानी थीं। किसी-किसी ने कन्धे पर गमछा डाल रखा था। लेकिन ज़्यादातर फटी-मैली चादर ओढ़कर या फिर नंगे बदन ही आये थे। इन नंगे बदनों में पसलियाँ दिख रही थीं। कोई भी इन हड्डियों को आसानी से गिन सकता था।

सिरमुँडा तान्त्रिक बोलता ही रहा–"लाओ, खड्ग लाओ!"

अब मुख्य पुजारी के पास खड़े हो गये छिन्नमस्ता के संन्यासी। उन्होंने तश्तरी में रखे आवेदन-पत्र को उस छात्र को पढ़ने का आदेश दिया।

चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया। छात्र पढ़ने लगा। विनतियों और सहानुभूतियों से भरे इस लम्बे पत्र को उसने अपनी तेजस्वी आवाज़ में पढ़ सुनाया। मौन खड़े मुख्य पुजारी ने इशारा करके बाक़ी सबको भी मौन रहने के लिए कहा। छात्र ने उस पत्र को दूसरी बार पढ़कर सुनाया। किसी ईश्वरीय शक्ति से प्रभावित होकर जैसे उसने पूरा पत्र पढ़ा था। आवेदन पढ़ने के बाद जटाधारी के साथ आये छात्रों ने एक-एक करके अपने विचार व्यक्त किये। विचार आदान-प्रदान का यह क्रम एक घण्टे तक चलता रहा।

निवेदन-पत्र पढ़े जाने के बाद एक तरह का रहस्यपूर्ण सन्नाटा छाया रहा। जैसे एक साथ अनेक ज़हरीले नाग फन निकालकर खड़े हो गये। यहाँ-वहाँ खड़े सारे तान्त्रिक अब साँप की तरह फुफकार मारने लगे। जैसे पहले से ही तय था कि इसके बाद क्या फ़ैसला किया जाएगा।

अब गौड़ से आया एक संस्कृत का पण्डित और तान्त्रिक आगे आये। उनके बाल लम्बे थे और चेहरे के हाव-भाव कठोर थे। उनकी नज़रें तीखी, सूखे हाथ-पैर और नुकीले अस्त्र जैसी नाक थी। सभी तान्त्रिकों का समर्थन पाकर वह हाथ ऊपर

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
उठाकर गरज उठा, "नर का रक्त न पाकर आज ताम्रेश्वरी माँ रुष्ट है। क्षुब्ध है। हमारा देश म्लेच्छ अँग्रेज़ों के क़ब्ज़े में है। यहाँ के राजा का हाल यह है कि हर समय छुपता-फिरता है, सब जगह मार-काट मची है—इस देश में देवी के मुँह से रक्त छीनना चाहते हो? पापी, भस्म हो जाओगे तुम लोग! देश जलकर राख हो जाएगा!"

सभी ओर से फुफकारने की आवाज़ें आने लगीं। पीछे से एक भक्त चिल्लाया, "तान्त्रिक क्या कहता है ?"

"तान्त्रिक क्या कहता है?"

ठीक उसी समय ताल और बेताल वधस्थल के पास आकर बोलने लगे, "ऐ, ऐ, गिद्धों के शाप से बूढ़ी गाय नहीं मरती।"

अचानक पास खड़े तान्त्रिकों ने बेताल नाम के बौने को दबाकर पकड़ लिया और वे उसका सिर वधस्थल में पटकने लगे। इस भयानक दृश्य को छिन्नमस्ता के संन्यासी के साथ आनेवाले भक्त देखते रहे। लेकिन कोई भी चूँ नहीं कर सका। सभी के सामने तान्त्रिकों ने बौने का सिर फोड़कर लहूलुहान कर डाला। ख़ून से लथपथ बौने को उसका जुड़वा भाई घसीटकर भीड़ से निकाल ले गया।

संन्यासी के साथ आनेवाले लोग मौन रहे लेकिन बाक़ी भक्तों में अब वही फुफकार सुनी गयी। ज़हरीले नाग की तरह वे फुफकार उठे, जैसे म्यान से कई तलवार एक साथ निकल आयी हों।

अब एक भयानक चेहरेवाला सिरमुँडा तान्त्रिक अपनी धूर्त आँखों से सबको देखता हुआ चिल्ला उठा, "अगर हम लोग इस निवेदन-पत्र को फाड़ दें तो तुम लोग क्या करोगे? क्या इसकी व्यवस्था भी की है तुम लोगों ने?" तान्त्रिक की दोनों आँखों में हिंस्र भाव स्पष्ट दिखाई दिया।

चारों तरफ़ से एक बार फिर जैसे म्यान से निकली तलवार की झनझनाहट सुनाई दी। इसके बाद ही जैसे एक विस्फोट हुआ। तान्त्रिक ने चिल्लाकर कहा, "गोरे साहबों ने अब तक मन्दिर के मामले में हस्तक्षेप नहीं किया था। तुम लोगों ने ब्रह्मपुत्र के उत्तर और दक्षिण किनारे से दस्तख़त संग्रह करके और गोरे साहबों का समर्थन माँगकर उनका रास्ता साफ़ नहीं किया है क्या? उससे हमारे पैरों में ज़ंजीर नहीं बँधेगी?"

फिर वही फुफकार सुनाई दी। एक ख़ूँख़ार दल की नज़र अब छिन्नमस्ता के संन्यासी पर पड़ी। जैसे एक इशारे का इन्तज़ार है—फिर वे संन्यासी पर कूद पड़ेंगे और नोंचकर उनकी अँतड़ियाँ बाहर निकाल देंगे।

मुख्य पुरोहित ने हाथ ऊपर उठाकर सभी को शान्त रहने के लिए कहा। फिर कुछ समय तक चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया। वहाँ से कुछ दूरी से ताल और बेताल के रोने की आवाज़ आ रही थी। उसके अलावा कहीं कोई आवाज़ नहीं आयी। अचानक रक्तवस्त्र पहने एक पुजारी ने निवेदन-पत्र की तरफ़ इशारा करते हुए कहा,

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
''जटाधारी, तुमने गुरुकुल के छात्रों से एकमत होकर इस पत्र को लिखा है। क्यों निरीह जीवों को घसीटकर मारना चाहिए—अगर ख़ून ही देना है तो भक्त अपना-अपना ख़ून दें। क्यों?''

सन्नाटा बना रहा। ओह्, किस प्रकार के भक्त हैं ये? रक्तवस्त्रधारी तान्त्रिक जैसे तैयार था। उसकी भाषा ऊपरी असम की भाषा की जैसी थी। उसने कहा, ''अगर ख़ून देने की बात है तो अभी प्रमाणित हो!''

साथ-साथ बाक़ी तान्त्रिक चिल्ला पड़े, ''एक नरबलि से देवी हज़ार साल तक तृप्त रहती है। भक्त अपने शरीर से रक्तदान देकर भी वही फल पा सकता है। अब ये भक्त इस कार्य को कर दिखाएँ।''

छिन्नमस्ता के संन्यासी के साथ आये भक्तों के बीच उत्तेजना बढ़ गयी। हिंस्र चेहरेवाला सिरमुँडा तान्त्रिक चिल्लाया, ''शास्त्रों में लिखा है कि अपना ख़ून नाभि के नीचे से या पीठ से देना पड़ता है। होठ या माथे का ख़ून ग्रहण योग्य नहीं है। बाँहों या पेट से भी रक्तदान हो सकता है। छिन्नमस्ता के संन्यासी, तुम्हारे साथ आनेवाले ज़्यादातर लोग ही कंकाल जैसे हैं—रोगग्रस्त हैं। ऐसे रोगी लोगों का ख़ून देवी कदापि ग्रहण नहीं करेगी। सुनो, अपना अंग स्वयं काटकर उस रक्त को कमल की पंखुड़ी में रखकर देवी को दान करो। कमल की पंखुड़ी में एक चौथाई भाग रक्त होना अनिवार्य है। उस्तरा, खड्ग या चाक़ू—इन्हीं अस्त्रों से अपने अंग का ख़ून निकाल सकोगे! याद रखो, अस्त्र जितना बड़ा होगा, उतना ही शुभ माना जाएगा।''

संन्यासी के साथ आनेवाले ज़्यादातर भक्तों के मुँह सूख गये। यहाँ तक कि हमेशा दस्तख़त संग्रह करनेवाले गुरुकुल के छात्रों के भी चेहरे सूख गये। उनकी अन्तरात्मा काँप उठी। लेकिन सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए।

ख़ूँख़ार तान्त्रिक चिल्लाता रहा, ''प्रमाण दो, प्रमाण दो! जब ऊँची आवाज़ से कह रहे हो कि भक्त अपनी संकल्प-रक्षा के लिए पशुओं के बदले अपना रक्तदान दे सकते हैं तो ऐसा करके दिखाओ!''

अब सारे तान्त्रिक भी बोल उठे, ''हाँ, हाँ, अपना ख़ून देकर दिखाओ!''

फिर से सन्नाटा छा गया। ताल और बेताल की रोने की आवाज़ को छोड़कर कहीं से कोई आवाज़ नहीं आयी थी। तान्त्रिक और पुजारियों की कौतूहल-भरी निगाहें छिन्नमस्ता के संन्यासी और उनके साथ आये भक्तों की शक्लों पर टिकी थीं। जैसे बलिवाले पशु को पुजारी जाँचता है, ठीक उसी तरह ये तान्त्रिक छिन्नमस्ता के संन्यासी का निरीक्षण करनें लगे।

कुछ समय तक आँखें बन्द करके ध्यान करने के बाद जटाधारी ने अब आँखें खोलकर देखा। डरथी ब्राउन की मृत्यु के बाद जैसे पहली बार उन्होंने चारों तरफ़ अच्छी तरह से देखा हो। गड्ढे में घुसी उनकी आँखों से जैसे चिनगारियाँ बरसने लगीं।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri
किसी मृत व्यक्ति की पुरानी अस्थियों की तरह उनके शरीर का रंग जैसे अचानक बदल गया। एक अपूर्व कान्ति उनके शरीर में फैल गयी।

वे अब आगे बढ़े। वधस्थल के सामने मुख्य पुजारी से पाँच हाथ की दूरी पर वे खड़े हो गये। सब लोगों ने अब उन्हें अच्छी तरह से देखा। जंग लगी लौहवर्ण जटा के सामने उनकी मज़बूत बाँहें चमक रही थीं। कई युद्धों में ज़ख़्मी होने के अनुभवों के बाद ज़्यादा ताक़तवर और साहसी बननेवाले योद्धा की तरह उन्होंने अपनी बाँहें उठायीं। फिर संन्यासी ने अपनी कमर में बँधा एक तेज़ चाक़ू निकाला और हुंकार भरकर सभी की आश्चर्य से भरी नज़रों के सामने अपनी नाभि के नीचेवाले हिस्से से एक टुकड़ा मांस काट डाला। यह मांस का टुकड़ा हाथ में लेकर वे माँ-माँ कहकर चीख़ पड़े।

इसी के साथ पास खड़े भक्त भी माँ-माँ चिल्लाने लगे। माँ-माँ की ध्वनि से देवीपीठ का आसमान प्रतिध्वनित हो उठा। मन्दिर में दुबककर बैठे कबूतरों के झुण्ड यहाँ-वहाँ उड़ने लगे। अब गुरुकुल के छात्र आगे बढ़े। उसी अस्त्र से वे नवयुवक भी अपनी देह से मांस काटने लगे।

सारी रात यह अद्‌भुत कार्य चलता रहा। नवयुवकों के रक्त से वधस्थल भीग गया।

विस्मय से अभिभूत लोग देवीपीठ में सारी रात रक्त का ये खेल देखते रहे। रात के आख़िरी पहर में बारिश होने लगी थी। इस बारिश ने पूरी गन्दगी ब्रह्मपुत्र में बहा दी।

सुबह एक नया सूर्योदय हुआ। इस सूर्य की रोशनी में देवीपीठ में कहीं ख़ून के धब्बे किसी ने नहीं देखे।

□□□

[ब्रिटिश राज की पृष्ठभूमि में लिखे गये इस उपन्यास के समस्त पात्र काल्पनिक हैं—लेखिका]

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

डॉ. इन्दिरा गोस्वामी

(मामोनी रायसम गोस्वामी)

जन्म : गुवाहाटी (असम) में।
शिक्षा : एम.ए., पी-एच.डी।

दिल्ली विश्वविद्यालय में आधुनिक भारतीय भाषा विभाग के असमिया की प्रोफेसर से सेवामुक्त।

असमिया में लगभग एक दर्जन उपन्यास और सैकड़ों कहानियाँ। प्रमुख रचनाएँ : 'चेनाबार सोत', 'नीलकण्ठी ब्रज', 'अहिरन', 'मामरे धारा तरोवाल', 'दाताल हातीर उवे खोवा हावदा', 'तेज़ अरू धूलि धूसरित पृष्ठ', 'ब्लड-स्टेण्ड पेज़िज', (उपन्यास); 'चिनाकी मरम', 'कइना', 'हृदय एक नदीर नाम', 'प्रिय गल्पो', (कहानी-संग्रह); 'रामायण फ्रॉम गंगा टू ब्रह्मपुत्र' (विवेचना); 'आधा लेखा दस्तावेज' (आत्मकथा)। अनेक रचनाएँ हिन्दी, अँग्रेजी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनूदित।

'साहित्य अकादेमी पुरस्कार' (1983), 'असम साहित्य सभा पुरस्कार' (1988), 'भारत निर्माण पुरस्कार' (1989), 'कथा पुरस्कार' (1993), 'अन्तर्राष्ट्रीय ज्यूरी अवॉर्ड' (1997), 'अन्तर्राष्ट्रीय तुलसी अवॉर्ड' (1999), 'ज्ञानपीठ पुरस्कार', (2000), आदि अनेक पुरस्कारों से सम्मानित।

सम्पर्क : 23, पहली मंजिल
उमाकान्त गोस्वामी एनक्लेव
गाँधी बस्ती, नार्थ सरणिया
छठी लेन, गुवाहाटी-781 003 (असम)

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003
संस्थापक :
स्व. साहू शान्तिप्रसाद जैन, स्व. श्रीमती रमा जैन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003

संस्थापक :

स्व. साहू शान्तिप्रसाद जैन, स्व. श्रीमती रमा जैन

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal